॥ श्रीः ॥

बृहज्ज्योतिःसार सटीक।

अर्थात्

फलित-ज्योतिष का अपूर्व संग्रह-ग्रंथ

संग्रहकर्ता और भाषानुवादक,

पण्डित श्रीसूर्यनारायणसिद्धान्ती.

संशोधक और संवर्द्धक,

श्रीगोकर्णदत्तत्रिपाठी.

दसवाँ संस्करण

लखनऊ

श्रीकेसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा

नवलकिशोर-प्रेस में मुद्रित और प्रकाशित.

ॐ नमः शिवाय ।

बृहज्ज्योतिःसार

(सटीक)

की

प्रकरण-क्रम से विषयानुक्रमणिका ।

विषय पृष्ठ

मंगलाचरण १

संवत्सर-प्रकरण ॥ १ ॥

संवत्सरोत्पत्ति और उदाहरण १

ऋतु-ज्ञान और अयन-ज्ञान ४

अयन के अनुसार शुभाशुभ-कर्म ४

संवत्सरों के स्वामी ५

कार्य-भेद से मास-व्यवस्था ६

नय-मास और मल-मास ७

संवत्सर के राजा, मन्त्री आदि की व्यवस्था ७

...-मत से राजा आदि ...धक चक्र ८

... निकालने का ... विधान ८

गुणों का सोदाहरण प्रमाण ९

धान्य, तृण, वर्षा आदि के बिस्वा निकालने का सोदाहरण विधान १०

मेघ-ज्ञान का गणित और फल १४

संवत्सर के राजा आदि का फल १४

आषाढ़-मास की पूर्णिमा में वायु का फल.... १५

होलिका की वायु को फल १५

सूर्य और चन्द्र-ग्रहण १६

पुनः ,, ,, ... १६

तिथियों की नंदा आदि संज्ञाएँ और फल.... १६

तिथियों के कृत्य १८

तिथियों के स्वामी...

विषय	पृष्ठ
कृत्य-विशेषों में निषिद्ध तिथियाँ	२०
तिथि-विशेष में तैल आदि का परिहार	२०
प्रतिपदा आदि तिथियों में भक्ष्य-निषेध	२१
शुभकृत्यों में वर्जित योगादि	२१
,, ,, ,, पर्व-तिथियाँ	२२
भद्रा-ज्ञान	२२
भद्रा-वास-ज्ञान	२२
भद्रा का परिहार	२३
अन्य-मत से भद्रा-परिहार	२३
शुक्र, गुरु और चन्द्र की बालवृद्ध-व्यवस्था	२३
गुरु और शुक्र के अस्त में वर्जित कार्य	२४
अन्य-मत से वर्जित कार्य	२५
गुर्वादित्यआदिकापरिहार	२६
अन्य-मत से गुर्वादित्य का परिहार	२६
सिंहस्थ-गुरु का परिहार	२६
अन्य-मत से सिंहस्थ-गुरु परिहार	२७

विषय	पृष्ठ
मकरस्थ गुरु-परिहा	२७
ग्रहण में वर्जित मास आदि	२७
कुयोग आदि का परिहार	२८
अन्य-मत से परिहार	२९
वार-प्रवृत्ति तथा उदाहरण	२९
काल-होरा-ज्ञान तथा उदाहरण	३०
द्वादश चन्द्र का परिहार	३१
जन्म-चन्द्र-निषेध	३१
चन्द्र-निर्णय	३१
अन्य-मत से चन्द्र-निर्णय	३१
चन्द्र का फल	३२
चर, स्थिर और द्विस्वभाव-बोधक चक्र	३२
संवत्सर का शुभाशुभ-फल	३३
तिथि आदि के गुण	३३
तारा-ज्ञान	३३
दिशाओं के स्वामी	३
ग्रहों की जातियाँ	३
ग्रहों के वर्ण	
नक्षत्र-ज्ञान	
२७ योगों का च	
ग्रहों के स्वामी	

विषय	पृष्ठ
करण-ज्ञान तथा चक्र....	३६
नक्षत्रों के स्वामी	३६
शुभाशुभ नक्षत्रों में कर्म-ज्ञान ...	४०
स्थिर और ध्रुव संज्ञक-नक्षत्र और उनमें विहित-कर्म	४०
चर-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य	४१
उग्र-संज्ञक और मिश्र-संज्ञक नक्षत्र तथा उनके कार्य	४१
लघु और क्षिप्र-संज्ञक नक्षत्र तथा उनके कार्य	४१
मृदु और मैत्र-संज्ञक नक्षत्र तथा उनके कार्य	४२
तीक्ष्ण और दारुण-संज्ञक नक्षत्र तथा उनके कार्य	४२
ऊर्ध्वमुख-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य	४२
तिर्ङ्मुख-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य	४३
अधोमुख-संज्ञक नक्षत्र और उनके कार्य	४३
वार-कृत्य	४३
वार-दोष का परिहार	४४
रविवार-कृत्य	४४
चन्द्रवार-कृत्य	४५
भौमवार-कृत्य	४५
बुधवार-कृत्य	४५
गुरुवार-कृत्य	४६
शुक्रवार-कृत्य	४६
शनिवार-कृत्य	४६
पञ्चक-विचार	४७
मेष आदि बारहों राशियों में ग्रहण-फल	४७
एक मास में चन्द्रसूर्य-ग्रहण-फल	५०
मुहूर्त-प्रकरण ॥ २ ॥	
वस्त्र-भूषण-चूड़िका आदि धारण-मुहूर्त	५१
चूड़िका-चक्र	५१
विना मुहूर्त वस्त्र-धारण....	५२
नील, कृष्ण, वस्त्र-धारण मुहूर्त	५२
ऊनी-वस्त्र-धारण-मुहूर्त....	५२
रेशमी-वस्त्रधारण-मुहूर्त....	५३
वस्त्र-धारण-नक्षत्र-फल....	५३
स्त्रियों के वस्त्र, आभूषण आदि धारण-मुहूर्त....	५४

विषय	पृष्ठ
वस्त्रों के धुलाने का मुहूर्त	५४
तंबू आदि खड़ा करने का मुहूर्त	५५
जूता आदि पहिरने का मुहूर्त	५५
ज़ेवर बनवाने का मुहूर्त	५५
द्विपुष्कर और त्रिपुष्कर-योग	५६
गजांकुश-मुहूर्त	५६
रस-सेवन-मुहूर्त	५७
मल्लक्रीड़ा-मुहूर्त	५७
लोह-दाह-मुहूर्त	५७
लवण-मुहूर्त	५७
नट-विद्या-मुहूर्त	५८
कुम्भकार-कृत्य-मुहूर्त	५८
स्वर्णकार-कृत्य-मुहूर्त	५८
तांबूल-भक्षण-मुहूर्त	५९
वार-विषघटी-विचार	५९
तिथि-विषघटी-विचार	६०
अभिजित्-मुहूर्त	६०
दिन में पञ्चदश-मुहूर्त-विचार	६१
रात्रि में पञ्चदश-मुहूर्त-विचार	६१
कार्यकृत्य-मुहूर्त	६१
वार-दुर्मुहूर्त-विचार	६२
राशियों के स्वामी	६३
उत्पात आदि योग	६३
कुलिक आदि योग	६४
क्रकच-योग-विचार	६५
रवि-योग-विचार	६५
स्त्रियों के कज्जल आदि धारण का मुहूर्त	६६
सुगंधित-वस्तु-धारण-मुहूर्त	६६
मद्यारम्भ-मुहूर्त	६६
वृक्षारोपण-मुहूर्त	६७
वृक्ष-चक्र-विचार	६७
गौओंकाक्रय-विक्रय-मुहूर्त	६८
राज-दर्शन-मुहूर्त	६८
पशु-प्रवेश आदि का मुहूर्त	६९
क्रय-विक्रय-मुहूर्त	६९
दुकान और दर्जी के नाम का मुहूर्त	७०
औषध-सेवन-मुहूर्त	७०
हाथी-घोड़े की सवारी का मुहूर्त	७०
अश्व-चक्र-विचारऔरफल	७०
गज-चक्र-विचार और फल	७२

विषय	पृष्ठ
सेवा-चक्र-विचार	७३
सेवा-मुहूर्त	७४
छत्र-धारण-मुहूर्त	७४
छत्र-चक्र-विचार और फल	७४
धनुश्चक्र-विचार	७५
धनुर्विद्या-मुहूर्त	७६
दीपिका-चक्र-विचार	७६
इक्षु-यन्त्र-चक्र	७७
कोल्हू-चक्र-विचार	७८
मार्जनी-चक्र और मुहूर्त	७९
चुल्ली-चक्र-विचार	८०
रथकर्म-मुहूर्त	८०
खट्वाचक्र-विचार	८१
खट्वा-मुहूर्त	८२
चरही-मुहूर्त	८२
शस्त्राभ्यास-मुहूर्त	८३
सेतु-बंधन-मुहूर्त	८३
भूमि-सुप्त-विचार	८३
चन्द्रलोक-वास-विचार	८४
राहु-वास-विचार	८४
देवालय आदि में राहु-मुख-चक्र-विचार	८५
कूप-चक्र-विचार	८६
पुनः ,, ...	८७
पुनः कूपचक्र-विचार	८८
पुनः ,, ...	८८
कूप-मुहूर्त	९०
गृह-कूप-दिशा-फल	९०
तडाग-चक्र-विचार	९०
तडाग-मुहूर्त	९२
निवार-चक्र और फल	९२
जलाशय-मुहूर्त	९३
वापी-मुहूर्त	९३
जन्म और नाम-राशि का निर्णय	९३
दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त	९३
दीक्षा-मास-फल	९४
तैलाभ्यंग-मुहूर्त और फल	९४
तैलाभ्यंग-परिहार	९५
राज्याभिषेक-मुहूर्त	९५
पशु-क्रय-विक्रय-मुहूर्त	९७
नृत्यारंभ-मुहूर्त	९७
ऋण-ग्रहण और ऋण-दान-मुहूर्त	९७
हल-प्रवाह-मुहूर्त	९८
बीजोप्ति-मुहूर्त और हलचक्र	९९
बीजोप्ति का निषेध	१००
धान्य-छेदन-मुहूर्त	१००

विषय	पृष्ठ
अन्य-मत से हल चक्र-विचार	१००
अन्य-मत से धान्यच्छेदन-मुहूर्त	१०१
पुनः अन्य-मत से धान्य-च्छेदन-मुहूर्त	१०१
सस्य-रोपण-मुहूर्त	१०१
सस्य आदि का सेचन-मुहूर्त	१०२
कण-मर्दन-मुहूर्त	१०२
धान्य-स्थिति-मुहूर्त	१०२
हवन-चक्र-विचार	१०३
अग्नि-वास-विचार	१०३
नवान्न-मुहूर्त	१०४
विष-घटी-दोष-विचार	१०४
नवान्न-चक्रविचार	१०६
अग्नि-विचार का परिहार	१०७
युगादि और मन्वादि-तिथि-विचार	१०७
रोग-मुक्त के स्नान का मुहूर्त	१०६
रोगोत्पन्न-शुभाशुभ-विचार	१०६
सर्प-दंश का विचार	११०
शिल्प-विद्या का मुहूर्त	१११
मुद्रा-पातन का मुहूर्त	१११

विषय	पृष्ठ
काष्ठादिस्थापनका विचार	११२
प्रेत-कर्म का मुहूर्त	११३
नारायण-बलि का मुहूर्त	११३
नौका-कर्म का मुहूर्त	११४
जलाशय, बाग आदि की प्रतिष्ठा का मुहूर्त	११४
सर्वारम्भ मुहूर्त	११५
पादुका-धारण आदि का मुहूर्त	११६
नवीन पात्र में भोजन का मुहूर्त	११६
अमृत-सिद्धि योग	११७
नवीन-पात्र-चक्र-विचार	११७
नवांगना-भोग का मुहूर्त	११८
ईंट पाथने का मुहूर्त	११८
रत्न-परीक्षा-मुहूर्त	११६
कलश-चक्र का विचार	११६
शस्त्र-घट्टन-मुहूर्त	११६
शस्त्र-धारण-मुहूर्त	१२०
अग्नि-शस्त्र के घट्टन और धारण का मुहूर्त	१२०
शिकार खेलने का मुहूर्त	१२०
भूमि में धन स्थापित करने का मुहूर्त	१२१

विषय	पृष्ठ
वाणिज्य का मुहूर्त	१२१
धर्म-क्रिया का मुहूर्त....	१२१
जुलाब आदि का मुहूर्त	१२१
मिलाप का मुहूर्त	१२२
कथारम्भ-चक्र-विचार	१२२
नगाड़ा, मृदंग आदि के बजाने का मुहूर्त	१२३
शान्तिक-पौष्टिक कर्म.... का मुहूर्त	१२३
वीर, वेताल आदि के साधन का मुहूर्त	१२४
मन्त्र, यन्त्र और व्रत आदि का मुहूर्त	१२४
रजस्वला स्त्री के स्नान का मुहूर्त	१२५
गर्भ-धारण-मुहूर्त	१२५
सीमंत, पुंसवन-कर्म-मुहूर्त	१२५
अन्य-मत से पुनः विचार	१२६
जातकर्म-मुहूर्त	१२६
प्रसूता-स्नान-मुहूर्त	१२६
अन्य-मत से पुनःविचार	१२७
दत्तक-पुत्र लेने का मुहूर्त	१२७
नामकरण-मुहूर्त	१२८
जल-पूजा-मुहूर्त	१२८
अन्य-मत से पुनः विचार	१२८
बालक-निष्काशन-मुहूर्त	१२६
अन्य-मत से पुनः विचार और दोलारोहण-मुहूर्त	१२६
दोलारोहण-चक्र-विचार	१३०
कर्म-भेद से चन्द्र की शुद्धि	१३०
तांबूल-भक्षण-मुहूर्त	१३०
बालक को पृथ्वी में बैठाने तथा करधनी बाँधने का मुहूर्त	१३१
अन्नप्राशन का मुहूर्त....	१३१
कर्ण-वेध-मुहूर्त	१३२
मुंडन-मुहूर्त	१३३
नित्य-क्षौर-मुहूर्त	१३५
अन्य-मत से क्षौर-मुहूर्त	१३५
अक्षरारम्भ-मुहूर्त	१३६
विद्यारम्भ-मुहूर्त	१३६
गणितारम्भ-मुहूर्त	१३७
व्याकरणारम्भ-मुहूर्त....	१३७
न्यायादि शास्त्रारम्भ-मुहूर्त	१३७
धर्मशास्त्र-पुराणारम्भ-मुहूर्त	१३८
वैद्य-विद्या तथा सर्व-विद्यारम्भ-मुहूर्त....	१३८
जैन-विद्यारम्भ-मुहूर्त	१३८

विषय	पृष्ठ
फ़ारसी-विद्यारम्भ-मुहूर्त	१३८
लेखनारम्भ-मुहूर्त	१३९
जन्म-समय में अभुक्त-मूल का विचार	१३९
मूल-संज्ञक नक्षत्रों के चरणों का फल	१४०
अन्य-मतसे चरणोंकाफल	१४०
ज्येष्ठा के चरणों का फल	१४०
मूल-वास-विचार	१४१
बालक के प्रथम दुग्ध-पान का मुहूर्त	१४१
सूतिका को काढ़ा देने का मुहूर्त	१४१
सूतिका-पथ्य-मुहूर्त	१४२
लिङ्गाण्डच्छेदन-मुहूर्त....	१४२
फ़ारसी की शुभाशुभ-तारीखों का विचार	१४२
मूल-संज्ञक नक्षत्रों का विचार	१४३
तिथि-गण्डान्त-विचार	१४३
लग्न-गण्डान्त-विचार	१४३
गण्डान्तों के फल	१४३
अग्निहोत्र-मुहूर्त	१४४
अन्य-मत से पुनः विचार	१४४

विषय	पृष्ठ
पुनः अन्य-मत से विचार	१४५
यज्ञोपवीत-मुहूर्त	१४५
पुनः यज्ञोपवीत-मुहूर्त....	१४६
यज्ञोपवीत में नवांश का विचार	१४७
यज्ञोपवीत में चंद्र के नवांश का फल	१४७
यज्ञोपवीत में कुयोग आदि का विचार	१४८
प्रदोष का विचार	१४८
यज्ञोपवीत में अनध्याय-विचार	१४९
मुण्डन आदि में कुयोगों का विचार	१४९
ग्रह-युक्तकुयोग-विचार	१४९
यज्ञोपवीत में गुर्वादित्य-विचार	१५०
बृहस्पति का परिहार	१५१
यज्ञोपवीत-लग्न में केन्द्रस्थ ग्रहों के फल	१५१
पुनः गुरु-परिहार	१५१
राजाओं के छुरिका-बंधन का मुहूर्त	१५२
विवाह-मुहूर्त	१५३

विषय	पृष्ठ
वर-वरण-मुहूर्त	१५३
पुनः वर-वरण-मुहूर्त	१५३
विवाह में जन्म-मास आदि का निषेध	१५४
ज्येष्ठ-मास-निषेध	१५४
विवाह में मंडप छावने आदि का मुहूर्त	१५४
विवाह के अनंतर अन्य संस्कारों का निषेध	१५५
पञ्चशलाका-वेध-चक्र और उसका फल	१५६
लत्ता-दोष का विचार	१५७
पात-दोष का विचार	१५८
युति-दोष का विचार	१५८
यामित्र-दोष-विचार	१५९
पञ्चक-दोष-विचार	१५९
पञ्चक-दोष का परिहार	१६०
विवाह-लग्न में ग्रहों का विचार	१६०
एकार्गल-दोष-विचार	१६१
उपग्रह-दोष-विचार	१६२
क्रान्ति-दोष-विचार	१६२
दग्धा-तिथि-विचार	१६२
लत्ता आदि दोषों का परिहार	१६३
गांधर्व-विवाह-चक्र-विचार	१६३
स्वयंवर-मुहूर्त	१६३
गोधूलिका-विचार	१६४
अन्धादि-लग्न-विचार और फल	१६४
पुनः अन्य-मत से फल	१६५
विवाह में कर्तरी-दोष-विचार	१६५
कुलिक-योग-विचार	१६५
नवांश-विचार, चक्र और उदाहरण	१६६
होरा-विचार और चक्र	१६८
द्रेष्काण-विचार और चक्र	१६८
त्रिंशांश-विचार और चक्र	१७०
द्वादशांश-विचार और उदाहरण	१७१
ग्रहों का गेह-चक्र	१७२
द्वादशांश-चक्र	१७३
होढा-चक्र	१७४

विवाह-विचार

विषय	पृष्ठ
वर्ण आदि के गुणों का विचार	१७५
वर्ण-विचार तथा चक्र	१७५

विषय	पृष्ठ
वश्य-विचार तथा चक्र	१७६
तारा-विचार	१७७
योनि-विचार	१७७
योनि-वैर-विचार	१७८
योनि-चक्र	१७८
ग्रह-मैत्री-विचार तथा चक्र	१७८
गण-मैत्री-विचार, फल तथा चक्र	१७९
भकूट-विचार	१८१
मृत्यु-षड्‌ष्टक-विचार	१८१
वृद्धि-षडष्टक-विचार	१८१
वर्ग के गुणों का विचार तथा चक्र	१८१
नाडी-विचार, फल तथा चक्र	१८२
विवाह में निषिद्ध नक्षत्र	१८३
भकूट आदि का परिहार	१८३
गण-परिहार	१८४
नाडी तथा गण-दोष-परिहार	१८४
वर्ण आदि के दोष का परिहार	१८५
पुनः परिहार	१८५
नव-पञ्चक-परिहार	१८६
मंगली-विचार	१८६

विषय	पृष्ठ
मंगल का परिहार	१८६
नाडी आदि के दान का विधान	१८६
गुणों के अनुसार शुभाशुभ-फल	१८७
तारा के गुण	१८८
योनि के गुण	१८८
मैत्री के गुण	१८८
गण-मैत्री के गुण	१८९
भकूट के गुण	१८९
नाडी के गुण	१८९
वर्ण-दोष का परिहार	१९०
राशि, स्वामी और वर्ण का चक्र	१९०
वधू-प्रवेश-मुहूर्त	१९०
द्विरागमन-मुहूर्त	१९१
शुक्र का परिहार	१९२
गोत्र-भेद से शुक्र-परिहार	१९२
पुनः शुक्र-परिहार	१९२
शुक्रांध के अनुसार परिहार	१९३
शुक्रांध-विचार	१९३
दान द्वारा शुक्र-परिहार	१९३
त्रिरागमन-मुहूर्त	१९४
त्रिरागमन में मासिक राहु	

विषय	पृष्ठ
का विचार	.... १६४
राहु का फल	.... १६४
त्रैमासिक-राहु-विचार	.... १६५
गृहारम्भ-मुहूर्त	.... १६५
भूमि का लक्षण	.... १६६
ग्रहों का विचार	.... १६६
गृहारम्भ-चक्र	.... १६६
ग्राम का ऋण-धन-विचार और उदाहरण	.... १६७
गृहारम्भ मेंराहु-मुख-चक्र	१६८
मकान के दूसरे के हाथ में जानेवाले योग	.... १६६
राक्षसों और भूतों के निवास का विचार	.... १६६
ग्राम-वास का फल	.... १६६
ग्राम-राशि-विचार	.... २००
ग्राम-निवासमें दिग्विचार	२००
पिण्ड-विचार	.... २०२
आय और द्वार-विचार	.... २०३
पुनःआय-विचारऔरफल	२०३
इष्टर्क्ष-विचार और चक्र	२०४
खनन-विचार	.... २०६
शुभाशुभभूमि-विचार	.... २०६
घर में रसोई-घर आदि का विचार	.... २०६
गृह-चक्र	.... २०७
मकान की आयु का विचार	.... २०७
गृह-नाश-योग	.... २०८
चन्द्र-नक्षत्र-विचार	.... २०८
मकान के ध्रुव आदि नामों का विचार	.... २०६
गृहाख्य शुभाशुभ फल-चक्र	.... २१०
अंश-फल-विचार	.... २१०
ध्रुवादिकों के नामाक्षर जानने की संख्या	.... २१०
पृथ्वी-शोधन-प्रकार	.... २११
प्रश्नाक्षरों के फल	.... २११
द्वार-मुहूर्त	.... २१३
द्वार-चक्र	.... २१३
कपाट-चक्र	.... २१४
द्वार-मुख-विचार	.... २१५
द्वार-विचार	.... २१५
सूत्र-विचार	.... २१६
गृह-प्रवेश-मुहूर्त	.... २१६
गृह-प्रवेश-विचार	.... २१७
गृह-प्रवेश में कुम्भ-चक्र	२१७

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
वाम-रवि-विचार	२१६	चन्द्र-वास-विचार और चक्र	२२८
ग्रह-बलाबल-विचार	२१६	चन्द्र-फल	२२८
दशा-चक्र	२२०	प्रस्थान प्रकार	२२६
देवालय आदि के आरंभ का मुहूर्त	२२०	प्रस्थान-प्रमाण-विचार	२२६
यात्रा-मुहूर्त-विचार	२२१	यात्रा में दुग्धादि-वर्जन	२३०
दिक्शूल-विचार	२२१	वार-दोहद	२३०
वार-नक्षत्र-शूल-चक्र....	२२२	नक्षत्र-दोहद	२३१
विदिक्शूल-विचार	२२२	तिथि-दोहद	२३३
शूल-दोष-निवारणार्थभक्ष्य	२२२	परिघ दण्ड-विचार और चक्र	२३३
सर्वदिग्गमन नक्षत्र-विचार	२२२	सूर्य-होरा-फल	२३४
योगिनी-विचार और चक्र	२२३	चन्द्र-होरा-फल	२३५
काल-पाश-योग-विचार	२२३	भौम-होरा-फल	२३५
यात्रा में अनिष्ट-लग्न-विचार	२२५	बुध-होरा-फल	२३५
मृत्यु-योग	२२५	गुरु-होरा-फल	२३६
वाञ्छित-योग	२२५	शुक्र-होरा-फल	२३६
लग्न-फल	२२६	शनि-होरा-फल	२३६
लग्न-वास-चन्द्र-वास-चक्र	२२६	मार्गमेंशुभ शकुन-विचार	२३७
यात्रा में वर्जित काल-विचार	२२६	पुनः शुभ-शकुन-विचार	२३८
वर्णानुसार मुहूर्त-विचार	२२७	अशुभ-शकुन-विचार	२३६
दिशा-क्रमसेवाहन-विचार	२२७	दुःशकुन-परिहार	२४०
यात्रा में दिशा-दोहद....	२२७	चन्द्र-घात-विचारऔरचक्र	२४०
		तिथि-घात-विचारऔरचक्र	२४१

विषय	पृष्ठ
नक्षत्रघात-विचार और चक्र	२४२
घात-लग्न	२४२
सर्वाङ्क-विचार....	२४३
नक्षत्रोंकी निषिद्ध नाडियाँ	२४३
महाडल-दोष	२४४
हिम्बर-योग	२४४
पन्था-राहु-विचार और चक्र	२४५
पन्था-राहु-फल	२४५
अन्य-मत से पुनः फल	२४६
ग्रहानुसार यात्रा में शुभ-योग-विचार	२४६
योग,अधियोग और योगाधियोग-विचार....	२४६
यात्रा-विषयक तिथि-चक्र	२५०
युद्ध-यात्रा-विचार	२५२
याम-राहु-विचार औरचक्र	२५३
पञ्चस्वर-चक्र-विचार....	२५३
युद्ध-यात्रा में अकुलादि नक्षत्र-विचार	२५७
घात-वार-विचार औरचक्र	२५७
ग्रह-योग-विचार	२५८
शत्रुञ्जय-योग और चक्र	२६०

विषय	पृष्ठ
पुण्डरीक-योग और चक्र	२६०
कामद-योग और चक्र....	२६१
पूर्ण-चन्द्र-योग और चक्र	२६२
मृगेन्द्र-योग और चक्र....	२६२
चन्द्रकालानल-चक्र	२६३
युद्ध-नाडी-विचार, चक्र और फल	२६४
भूमि-बलाबल-विचार....	२६४
युद्ध में नारद-विचार....	२६५
युद्ध-काल-विचार	२६५
शस्त्र-घट्टन-युक्ति-विचार	२६५
शस्त्र-लेपन-विचार	२६६
यात्रा के अंत में गृह-प्रवेश-मुहूर्त	२६६
शिवद्विघटिका-मुहूर्त	
मुहूर्त-विचार	२६८
मुहूर्त-कर्म-विचार	२६६
वार-क्रम से मुहूर्तोदय-विचार	२७०
गुणोदय-विचार	२७१
गुणों का वास	२७१
गुणों के वर्ण	२७१
गुणों का फल	२७२
मुहूर्तों की रेखाएँ	२७२

विषय	पृष्ठ
रेखाओं का स्वरूप	२७२
रेखाओं का फल	२७३
राशियों के घात-गुण....	२७३
राशियों के वर्ण और फल	२७३
महीनों में मुहूर्त-व्यवस्था	२७४
कार्तिक आदि के रविवार आदि की मुहूर्त-रेखाओं का विचार	२७८
ज्येष्ठ, मलमास आदि की रेखाएँ	२८३
षोडश मुहूर्त-चक्र	२८७
मुहूर्तोदय-चक्र	२८७
गुणोदय-चक्र	२८८
रेखा-ज्ञान चक्र	२८८
राशियों के अनुसार गुण, गुण-वर्ण, घात-लग्न और घात-वर्ण-विचार	२८८
रवि-दिन-मुहूर्त-चक्र	२८९
रवि-रात्रि-मुहूर्त-चक्र....	२८९
चन्द्र-दिन-मुहूर्त-चक्र....	२९०
चन्द्र-रात्रि-मुहूर्त-चक्र....	२९०
भौम-दिन-मुहूर्त-चक्र	२९१
भौम-रात्रि-मुहूर्त-चक्र....	२९१
बुध-दिन-मुहूर्त-चक्र	२९२
बुध-रात्रि-मुहूर्त-चक्र....	२९२
गुरु-दिन-मुहूर्त-चक्र	२९३
गुरु-रात्रि-मुहूर्त-चक्र	२९३
शुक्र-दिन-मुहूर्त-चक्र	२९४
शुक्र-रात्रि-मुहूर्त-चक्र....	२९४
शनि-दिन-मुहूर्त-चक्र....	२९५
शनि-रात्रि-मुहूर्त-चक्र....	२९५

ताजिक-प्रकरण ॥ ३ ॥

विषय	पृष्ठ
वर्ष-प्रवेश का प्रकार	२९६
चन्द्र को छोड़कर रवि आदि ग्रहों का स्पष्टीकरण	२९७
चन्द्र का स्पष्टीकरण....	२९८
भभोग और भयात लाने का प्रकार	२९९
अयनांश लाने की रीति	३००
लखनऊ में लग्नों का प्रमाण	३००
लग्न का स्पष्टीकरण	३००
लग्न से इष्ट-काल लाने का क्रम	३०२
सूर्य और लग्न एक राशि के हों, तो इष्ट-काल लाने का क्रम	३०२

विषय	पृष्ठ
मास-प्रवेश-विचार	३०३
त्रिपताकी-चक्र	३०३
पञ्चाधिकारी-विचार....	३०५
त्रिराशिप-विचार और चक्र	३०५
दृष्टि-चक्र	३०६
क्षेत्रादिबल-चक्र	३०७
स्वगृह-संज्ञा-चक्र	३०७
मित्र, सम और शत्रु-संज्ञा-चक्र	३०७
उच्च बल-ज्ञान और नवांश-ज्ञान	३०७
सूर्यादि ग्रहों का उच्च-स्थान	३०८
सूर्यादि ग्रहों की परमोच्चता	३०८
उच्च-नीच-चक्र	३०८
नवांश-चक्र	३०९
नवांश-प्रमाण-चक्र	३०९
नवांश-बल-चक्र	३०९
हद्दा-प्रमाण-चक्र	३१०
हद्दा-बल-चक्र	३१०
द्रेष्काण-चक्र	३११
द्रेष्काण-बल-चक्र	३११
वर्षेश-फल	३११
वर्षेश का निर्णय	३१२
बल निकालने का यन्त्र	३१२
मुन्था-विचार....	३१२
मुद्दा-दशा निकालने की रीति	३१२
दशा-प्रमाण-चक्र	३१३
लग्नस्थ मुंथा का फल	३१३
धनस्थ ,, ,,	३१३
सहजस्थ ,, ,,	३१४
सुखभावस्थ ,, ,,	३१४
पंचमभावस्थ ,, ,,	३१४
अरिभावस्थ ,, ,,	३१५
सप्तम भावस्थ ,, ,,	३१५
अष्टम भावस्थ ,, ,,	३१५
नवमभावस्थ ,, ,,	३१६
दशमभावस्थ ,, ,,	३१६
आयभावस्थ ,, ,,	३१६
व्ययभावस्थ ,, ,,	३१७
अरिष्ट-योग	३१७
अरिष्ट-भंग-योग	३१७
भावानुसार ग्रहों के फल और चक्र	३१८

ताजिक-प्रकरण समाप्त

विषय	पृष्ठ
जातक-प्रकरण ॥ ४ ॥	
दिनेष्ट लानेका प्रकार	३२३
मास-ध्रुव-चक्र	३२३
रात्रीष्ट लाने की रीति	३२३
नक्षत्र-प्रचार-विचार और चक्र	३२४
नक्षत्रोदय-विचारऔरचक्र	३२५
नक्षत्र-स्वरूप-चक्र	३२६
राशि-स्वामियों का चक्र	३२७
उच्चनीच-गृह-विचार और चक्र	३२७
योगिनी दशा लाने की रीति	
दशा-क्रम-विचार	३२८
दशाओं के स्वामी	३२८
दशा-चक्र	३२६
भुक्त-भोग्य-दशा-प्रकार	३२६
अन्तर्दशा लाने की रीति	३३०
मंगलान्तर्दशा-चक्र	३३०
पिंगलान्तर्दशा-चक्र	३३१
धान्यान्तर्दशा-चक्र	३३१
भ्रामर्यन्तर्दशा-चक्र	३३१
भद्रिकान्तर्दशा-चक्र	३३१
उल्कान्तर्दशा-चक्र	३३२
सिद्धान्तर्दशा-चक्र	३३२
सङ्कटान्तर्दशा-चक्र	३३२
योगिनी-दशा-फल	
मंगलादशा-फल	३३२
पिंगलादशा-फल	३३३
धान्यादशा-फल	३३३
भ्रामरीदशा-फल	३३३
भद्रिकादशा-फल	३३४
उल्कादशा-फल	३३४
सिद्धादशा-फल	३३४
सङ्कटादशा-फल	३३५
अष्टोत्तरीदशा-चक्र	
विंशोत्तरीमहादशा-प्रकार	३३७
तथा चक्र	३३७
सूर्यान्तर्दशा-चक्र	३३८
चन्द्रान्तर्दशा-चक्र	३३८
भौमान्तर्दशा-चक्र	३३८
राह्वन्तर्दशा-चक्र	३३८
गुर्वन्तर्दशा-चक्र	३३६
शनैश्चरान्तर्दशा-चक्र	३३६
बुधान्तर्दशा-चक्र	३३६
केत्वन्तर्दशा-चक्र	३३६
शुक्रान्तर्दशा-चक्र	३४०
ग्रहों की दृष्टियाँ	३४०

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
दृष्टि-चक्र	३४०	द्वितीय वर्ष में मृत्यु-योग	३५०
ग्रह-भाव-फल....	३४०	सातवें दिन या मास में मृत्यु-योग	३५०
तथा चक्र	३४३	अन्य-मत से बारहवें वर्ष में मृत्यु-योग	३५१
द्वादश-भाव-ज्ञान	३४५	मात्ररिष्ट-योग	३५१
शुभ योग	३४५	भ्रातृ-नाशक-योग	३५१
अशुभ योग	३४५	परमायु-योग	३५१
माता-पिता-भयप्रद-योग	३४५	परजात-लक्षण	३५१
पिता-नाश-योग	३४६	दूसरे परजात लक्षण	३५२
बारहवें वर्ष में मृत्यु-योग	३४६	ग्रह-दृष्टि-विचार	३५२
चौथे वर्ष में ,,	३४६	भार्या-मरण-योग	३५३
आठवें ,, ,,	३४६	राजयोग	३५३
सोलहवें ,, ,,	३४७	अन्य-मत से राजयोग	३५३
दारिद्र्य-योग	३४७	मारकेश-विचार	३५३
मृत्यु-योग	३४७	पाराशरोक्त आयु-निर्णय	३५४
अन्य-मत से मृत्यु-योग	३४७	सूर्यदशा-फल....	३५४
पुनः ,, ,, ,,	३४८	चन्द्रदशा-फल	३५५
क्षीण-पूर्णचन्द्र-निर्णय	३४८	भौमदशा-फल	३५५
ग्रह-बल-निर्बल-चक्र	३४८	राहुदशा-फल	३५६
जातिभ्रंशकारकयोग	३४९	गुरुदशा-फल	३५६
अन्य-मत से पुनः मृत्यु-योग	३४९	शनिदशा-फल	३५६
एक मास में मृत्यु-योग	३४९	बुधदशा-फल....	३५७
विष-दोष से ,, ,,	३४९		
एक वर्ष में ,, ,,	३५०		
दश दिन में मृत्यु-योग	३५०		

विषय	पृष्ठ
केतुदशा-फल	३५७
शुक्रदशा-फल	३५७
डिम्भाख्य-चक्र	३५८
मूलवृत्त-चक्र और फल	३५९
स्त्री-जातक-विचार	३६१
स्त्री-राजयोग	३६२
स्त्री-डिम्भाख्य-चक्र	३६३
स्त्रीभावस्थ ग्रह-फल	
तनुस्थानगत ग्रह-फल	३६४
धनस्थानगत ,,	३६४
सहजस्थानगत ,,	३६४
सुहृत्स्थानगत ,,	३६४
सुतस्थानगत ,,	३६५
रिपुस्थानगत ,,	३६५
जायास्थानगत ,,	३६५
मृत्युस्थानगत ,,	३६५
धर्मस्थानगत ,,	३६५
कर्मस्थानगत ,,	३६६
आयस्थानगत ,,	३६६
व्ययस्थानगत ,,	३६६
भावफल-चक्र....	३६७

जातक-प्रकरण समाप्त

विषय	पृष्ठ
मिश्र-प्रकरणम् ॥ ५ ॥	
गोचर-फल	
सूर्य-फल	३६८
चन्द्र-फल	३६८
भौम-फल	३६९
बुध-फल	३६९
गुरु-फल	३६९
शुक्र-फल	३७०
शनि-फल	३७०
राहु-केतु-फल....	३७१
गोचर-चक्र	३७२
ग्रहों के दान	
सूर्य-दान	३७३
चन्द्र-दान	३७३
भौम-दान	३७३
बुध-दान	३७३
गुरु-दान	३७३
शुक्र-दान	३७४
नवग्रह-दान-चक्र	३७५
नवग्रहों की जप-संख्या	३७६
जप-संख्या-चक्र	३७६
ग्रह-राशि-प्रमाण	३७६
दिन-दशा-ज्ञान	३७७

विषय	पृष्ठ
दिन-दशा-चक्र	३७७
ग्रहों का फल-काल	३७७
अन्य राशि में जानेवाले ग्रहों का पूर्व-फल	३७८
स्वराशि द्वारा ग्रहण-फल	३७८
स्वशरीर में शनिवास-फल	३७६
शनि-वाहन-विचार	३७६
पुनः ,, ,, ...	३८०
शनि-नक्षत्र से वाहन-चक्र	३८०
तृतीय प्रकार से शनि-वाहन विचार और फल	३८१
शनि के चरणों का विचार और फल	३८२
एक पक्ष में १३ तिथियों का फल	३८२
केतूदय-फल	३८२
इन्द्र-धनुष आदि का फल	३८३
केतूदय-नक्षत्र-फल	३८३
लग्न-वर्ण-चक्र	३८६
ग्रहों की संज्ञाएँ	३८६
बालक के जन्म समय में लग्न-निर्णय	३८६
ग्रहों का द्वादशभावस्थित दिशा-चक्र....	३८८

विषय	पृष्ठ
संक्रांति-विचार	
संक्रान्ति-चक्र	३६०
पुनः संक्रान्ति-चक्र	३६०
संक्रान्ति-निर्णय	३६०
द्वितीय प्रकार से संक्रान्ति-निर्णय	३६१
तृतीय प्रकार से संक्रान्ति-निर्णय	३६२
चौथे प्रकार से संक्रान्ति-निर्णय	३६२
जघन्य-बृहत्समनक्षत्र-विचार और फल	३६४
अर्घ-ज्ञान	३६५
ग्रंथान्तर से अर्घवर्षण-विचार	३६५
शुभ-कृत्य में संक्रान्ति-वर्जन-विचार	३६६
स्वराशि से संक्रान्ति-बलाबल-विचार	३६६
संक्रांति-नक्षत्र-चक्र	३६६
संक्रांति के वाहन, वस्त्र, आयुध, भक्ष्य और लेपन आदि का विचार और चक्र	३६७

विषय — पृष्ठ

भौमवती-अमावस्या-पर्व योग ३९९
कपिला-षष्ठी-पर्वयोग ४००
पुष्कर-पर्वयोग ४००
वारुणी-पर्वयोग ४००
गोविंद-द्वादशी-पर्वयोग ४०१
अर्धोदय और महोदय-पर्वयोग ४०१
वृष्टि-विचार और फल ४०२
दूसरे प्रकार से वृष्टि-विचार और फल ४०२
वृष्टि-वाहन-विचार ४०३
ग्रहपरत्वेन वृष्टि-विचार ४०३
अवर्षण-योग ४०४
अङ्गस्फुरण-विचार ४०४
खंजन-दर्शन-फल ४०५
राजभंगादि-योग ४०६

प्रश्न-विचार

रामादि-प्रश्न और चक्र ४०६
पञ्चदशी यंत्र-प्रश्न और चक्र ४०७
पल्ली-पतन-विचार ४०८
छिक्का-पल्ली-जंबुक-प्रश्न ४०८

विषय — पृष्ठ

अन्य-मत से छिक्का-काक-शृगाल-विचार ४०९
गर्भिणी-प्रश्न ४०९
तथा चक्र ४१०
चौर-प्रश्न-ज्ञान ४१०
अंधादि-नक्षत्र-चक्र ४११
नष्ट-लाभ-ज्ञान ४११
लाभालाभ-प्रश्न-ज्ञान ४१२
प्रश्नकाल में लाभालाभ-शुभाशुभ-ज्ञान ४१२
विदेशी-प्रश्न-ज्ञान ४१३
तिथ्यादिप्रयुक्त-प्रश्न-ज्ञान और फल ४१४
कार्याकार्य-प्रश्न-ज्ञान और फल ४१४
वार-नक्षत्र-युक्तपंथा-प्रश्न ४१४
लग्न से मनश्चिंतित-प्रश्न-ज्ञान ४१५
धातु-मूल-जीव-ज्ञान ४१६
संज्ञा-क्रम से लग्नों के नाम का चक्र ४१६
नष्ट पशु-प्रश्न ४१६
संक्रान्ति-वार-फल ४१७
रवि-चन्द्र-मण्डल-विचार ४१७

विषय	पृष्ठ
इन्द्रधनुषादि योग	४१७
कार्य-भेद से सूर्यादि-बल ज्ञान	४१८
स्वप्न-विचार	४१८
व्रतादि-निर्णय	४२४
नवरात्र-निर्णय	४२४
हरतालिका-निर्णय	४२४
अन्य-मत से गौरी-व्रत-निर्णय	४२४
नागपञ्चमी-निर्णय	४२५
पुनः दूसरे प्रकारसे निर्णय	४२५
कहुला-व्रत-निर्णय	४२५
दूर्वाष्टमी-निर्णय	४२६
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-निर्णय	४२६
ऋषिपञ्चमी-निर्णय	४२६
अनंत-चतुर्दशी-निर्णय	४२७
नृसिंह-चतुर्दशी-निर्णय	४२७
शिवरात्रि-चतुर्दशी-निर्णय	४२७
महालक्ष्मी-व्रत-निर्णय	४२७
करकचतुर्थी-निर्णय	४२८
विजया दशमी-निर्णय	४२८
एकादशी-निर्णय	४२८
गुणगौरि-निर्णय	४२९
संकष्टहरण चतुर्थी-निर्णय	४२९
श्रावणी-निर्णय	४३०
दीपमालिका-निर्णय	४३०
होलिका-निर्णय	४३१
सामान्य-तिथि-निर्णय और चक्र	४३१
संग्रह-समाप्ति-वर्णन	४३२

बृहज्ज्योतिःसार की विषयानुक्रमणिका समाप्त।



श्रीगणेशाय नमः ।

बृहज्ज्योतिःसार

सटीक ।

गणाधिपं नमस्कृत्य ज्योतिःसारसुसंग्रहम् ।
सूर्यनारायणः कुर्वे लोकानां हितकाम्यया ॥ १ ॥

गणेशजी को नमस्कार करके सर्वसाधारण के लाभार्थ, ज्योतिःशास्त्र के सारांश का संग्रह मैं सूर्यनारायण करता हूँ ॥ १ ॥

अथ संवत्सरप्रकरणम् ।

तत्रादौ संवत्सरोत्पत्तिर्व्याख्यायते ।

शककालः पृथक्संस्थो द्वाविंशत्या २२ हतस्त्वथ ।
भूनंदाश्व्यब्धि ४२९१ युग्भक्तोबाणशैलगजेन्दुभिः १८७५
लब्धियुग्विहृतः षष्ट्या ६० शेषे स्युर्गतवत्सराः ।
बार्हस्पत्येन मानेन प्रभवाद्याः क्रमादमी ॥ २ ॥

शक को दो जगह रखकर प्रथम को बाईस से गुणा करना उसमें चार हज़ार दो सौ इक्यानबे जोड़कर एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग देना ॥ १ ॥ जो अङ्क लब्ध मिले उसे दूसरे शक में जोड़ देना फिर उस अङ्क में साठ का भाग देना जो शेष बचे वेही बृहस्पति के मत से प्रभवादि गत संवत्सर होते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण ।

श्रीसंवत् १९४८ शक १८१३, इस शक को दूसरी जगह स्थापित किया १८१३, इसे बाईस से गुणा किया ३९८८६ हुए। इसमें चार हज़ार दो सौ इक्यानवे जोड़ दिये ४४१७७ हुए, इस अङ्क में एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग दिया तो लब्ध मिले २३, इसे प्रथम शक में जोड़ दिया १८३६ हुए, इस अङ्क में साठ का भाग दिया तो शेष बचे ३६, प्रवेश ३७ अर्थात् प्रभवादि संवत्सर से छत्तीसवां गत हुआ। और सैंतीसवें का प्रवेश हुआ, इसका नाम शोभन संवत्सर है।

अब संवत्सर के भुक्तमासादि वा भोग्यमासादि का उदाहरण लिखते हैं। एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से जो शेषाङ्क बचा है, उसे बारह से गुणा करना, फिर एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग देना, लब्ध संवत्सर के भुक्त मास होते हैं। फिर शेषाङ्क को तीस से गुणा करके एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से लब्ध भुक्त दिन मिलेंगे। शेषाङ्क को साठ से गुणा करके एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से लब्ध भुक्तघटी होती हैं। फिर शेषाङ्क को साठ से गुणा करके एक हज़ार आठ सौ पचहत्तर का भाग देने से लब्ध भुक्त पल मिलेंगे। भुक्त मासादि को बारह में घटाने से भोग्य मासादि हो जायँगे ॥ १—२ ॥

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदश्च प्रजापतिः।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ १ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ २ ॥
इति ब्रह्मविंशतिः ॥

ब्रह्मविंशति—प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५ अङ्गिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ॥१॥ ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृष १५ चित्रभानु १६ सुभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० ॥ २ ॥

सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ३ ॥
हेमलम्बो विलम्बश्च विकारी शर्वरी प्लवः ।
शुभकृत् शोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ४ ॥
इति विष्णुविंशतिः ॥

विष्णुविंशति—सर्वजित् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृत ४ खर ५ नन्दन ६ विजय ७ जय ८ मन्मथ ९ दुर्मुख १० ॥ ३ ॥ हेमलम्ब ११ विलम्ब १२ विकारी १३ शर्वरी १४ प्लव १५ शुभ-कृत् १६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभव २० ॥ ४ ॥

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधकौ ।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥ ५ ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थौ रौद्रदुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥ ६ ॥
इति रुद्रविंशतिः ॥

रुद्रविंशति—प्लवङ्ग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ विरो-धक ५ परिधावी ६ प्रमादी ७ आनन्द ८ राक्षस ९ नल १० ॥५॥ पिङ्गल ११ कालयुक्त १२ सिद्धार्थ १३ रौद्र १४ दुर्मति १५ दुन्दुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ ~~सक्षस~~ रक्ताक्ष १८ क्रोधन १९ क्षय २० ॥६॥

अथ ऋतुज्ञानं तथायनज्ञानम् ।

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं
ह्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ।
भवति दक्षिणमन्यदृतुत्रयं
निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १ ॥
मृगादिराशिद्वयभानुभोगा-
त्षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्व-
द्धेमन्तनामा कथितोऽत्र षष्ठः ॥ २ ॥

शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, इन तीनों ऋतुओं में सूर्य उत्तरायण होते हैं । उसमें देवताओं का दिन होता है । तथा वर्षा, शरद्, हेमन्त इन तीनों ऋतुओं में सूर्य दक्षिणायन होते हैं । उसमें देवताओं की रात्रि होती है ॥ १ ॥ मकर, कुम्भ के सूर्यों में शिशिरऋतु । मीन, मेष में वसन्तऋतु । वृष, मिथुन में ग्रीष्मऋतु । तथा कर्क, सिंह में वर्षाऋतु । कन्या, तुला के सूर्यों में शरद्ऋतु और वृश्चिक, धन के सूर्यों में हेमन्तऋतु होती है ॥ २ ॥

अथ ऋतुचक्रम् ।

१०।११	१२।१	२।३	४।५	६।७	८।९	सूर्यराशि
शिशिर	वसन्त	ग्रीष्म	वर्षा	शरद्	हेमन्त	ऋतु

अथायनमध्ये शुभाशुभकर्म ।

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबन्धदीक्षाः ।
सौम्यायनेकर्मशुभंविधेयंयद्गर्हितंतत्खलु दक्षिणे च॥१॥

गृहप्रवेश, विवाह, देवप्रतिष्ठा, मुण्डन, जनेऊ और दीक्षाकर्म इतने कार्य उत्तरायण सूर्य में करना शुभ हैं। और अशुभ कर्म दक्षिणायन में शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ संवत्सरस्वामिनः ।

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्याम् ।
भवन्तितेषामधिदेवताश्च क्रमेणवक्ष्यामिमुनिप्रणीताः १
विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा चाहिर्बुध्नः पितरः ।
विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥२॥

पांचवर्ष की एक युग की संख्या होती है। प्रभवादि साठ वर्ष में बारह युग होते हैं। उन वर्षों के अधिदेवता क्रम से मुनियों ने कहे हैं ॥१॥ प्रभवादि पांचवर्ष के स्वामी विष्णु हैं, बाद इसके पांचवर्ष के स्वामी बृहस्पति हैं, फिर क्रम से पांच वर्ष के स्वामी इन्द्र हैं, पांचवर्ष के स्वामी अग्नि हैं, पांचवर्ष के स्वामी त्वष्टा देव हैं, पांचवर्ष के स्वामी अहिर्बुध्न हैं, पांचवर्ष के स्वामी पितर हैं, पांचवर्ष के स्वामी विश्वेदेव हैं, पांचवर्ष के स्वामी चन्द्रमा हैं, पांचवर्ष के स्वामी अग्नि हैं, पांचवर्ष के स्वामी अश्विनीकुमार हैं, फिर पांचवर्ष के स्वामी भगदेव हैं ॥ २ ॥

अथ मासज्ञानम् ।

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं
सौरं तथा भास्करराशिभोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावनसञ्ज्ञमाहु-
र्नाक्षत्रमिन्दोर्भगणभ्रमाच्च ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस तक चान्द्रमास और संक्रान्ति से संक्रान्ति तक सौरमास कहा जाता है। और कृष्ण

पक्ष की प्रतिपदा से शुक्लपक्ष की पूर्णमासी तक सावनमास । और नक्षत्र से नक्षत्रतक चन्द्रमा का नक्षत्रसंज्ञक मास होता है । अर्थात् चित्रानक्षत्र से स्वाती तक चैत्र, और विशाखा से अनुराधा तक वैशाख होता है । ज्येष्ठा से मूल तक ज्येष्ठ और पूर्वाषाढ़ से अभिजित् तक आषाढ़ होता है । श्रवण से शतभिषा तक श्रावण मास, और पूर्वाभाद्रपद से रेवती तक भाद्रपद होता है । अश्विनी से भरणी तक आश्विनमास, और कृत्तिका से रोहिणी तक कार्त्तिक मास होता है । मृगशिरा से पुनर्वसु तक मार्गशीर्ष, और पुष्य से श्लेषा तक पौषमास होता है । मघा से पूर्वाफाल्गुनी तक माघ महीना और उत्तराफाल्गुनी से हस्त तक फाल्गुनमास होता है । इसी प्रकार से बारहों मास तीस तीस नक्षत्र के होते हैं ।

उदाहरण ।

चैत्रमास—चित्रा से हस्त तक अभिजित् समेत अट्ठाइस हुए । फिर द्वितीयावृत्ति का चित्रा उन्तीसवां हुआ । और द्वितीयावृत्ति में स्वाती तक तीसों नक्षत्र हो गये । अर्थात् द्वितीयावृत्ति की स्वाती तक चैत्रमास का अन्त जानिये । इसी प्रकार से सब मास का क्रम जानना चाहिए ॥ १ ॥

अथ कार्यभेदेन मासज्ञानम् ।

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनो मतः ।
पितृकार्येषु चान्द्रं च ऋक्षं दानव्रतेष्वपि ॥ १ ॥

विवाहादि कार्य में सौरसंज्ञक मास और यज्ञादिक में सावनसंज्ञक मास ग्रहण करना चाहिये । तथा पितृकार्य में चान्द्रसंज्ञक मास और व्रत दानादि में नाक्षत्रमास ग्रहण करना चाहिये ॥ १ ॥

इति मासनिर्णयः ।

अथ क्षयमासमलमासज्ञानम् ।

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
भवेत्कार्त्तिकादित्रये नान्यतः स्या-
त्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥ १ ॥

जो महीना संक्रान्तिहीन होजाय अर्थात् संक्रान्ति न हो वह महीना मलमास का जानिये । और जिस महीने में दो संक्रान्ति हों वह महीना क्षयमास का होता है । वह कभी कभी पड़ता है, हमेशा नहीं होता है । और क्षयमास मलमास के निर्णय में चन्द्रमास लेना चाहिए । अर्थात् शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस तक चान्द्रमास का प्रमाण है और कार्त्तिकादि तीन मास में क्षयमास होता है । और महीनों में नहीं होता है । अर्थात् कार्त्तिक, अगहन, पौष सिवाय इनके और में क्षयमास नहीं होता है । और जब क्षयमास आता है, तब वर्ष में दो मलमास पड़ते हैं ॥ १ ॥

अथ संवत्सरमध्ये राजादिज्ञानम् ।

चैत्रादिमेषादिकुलीरतौलि-
मृगादिवाराधिपतिक्रमेण ।
राजा च मन्त्री त्वथ शस्यनाथो
रसाधिपो नीरसनायकश्च ॥ १ ॥

चैत्रशुक्लपक्ष की प्रतिपदा को जो वार हो, वही संवत्सर का राजा होता है । मेष की संक्रान्ति को जो वार हो, वही मन्त्री होता है । और कर्क की संक्रान्ति को जो वार हो, वही शस्यनाथ (खेती का स्वामी) होता है । और तुला की संक्रान्ति को जो वार पड़े

वह रसाधिप होता है । और मकर की संक्रान्ति को जो वार हो वह नीरसाधिप होता है ॥ १ ॥

अथ मतान्तरेण राजादिज्ञानचक्रम् ।

मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	संक्रां०
मंत्री	कोशाधिप	मेघाधिप तथा अर्घाधिप	सस्याधिप	सैन्याधिप	गजाधिप	रसाधिप	आज्ञाधिप	धान्याधिप	नीरसाधिप	व्यवहाराधिप	व्यापाराधिप	संवत्सर कार्याधिप

जिस संक्रान्ति में जो वार हो, वही कार्याधिप मेषादि क्रम से चक्र के अनुसार समझ लेना ॥

अथ संवत्सरमध्ये लाभव्ययज्ञानम् ।

राशीश्वर्षेशयुतं त्रि ३ गुणयं
शरेण ५ युक्तं तिथि १५ शेषलाभम् ।
लाभं त्रि ३ गुणयं च शरेण ५ युक्तं
तिथ्यावशेषं १५ व्ययमामनन्ति ॥ १ ॥
रसा ६ स्तिथ्यो १५ गजाः ८ शैल-
चन्द्रा १७ नन्देन्दव १९ स्तथा ।
स्वगा २१ दिशः १० क्रमाज्ज्ञेया
रव्यादीनां ध्रुवा इमे ॥ २ ॥

राशि स्वामी के ध्रुवाङ्क में राजा का ध्रुवाङ्क जोड़ देना, उस अङ्क को तीन से गुणा करना उसमें पांच जोड़ देना फिर उसमें पन्द्रह का भाग देना शेष बचे वह लाभ होता है । और जो लब्ध मिला है,

उसे तीन से गुणा करना उस अङ्क में पाँच जोड़ देना, उसमें पन्द्रह का भाग देना जो शेष रहे वही खर्च जानिये ॥ १ ॥ सूर्यादिग्रहों के ध्रुवाङ्क ये हैं—सूर्याङ्क ध्रुव ६ चन्द्राङ्क १५ भौमाङ्क ८ बुधाङ्क १७ जीवाङ्क १९ शुक्राङ्क २१ शनैश्चराङ्क १० ये सूर्यादि ग्रहों के ध्रुव जानिये ॥ २ ॥

उदाहरण ।

जैसे मेषराशि का लाभ व्यय बनाना है उसका स्वामी मङ्गल है, उसका ध्रुवाङ्क आठ ८ हुआ और संवत्सर का राजा शुक्र है उसका ध्रुवाङ्क इक्कीस २१ हुआ दोनों ध्रुवाङ्क जोड़े तो २९ हुए इसको तीन से गुणा किया तो ८७ हुए, उसमें पाँच जोड़े तो ९२ हुए। इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो लब्ध मिले ६ शेष बचे २ यही मेषराशि का लाभ जानिये। फिर लब्ध जो छः ६ मिले हैं, उन्हें तीन से गुणा किया तो १८ हुए, उसमें पाँच जोड़ दिये तो हुए २३, इसमें पन्द्रह का भाग दिया तो शेष बचे ८, यही मेषराशि का खर्च जानिये। इसीप्रकार से सब राशियों का लाभ खर्च जानना २॥

अथ युगानां प्रमाणम् ।

द्वात्रिंशद्भिः सहस्रैश्च युक्तं लक्षचतुष्टयम् ।
प्रमाणं कलिवर्षाणां प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ १ ॥
युगानां कृतमुख्यानां क्रमान्मानं प्रजायते ।
कलेर्मानं क्रमान्निघ्नं चतु४स्त्रि३द्वि२मितैस्तदा ॥२॥

पूर्व महर्षिगण चारलाख बत्तीसहज़ार ४३२००० वर्ष कलियुग का प्रमाण कहते हैं ॥ १ ॥ इसी युग के प्रमाण से सत्ययुगादि का भी प्रमाण कहते हैं। क्रम से कलिप्रमाण को चार ४, तीन ३ और दो २ से गुणा करना तो उसी क्रम से सत्ययुग, त्रेता और द्वापरयुग का प्रमाण हो जायगा।

उदाहरण ।

कलियुग के प्रमाण को चार से गुणा किया तो १७२८००० हुए। यही कृतयुग का प्रमाण है । फिर कलिप्रमाण का तीन से गुणा किया तो १२९६००० हुए, यही त्रेतायुग का प्रमाण हुआ । फिर कलिप्रमाण को दो से गुणा किया तो ८६४००० हुए, यही द्वापर का प्रमाण जानिये ॥ २ ॥

अथ संवत्सरमध्ये वर्षाद्यानयनम् ।

शकस्त्रि ३ निघ्नो नग ७ भाजितश्च
शेषं द्वि २ निघ्नं शर ५ संयुतं च ।
वर्षा च धान्यं तृण-शीत-तेजो
वायुश्च वृद्धिक्षयविग्रहौ च ॥ १ ॥
शकं वेद ४ गुणं कृत्वा सप्तभि ७ र्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्नं २ त्रिभि ३ र्युक्तं भुक्तिविश्वाख्यसंज्ञकम् २॥
क्षुधा तृषा च निद्रा च आलस्योद्यममेव च ।
शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभमैथुनयोः क्रमात् ॥ ३ ॥
ततश्च रसनिष्पत्तिः फलनिष्पत्तिरेव च ।
उत्साहः सर्वलोकानां फलान्येतानि चिन्तयेत् ॥ ४ ॥
शकं च वसु ८ भिर्निघ्नं नव ९ भिर्भागमाहरेत् ।
शेषद्वि २ घ्नं रूप १ युक्तं प्रोक्तं विश्वाख्यसंज्ञकम् ॥ ५ ॥
उग्रत्वपापपुण्यानि व्याधिश्च व्याधिनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारो मृत्युर्जन्म यथाक्रमम् ॥ ६ ॥
देशोपद्रवस्वास्थ्यं च चौरभीश्चौरनाशनम् ।
वह्निभिर्वह्निशान्तिश्च ज्ञातव्यानि यथाक्रमात् ॥ ७ ॥

शकः चतुःस्थश्शर ५ सप्त ७ नन्द ९
रुद्रै ११ र्हतः सप्त ७ हृतावशेषम् ।
द्वि २ घ्नं त्रिभिः ३ संयुतमत्र मान-
मुद्भिज्जजारण्डजस्वेदजानाम् ॥ ८ ॥
सप्त ७ घ्नशाकं नवभि ९ र्भाजिताशेषकं तथा ।
लोचन २ घ्नं युतं रामै ३ र्जीवीयाश्च यथाक्रमम् ॥९॥
शलभाश्च शुकाश्चैव मूषकाः स्वर्णताम्रकौ ।
स्वचक्रं परचक्रं च वृष्टिर्वृष्टिविनाशनम् ॥ १० ॥
अर्कादिवारे संक्रान्तौ कर्कस्याब्दविंशोपकाः ।
दिशो १० नखा २० गजाः ८ सूर्या १२
धृत्यो १८ऽष्टादश १८ सायकाः ५ ॥ ११ ॥

शक का तीन से गुणा करके सात का भाग देना, लब्ध को अलग रखना और शेष को दूना करके पाँच जोड़ देना जो अङ्क हो ; वह वर्षा के बिस्वा निकलेंगे । फिर लब्ध को तीन से गुणा करके सात का भाग देना, लब्ध को अलग रखना, शेष को दूना करके पाँच जोड़ देना, जो अङ्क प्राप्त हों उनको धान्य के बिस्वा जानिये । फिर लब्धाङ्क को इसी रीति से गणित करके तृण के बिस्वा बन जायँगे । फिर लब्धाङ्क से इसीप्रकार वारंवार यही क्रिया करने से शीत, तेज, वायु-वृद्धि, क्षय और विग्रह इन सबके बिस्वा अलग अलग निकलेंगे ।

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शक १८१३ इस शक को तीन से गुणा किया तो ५४३९ हुए । इसमें सात का भाग दिया तो लब्ध मिले ७७७ शेष शून्य बचा । इसमें पाँच जोड़े तो पाँच हुए । यही वर्षा के

बिस्वा का प्रमाण जानिये । और लब्धाङ्क से पूर्वोक्त प्रकार धान्यादिक बिस्वा जानिये ।

शक को चार से गुणा करना उसमें सात का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना उस अङ्क में तीन जोड़ने से जो अङ्क हो, उसे क्षुधा के विस्वा जानिये ।

लब्ध को फिर चार से गुणा करके सात का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके तीन और जोड़ देना जो अङ्क हों उसे तृषा के बिस्वा जानिये ।

लब्धाङ्क को इसी रीति से पूर्वोक्त क्रिया करके वारंवार इसी प्रकार के गणित से निद्रा, आलस्य, उद्यम, शान्ति, क्रोध, दम्भ अर्थात् पाखण्ड, लोभ, मैथुन, रस, फल तथा उत्साह के बिस्वा जानिये ।

शक को आठ से गुणा करना और नव का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके उसमें एक जोड़ देना जो अङ्क हों वे उग्रत्व के बिस्वा होते हैं ।

लब्धाङ्क को आठ से गुणा करके नव का भाग देना जो लब्ध मिले उसे अलग रखना शेषाङ्क को दूना करके एक जोड़ देना जो हों उसको पाप के बिस्वा जानिये ।

लब्धाङ्क में पूर्वोक्त क्रिया करने से पुण्य, व्याधि, व्याधिनाश, आचार, अनाचार, मृत्यु, जन्म, देशोपद्रव, देशस्वास्थ्य, चौरभय, चौरनाश, अग्नि तथा अग्निशान्ति;इन सबों के बिस्वा सिद्ध होते हैं ।

शक को चार जगह रखना, प्रथम को पाँच से गुणा करना, दूसरे को सात से, तीसरे को नव से, चौथे को ग्यारह से गुणा करना इन चारों अङ्कों में अलग अलग सात सात का भाग देना शेषाङ्कों को दूना दूना करना चारों जगह पर उनमें तीन तीन और जोड़ देना फिर

क्रम से उद्भिज्ज, जरायुज, अण्डज, स्वेदज जीवों के बिस्वा जानना अर्थात् प्रथम अङ्क में उद्भिज्ज, दूसरे में जरायुज, तीसरे में अण्डज और चौथे में स्वेदज जीवों के बिस्वा जानना ।

शक को सात से गुणा करना और नव का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना उसमें तीन और जोड़ देना जो अङ्क हो उसे शलभ अर्थात् टीड़ी के बिस्वा जानिये ।

लब्धाङ्क को फिर सात से गुणा करना और नव का भाग देना लब्ध को अलग रखना शेषाङ्क को दूना करना उसमें तीन जोड़ देना जो अङ्क हो उसे शुक अर्थात् तोता के बिस्वा जानना ।

लब्धाङ्क पर फिर इसी रीति से क्रिया करने से मूषक, सोना, तांबा, स्वचक्र, परचक्र, वृष्टि और वृष्टिनाश के बिस्वा अलग अलग बन जायँगे ।

कर्क की संक्रान्ति जिस दिन हो उसी दिन के अनुसार संवत्सर के बिस्वा होते हैं । जैसे रविवार को संक्रान्ति हो तो संवत्सर के दश बिस्वा, सोमवार को बीस बिस्वा, मङ्गल को आठ बिस्वा, बुध को बारह बिस्वा, बृहस्पति को अठारह बिस्वा, शुक्रवार को अठारह बिस्वा और शनिवार को पाँच बिस्वा होते हैं ॥ १-११ ॥

अथ मेघानयनम् ।

शकं बाणाग्नि ३५ संयुक्तं वेदेन ४ परिभाजयेत् ।
शेषं मेघं विजानीयादावर्त्तादिचतुष्टये ॥ १ ॥
आवर्त्तकः १ संवर्त्तकः २ पुष्करो ३ द्रोणसंज्ञकः ४ ।
शुभाशुभफलं ज्ञेयं प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २ ॥
आवर्त्तके महावर्त्तः संवर्त्तो बहुतोयदः ।
पुष्करे चित्रिता वृष्टिर्द्रोणेऽपि बहुवारिदः ॥ ३ ॥

शक में पैंतीस जोड़कर चार का भाग देना शेष मेघ जानना। अर्थात् एक बचे तो आवर्त्तकनाम मेघ, दो बचें तो संवर्त्तकनामक, तीन बचें तो पुष्करसंज्ञक, चार बचें तो द्रोणसंज्ञक मेघ जानिये। उसका शुभाशुभ फल पूर्व महर्षि कहते हैं।

अथ मेघफलम्।

आवर्त्त में महावर्त्त हों, संवर्त्तक में बहुत जलवृष्टि हो, पुष्कर में चित्रविचित्र वर्षा हो और द्रोण में बूड़ा आवे।

उदाहरण।

संवत् १९४८ शक १८१३, शक में पैंतीस जोड़ दिये तो १८४८ हुए। इसमें चार का भाग दिया तो शेषाङ्क बचा शून्य इसलिए चौथा द्रोणसंज्ञक मेघ समझना चाहिये। इसी प्रकार से सब निकलेंगे ॥ १-३ ॥

अथ वर्षे राजादीनां संक्षेपात्फलम्।

राजा भौमादिकानाञ्च वच्मि संक्षेपतः फलम्।
गुरुशुक्रेन्दवोऽधीशाः सन्ति चेज्जनसौख्यदाः ॥ १ ॥
सुभिक्षं शोभना वृष्टिर्देशे स्वास्थ्यं प्रकुर्वते।
शनिभौमौ प्रकुर्वाते दुर्भिक्षं विग्रहं भयम् ॥ २ ॥
अल्पसौख्यप्रदः सौम्यः खलु दुःखप्रदो रविः।
फलं सविस्तरं चैषां विज्ञेयं संहितादिषु ॥ ३ ॥

संवत्सर के राजादि का फल संक्षेप से कहते हैं। गुरु, शुक्र और चन्द्रमा राजा हों तो मनुष्यों को सुख देनेवाले हैं ॥ १ ॥ और सुभिक्ष हो, वर्षा अच्छी हो और देश में स्वास्थ्य भी करें। शनैश्चर और मङ्गल राजा हों तो दुर्भिक्ष विग्रह करें ॥ २ ॥ और बुध राजा हों तो थोड़ा सुख करें। और सूर्य राजा हों तो दुःख हो। तथा विस्तारपूर्वक फल संहिताग्रन्थों से जानना चाहिए ॥ ३ ॥

अथाषाढे पूर्णिमापवनफलम् ।

आषाढे पूर्णिमायां चेदनिलो वाति नैर्ऋतः ।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥ १ ॥
आषाढे पूर्णिमायां तु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्मशीलस्तदा लोको धनं धान्यं गृहे गृहे ॥ २ ॥
आषाढे पूर्णिमायां तु ईशान्ये याति मारुतः ।
सुखिनो हि तदा लोका गीतवाद्यपरायणाः ॥ ३ ॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलाद्भयम् ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात्सुभिक्षं जायते तदा ॥ ४ ॥

आषाढ़मास की पूर्णमासी को जो नैर्ऋत्य दिशा से हवा चले तो अनावृष्टि हो, धान्यनाश हो और कूप का जल सूखे ॥ १ ॥ आषाढ़ की पूर्णमासी को जो वायव्य दिशा से हवा चले तो लोक में धर्म हो और धनधान्य घर घर होवे ॥ २ ॥ आषाढ़ की पूर्णमासी को यदि ईशान दिशा से वायु चले तो लोक में सुखप्राप्ति हो, और सांसारिक प्राणी गीतवाद्यपरायण होवें ॥ ३ ॥ अग्निकोण में अग्निभय हो और पश्चिमदिशा का वायु हो तो जल का भय हो और शेष दिशाओं में वायु चले तो सुभिक्ष जानना चाहिए ॥ ४ ॥

अथ होलिकापवनफलम् ।

पूर्वे वायौ होलिकायाः प्रजाभूपालयोः सुखम् ।
पलायते च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ १ ॥
पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसंभवम् ।
यदि खे च शिखावृद्धिर्दुर्गराजोऽपि संक्षयेत् ॥ २ ॥

होलिका की वायु पूर्वदिशा में जाय तो राजा प्रजा सुखी होय। और दक्षिणदिशा में जाय तो पलायमान अर्थात् पराजित होय,

किंवा दुर्भिक्ष होय ॥ १ ॥ और पश्चिमदिशा में जाय तो तृण बहुत पैदा होय, और उत्तरदिशा में जाय तो धान्यसंभव होय अर्थात् पैदा होय । और जो आकाश को जाय तो राजा का क़िला छूट जाय ॥ २ ॥

अथ सूर्यचन्द्रग्रहणज्ञानम् ।

द्वि२र्द्वादशे१२च षष्ठे६च समसप्तम७गे तथा ।
एकराशौ यदा राहुर्ग्रस्तौ च शशिभास्करौ ॥ १ ॥

राहु से दूसरे बारहवें छठें सातवें या राहु की राशि में सूर्य चन्द्रमा होवें तो ग्रहण परे ॥ १ ॥

अथ मतान्तरेण ग्रहणज्ञानम् ।

मासनक्षत्रमारभ्य ऋक्षं भवति षोडशः ।
अमायां प्रतिपत्सन्धौ सूर्यग्रहणनिश्चितम् ॥ १ ॥
रवेः पञ्चदशं ऋक्षं पूर्णमास्यां यदा भवेत् ।
रात्रौ च प्रतिपत्सन्धौ चन्द्रग्रहणनिश्चितम् ॥ २ ॥

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को जो नक्षत्र होवे उससे सोलहवाँ नक्षत्र अमावस को पड़े, और अमावस में प्रतिपदा मिले तो सूर्यग्रहण अवश्य होवे ॥ १ ॥ जिस नक्षत्र का सूर्य हो उससे पन्द्रहवाँ नक्षत्र पूर्णमासी को पड़े और रात्रि को प्रतिपदा मिले तो चन्द्रग्रहण अवश्य होवे ॥ २ ॥

अथ सफलाः तिथिसंज्ञाः ।

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता
पूर्णेतितिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः
सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥ १ ॥

नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा ये प्रतिपदा से पञ्चमीपर्यन्त, षष्ठी से दशमीपर्यन्त और एकादशी से पूर्णमासीपर्यन्त तिथियों की संज्ञा हैं। अर्थात् प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी नन्दासंज्ञक; द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी भद्रासंज्ञक; तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी जयासंज्ञक; चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी रिक्तासंज्ञक और पञ्चमी, दशमी, पूर्णमासी पूर्णासंज्ञक हैं। ये तिथियाँ शुक्लपक्ष में शुभ कार्य के लिए अधम, मध्यम, उत्तम और कृष्णपक्ष में उत्तम, मध्यम और अधम होती हैं। अर्थात् शुक्लपक्ष की प्रतिपदा अधम, षष्ठी मध्यम, एकादशी उत्तम और कृष्णपक्ष में प्रतिपदा उत्तम; षष्ठी मध्यम और एकादशी अधम होती है। इसी प्रकार भद्रादि तिथियों में भी मध्यमादि का ज्ञान करना चाहिये। ये नन्दादि तिथियाँ क्रम से शुक्र, बुध, मंगल, शनि, बृहस्पति के दिन पड़ें तो सिद्धा (कार्य सिद्ध करनेवाली) होती हैं, इसलिए सिद्धा यह अन्वर्थ नाम है।

अथ शुक्लपक्षे तिथिचक्रम्।

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथिसंज्ञा
१ ६ ११	२ ७ १२	३ ८ १३	४ ९ १४	५ १० १५	तिथि
अशुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	मध्यम	फल
शु०	बु०	मं०	श०	बृ०	सिद्धियोग
नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथि

अथ कृष्णपक्षे तिथिचक्रम् ।

नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथिसंज्ञा
१ ६ ११	२ ७ १२	३ ८ १३	४ ९ १४	५ १० ३०	तिथि
शुभ	सम	अधम	शुभ	सम	फल
शु०	बु०	मं०	श०	बृ०	सिद्धियोग
नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	तिथि

अथ तिथिकृत्यानि ।

गीतं नृत्यं तथा क्षेत्रं चित्रोत्सवगृहादिकम् ।
वस्त्रालङ्कारशिल्पादि नन्दाख्यासु शुभं स्मृतम् ॥ १ ॥
विवाहोपनयौ यात्राभूषाशिल्पकलादिकम् ।
गजाश्वरथकृत्यं च भद्रातिथिषु सिद्धिदम् ॥ २ ॥
सैन्यं संग्रामशस्त्रादि यात्रोत्सवगृहादिकम् ।
भैषज्यं चैव वाणिज्यं सिद्ध्येत्सर्वं जयासु च ॥ ३ ॥
शत्रूणां वधबन्धादि विषशस्त्राग्नियोजनम् ।
कर्तव्यं तच्च रिक्तायां नैव सन्मङ्गलं क्वचित् ॥ ४ ॥
व्रतबन्धविवाहादि यात्राराज्याभिषेचनम् ।
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पूर्णासु किल सिद्ध्यति ॥ ५ ॥

गीत, नृत्य, खेती का कार्य, चित्र, उत्सव, गृहादि कर्म तथा वस्त्राभूषण धारण करना और शिल्पादि कर्म अर्थात् थवई का कृत्य इनमें नन्दा तिथि शुभ है ॥ १ ॥ विवाह, जनेऊ, यात्रा, भूषण पहिरना, थवई का काम, कला सीखना और हाथी-घोड़ा वा रथ-कर्म इन सब कार्यों में भद्रातिथि शुभ है ॥ २ ॥ फ़ौज के कार्य, युद्धकार्य और हथियारों के कार्य और यात्रा का उत्सव या गृहादिक कार्य तथा भैषज्य अर्थात् औषध करना, व वाणिज्यकर्म इन कार्यों में जया तिथि शुभ है ॥ ३ ॥ शत्रु का वध करना, बन्धनादि कर्म करना, शस्त्र चलाना, अग्नि लगाना इन कार्यों में रिक्ता तिथि शुभ है । और मङ्गलकार्य रिक्ता में कभी न करना चाहिए ॥४॥ जनेऊ, विवाह, यात्रा, राजगद्दीपर बैठना और शान्तिकर्म और पौष्टिक कर्म इनमें निश्चय करके पूर्णा तिथि शुभ है ॥५॥

अथ तिथिस्वामिज्ञानम् ।

तिथीशावह्निधात्रम्बाहेरम्बोरगषण्मुखाः ।
रवीशाम्बायमोविश्वे हरिस्मरशिवेन्दवः ।
अमावास्यातिथेरीशाः पितरः संप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

प्रतिपदा के स्वामी अग्नि, द्वितीया के स्वामी ब्रह्मा, तृतीया की स्वामिनी देवी, चतुर्थी के स्वामी गणेश, पञ्चमी के स्वामी सर्प, षष्ठी के स्वामी स्वामिकार्त्तिक, सप्तमी के स्वामी सूर्य, अष्टमी के शिव, नवमी की स्वामिनी दुर्गा, दशमी के स्वामी यम, एकादशी के स्वामी विश्वेदेव, द्वादशी के स्वामी विष्णु, त्रयोदशी के स्वामी कामदेव, चतुर्दशी के स्वामी शिव, पूर्णमासी के स्वामी चन्द्रमा और अमावस के स्वामी पितर हैं । इसी प्रकार से तिथियों के स्वामी जानना ॥ १ ॥

तिथीशचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५ ३०
अग्नि	ब्रह्मा	पार्वती	गणेश	सर्प	स्वामिकार्त्तिक	सूर्य	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	हरि	काम	शिव	चन्द्र, पितर

कृत्यविशेषेषु निषिद्धतिथयः ।

षष्ठ्य ६ ष्टमी ८ भूत १४ विधुक्षयेषु ३० नो
सेवेत ना तैलपलेक्षुरं रतम् ।
नाभ्यञ्जनं विश्व १३ दश १० द्विके २ तिथौ
धात्रीफलैः स्नानममा ३० द्रि ७ गो ९ ष्वसत् ॥ १ ॥

पुरुष षष्ठी को तैलसेवन, अष्टमी को मांस, चतुर्दशी को क्षौर और अमावस को स्त्रीप्रसंग न करे । त्रयोदशी, दशमी, द्वितीया इन तिथियों में उबटन न लगावे । आँवरा के फल से स्नान अमावस, सप्तमी और नवमी को न करे ॥ १ ॥

अथ तिथिमध्ये तैलादिपरिहारः ।

षष्ठी शनैश्चरे तैलं महाष्टम्यां पलानि च ।
तीर्थक्षौरं चतुर्दश्यां दीपमालासु मैथुनम् ॥ १ ॥

षष्ठी को यदि शनिवार पड़े तो तैलसेवन करना चाहिये । और दुर्गाष्टमी को मांस खाना योग्य है । तीर्थस्थान पर चतुर्दशी के क्षौर में दोष नहीं है । और दीपमालिका को मैथुन का निषेध नहीं है ॥ १ ॥

अथोक्तकार्ये सेवननिषेधः ।

कूष्माण्डं मातुलुङ्गं च पटोलं बृहतीफलम् ।
श्रीफलं पिचुमन्दं च धात्रीं पक्षादितस्त्यजेत् ॥१॥

प्रतिपदा को कुम्हड़ा, द्वितीया को बिजौरा नींबू, तीज को परवर, चौथ को भाँटा, पञ्चमी को बेल, छठि को निमकौरी और सप्तमी को अँवरा का भक्षण (खाना) वर्जित है ॥ १ ॥

अथ शुभकृत्ये वर्जितयोगादयः ।

व्यतीपातवैधृत्यमापर्वभद्रा
तिथेर्वृद्धिनाशौ जनुर्भं ग्रहर्क्षम् ।
कवीज्यास्तसंक्रान्तिन्यूनाधिमासं
कुजार्कार्किरिक्तास्त्यजेद्भव्यकृत्ये ॥ १ ॥
विष्कम्भवज्रे घटिका हि तिस्रो
व्याघातशूले नव पञ्च जह्यात् ।
भव्येषु कृत्येष्वतिगण्डगण्डे
षडेव धीरः परिघार्द्धमाद्यम् ॥ २ ॥

व्यतीपातयोग, वैधृतियोग, अमावस, पर्व, भद्रा, तिथिवृद्धि और तिथिक्षय, जन्मनक्षत्र, ग्रहणनक्षत्र और शुक्र वा बृहस्पति का अस्त, संक्रान्ति का दिन तथा क्षयमास, मलमास और मङ्गल, रविवार, शनिवार और रिक्तातिथि ये कुयोग समस्त शुभकार्य में वर्जित हैं ॥१॥

किसी आचार्य के मत से संक्रान्ति में सोलह सोलह घड़ी पूर्व और पर की वर्जित हैं । विष्कम्भ वा वज्रयोग के आदि में तीन तीन घड़ी वर्जित हैं । व्याघात के आदि में नव घड़ी और शूल के आदि में पाँच घड़ी वर्जित हैं । गण्ड वा अतिगण्ड में छः छः घड़ी

वर्जित हैं। और समस्त शुभकार्यों में परिघयोग के आदि का आधा वर्जित है ॥ २ ॥

अथ पर्वज्ञानम् ।

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावस्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र ! रविसंक्रान्तिरेव च ॥ १ ॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी और अष्टमी, अमावस्या, पूर्णमासी और संक्रान्ति का दिन ये पर्वसंज्ञक हैं तथा शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ भद्राज्ञानम् ।

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्यो-
भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे ।
कृष्णेऽन्त्यार्द्धे स्यात्तृतीयादशम्योः
पूर्वे भागे सप्तमीशम्भुतिथ्योः ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में अष्टमी और पूर्णमासी को पूर्वदल में भद्रा वास करती हैं। और एकादशी और चतुर्थी के परदल में भद्रा वास करती हैं। और कृष्णपक्ष में तृतीया और दशमी के परदल में भद्रा वास करती हैं और सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वदल में भद्रा वास करती हैं ॥ १ ॥

अथ भद्रावासज्ञानम् ।

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्रयेऽलिगे ।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रोऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥ १ ॥
स्वर्गे भद्रा शुभं कार्यं पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ॥ २ ॥

कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह इन राशियों में चन्द्रमा हो तो भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक इन राशियों के चन्द्रमा में भद्रा का वास स्वर्गलोक में जानिये। कन्या, तुला, धन और मकर इन राशियों में चन्द्रमा हो तो भद्रा का वास पाताललोक में होता है। जिस लोक में भद्रा हो उसी लोक में फल देती है॥ १ ॥ स्वर्ग में भद्रा हो तो कार्य में शुभ-फल, पाताल में हो तो धनलाभ और मृत्युलोक में हो तो सब कार्यों का विनाश करे॥ २ ॥

अथ भद्रापरिहारः।

दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने।
तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदः॥ १ ॥

दिन की भद्रा अर्थात् पूर्वार्द्ध की भद्रा रात्रि में हो और रात्रि की भद्रा अर्थात् परार्द्ध की भद्रा यदि दिन को पड़े तो भद्रादोष नहीं कर सकती है और सर्वसुख देनेवाली होती है॥ १ ॥

अथ मतान्तरेण भद्रादेः परिहारः।

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतीपातश्च वैधृतिः॥
प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम्॥ १ ॥

विष्टि अर्थात् भद्रा, अङ्गार अर्थात् मंगल, व्यतीपात और वैधृति योग तथा पांचवीं तारा और जन्म का नक्षत्र ये सभी कुयोग मध्याह्न के अनन्तर शुभ होते हैं॥ १ ॥

अथ शुक्रगुरुचन्द्रबालवृद्धज्ञानम्।

पुरः पश्चाद्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्द्धकम्।
पक्षं पञ्चदिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते॥ १ ॥

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्ते कैश्चित्सप्तदिनं परैः ।
त्र्यहं त्वात्यायिकेऽप्यन्यैरर्द्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥२॥

यदि शुक्र का उदय पूर्व में होवे तो तीन दिन बालक रहता है और पश्चिम में उदय हो तो दशदिन बालक रहता है । जब पूर्व दिशा में शुक्र अस्त होने को होता है, उसके पहले पन्द्रह दिन से वृद्ध होता है । और जब पश्चिम में अस्त होने को होता है तब उसके पहले पाँच रोज वृद्ध होता है । और बृहस्पति के उदय और अस्त होने पर, वह क्रम से पन्द्रह, पन्द्रह दिन बाल और वृद्ध रहता है ॥ १ ॥ कोई आचार्य शुक्र, बृहस्पति की बाल्यावस्था और वृद्धावस्था दश दिन की कहते हैं । और कोई सात दिन की कहते हैं । और कोई कहते हैं कि यदि कोई कार्य करना बहुत ही आवश्यक हो तो तीन ही दिन की बाल्यावस्था और वृद्धावस्था होती है और चन्द्रमा की बाल्यावस्था आधा दिन और वृद्धावस्था तीन दिन की होती है ॥ २ ॥

अथ गुरुशुक्रास्तमध्ये कार्यवर्जितज्ञानम् ।

वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रता-
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके ।
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान्सुरस्थापनम् १
दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् ।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्
वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ॥२

बावली, बगीचा, तालाब, कुवाँ और घर इनके बनाने का आरम्भ करना या प्रतिष्ठा करना और नवीन व्रत का आरम्भ करना तथा उद्यापन, वधूप्रवेश, महादान (तुलादान आदि सोलह), सोमयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, प्रथमवार दाढ़ी के बाल बनवाना, नवान्न, पौशाला, प्रथम श्रावणी कर्म, वेदारम्भ, काम्यवृषोत्सर्ग, समयातिक्रान्त बालक का संस्कार अर्थात् अन्नप्राशनादि कर्म करना, देवप्रतिष्ठा करना ॥ १ ॥ तथा मन्त्र लेना अर्थात् शिष्य होना, जनेऊ करना, विवाह तथा मुण्डन करना और प्रथम तीर्थ वा प्रथम देवता का दर्शन, संन्यास लेना, अग्निहोत्रादि के लिये अग्नि का ग्रहण करना, राजा का दर्शन और राजगद्दी पर बैठना, यात्रा करना, चातुर्मास्य नामक यज्ञ, समावर्तनकर्म, कर्णवेध करना, परीक्षा लेना ये सबकार्य बृहस्पति और शुक्र के अस्त में तथा बाल और वृद्ध समय में वर्जित हैं। और ये सब कार्य क्षयमास तथा मलमास में भी वर्जित हैं ॥ २ ॥

अथ मतान्तरेण कार्यवर्जितकुयोगज्ञानम् ।

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे
वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे
प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ॥ १ ॥

बृहस्पति और शुक्र के अस्त में जो कार्य वर्जित हैं वे सिंह और मकर के बृहस्पति में भी वर्जित हैं। और किसी आचार्य का मत यह है कि यदि बृहस्पति वक्री किंवा अतिचार अर्थात् एक राशि का उल्लंघन करके दूसरी राशि पर चले गए हों तो भी पूर्वोक्त वर्जित हैं। और गुर्वादित्य अर्थात् सूर्य, बृहस्पति जब एक राशि में

हों तो भी वर्जित हैं। और पूर्वोक्त कार्य में जब तेरह दिन का पक्ष पड़े तो वह भी वर्जित है । और उसी प्रकार से हस्तियों के दांत से या रत्न से बने हुए आभूषणों को भी बृहस्पति और शुक्र के अस्तादि काल में धारण न करना चाहिए ॥ १ ॥

अथ गुर्वादित्यादिपरिहारः ।

गुर्वादित्ये दशाहानि गुरौ सिंहे त्रिमासिकम् ।
अतीचारे च वक्रे च अष्टाविंशतिवासराम् ॥ १ ॥

गुर्वादित्य दश दिन मानना चाहिये । और सिंह के बृहस्पति तीन महीना वर्जित हैं । और अतीचार वा वक्री हों तो अट्ठाइस दिन वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण गुर्वादित्यपरिहारः ।

गुरुः सूर्यात्पृथग् भूत्वा पुनश्चेत्क्रियते युतिः ।
गुर्वादित्योद्भवो दोषो न भवेद्वै कदाचन ॥ १ ॥

गुरु सूर्य अलग होकर फिर एकराशि में प्रवेश करें तो गुर्वादित्य का दोष निश्चय से नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ सिंहस्थगुरुपरिहारः ।

मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ १ ॥

चार चरण मघा के, एकचरण पूर्वाफाल्गुनी का ये पाँचों चरण सिंह के बृहस्पति में समस्त देशों में वर्जित हैं । और गंगा तथा गोदावरी के बीच को छोड़कर शेष जो चार चरण बाकी रहे, वे और देशों में नहीं वर्जित हैं । अर्थात् गंगा गोदावरी के बीच में केवल मेष के सूर्यों को छोड़कर समस्त सिंह वर्जित है। यह वचन आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण सिंहस्थगुरुपरिहारः ।

मेषेऽर्के सद्व्रतोद्वाहौ गङ्गागोदान्तरेऽपि च ।
सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ॥ १ ॥

मेष के सूर्यों में गङ्गा और गोदावरी के मध्य में भी विवाह शुभ है । और समस्त सिंह के बृहस्पति में कलिङ्गदेश, गौड़देश और गुर्जरदेश में वर्जित है ॥ १ ॥

अथ मकरस्थगुरुपरिहारः ।

रेवापूर्वे गण्डकीपश्चिमे च
शोणस्योदग्दक्षिणे नीच इज्यः ।
वर्ज्यो नायं कौङ्कणे मागधे च
गौडे सिन्धौ वर्जनीयः शुभेषु ॥ १ ॥

रेवानदी के पूर्व और गण्डकीनदी के पश्चिम और शोणभद्र के उत्तर, दक्षिण में मकर के बृहस्पति शुभ कार्यों में वर्जित हैं । और कौंकण, मगध देश में नहीं वर्जित हैं । और गौड़देश वा सिन्धुदेश में शुभकार्यों में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहणे वर्ज्यमासादिज्ञानम् ।

नेष्टं ग्रहर्क्षं सकलार्द्धपाद-
ग्रासे क्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा
ग्रस्तास्तगे चाभ्युदितेऽर्द्धखण्डे ॥ १ ॥

सर्वग्रहण हो तो ग्रहण का नक्षत्र शुभकार्य में छः महीने तक वर्जित है । और आधा ग्रहण हो तो ग्रहण का नक्षत्र तीन महीने तक वर्जित है और चौथाई ग्रहण परे तो एक महीना तक शुभकार्य

में ग्रहण का नक्षत्र वर्जित है। ग्रहण पड़ते पड़ते अस्त हो जाय तो ग्रहण के पहले तीन दिन शुभकार्य में वर्जित हैं । और ग्रहण पड़ते पड़ते उदय हो तो ग्रहण के पीछे तीन दिन शुभकार्य में त्याज्य हैं । और जो दुपहर वा आधीरात को ग्रहण लगे तो तीन दिन पहले वा तीन दिन पीछे शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ चक्रम् ।

सर्वग्रासे ग्रहनक्षत्रं वर्ज्यम् ।	अर्द्धग्रासे ग्रहनक्षत्रं वर्ज्यम् ।	पादग्रासे ग्रहनक्षत्रं वर्ज्यम् ।
मासषट्कम् ६	मासत्रयम् ३	मास एकः १

पुनश्चक्रम् ।

अस्तास्तगे	अस्तोदये	अर्द्धखण्डे अर्थात् मध्याह्ने तथार्द्धरात्रौ
पूर्वं त्रिदिनं वर्ज्यम् ३	परं त्रिदिनं वर्ज्यम् ३	उभयोस्त्रिदिनं वर्ज्यम् ३

अथ कुयोगादिपरिहारः ।

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः ।
हूणवङ्गखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ १ ॥

तिथि वार से युक्त जो कुयोग हैं तथा तिथि नक्षत्र से मिले जो कुयोग हैं और नक्षत्र वार मिलकर जो कुयोग हैं वे हूणदेश, वङ्गदेश और खसदेश में वर्जित हैं। इसी प्रकार से तिथि, वार, नक्षत्र इन तीनों से युक्त जो कुयोग वह भी इन्हीं देशों में वर्जित है॥१॥

अथ द्वितीयप्रकारेण कुयोगपरिहारः ।

अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानी-
मयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति ।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं
दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम् ॥ १ ॥

कुयोग में जो सिद्धियोग पड़े तो कुयोग का नाश करे । और अपनी सिद्धि को प्रकाश करे, दूसरे आचार्यों का मत है कि लग्न शुद्ध होने से कुयोगादि का नाश होता है । और दुपहर के बाद भद्रादि जो कुयोग हैं वे भी शुभ हैं । यह वचन पहले लिख आये हैं ॥ १ ॥

अथ वारप्रवृत्तिज्ञानम् ।

निशार्द्धं दिनमानं च युक्तं पञ्चेन्दुभिस्तथा ।
वारप्रवृत्तिर्विज्ञेया सूर्यसिद्धान्तसम्मता ॥ १ ॥

रात्रिप्रमाण को आधा करना, उसमें दिनप्रमाण जोड़ देना उस अङ्क में पन्द्रह और जोड़ देना जो अङ्क हो वही इष्टकाल वारप्रवृत्ति का सूर्योदय से समझ लेना, यह सूर्यसिद्धान्त का मत है ।

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शके १८१३ श्रावणकृष्णदशमी १० गुरुवार स्पष्टवारप्रवृत्ति का निरूपण ग्रहलाघव से स्पष्टदिनमान ३३ । १४ इस दिनमान को साठ में घटा देने से रात्रिमान हुआ २६ । ४६ इसका आधा किया १३ । २३ इसको दिनमान में जोड़ दिया ४६ । ३७ इसमें पन्द्रह और जोड़ दिये ६१ । ३७ यह अङ्क हुआ इसमें ६० निकाल डाले तो रहे १ । ३७ यही इष्टकाल गुरुवार

प्रवेश का हुआ अर्थात् एक घड़ी सैंतीस पल दिन चढ़े बृहस्पतिवार का प्रवेश हुआ। जब अङ्क वारप्रवेश का ६० से ज़्यादा आवे तब ६० निकालकर जो शेष बचे वही दिन चढ़े का इष्टकाल जानना। और वही अङ्क ६० से कम आवे उसे ६० में घटा देना जितना शेष बचे उतनी रात्रि रहे का इष्टकाल जानना ॥ १ ॥

अथ कालहोराज्ञानम् ।

वारादेर्घटिका द्वि २ घ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः ।
सैका१स्तष्टा नगैः७कालहोरेशा दिनपक्रमात् ॥१॥

जब से वारप्रवृत्ति लगे तबसे जो इष्टकाल बीता हो उसे दूना करना फिर उसे दो जगह रखना पहले अङ्क में पांच का भाग देना जो शेषाङ्क हो, उसे दूसरी जगह घटा देना, उसमें एक और जोड़ देना, उसमें सात का भाग देना, जो शेषाङ्क रहे, उसे दिनप के क्रम से होरा जानना अर्थात् जिस दिन का होरा बनावे उसी दिन से गिने। शेषाङ्क पर्यन्त अन्त में जो वार आवे उसीकी होरा जानिये।

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शके १८१३ श्रावणकृष्ण १० गुरुवारप्रवेश का इष्ट १। ३७ सूर्योदयादिष्ट ६। ७ इस इष्ट में वारप्रवेश का इष्ट घटाने से वारादि इष्ट हुआ ४। ३० इसको दूना किया तो हुआ ९। ०० इसको दूसरी जगह रक्खा ९। ०० इसमें पांच का भाग दिया तो शेष बचे ४ इसको जिसे दूना किया है, उसमें घटा देना अर्थात् नव में घटा दिया तो शेष बचे ५ इसमें सात का भाग दिया तो पांच शेष रहे। इन्हें गुरुवार से गिना तो सोमवार की होरा हुई। अब रात्रि रहे यदि वारप्रवेश हो तो होरा का क्रम वारादि इष्ट बनाने का लिखते हैं। जो इष्ट सूर्योदय से हो उसमें रात्रि रहे

वारप्रवेश का जो इष्ट हो वह जोड़ देना । जोड़ने पर जो हो उसे वारादि इष्ट जान लेना फिर इसी उदाहरण से होरा बना लेना ॥ १ ॥

अथ द्वादशचन्द्रपरिहारः ।

अभिषेके निषेके च प्राशने व्रतबन्धने ।
पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रमा द्वादशः शुभः ॥ १ ॥

अभिषेक (राजगद्दी पर बैठाना), निषेक (गर्भधारण), अन्नप्राशन, जनेऊ, विवाह और यात्रा इतने कार्यों में बारहवाँ चन्द्रमा शुभ होता है ॥ १ ॥

अथ जन्मचन्द्रमानिषेधः ।

जन्मगः फलदश्चन्द्रः पञ्चकर्मसु वर्जयेत् ।
यात्रायुद्धविवाहेषु प्रवेशे क्षौरकर्मणि ॥ १ ॥

जन्म का चन्द्रमा सर्वकार्य में शुभ है । यात्रा, युद्ध, विवाह, प्रवेश और क्षौरकर्म इन पाँच कार्यों में वर्जित है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रनिर्णयः ।

पापांन्तः पापयुग्द्यूनेऽपापाच्चन्द्रः शुभोऽप्यसत् ।
शुभांशे वाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोऽपि सत् ॥ १ ॥

चन्द्रमा पापग्रहों के मध्य में हो या पापग्रह से युक्त हो या पापग्रह से सातवें हो तो यदि अपनी राशि से शुभ भी हो तब भी अशुभ जानिये । चन्द्रमा यदि शुभग्रह के नवांश में हो या अपने मित्र के नवांश में हो या चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तब यदि चन्द्रमा अपनी राशि से अशुभ भी हो तब भी शुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण चन्द्रनिर्णयः ।

सिताऽसितादौ सद्दुष्टे चन्द्रे पक्षौ शुभावुभौ ।
व्यत्यांशे चाशुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलं त्विदम् ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को, जिसकी राशि से चन्द्रमा शुभ हो और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को जिसकी राशि से चन्द्रमा अशुभ हो, ऐसा योग जिसको हो उसका चन्द्रमा दोनों पक्ष में शुभ समझना चाहिये । और व्यत्याश अर्थात् विलोम हो अर्थात् शुक्लपक्षादि में अशुभ हो और कृष्णपक्षादि में शुभ हो तो दोनों पक्षों में अशुभ जानिये । यह बल चन्द्रमा का संकट अर्थात् विवाह यात्रा में लेना चाहिये ॥ १ ॥

अथ चन्द्रफलम् ।

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ १ ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥ २ ॥
नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥ ३ ॥

पहला चन्द्रमा लक्ष्मीकारक है । दूसरा मन को संतोषकारक है । तीसरा धनसंपत्तिकारक है । चौथा कलह करनेवाला है ॥ १ ॥ पाँचवाँ ज्ञानवृद्धिकारक है । छठवाँ संपत्तिदायक है । सातवाँ राजसन्मानदायक है । आठवाँ मरणप्रद है ॥ २ ॥ नवाँ धर्मलाभदायक है । दशवाँ मनवाञ्छित सिद्धिकारक है । ग्यारहवाँ सर्वलाभदायक और बारहवाँ हानिकारक है ॥ ३ ॥

अथ मेषादिलग्नानां चरस्थिरद्विस्वभावसंज्ञाचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	ल.
च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	सं.

अथ संवत्सरमध्ये शुभाशुभफलम् ।

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं तु कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ १ ॥
एके चतुर्थे दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ।
त्रिषष्ठे च समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ २ ॥

प्रभवादि संवत्सरों को दूना करके तीन घटा देना उसमें सात का भाग देना, जो शेष बचे उसके अनुसार शुभाशुभ फल जानना ॥ १ ॥ एक वा चार बचें तो दुर्भिक्ष परे, पाँच वा दो बचें तो सुभिक्ष हो, तीन वा छः बचें तो सम जानिये । और शून्य बचे तो पीड़ा हो इसमें कुछ संदेह नहीं है ॥ २ ॥

अथ तिथ्यादिगुणज्ञानम् ।

तिथिरेकगुणोपेता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।
वारश्चाष्टगुणः प्रोक्तः करणं षोडशान्वितम् ॥ १ ॥
स्याद्द्वात्रिंशद्गुणो योगस्ताराषष्टिगुणान्विता ।
चन्द्रो दशगुणो लग्नं सहस्रगुणमुच्यते ॥ २ ॥

तिथि में एक गुण है । नक्षत्र में चार गुण हैं । वार में आठ गुण हैं । और करण में सोलह गुण होते हैं ॥ १ ॥ योग में बत्तीस गुण होते हैं । तारा में साठि गुण हैं । चन्द्रमा में दश गुण होते हैं; तथा लग्न में सहस्रगुण हैं, अर्थात् हजार गुण होते हैं ॥ २ ॥

अथ ताराज्ञानम् ।

जन्मभाद्दिनभं यावद्गणनीयं यथाक्रमम् ।
नव ९ भिस्तु हरेद्भागं शेषं ताराबलाबलम् ॥ १ ॥

जन्म १ संपद् २ विपत् ३ क्षेमः ४ प्रत्यरिः ५ साधक ६ स्तथा ।
वधो ७ मैत्रा ८ तिमैत्रेयं ९ तारानामसदृक्फलाः ॥ २ ॥
कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे तु चन्द्रमाः ।
सदा ग्राह्या बुधैरेवं कृष्णे तारा न चन्द्रमाः ॥ ३ ॥

जन्म के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने, उसमें नौ का भाग दे, जो शेष बचे, वह तारा जानिये ॥ १ ॥ एक बचे तो जन्म तारा, दो बचें तो सम्पत्तारा, तीन बचें तो विपत्तारा, चार बचें तो क्षेम तारा, पाँच बचें तो प्रत्यरि तारा, छः बचें तो साधक, सात बचें तो वध तारा, आठ बचें तो मैत्र तारा, शून्य बचे तो अतिमैत्र तारा जानना ॥ २ ॥ कृष्णपक्ष में तारा बली है और शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बली है। इसलिए पण्डितों को सदा कृष्णपक्ष में तारा का विचार करना चाहिए चन्द्रमा का नहीं ॥ ३ ॥

अथ दिशास्वामिज्ञानम् ।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ १ ॥

पूर्वदिशा के स्वामी सूर्य हैं । आग्नेय के स्वामी शुक्र, दक्षिण के स्वामी मङ्गल, नैऋत्य के स्वामी राहु, पश्चिम के स्वामी शनैश्चर, वायव्य के स्वामी चन्द्रमा, उत्तर के स्वामी बुध हैं तथा ईशानकोण के स्वामी बृहस्पति हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहजातिज्ञानम् ।

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।
चन्द्रसौम्यौ च विट्शूद्रौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ॥ १ ॥

बृहस्पति शुक्र ब्राह्मण हैं । सूर्य, मङ्गल क्षत्रिय हैं । चन्द्रमा वैश्य हैं । बुध शूद्र हैं, राहु, शनैश्चर अंत्यज जाति के हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहवर्णज्ञानम् ।

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।
गुरुज्ञौ पीतहरितौ शनिराहुसितौ स्मृतौ ॥ १ ॥

सूर्य मङ्गल लालवर्ण हैं । शुक्र चन्द्रमा श्वेतवर्ण हैं । बृहस्पति पीत हैं । बुध हरित वर्ण हैं । शनैश्चर और राहु के श्याम वर्ण होते हैं ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रज्ञानम् ।

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा तथा ॥ १ ॥
पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥२॥
अनुराधा ततो ज्येष्ठा तथा मूलं निगद्यते ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढा ह्यभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ ३ ॥
धनिष्ठाशततारारूयं पूर्वाभाद्रपदा ततः ।
उत्तराभाद्रपाच्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥ ४ ॥

अश्विनी १ भरणी २ कृत्तिका ३ रोहिणी ४ मृगशिरा ५ आर्द्रा ६ पुनर्वसु ७ पुष्य ८ आश्लेषा ९ मघा १० पूर्वाफाल्गुनी ११ उत्तराफाल्गुनी १२ हस्त १३ चित्रा १४ स्वाती १५ विशाखा १६ अनुराधा १७ ज्येष्ठा १८ मूल १९ पूर्वाषाढ २० उत्तराषाढ २१ अभिजित् २२ श्रवण २३ धनिष्ठा २४ शतभिषा २५ पूर्वाभाद्रपद २६ उत्तराभाद्रपद २७ रेवती २८ ये अट्ठाइस नक्षत्र अभिजित् समेत समझना चाहिये ॥ १—४ ॥ अब अभिजित् के जानने का क्रम लिखते हैं ॥ उत्तराषाढ़ का चौथा चरण तथा श्रवण

नक्षत्र के आदि का पन्द्रहवां हिस्सा यही अभिजित् नक्षत्र का प्रमाण अर्थात् भोग है ॥

अथ सप्तविंशतियोगचक्रम् ।

विष्कुम्भ १	प्रीति २	आयुष्मान् ३	सौभाग्य ४	शोभन ५	अतिगण्ड ६	सुकर्मा ७
धृति ८	शूल ९	गण्ड १०	वृद्धि ११	ध्रुव १२	व्याघात १३	हर्षण १४
वज्र १५	सिद्धि १६	व्यतीपात १७	वरीयान् १८	परिघ १९	शिव २०	सिद्धि २१
साध्य २२	शुभ २३	शुक्ल २४	ब्रह्म २५	ऐन्द्र २६	वैधृति २७	×

अथ ग्रहस्वामिज्ञानम् ।

शिवो दुर्गा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रः कालसंज्ञकः ।
सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्त्तिताः ॥

सूर्य के स्वामी शिव हैं । चन्द्रमा के स्वामी दुर्गा हैं । मङ्गल के स्वामी स्वामिकार्त्तिक हैं । बुध के स्वामी विष्णु हैं । बृहस्पति के स्वामी ब्रह्मा हैं । शुक्र के स्वामी इन्द्र हैं । शनैश्चर के स्वामी काल हैं ॥ १ ॥

अथ करणज्ञानम् ।

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च ॥ १ ॥
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ।
चतुष्पदश्च नागः स्यादमावास्यादलद्वये ॥ २ ॥

शुक्लप्रतिपदायां च किंस्तुघ्नः प्रथमे दले ।
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ॥ ३ ॥
शुक्लप्रतिपदान्ते च बवाख्यः करणो भवेत् ।
एकादशैव ज्ञेयानि चरस्थिरविभागतः ॥ ४ ॥
तिथिं च द्विगुणीकृत्य हीनमेकं च कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥ ५ ॥

बव १ बालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टि ७ ये सात करण चर संज्ञक जानिये ॥ १ ॥ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को दूसरे दल में शकुनि करण होता है । अमावस के प्रथम दल में चतुष्पद करण होता है । और दूसरे दल में नाग करण होता है ॥ २ ॥ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के प्रथम दल में किंस्तुघ्न करण होता है । इन चार करणों को आचार्य लोग स्थिरसंज्ञक कहते हैं ॥ ३ ॥ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के दूसरे दल में बव करण होता है । इसी क्रम से ग्यारह करण होते हैं । चर स्थिर विभाग करके अर्थात् पहले के सात चरसंज्ञक हैं पीछे के चार स्थिरसंज्ञक हैं ॥ ४ ॥ गत तिथि को दूना करना, उसमें एक घटा देना, फिर सात का भाग देना, शेष जो रहे वह बवादि करण जानिये ॥ ५ ॥

अथोदाहरणस्वरूपं करणचक्रम् ।

शुक्ल पक्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथि
करण	किंस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	प्रथमदल
करण	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव,	गर	विष्टि	बालव.	तैतिल	वणिज	बव	द्वितीय दल
कृष्ण पक्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	तिथि
करण	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पद	प्रथमदल
करण	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	शकुनि	नाग	द्वितीय दल

अथ नक्षत्रस्वामिज्ञानम् ।

अश्विनी दस्रदैवत्या भरणी यमदेवता ।
आग्नेयी कृत्तिका प्रोक्ता विधाता रोहिणीश्वरः ॥ १ ॥
मृगशीर्षेश्वरश्चन्द्रस्तथैवार्द्रेश्वरः शिवः ।
अदितिस्तु पुनर्वस्वोः पतिः पुष्यस्य वाक्पतिः ॥ २ ॥
आश्लेषाधिपतिः सर्पो मघेशाः पितरः स्मृताः ।
भगश्च पूर्वाफाल्गुन्या उफायाः पतिरर्यमा ॥ ३ ॥
हस्तस्याधिपतिः सूर्यस्त्वष्टा चित्राभिधस्य च ।
स्वातेश्च दैवतं वायुर्विशाखेन्द्राग्निदेवता ॥ ४ ॥
अनुराधेश्वरो मित्रो ज्येष्ठाया इन्द्र उच्यते ।
मूलस्य दैवतं रक्षः पूर्वाषाढेश्वरो जलम् ॥ ५ ॥
उषाया दैवतं विश्वे विधिश्चाभिजिताधिपः ।
श्रवणाधिपतिर्विष्णुर्धनिष्ठावसुदेवता ॥ ६ ॥
वरुणः शततारायाः पूभेशः कथितोऽजपात् ।
अहिर्बुध्न्यस्त्वथोभायाः पूषोक्तो रेवतीपतिः ॥ ७ ॥

अश्विनी नक्षत्र के स्वामी अश्विनीकुमार हैं, भरणी के स्वामी यम हैं, कृत्तिका के स्वामी अग्नि हैं, रोहिणी के स्वामी ब्रह्म हैं ॥ १ ॥ मृगशिरा के स्वामी चन्द्रमा हैं, आर्द्रा के स्वामी शिव हैं, पुनर्वसु के स्वामी अदितिदेव हैं, पुष्य के स्वामी बृहस्पति हैं ॥ २ ॥ आश्लेषा के स्वामी सर्प हैं, मघा के स्वामी पितर हैं, पूर्वाफाल्गुनी के स्वामी भगदेव हैं, उत्तराफाल्गुनी के स्वामी अर्यमादेव हैं ॥ ३ ॥ हस्त के स्वामी सूर्य हैं, चित्रा के स्वामी त्वष्टा देवता हैं, स्वाती के स्वामी वायुदेवता हैं, विशाखा के स्वामी अग्नि और इन्द्र हैं ॥ ४ ॥ अनुराधा के स्वामी मित्रदेव हैं, ज्येष्ठा के स्वामी इन्द्र हैं, मूल के स्वामी

राक्षस हैं, पूर्वाषाढ के स्वामी जल हैं ॥ ५ ॥ उत्तराषाढ के स्वामी विश्वेदेवता हैं, अभिजित् के स्वामी विधि हैं, श्रवण के स्वामी विष्णुदेव हैं, धनिष्ठा के स्वामी वसुदेव हैं ॥ ६ ॥ शतभिष के स्वामी वरुण हैं, पूर्वाभाद्रपद के स्वामी अजपात्देव हैं, उत्तराभाद्रपद के स्वामी अहिर्बुध्न्य हैं, रेवती के स्वामी पूषादेव हैं ॥ ७ ॥

अथ सामान्यतः शुभाशुभनक्षत्रकर्मज्ञानम् ।

रोहिण्यश्विमृगाः पुष्यो हस्तचित्रोत्तरात्रयम् ।
रेवती श्रवणश्चैव धनिष्ठा च पुनर्वसुः ॥ १ ॥
अनुराधा तथा स्वाती शुभान्येतानि भानि च ।
सर्वाणि शुभकार्याणि सिद्ध्यन्त्येषु च भेषु च ॥ २ ॥
पूर्वात्रयं विशाखा च ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च ।
शततारभिधेष्वेव कृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥ ३ ॥
भरणी कृत्तिका चैव मघा श्लेषा तथैव च ।
अत्युग्रं दुष्टकार्यं यत् प्रोक्तभेषु विधीयते ॥ ४ ॥

रोहिणी, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु तथा अनुराधा और स्वाती ये नक्षत्र शुभ हैं । इनमें शुभकार्य शुभ हैं ॥ १-२ ॥ तीनों पूर्वा, विशाखा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल और शतभिष इन नक्षत्रों में साधारण कृत्य करना शुभ है ॥ ३ ॥ भरणी, कृत्तिका, मघा और आश्लेषा इनमें अति उग्र कार्य और दुष्टकार्य सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥

अथ स्थिरध्रुवनक्षत्रसंज्ञाज्ञानम् ।

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी तथा रविवार इनकी ध्रुव और स्थिरसंज्ञा

है, इनमें स्थिरकार्य तथा गृहकार्य, बीज बोना बाग़ लगाना और शान्त्यादि ये कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥

अथ चरसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम्।

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन् गज़ादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥१॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र और सोमवार दिन इनकी चर और चलसंज्ञा हैं, इनमें हाथी इत्यादि की सवारी करे तथा फुलवारी लगावे और यात्रादि कर्म करे ॥ १ ॥

अथोग्रसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम्।

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन्घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति॥१॥

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा इन नक्षत्रों की तथा भौमवार की उग्र और क्रूरसंज्ञा है। इनमें घात करना, आग लगाना तथा क्रूरकर्म विष, शस्त्रादि शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ मिश्रसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम्।

विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति॥ १ ॥

विशाखा, कृत्तिका और बुधवार इनकी मिश्र और साधारण संज्ञा है, इनमें अग्निकार्य वा मिश्र अर्थात् मिले हुए कार्य और वृषोत्सर्गादि सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥

अथ लघुक्षिप्रसंज्ञकनक्षत्रसंज्ञाज्ञानम्।

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और गुरुवार इनकी लघु और

क्षिप्रसंज्ञा है। इनमें बाज़ार लगाना, रति करना वा भूषण धारण करना, थवई का काम करना और कला सीखना ये कर्म शुभ हैं ॥१॥

अथ मृदुमैत्रसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ।

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥ १ ॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनकी मृदु और मैत्रसंज्ञा है । इनमें गीत का आरम्भ, वस्त्रधारण, विहार करना और मित्रकार्य करना श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

अथ तीक्ष्णदारुणसंज्ञकनक्षत्रज्ञानम् ।

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ १ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार इनकी तीक्ष्ण और दारुणसंज्ञा है। इसमें अभिचार घात अर्थात् मिलके मारना और उग्रकर्म करना और भेद अर्थात् तोड़ फोड़ करना तथा पशुदमादिक अर्थात् पशु नाथना इत्यादि शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ ऊर्ध्वमुखनक्षत्रज्ञानम् ।

उत्तरात्रितयं पुष्यो रोहिण्यार्द्रा श्रुतित्रयम् ।
ऊर्ध्ववक्त्रो गणो ज्ञेयो नक्षत्राणि मनीषिणः ॥ १ ॥
प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम् ।
नानाभिषेकमश्वं च कुर्यादूर्ध्वमुखे गणे ॥ २ ॥

तीनों उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों की ऊर्ध्वमुखसंज्ञा है ॥१॥ इनमें देवस्थान और चहारदीवारी बनाना, बन्दनवार बाँधना, पताका बाँधना, छत्र धारण करना, गृह-

कार्य करना, अभिषेक करना, घोड़े की सवारी करना इतने कार्य ऊर्ध्वमुख नक्षत्रों में शुभ हैं ।

अथ तिर्यङ्मुखनक्षत्रसंज्ञाज्ञानम् ।

रेवतीयुगलं ज्येष्ठा मैत्रं हस्तत्रयो मृगः ।
पुनर्वसुश्च विज्ञेयो गणास्तिर्यङ्मुखो बुधैः ॥ १ ॥
वृक्षारोपणवाणिज्यं सर्वसिद्धिं च कारयेत् ।
वाहनानि च यन्त्राणि गमनं च विधीयते ॥ २ ॥

रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मृगशिरा, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंकीतिर्यङ्मुखसंज्ञापण्डितोंकोजाननीचाहिए ॥ १ ॥ इन नक्षत्रों में वृक्ष लगाना, वाणिज्य करना सिद्ध है । और वाहन यन्त्रादि अर्थात् गाड़ी इत्यादि तथा रहँटा आदि शुभ हैं ॥ २ ॥

अथाधोमुखनक्षत्रज्ञानम् ।

पूर्वात्रयं मघाश्लेषा विशाखाकृत्तिकायमः ।
मूलं चाधोमुखं ज्ञेयं नवकोऽयं गणो बुधैः ॥ १ ॥
भूकार्यमुग्रकार्यं च खननं विवरस्य च ।
युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यं कारयेद् बुधः ॥ २ ॥

तीनों पूर्वा, मघा, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, भरणी, मूल इन नव नक्षत्रों की अधोमुख संज्ञा है ॥ १ ॥ इनमें भूमिकार्य, उग्रकार्य, कुवां खोदना और युद्ध करना ये कार्य शुभ हैं । और जो अधोमुख अर्थात् नीचे का मुखवाले कार्य हैं वे सब शुभ हैं ॥ २ ॥

अथ वारकृत्यम् ।

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः।
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति १॥

चन्द्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति ये सब कामों में सिद्धि के देनेवाले हैं। और शनि, सूर्य, मङ्गल में जो कार्य कहे हैं वेही कार्य उनमें सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥

अथ वारदोषपरिहारः ।

यस्मिन् वारे तु यत्कृत्यं पूर्वाचार्यैरुदाहृतम् ।
तत्कृत्यं तस्य खेटस्य होरायां खलु सिद्ध्यति ॥ १ ॥
वारदोषाश्च ये प्रोक्ता रात्रौ न प्रभवन्ति ते ।
शनिभौमार्कवारेषु विशेषादिति केचन ॥ २ ॥

जिस वार का जो कृत्य है वह वार न मिले तो उसकी होरा में वह कृत्य शुभ है, यह पूर्वाचार्य कहते हैं ॥१॥ दूसरा परिहार यह है कि वार का दोष रात्रि को नहीं होता है, और कई एक आचार्यों का मत यह है कि शनि, भौम और रवि का दोष रात्रि को विशेष करके नहीं होता है ॥ २ ॥

अथ रविवारकर्मज्ञानम् ।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवा
गोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठ-
संग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥ १ ॥

राज्याभिषेक, उत्सवकर्म, यात्रा, गौ पालना, अग्नि में हवन करना, मन्त्रोपदेश करना, औषध खाना, शस्त्र बनाना, सोना, ताँबा, ऊन, चर्म, काष्ठकर्म करना, युद्धकर्म वा बाज़ार लगाना इतने कर्म रविवार को शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ चन्द्रवारकर्मज्ञानम् ।

शङ्खाऽब्जमुक्तारजतं सुभोज्य-
स्त्रीवृक्षकृष्यं भुवि भूषणाद्याः ।
गानं क्रतुक्षीरविकारशृङ्गी
पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥ १ ॥

शङ्ख, कमल, मोती, चाँदी, भोजन, स्त्रीभोग, वृक्ष लगाना, कृषिकर्म, जलकर्म, भूषणादि बनवाना, गानविद्या सीखना, यज्ञकर्म तथा गोरसकर्म अर्थात् दूध दही मथना, तथा सींग मढ़ाना व पुष्प अर्थात् फूलकर्म तथा वस्त्रकर्म इतने कार्य सोमवार को करना चाहिये ॥ १ ॥

अथ भौमवारकर्म ।

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्र-
वन्ध्याविघाताहवशाठ्यदम्भान् ।
सेनानिवेशाकरधातुहेम-
प्रवालरत्नानि कुजे विदध्यात् ॥ १ ॥

भेदकर्म, अनृतकर्म, चोरी इत्यादि तथा विषकर्म, अग्निकर्म, वधकर्म, वन्ध्याकर्म, घातकर्म, रणकर्म, शाठ्यकर्म, दम्भादिकर्म, सेनानिवेश, खानि तथा धातु, सोना, मूँगा और रत्नादि कृत्य मङ्गलवार को करना शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ बुधवारकर्म ।

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च
शिल्पादिसेवालिपिलेखकानि ।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-
व्यायामवादश्च बुधे विधेयाः ॥ १ ॥

चतुरता, पुण्य, विद्या पढ़ना, कला सीखना, शिल्पविद्या सीखना, धातुक्रिया करना, सोनायुक्त सन्धि अर्थात् सोने का भूषण जड़ना, मोती इत्यादि तथा मित्रता और विवाद इतने कार्य बुधवार को करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ गुरुवारकर्मज्ञानम् ।

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्या-
माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्रा ।
रथाश्च भैषज्यविभूषणादि
कार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिवारे ॥ १ ॥

धर्मक्रिया, पुष्टिकाम, यज्ञ, विद्याभ्यास, माङ्गलिक कर्म, सोना वा वस्त्रादि कार्य करना, गृह बनाना, यात्रा, रथ बनाना, औषध करना और भूषण धारण करना इतने कार्य बृहस्पतिवार को करने चाहिये ॥ १ ॥

अथ शुक्रवारकर्मज्ञानम् ।

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्ध-
वस्त्रोत्सवालङ्करणादिकर्म ।
भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च
सिद्ध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥१॥

स्त्रीप्रसंग, गानविद्या, शय्या बनाना, मणि रत्नकर्म, चन्दनादि कर्म, वस्त्रकर्म, उत्साह तथा अलङ्कार, भूमिकर्म, बाज़ारकर्म, गोकर्म द्रव्यकर्म तथा खेती का कार्य इतने कार्य शुक्रवार को शुभ हैं॥१॥

अथ शनिवारकर्मज्ञानम् ।

गृहप्रवेशदीक्षादिगजबन्धः स्थिरक्रिया ।
दासशस्त्रानृतं स्तेयमेतत्सिद्ध्येच्छनैश्चरे ॥ १ ॥

गृहप्रवेश, दीक्षा लेना, हाथी बाँधना, स्थिर क्रिया करना, दास कर्म, शस्त्रकर्म, झूठ बोलना तथा चोरी करना ये कर्म शनैश्चर के दिन शुभ हैं ॥ १ ॥.

अथ पञ्चकज्ञानम् ।

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्च ऋक्षेष्वेषु त्यजेद्बुधः ।
याम्यदिग्गमनं शय्यावितानं गेहगोपनम् ॥ १ ॥
प्रेतदाहं न कुर्वीत तृणकाष्ठादिसंग्रहम् ॥ २ ॥

आधे धनिष्ठा से रेवतीपर्यन्त पंचक होता है, उसमें दक्षिण दिशा की यात्रा और खटिया बनाना, तम्बू बनाना, घर छवाना वर्जित है । तथा प्रेतदाह वा तृण लकड़ी का काम भी वर्जित है ॥१–२॥

अथ मेषराशिगतग्रहणफलम् ।

उपरागो यदा मेषे पीड्यन्ते सर्वदा जनाः ।
काम्बोजाङ्घ्रिकिराताश्चपाञ्चालश्च कलिङ्गकः ॥१॥

मेषराशि में ग्रहण परें तो कम्बोज, अङ्घ्रि, किरात, पाञ्चाल और कलिंग इन देशों को पीड़ा करें ॥ १ ॥

अथ वृषराशिगतग्रहणफलम् ।

वृषे च ग्रहणे गोपाः पशवः पथिका जनाः ।
महान्तो मनुजा ये च पीड्यन्ते साधवस्तथा ॥ २ ॥

वृषराशि में ग्रहण परें तो गोप, पशु, पथिक अर्थात् रास्ता चलनेवाले महात्मालोग तथा साधुओं को पीड़ा होवे ॥ २ ॥

अथ मिथुनराशिगतग्रहणफलम् ।

रविचन्द्रमसौ ग्रस्तौ मिथुने च वराङ्गनाः ।
पीड्यन्ते वाह्लिका मत्स्या यमुनातटवासिनः ॥ ३ ॥

मिथुनराशि में सूर्य और चन्द्रग्रहण परें तो सुन्दर श्रेष्ठ स्त्री और वाह्लिकदेश, मत्स्यदेश तथा यमुनातटवासियों को पीड़ा करें ॥३॥

अथ कर्कराशिगतग्रहणफलम् ।

कर्कटे ग्रहणे पीडा मल्लादीनां च जायते ।
अन्तरं सर्वराणां च तदा मत्स्यविनाशिनः ॥ ४ ॥

कर्कराशि में ग्रहण परें तो मल्लादिकों को पीड़ा करें अर्थात् कुश्तीबाज़न को पीड़ा जानिये तथा अन्तरवेद और सर्वार तथा मत्स्यदेश को विनाश करें ॥ ४ ॥

अथ सिंहराशिगतग्रहणफलम् ।

सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिनाम् ।
नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां च जायते ॥ ५ ॥

सिंहराशि में ग्रहण परें तो सब वनवासियों को पीड़ा करें और राजाओं को तथा राजा के समान मनुष्यों को पीड़ा करें ॥ ५ ॥

अथ कन्याराशिगतग्रहणफलम् ।

कन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनाम् ।
कवीनां लेखकानां च जायते पीडनं सदा ॥ ६ ॥

कन्या में ग्रहण परें तो त्रिपुष्करदेशवासियों को पीड़ा करें आर धान्य को नाश करें तथा कवि वा लेखकों को सदा पीड़ा करें ॥ ६ ॥

अथ तुलाराशिगतग्रहणफलम् ।

तुलायामुपरागे च दशार्णो बाहुकाहुकौ ।
मरुवश्च परात्यश्च पीड्यन्ते साधवश्च ये ॥ ७ ॥

तुलाराशि में ग्रहण परें तो दशार्ण, बाहुक, आहुक, मरुव, परात्य इन देशों को और साधुजनों को पीड़ा हो ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतग्रहणफलम् ।

वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्पजातेश्च जायते ।
औदुम्बरस्य भद्रस्य चोलायोध्येयकस्य च ॥ ८ ॥

वृश्चिकराशि में ग्रहण पड़े तो सर्पों को पीड़ा हो और औदुंबरदेश, भद्रदेश, चोलदेश और अयोध्यावासियों को भी पीड़ा होवे ॥ ८ ॥

अथ धनराशिगतग्रहणफलम् ।

यदोपरागश्चापे च तदा मत्स्यनिवासिनः ।
विदेहमल्लपाञ्चालाः पीड्यन्ते च भिषग्विदः ॥ ९ ॥

धनराशि में ग्रहण पड़े तो मत्स्यदेशवासियों को पीड़ा करे तथा विदेह, मल्ल, पाञ्चालदेशों में पीड़ा करे और वैद्य, पण्डितों को पीड़ा करे ॥ ९ ॥

अथ मकरराशिगतग्रहणफलम् ।

मकरे ग्रहणे पीडा नीचानां मन्त्रवादिनाम् ।
स्थविराणां भटानां च चित्रकूटस्थसंक्षयः ॥ १० ॥

मकरराशि पर ग्रहण पड़े तो नीच व मन्त्रवादियों को पीड़ा करे । वृद्ध और योद्धाओं को पीड़ा हो और चित्रकूटवासियों का क्षय हो ॥ १० ॥

अथ कुम्भराशिगतग्रहणफलम् ।

कुम्भे चैवोपरागे च पश्चिमस्थास्तथार्बुदाः ।
चौराणां रोगिणां मृत्युः पीड्यन्ते बहुधा बुधाः॥ ११॥

कुम्भराशि पर ग्रहण पड़े तो पश्चिम देशवाले और अर्बुद देशवाले पीड़ा पावें, चार और रोगियों की मृत्यु हो, और पण्डित लोग पीड़ित होयँ ॥ ११ ॥

अथ मीनराशिगतग्रहणफलम् ।

मीनोपरागे पीड्यन्ते जलद्रव्याणि सागराः ।
जलोपजीविनो लोका ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥१२॥

मीनराशि पर ग्रहण पड़े तो जलद्रव्य, सागर और जलोपजीवी पीड़ा पावें अर्थात् जल से जिनकी जीविका है तथा जल के पास जो रहते हैं वे सब पीड़ा पावें ॥ १२ ॥

अथैकमासे चन्द्रसूर्यग्रहणफलम् ।

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ।
शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति भूपा माया परस्परम् ॥ १ ॥

जब एक मास में चन्द्र सूर्य दोनों ग्रहण पड़ें तो शस्त्रकोप से राजा क्षय होयँ अर्थात् युद्ध होय। राजाओं में परस्पर माया होय ॥१॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठिसंगृहीते
बृहज्ज्योतिःसारे संवत्सरप्रकरणं
प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ वस्त्रभूषणधारणमुहूर्तं तथा चूडिकादिधारणं च ।

पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्या-
दित्ये प्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्यं विरिक्तशनिचन्द्रकुजेऽह्नि रक्तं
भौमे ध्रुवादितियुगे सुभगा न दध्यात् ॥ १ ॥

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रों में और रिक्ता को छोड़ अन्य तिथियों में, और सोमवार, मंगल, शनैश्चर इन दिनों को छोड़ अन्य दिनों में, मूंगा का धारण करना, दांत बँधाना, शंख धारण करना, सुवर्ण के आभूषण धारण करना और वस्त्र धारण करना उचित है । और मंगल को लाल-वस्त्र का धारण करना उचित है । और तीनों उत्तरा, पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्रों में सधवा स्त्री मूंगा इत्यादि का धारण न करे ॥ १ ॥

अथ चूडिकाचक्रज्ञानम् ।

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या ततः
वह्निभूतगुणाब्धिसप्तनयनं पृथ्वीकरेन्दुः क्रमात् ।
सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजा जीवाः शशी केतवः
क्रूरेऽसच्च शुभे शुभं च कथितं चक्रे च चूडाह्वये ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र के सूर्य हों वहां से दिन के नक्षत्र तक गिने, प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य के हैं, वे अशुभ हैं । फिर पांच मङ्गल के हैं, वे भी अशुभ हैं । फिर तीन नक्षत्र शुक्र के हैं, वे शुभ हैं । फिर चार नक्षत्र बुध के हैं, वे भी शुभ हैं । फिर सात नक्षत्र राहु के हैं, वे अशुभ हैं । फिर दो नक्षत्र शनैश्चर के हैं, वे अशुभ हैं । फिर एक

नक्षत्र बृहस्पति का है, वह शुभ है। फिर दो नक्षत्र चन्द्रमा के हैं, वे भी शुभ हैं। फिर एक नक्षत्र केतु का है, उसे अशुभ जानिये। इसी क्रमसे चूड़ाचक्र जानना ॥ १ ॥

अथ चूडिकाचक्रं सूर्यभात् २८ ॥

सू.	मं.	शु.	बु.	रा.	श.	बृ.	चं.	के.	ग्रह
३	५	३	४	७	२	१	२	१	नक्षत्र
अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	फल

अथ मुहूर्तं विनापि कुत्रचिद्वस्त्रधारणम् ।

राज्ञा प्रीत्यार्पितं वस्त्रं विवाहे चोत्सवादिषु ।
तथा विप्राज्ञया धार्यं निन्द्ये धिष्ण्येऽपि वासरे ॥ १ ॥

जिस वस्त्र को राजा प्रीति से अर्पण करे, तथा विवाह में, उत्सवादि में तथा ब्राह्मण की आज्ञा से निन्दित नक्षत्र तथा निन्द्यवारादि के होने पर भी वस्त्र धारण करना चाहिए ॥ १ ॥

अथ नीलाम्बरधारणमुहूर्तं तथा कृष्णाम्बरधारणं च ।

पुनर्वसुधनिष्ठाख्येऽश्विभे हस्ताच्चतुष्टये ।
पूर्वोत्तरे शनौ सूर्ये नीलकृष्णाम्बरं शुभम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में तथा शनैश्चर, रविवार इन दिनों में नील वा स्याह वस्त्र धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ रोमजाम्बरधारणम् ।

नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि ।
शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥ १ ॥

नीलवस्त्र में जो नक्षत्र कहे हैं, उनमें रोमज वस्त्र धारण करना उचित है। रेवती और पुष्यनक्षत्र भी शुभ हैं। शुक्र, शनैश्चर और रविवार ये दिन शुभ हैं॥ १ ॥

अथ पट्टकूलधारणम्।

जीवेऽर्के च बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तर्क्षे श्रवान्विते।
स्थिरेऽङ्गे सद्ग्रहैर्युक्ते पट्टकूलस्य धारणम्॥ १ ॥

बृहस्पति, रविवार, बुधवार, शुक्रवार तथा वस्त्रोक्त नक्षत्र और श्रवण नक्षत्र तथा शुभग्रहयुक्त स्थिर लग्न इनमें रेशमी वस्त्र धारण करना शुभ है॥ १ ॥

अथ वस्त्रधारणनक्षत्रफलम्।

वस्त्रप्राप्तिरथाश्विन्यां भरण्यां तद्विनाशनम्।
कृत्तिकाग्निभयं कुर्याद्रोहिण्यां सर्वसंपदः॥ १ ॥
मृगे मूषकभीतिः स्यादार्द्रायां निधनं भवेत्।
पुनर्वसौ तथा पुष्ये धनधर्ममहोत्सवः॥ २ ॥
श्लेषाभे तु भवेच्छोको मघायां मरणं ध्रुवम्।
राज्ञो भयं तु पूफायामुफायां तु धनागमः॥ ३ ॥
कर्मसिद्धिस्तु हस्तर्क्षे चित्रायामिष्टसम्पदः।
मिष्टभोजनदा स्वाती विशाखाऽनन्ददायिनी॥ ४ ॥
मित्राप्तिरनुराधायां ज्येष्ठायां वाससां हृतिः।
जलप्लुतिश्च मूलर्क्षे पूर्वाषाढातिरोगदा॥ ५ ॥
मिष्टान्नदोत्तराषाढः श्रवणे नयनार्तिकृत्।
धान्यागमो धनिष्ठायां विषभीतिः शताभिधे॥ ६ ॥
पूर्वाभाद्रे जलाद्भीतिरुत्तरायां धनागमः।
रत्नावाप्तिस्तु रेवत्यां भवेद्वस्त्रस्य धारणात्॥ ७ ॥

अश्विनी नक्षत्र में जो वस्त्र धारण करे तो वस्त्रप्राप्ति हो, भरणी में धारण करे तो विनाश हो, कृत्तिका में अग्निभय हो, रोहिणी में सर्वसंपदा हो ॥ १ ॥ मृगशिरा में मूषक का भय हो, आर्द्रा में मृत्यु हो, पुनर्वसु और पुष्य में धन, धर्म तथा महोत्सव हो ॥ २ ॥ श्लेषा में शोक हो, मघा में मरण हो, पूर्वाफाल्गुनी में राजभय हो, उत्तराफाल्गुनी में धनागम हो ॥ ३ ॥ हस्त में कर्मसिद्धि हो, चित्रा में श्रेष्ठ संपदा हो, और स्वाती में वस्त्र धारण करने से श्रेष्ठ भोजन मिले, और विशाखा में आनन्द प्राप्ति हो ॥ ४ ॥ अनुराधा में मित्रप्राप्ति हो, ज्येष्ठा में वस्त्र चोरी जाय, मूल में वस्त्र धारण करे तो जल में डूब जावे, पूर्वाषाढ में महारोग हो ॥ ५ ॥ उत्तराषाढ में मिष्टान्नप्राप्ति हो, श्रवण में वस्त्र धारण करने से नेत्ररोग हो, धनिष्ठा में धान्यागम हो, शतभिष में विष का भय हो ॥ ६ ॥ पूर्वाभाद्रपद में जल से भय हो, उत्तराभाद्रपद में धनागम हो, रेवती में वस्त्र धारण करने से रत्नप्राप्ति होवे ॥ ७ ॥

अथ स्त्रीणां वस्त्राभरणादिधारणमुहूर्त्तः ।

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपञ्चके ।
सुवर्णरत्नदन्तादिवस्त्राणां धारणं स्त्रियाः ॥ १ ॥

अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रों में स्त्री को सुवर्ण, रत्न, चूड़िकादि तथा वस्त्र धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ नवीनवस्त्रप्रक्षालनम् ।

पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपञ्चके ।
हित्वार्कार्किबुधान् रिक्तां षष्ठीं श्राद्धदिनं तथा ॥ १ ॥
व्रतं पर्व च वस्त्राणि क्षालयेद्रजकादिना ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रों में धोबी से वस्त्र का धुलाना शुभ है । तथा रविवार, शनैश्चर, बुध व रिक्तातिथि व छठ तथा श्राद्ध का दिन, व्रत का दिन, और पूर्वोक्त पर्व में वस्त्रों का प्रक्षालन करना वर्जित है ॥ १ । २ ॥

अथ वितानादिनिर्माणबन्धनमुहूर्तः ।

कुर्याद्वस्त्रोदिते धिष्ण्ये तूलिकामुपधानकम् ।
वितानाद्यं च बध्नीयादूर्ध्वमूर्ध्वमुखोडुषु ॥ १ ॥

जो नक्षत्र वस्त्र में कहे हैं उनमें तोशक, तकिया आदि बनाना शुभ है तथा ऊर्ध्वमुख नक्षत्र में तम्बू इत्यादि खड़ा करना शुभ है ॥ १ ॥

अथोपानत्परिधानं चर्मकृत्यं च ।

चित्रा पूर्वानुराधा च ज्येष्ठाश्लेषामघामृगे ।
विशाखाकृत्तिकामूले रेवत्यां ज्ञार्किसूर्यजे ॥ १ ॥
उपानत्परिधानं च चर्मकर्मणि शस्यते ॥ २ ॥

चित्रा, पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्लेषा, मघा, मृगशिरा, विशाखा, कृत्तिका, मूल, रेवती तथा बुध, रविवार, शनैश्चर इनमें जूता पहिनना शुभ है । तथा सब चर्मकृत्य शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ भूषणघट्टनमुहूर्तः ।

त्रिपुष्कराभिधे योगे त्र्युत्तरे रेवतीद्वये ।
श्रुतित्रये मृगे पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥
हस्तत्रयेऽथ रोहिण्यां भूषा कार्या शुभेऽहनि ॥१॥

त्रिपुष्कर का दिन, तीनों उत्तरा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त, चित्रा,

स्वाती और रोहिणी इन नक्षत्रों में तथा शुभ दिनों में आभूषण अर्थात् ज़ेवर बनवाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगज्ञानम् ।

भद्रातिथीरविजभूतनयार्कवारे
द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ।
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ
त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥ १ ॥

शनैश्चर, मंगल और रविवार इन दिनों में यदि द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी ये तिथि हों, और विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ ये नक्षत्र हों तो त्रिपुष्कर नामक योग होता है । उस त्रिपुष्कर योग में यदि किसी के घर में कोई मरे तो तीन प्राणी मरें । और यदि कोई वस्तु खो जावे तो तीन वस्तु खो जावें, और यदि किसी वस्तु का लाभ हो तो तीन वस्तुओं का लाभ होवे । और यदि शनैश्चर, मंगल, रविवार इन्हीं दिनों में द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी ये तिथि हों और धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा ये नक्षत्र हों तो द्विपुष्करनामक योग होता है, इसमें यदि कोई मरे तो उस घर में दो प्राणी मरें, और यदि कोई वस्तु खो जावे तो दो वस्तु खोवें, और कुछ लाभ हो तो द्विगुणित लाभ होवे ॥ १ ॥

अथ गजस्याङ्कुशमुहूर्तः ।

शुभवारे शुभे लग्ने शुभांशे शोभने तिथौ ।
अङ्कुशाः करिणां योज्याः शनेर्लग्ने शनेर्दिने ॥ १ ॥

शुभवार, शुभग्रहों का लग्न, शुभग्रहों का नवांश और शुभ तिथियों में हाथी को अंकुश से हांकने का मुहूर्त शुभ है । तथा शनैश्चर का लग्न अर्थात् मकर, कुम्भ लग्न हो, और शनैश्चर का दिन हो तो भी पूर्वोक्त कार्य शुभ है ॥ १ ॥

अथ रससेवनमुहूर्तः ।

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधाऽन्त्ये श्रुतित्रये ।
पुनर्भे मृगशीर्षेऽर्के भौमेज्ये रसभक्षणम् ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुनर्वसु, मृगशिरा इन नक्षत्रों में तथा इतवार, मंगल, बृहस्पति इन वारों में रस खाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ मल्लक्रीडामुहूर्तः ।

ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाभिधे ।
जयापूर्णासु सद्वारे सार्के शीर्षोदयेऽङ्गके ॥
सत्खेटैः केन्द्रगैः सार्कैर्मल्लक्रीडा शुभावहा ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, तीनों पूर्वा, मूल, आश्लेषा, मघा ये नक्षत्र मल्लविद्या में शुभ हैं । जया पूर्णासंज्ञक तिथि शुभ हैं । इतवार समेत शुभ दिन शुभ हैं । और शीर्षोदय लग्न हों अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ लग्न हों और सूर्य सहित शुभग्रह केन्द्र में हों तब भी शुभ है ॥ १ ॥

अथ तप्तलोहदाहमुहूर्तः ।

शताचित्राश्विनीमूले विशाखाकृत्तिकाइभे ।
ज्येष्ठाश्लेषाकुजेऽर्केऽङ्गे क्रूरलोहाग्निभेषजम् ॥ १ ॥

शतभिष, चित्रा, अश्विनी, मूल, विशाखा, कृत्तिका, हस्त, ज्येष्ठा, श्लेषा इन नक्षत्रों में लोहदाह शुभ है । मंगल और एतवार का लग्न अर्थात् मेष, वृश्चिक और सिंह शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ लवणकृत्यम् ।

लवणारम्भकृत्यं तु भरणीरोहिणीश्रवे ।
शनिवारे दिवा श्रेष्ठं जन्मराशेः शनैर्बले ॥ १ ॥

भरणी, रोहिणी, श्रवण इन नक्षत्रों में नमक बनाना शुभ है। तथा शनैश्चर वार शुभ है। और दिन में शुभ है अर्थात् रात्रि को त्याज्य है। जन्मराशि से गोचरोक्त शनैश्चर को बली होना चाहिए ॥१॥

अथ नटविद्यामुहूर्तः।

चित्रार्द्रारोहिणीपुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये।
ससूर्यसौम्यवारे च नटविद्या प्रशस्यते ॥ १ ॥

चित्रा, आर्द्रा, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र नटविद्या में शुभ हैं, तथा रविवार के सहित शुभ दिन हों ॥ १ ॥

अथ कुम्भकारकृत्यम् ।

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रयेऽन्त्ये रोहिणीमृगे।
अनुराधाश्रवोज्येष्ठाससूर्यसौम्यवासरे ॥ १ ॥
तथा चरोदये प्रोक्ता कुम्भकारक्रिया बुधैः ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में कुम्हार का कृत्य शुभ है, और एतवार व शुभ दिन हो और चरलग्न हो ॥ १ । २ ॥

अथ स्वर्णकारकृत्यम् ।

श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्ये मृगे हस्तचतुष्टये।
आदित्ये कृत्तिकायां च शुभे लग्ने शुभे तिथौ ॥१॥
हेमकारक्रिया शस्ता हित्वा बुधशनैश्चरौ ॥ २ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, पुनर्वसु, कृत्तिका इन नक्षत्रों में सोनार का कर्म शुभ है तथा शुभग्रहों का लग्न हो और शुभ तिथि हो तथा बुध और शनिवार वर्जित हैं ॥ १ । २ ॥

अथ ताम्बूलभक्षणमुहूर्तः ।

अनुराधात्रये हस्तत्रितये रेवतीद्वये ।
उत्तरासु च रोहिण्यां श्रवणद्वितये मृगे ॥ १ ॥
पुनर्वसौ तथा पुष्ये शनिभौमान्यवासरे ।
ताम्बूलभक्षणं सार्द्धद्विमासेऽन्नाशनेऽथवा ॥ २ ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, उत्तरा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पुनर्वसु और पुष्य इन नक्षत्रों में ताम्बूल भक्षण शुभ है । शनि, मङ्गलवार वर्जित है । तथा जन्म से अढ़ाई महीने में पानभक्षण शुभ है तथा अन्नप्राशन का दिन शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ वारविषघटीज्ञानम् ।

नखायमार्कं दिक्कुसप्तबाणतत्त्वमिताः क्रमात् ।
आभ्यो नाडीचतुष्कं च विषं तद्रविवासरात् ॥ १ ॥

रविवार के दिन बीस घड़ी के उपरान्त चार घड़ीतक विषघटी होती हैं । सोमवार के दिन दो घड़ी के उपरान्त, मङ्गल को बारह घड़ी के उपरान्त, बुध को दश घड़ी के उपरान्त, बृहस्पति का सात घड़ी के उपरान्त, शुक्र को पांच घड़ी के उपरान्त, शनैश्चर को पचीस घड़ी के उपरान्त चार घड़ी तक विषघटी जानिये और सब वारों में भी चार चार घड़ी विषघटी जानना चाहिए ॥ १ ॥

अथ वारविषघटीचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वासराः
२०	२	१२	१०	७	५	२५	विषघटी उ०
४	४	४	४	४	४	४	विषघटीयावत्

अथ तिथिविषघटीज्ञानम् ।

तिथि[१५] बाणा[५]ष्ट[८]सप्ता[७]ङ्ग[६]पञ्च[५]वेदा[४]ष्ट[८]भूधराः[७] ।
दिग्[१०]वह्न्य[३]र्क[१२]मनुः[१४]शैलो[७] वसवो[८] घटितः क्रमात् ॥ १ ॥
आभ्यो घटीचतुष्कं[४]च विषं प्रतिपदादितः ॥ २ ॥

प्रतिपदा से पूर्णमासी तथा अमावसपर्यन्त इन घड़ियों के उपरान्त चार घड़ीतक विषघटी होती हैं इसको चक्र के क्रम से समझ लेना चाहिये ॥ १ । २ ॥

अथ तिथिविषघटीचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	३०	तिथि
१५	५	८	७	६	५	४	८	७	१०	३	१२	१४	७	८		विषघटी उपरान्त
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		विषघटी यावत्

अथ सकलकर्मसिद्ध्यर्थमभिजिन्मुहूर्तः ।

अङ्गुल्या विंशतिः सूर्ये शङ्कुः सोमे च षोडश ।
कुजे पञ्चदशाङ्गुल्यो बुधवारे चतुर्दश ॥ १ ॥
त्रयोदश गुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः ।
शङ्कुमूले यदा छाया मध्याह्ने च प्रजायते ॥ २ ॥
तत्राऽभिजित्तदाख्यातो घटिकैका स्मृता बुधैः ।
अत्र कार्याणि सर्वाणि सिद्धिं यान्ति कृतानि च ॥ ३ ॥

रविवार के दिन बीस अंगुल का शंकु खड़ा करे, सोमवार को सोलह अंगुल का, मङ्गल को पन्द्रह अंगुल, बुध को चौदह अंगुल, बृहस्पति को तेरह अंगुल, शुक्र को बारह अंगुल, शनि को बारह अंगुल का शंकु खड़ा करे। दुपहर को जब छाया शंकुमूल के बराबर

हो तब से एक घड़ी तक अभिजित्संज्ञक मुहूर्त होता है, उसमें कार्य के प्रारम्भ करने से वे सिद्ध होते हैं ॥ १ । २ । ३ ॥

अथ दिनमध्ये पञ्चदशमुहूर्तज्ञानम् ।

गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वे
ऽभिजिदथ च विधातापीन्द्रइन्द्रानलौ च ।
निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमाथो भगश्च
क्रमश इह मुहूर्ता वासरे बाणचन्द्राः ॥ १ ॥

गिरिश १ भुजग २ मित्र ३ पित्र्य ४ वसु ५ अम्बु ६ विश्वे ७ अभिजित् ८ विधाता ९ इन्द्र १० इन्द्रानल ११ निर्ऋति १२ उदकनाथ १३ अर्यमा १४ भग १५ ये पन्द्रह मुहूर्त दिन भर में होते हैं; सूर्योदय से सूर्यास्तपर्यन्त दिनमान के भोग से जानना ॥१॥

अथ रात्रिमध्ये पञ्चदशमुहूर्तज्ञानम् ।

शिवोजपादादष्टौ स्युर्भेशा अदितिजीवकौ ।
विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतो मुहूर्ता निशि कीर्तिताः ॥ १ ॥

शिव १ पूर्वाभाद्रपद २ उत्तराभाद्रपद ३ रेवती ४ अश्विनी ५ भरणी ६ कृत्तिका ७ रोहिणी ८ मृगशिर ९ अदिति १० जीव ११ विष्णु १२ अर्क १३ त्वाष्ट्र १४ मरुत् १५ ये पन्द्रह मुहूर्त रात्रि को होते हैं ॥ १ ॥

अथ कार्यकृत्यमुहूर्तः ।

नक्षत्रनाथतुल्येऽस्मिन् कार्यं कुर्यात्स्वभोदितम् ।
दिनमध्येऽभिजित्संज्ञे दोषसंज्ञेषु सत्स्वपि ॥ १ ॥
सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥ २ ॥

नक्षत्रस्वामी के तुल्य कार्य करना चाहिये, अर्थात् जब कार्योक्त नक्षत्र न मिले तब इन मुहूर्तों में करना चाहिए ।

उदाहरण ।

अनुराधा जिस कार्य में उक्त है उस दिन में तीसरा मुहूर्त मित्रसंज्ञक होता है वह अनुराधा का स्वामी है, उसीमें कार्यारम्भ करना चाहिये, इसी क्रम से सब जान लेना और जो दिन मध्य में अभिजित् मुहूर्त होता है, उसमें कार्य करने से सब दोषों के होते हुए भी अच्छा होता है, सब शुभ कर्म करना उचित है परन्तु दक्षिण दिशा की यात्रा वर्जित है ॥ १ । २ ॥

अथ वारदुर्मुहूर्तज्ञानम् ।

रवावर्यमा ब्रह्मरक्षश्च सोमे
कुजे वह्निपित्रे बुधे चाभिजित्स्यात् ।
गुरौ तोयरक्षो भृगौ ब्राह्म्यपित्रौ
शनावीशसार्पौ मुहूर्ता निषिद्धाः ॥ १ ॥

रविवार के दिन अर्यमा मुहूर्त वर्जित है, सोमवार के दिन ब्रह्म और रक्ष वर्जित है, मङ्गल को वह्नि व पितृ वर्जित है, बुधवार को अभिजित् वर्जित है, गुरुवार को तोय और रक्ष वर्जित है, शुक्र को ब्राह्म्य और पितृ वर्जित है, शनैश्चर को ईश और आश्लेषा वर्जित है ॥ १ ॥

अथ रविवारादिमुहूर्तनिषिद्धचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
अर्यमा १४	ब्रह्म ६	वह्नि २२	अभिजित् ८	तोय ६	ब्राह्म्य ६	ईश १	मुहूर्ताः
००	राक्षस १२	पितृ ४	००	रक्ष १२	पितृ ४	आश्लेषा २	मुहूर्ताः

अथ लग्नराशिस्वामिज्ञानम् ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्वामी च चन्द्रमाः ॥१॥
धनुर्मीनाधिपो जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २ ॥
कन्याया राहुराख्यातो केतुर्वै मिथुनस्य च ॥ ३ ॥

मेष वृश्चिक का स्वामी मङ्गल है, वृष तुला का स्वामी शुक्र है, कन्या मिथुन का स्वामी बुध है, और कर्क का स्वामी चन्द्रमा है ॥ १ ॥ धन और मीन का स्वामी बृहस्पति है, मकर और कुम्भ का स्वामी शनैश्चर है, सिंह का स्वामी सूर्य है, यह पण्डित कहते हैं । कन्या का स्वामी राहु है । मिथुन का स्वामी केतु है ॥२।३॥

अथ राशीशचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	स्वामिनः
सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धन मीन	वृष तुला	मकर कुंभ	कन्या	मिथुन	गृहाः

अथोत्पातादियोगज्ञानम् ।

द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्च
ब्राह्मयात्पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः ।
स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धि-
र्वारेऽर्काद्ये तत्फलं नामतुल्यम् ॥

रविवार आदि सात दिनों में विशाखा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी इन नक्षत्रों से लेकर क्रम से चार नक्षत्रों में, उत्पात, मृत्यु, काण और सिद्धि ये चार योग होते हैं अर्थात् रविवार को विशाखा–उत्पात, अनुराधा–मृत्यु, ज्येष्ठा–

काण, और मूल हो तो सिद्धियोग होता है। सोमवार को पूर्वाषाढ़-उत्पात, उत्तराषाढ़-मृत्यु, अभिजित्-काण और श्रवण हो तो सिद्धि योग होता है। मंगल को धनिष्ठा-उत्पात, शतभिष-मृत्यु, पूर्वभाद्रपद-काण, और उत्तराभाद्रपद हो तो सिद्धियोग होता है। बुधको रेवती-उत्पात, अश्विनी-मृत्यु, भरणी-काण, और कृत्तिका हो तो सिद्धियोग होता है। बृहस्पति को रोहिणी-उत्पात, मृगशिरा-मृत्यु, आर्द्रा-काण, और पुनर्वसु हो तो सिद्धियोग होता है। शुक्रवार को पुष्य-उत्पात, आश्लेषा-मृत्यु, मघा-काण, और पूर्वाफाल्गुनी हो तो सिद्धियोग होता है। शनिवार को उत्तराफाल्गुनी-उत्पात, हस्त-मृत्यु, चित्रा-काण, और स्वाती हो तो सिद्धियोग होता है। इन चारों योगों का फल भी नाम के समान ही होता है ॥ १ ॥

अथोत्पातादियोगचतुष्टयचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
वि.	पू.षा.	ध.	रे.	रो.	पुष्य.	उ.फा.	उत्पातयोगः
अनु.	उ.षा.	श.	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	मृत्युयोगः
ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भ.	आ.	म.	चि.	काणयोगः
मू.	श्र.	उ.भा.	कृ.	पु.	पू.फा.	स्वा.	सिद्धियोगः

अथ कुलिकादियोगः ।

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः ।
वाराद्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजेक्षणः ॥ १ ॥

कुलिक, कालवेला, यमघण्ट, कण्टक ये चार प्रकार के योग हैं। वर्तमानवार से गिने शनैश्चर तक जो अङ्क हो, उसे दूना करे द्विगुणित करने से जो अङ्क हो उसी मुहूर्त में कुलिकयोग जानिये।

और जो कालवेला विचारे तो वर्तमान वार से बुधतक गिने, उसे दूना करे जो अङ्क हो, उसी मुहूर्त में कालवेला योग होता है। और जो यमघण्ट विचारना हो तब वर्तमान वार से बृहस्पति तक गिने, उसे दूना करे जो अङ्क हो उसी मुहूर्त में यमघण्टयोग जानिये। और जो कण्टक विचारना हो तो वर्तमान वार से मङ्गल तक गिने, उसे दूना करे जो अङ्क हो उसी मुहूर्त में कण्टकयोग जानिये ॥ १ ॥

उदाहरण

रविवार के दिन कुलिक विचारना चाहे तो रविवार से शनैश्चर तक गिना तो सात हुए, इसको दूना किया तो चौदह हुए, इसी चौदहवें मुहूर्त में कुलिकयोग होगा अर्थात् तेरह मुहूर्त के उपरान्त चौदह तक कुलिक जानना चाहिए। मुहूर्त दिन के सोलहवें हिस्से को कहते हैं।

अथ क्रकचयोगज्ञानम्।

तिथ्यङ्केन समायुक्तो वाराङ्को यदि जायते।
त्रयोदशाङ्कः क्रकचो योगोऽयं निन्दितः शुभे ॥१॥

तिथि वार मिला के तेरह हो तो क्रकचयोग होता है। यह शुभ कार्य में निन्दित है ॥ १ ॥

अथ रवियोगज्ञानम्।

सूर्यभाद्वेद[४]गो[९]तर्क[६]दिग्[१०]विश्व[१३]नख[२०]संमिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक विचारे। चारि, नव, छः, दश, तेरह, बीस ये अङ्क हों तो रवियोग जानिये। इनसे दोषों के समूहों का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यभाद्रवियोगचक्रम् ।

४	९	६	१०	१३	२०	नक्षत्र
रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	रवियोगः	संज्ञा

अथ स्त्रीणां कज्जलादर्शकृत्यम् ।

चित्राचतुष्टयेऽश्विन्यां धनिष्ठारेवतीमृगे ।
शुक्रेऽर्केऽह्नि शनौ स्त्रीणां दर्पणाञ्जनयोर्धृतिः ॥१॥

चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र और शुक्र, रविवार, शनैश्चर इन वारों में स्त्रियों को अञ्जन अर्थात् सुरमा इत्यादि और दर्पण देखना शुभ है ॥ १ ॥

अथ सुगन्धादिधारणमुहूर्तः ।

श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्ये पूर्वाषाढानुराधयोः ।
हस्तत्रये पुनर्भेऽन्त्ये मृगभे च शुभेऽहनि ॥ १ ॥
चन्दनागुरुकस्तूरीपुष्पाणां धारणं शुभम् ॥ २ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, पुष्य, पूर्वाषाढ, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती, मृगशिरा इन नक्षत्रों में और शुभवारों में चन्दन, अगुरु, कस्तूरी, फूल इत्यादि सुगन्धित वस्तुओं का धारण करना शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ मद्यारम्भमुहूर्तः ।

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरुहूते
यम्ये सार्पे नैर्ऋते चैव धिष्ण्ये ।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो
मद्यारम्भः कालविद्भिः पुराणैः ॥ १ ॥

आर्द्रा, मघा, शतभिष, ज्येष्ठा, भरणी, श्लेषा, मूल, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में मदिरा बनाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ वृक्षारोपणम् ।

शतद्वीशमूलान्त्यचित्रानुराधा-
मृगत्र्युत्तराधातृहस्ताश्विपुष्ये ।
भवेद्वृक्षवल्ल्यादिरोपः प्रशस्तः
सिते शीतगौ सोमपुत्रे सुरेज्ये ॥ १ ॥
वैशाखे श्रावणे मार्गे कार्त्तिके फाल्गुने तथा ।
एते साधारणा मासा वृक्षस्यारोपणे शुभाः ॥ २ ॥

शतभिष, विशाखा, मूल, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों में तथा शुक्र, चन्द्र, बुध और बृहस्पति इन वारों में वृक्ष लतादि का रोपना शुभ है ॥ १ ॥ वैशाख, श्रावण, मार्ग, कार्त्तिक, फाल्गुन ये मास वृक्ष लगाने में शुभ हैं ॥ २ ॥

अथ वृक्षचक्रम् ।

सूर्यभाद्दिनभं यावद् वृक्षचक्रं विचारयेत् ।
त्रीणि मूले भवेद्रोगस्त्वचि त्रीणि धनागमः ॥ १ ॥
शाखायां वेदनाशः स्यात्पत्रे युग्मं दरिद्रता ।
शीर्षे त्रीणि शभं प्रोक्तं पूर्वमेकं तु मृत्युदम् ॥ २ ॥
याम्ये पञ्च सुतो नाशः पश्चिमे द्वे धनप्रदे ।
उत्तरे वेदलाभः स्यात्तदुक्तं ब्रह्मयामले ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिनकर तीन नक्षत्र वृक्ष की जड़ में स्थापित करे वे रोगप्रद हैं। तीन नक्षत्र त्वचा में रक्खे वे धनप्रद हैं ॥ १ ॥ इसी प्रकार शाखा में चार नक्षत्र

नाशप्रद, दो नक्षत्र पत्र में दरिद्रदाता, तीन शिर में शुभप्रद हैं। और एक नक्षत्र पूर्व में मृत्युदायक, दक्षिण में पांच नक्षत्र पुत्रनाशक और दो नक्षत्र पश्चिम में धनदाता हैं, तथा उत्तर में चार नक्षत्र लाभप्रद हैं। यह चक्र ब्रह्मयामल में कहा है ॥ २ । ३ ॥

अथ वृक्षन्यासचक्रं सूर्यभात् २७ ।

मूल	त्वचा	शाखा	पत्र	शीर्ष	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
३	३	४	२	३	१	५	२	४	नक्षत्र
रोगप्रद	धनागम	नाशप्रद	दरिद्रता	शुभप्रद	मृत्युप्रद	पुत्रनाश	धनप्रद	लाभप्रद	फल

अथ गवां क्रयविक्रयमुहूर्तः ।

शक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ।
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयःक्रयविधिःसुरभीणाम् १

ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शतभिष, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रों में गौओं का लेना और बेंचना शुभ है ॥ १ ॥

अथ राजदर्शनमुहूर्तः ।

त्र्युत्तरे श्रवणद्वन्द्वे मृगे पुष्यानुराधयोः ।
रोहिण्यां रेवतीयुग्मे चित्राहस्ते शुभेऽहनि ॥ १ ॥
बलिन्यर्केऽर्कवारेऽपि राजदर्शनमीरितम् ॥ २ ॥

तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा और हस्त इन नक्षत्रों में और रविवार के सहित शुभ दिनों में राजा की मुलाक़ात करना शुभ है। परन्तु गोचर के अनुसार सूर्य बली होना चाहिए ॥ १ । २ ॥

अथ पशूनां प्रवेशयात्रास्थितयः ।

न रिक्ताष्टमीदर्शभौमेषु चित्र
श्रुतित्र्युत्तरे रोहिणीषु प्रकामम् ।
पशूनां प्रवेशप्रयाणस्थितीश्च
प्रकुर्वन्ति धीराः कदाचित्कथंचित् ॥ १ ॥

रिक्तातिथि, अष्टमी, अमावस और मङ्गल दिन पशुयात्रादि में वर्जित करे। तथा चित्रा, श्रवण, तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में पशुप्रवेश, पशुयात्रा और पशुस्थिति वर्जित करे॥ १ ॥

अथ क्रयविक्रयमुहूर्तः ।

पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती च श्रवणोऽश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽश्लेषा च रेवती ॥ १ ॥
ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ॥ २ ॥

पुष्य, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, उत्तरा, मृगशिरा, अनुराधा, श्लेषा, रेवती इन नक्षत्रों में तथा चन्द्रवार, शुक्रवार तथा गुरुवार में क्रय विक्रयकार्य अर्थात् खरीदना और बेचना शुभ है परन्तु उत्तम शकुन लेना चाहिये ॥ १ । २ ॥

अथ विपणिसूचीकर्ममुहूर्तः ।

स्याद्रोहिणीत्र्युत्तरहस्तपुष्ये
चित्रान्त्यमित्रे विपणिर्मृगाश्वे ।
पुनर्वसौ मित्रहये धनिष्ठा
चित्रासु सौम्येऽहनि कर्मसूच्याः ॥ १ ॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, चित्रा, रेवती, अनुराधा तथा मृगशिरा और अश्विनी इन नक्षत्रों तथा शुभ दिनों में

दुकान करना शुभ है । पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, चित्रा इन नक्षत्रों में, शुभ दिनों में सूचीकर्म अर्थात् दर्जी का काम शुभ है ॥ २ ॥

अथ भैषज्यकर्ममुहूर्तः ।

अर्काश्विपुष्ये श्रवणत्रये च
मूलादितिस्वातिमृगे सपौष्णे ।
चित्रासुमित्रे च शुभेऽह्नि सार्के
भैषज्यकर्म प्रचरेद्विरिक्ते ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, पुनर्वसु, स्वाती, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, इन नक्षत्रों में और रविवार के सहित शुभदिनों में भैषज्य कर्म अर्थात् औषध खाना शुभ है ॥ २ ॥

अथ वाजिहस्तिकर्ममुहूर्तः ।

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशा-
दित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं
कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिषा और पुनर्वसु ये नक्षत्र घोड़े के कार्य में शुभ हैं अर्थात् सवारी इत्यादि श्रेष्ठ है। रिक्तातिथि और मंगलवार वर्जित है (अब हस्ती के कार्य कहते हैं) मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक इन नक्षत्रों में हाथी के कार्य पण्डित को करने चाहियें ॥ १ ॥

अथाश्वचक्रम् ।

अश्वाकारं लिखेच्चक्रं साभिजिद्भानि विन्यसेत् ।

स्कन्धे च सूर्यभात्पञ्च पृष्ठे च दश भानि च ॥ १ ॥
पुच्छे द्वे स्थापयेद्धीरश्चतुष्पादे चतुष्टयम् ।
उदरे विन्यसेत्पञ्च मुखे द्वे तुरगस्य च ॥ २ ॥
अर्थलाभो मुखे सम्यग् वाजी नश्यति चोदरे ।
चरणस्थे रणे भङ्गः पुच्छे पत्नी विनश्यति ॥ ३ ॥
अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठे स्कन्धे स्कन्धपतिर्भवेत् ।
अश्वाकारमिदं चक्रं विचार्यं गणकोत्तमैः ॥ ४ ॥

सूर्य के नक्षत्र से अश्वाकारचक्र लिखकर अभिजित्समेत चन्द्रमा के नक्षत्र तक स्थापित करे । प्रथम पांच नक्षत्र स्कन्ध में देवे, फिर दश नक्षत्र पीठ में देवे ॥ १ ॥ फिर दो नक्षत्र पुच्छ में देवे, फिर चार नक्षत्र चारों चरणों में धरे, फिर पांच नक्षत्र पेट में देवे, फिर दो नक्षत्र मुख में रक्खे ॥ २ ॥

अथ फलम् ।

मुख में पड़े तो अर्थलाभ हो, पेट में पड़े तो घोड़े का नाश करे, चरणों में पड़े तो रण में भङ्ग करे और पुच्छ में पड़े तो स्त्री का नाश करे ॥ ३ ॥ पीठ में पड़े तो अर्थसिद्धि करे, और स्कन्ध में पड़े तो स्कन्धपति हो अर्थात् पालकी इत्यादि सवारी मिलें । यह अश्वाकार-चक्र उत्तम ज्योतिषियों को विचारना चाहिए ॥ ४ ॥

अथाश्वचक्रन्यासः २८ ।

स्कन्ध	पृष्ठ	पुच्छ	पाद	उदर	मुख	अङ्ग
५	१०	२	४	५	२	नक्षत्र
स्कन्धपति	अर्थसिद्धि	पत्नीनाश	रणभङ्ग	वाजिनाश	अर्थलाभ	फल

अथ गजचक्रम् ।

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभान्तं च सूर्यभात् ।
कर्णे शीर्षे रदे पुच्छे द्वयं सर्वत्र योजयेत् ॥ १ ॥
शुण्डायां तु द्वयं योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ।
षड् वै चतुर्षु पादेषु साभिजिद्विन्यसेत्क्रमात् ॥ २ ॥
कर्णे चैव महालाभो मस्तके लाभ एव च ।
दन्ते चैव भवेल्लाभो पुच्छे हानिः प्रजायते ॥ ३ ॥
शुण्डायां तु शुभं ज्ञेयं पृष्ठे तु सुखसंपदा ।
उदरे रोगसंभूतिर्मुखे तु मध्यमं स्मृतम् ॥ ४ ॥
पादयोश्च भवेल्लाभो गजे चैवं विनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥

सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गजाकार चक्र लिखे । दो नक्षत्र गज के कर्ण में, दो मस्तक में, दो दन्त में, दो पुच्छ में रक्खे ॥१॥ और दो शुण्ड में, चार पृष्ठ में, चार पेट में, चार मुख में, छः नक्षत्र चरणों में रक्खे । इस चक्र में अभिजित् नक्षत्र भी गिनना चाहिए ॥ २ ॥

अथ फलम् ।

कर्ण में पड़े तो महालाभ हो, मस्तक में पड़े तो लाभ हो, और दन्त में पड़े तो भी लाभ हो, तथा पुच्छ में पड़े तो हानि होय ॥ ३ ॥ शुण्ड में पड़े तो शुभप्रद है, तथा पृष्ठ में पड़े तो सुख-संपदा हो, पेट में पड़े तो रोग करे, मुख में पड़े तो मध्यम है ॥ ४ ॥ चरणों में पड़े तो लाभ हो इसी क्रम से गजचक्र देखना ॥ ५ ॥

अथ गजचक्रन्यासः २८ ।

कर्ण	मस्तक	दन्त	पुच्छ	शुण्ड	पृष्ठ	उदर	मुख	पाद	अङ्ग
२	२	२	२	२	४	४	४	६	नक्षत्र
महा-लाभ	लाभ	लाभ	हानि	शुभ	सुख सम्पदा	रोग	मध्यम	लाभ	फल

अथ सेवाचक्रम् ।

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे भृत्यसंग्रहे ।
शीर्षे त्रीण्यर्थलाभः स्यान्मुखे त्रीणि विनाशनम् ॥ १ ॥
हृदि पञ्च धनं धान्यं पादे षट्कं दरिद्रता ।
पृष्ठे द्वे प्राणसंदेहो नाभौ वेदाः शुभावहाः ॥ २ ॥
गुदे द्वे भयपीडा च दक्षहस्तैकमर्थदम् ।
एकं वामे नाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकम् ॥ ३ ॥
प्रथमं सेव्यनक्षत्रं द्वितीयं सेवकस्य च ।
न सेवा सुस्थिरा तस्य यतः प्राणार्थनाशदा ॥ ४ ॥

भृत्य जो नौकर है उसके नक्षत्र से स्वामी के नक्षत्र तक गिने। तीन नक्षत्र शिर में दे, वह अर्थलाभप्रद हैं। और मुख में तीन नक्षत्र दे, वह विनाशकारक है ॥ १ ॥ पाँच हृदय में दे, वह धन-धान्य के देनेवाले हैं। और चरणों में छः नक्षत्र दे, वह दरिद्रता के देनेवाले हैं। और दो नक्षत्र पीठ में दे, वह प्राणसंदेहकारक हैं। और नाभि में चार नक्षत्र दे, वह शुभकारी हैं ॥ २ ॥ दो नक्षत्र गुदा में दे, वह भयपीड़ाकारक हैं। एक दाहिने हाथ में दे, वह अर्थदाता है। एक बायें हाथ में दे, वह नाशकारक है ॥ ३ ॥ प्रथम

नक्षत्र स्वामी का हो उससे दूसरा नक्षत्र सेवक का हो तो सेवा स्थिर न रहे प्राण और धन का नाश करे ॥ ४ ॥

अथ सेवाचक्रन्यासः २७।

शिर	मुख	हृदय	चरण	पीठ	नाभि	गुदा	दक्षिणकर	वामकर	अङ्ग
३	३	५	६	२	४	२	१	१	नक्षत्र
अर्थ-लाभ	विनाश	धन. धान्य	दारि-द्रय	प्राण संदेह	शुभ	भयपीड़ा-कारक	अर्थदाता	नाश-कारक	फल

अथ सेवामुहूर्तः ।

हस्तद्वयेऽनुराधायां रेवतीयुगले मृगे ।
पुष्ये बुधे गुरौ शुक्रे सत्तिथौ रविवासरे ॥ १ ॥
योनिराशिपयोर्मैत्र्यांस्वामीसेव्योऽनुजीविभिः॥२॥

हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य इन नक्षत्रों में और बुध, गुरु, शुक्रवार, रविवार और शुभ तिथियों में सेवा कर्म शुभ है। तथा योनि व राशीश से मित्रता हो तो सेवकों को स्वामी की सेवा करनी चाहिये ॥ १ । २ ॥

अथ छत्रधारणमुहूर्तः ।

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रपुष्याश्च शततारका ।
धनिष्ठा श्रवणश्चैव शुभानि छत्रधारणे ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, शतभिष, धनिष्ठा, श्रवण ये नक्षत्र छत्रधारण में शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ छत्रचक्रम् ।

मूले त्रीणि सप्त दण्डे कण्ठे चैव तु पञ्चकम् ।
मध्ये वसु प्रदातव्यं शिखरे वेद एव च ॥ १ ॥

मूले च जायते नाशो दण्डे हानिर्धनक्षयः ।
कण्ठे च राजसन्मानो मध्ये छत्रपतिर्भवेत् ॥ २ ॥
शिखरे कीर्त्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ॥३॥

जन्म के नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्रतक छत्रचक्र स्थापित करे। तीन नक्षत्र मूल में दे, और दण्ड में सात नक्षत्र दे, और पाँच कण्ठ में दे, मध्य में आठ दे और शिखर में चार दे ॥ १ ॥

अथ फलम् ।

मूल में पड़े तो नाश करे, दण्ड में पड़े तो हानि करे तथा धनक्षय हो, कण्ठ में पड़े तो राजसन्मान हो, मध्य में पड़े तो छत्रपति हो, और शिखर में पड़े तो कीर्त्तिवृद्धि होवे ॥ २ । ३ ॥

अथ छत्रचक्रन्यासः २७ ।

मूल	दण्ड	कण्ठ	मध्य	शिखर	अङ्क
३	७	५	८	४	नक्षत्र
नाश	हानि	धनक्षय	राजसन्मान	छत्रपति	फल

अथ धनुश्चक्रम् ।

सूर्यभाज्जन्मभान्तं च कार्मुके चैव योजयेत् ।
चापाग्रे बाणसंख्याकं शराग्रे पञ्च दीयते ॥ १ ॥
शरमूले तथा पञ्च पञ्च सन्धौ प्रकीर्तितम् ।
दण्डे द्वयं तु दद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥ २ ॥
अग्रे हानिः शरे लाभो शरमूले जयस्तथा ।
चापसन्धौ तु शौर्यं स्याद्दण्डभङ्गः प्रजायते ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक धनुष चक्र लिखना चाहिए। धनुष के अग्र भाग में पाँच नक्षत्र देना, उसका फल हानिकारक

है । और पाँच नक्षत्र बाण के आगे स्थापित करना उसका फल लाभकारी जानिये। तथा पाँच नक्षत्र बाण के मूल में देना उसका फल जयकारक है । और धनुष की दोनों संधियों पर पाँच पाँच नक्षत्र देना उसका फल शूरता उत्पन्न करे, अर्थात् बड़ा लड़नेवाला हो, तथा धनुष के दण्ड में दो नक्षत्र देना उसका फल संग्राम में भङ्गकारक है ॥ १ । ३ ॥

अथ धनुश्चक्रन्यासः २७ ।

चापाग्र	बाणाग्र	मूल	प्रथमसंधि	द्वितीयसंधि	दण्ड	अङ्ग
५	५	५	५	५	२	नक्षत्र
हानि	लाभ	जय	शूरता	शूरता	भङ्ग	फल

अथ धनुर्विद्यामुहूर्तः ।

अनुराधामघापुष्यमृगशीर्षेऽष्टमीतिथौ ।
धनुर्विद्यादिकं कार्यं द्वादश्यां शुभवासरे ॥ १ ॥

अनुराधा, मघा, पुष्य, मृगशिरा ये नक्षत्र और शुभ वार तथा अष्टमी द्वादशी तिथि में धनुर्विद्या शुभ है ॥ १ ॥

अथ दीपिकाचक्रम् ।

दीपिकायां मुखे पञ्च लाभसन्मानदायकाः ।
कण्ठे नव धनप्राप्तिर्मध्येऽष्टौ स्वामिमृत्युदाः ।
दण्डे पञ्च भवेद्राज्यमग्निऋक्षाच्च दीपकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक दीपचक्र लिखे । पाँच मुख में रक्खे उसका फल लाभसन्मानदायक है । कण्ठ में नव नक्षत्र रक्खे वह धनदाता है । मध्य में आठ स्वामी के मृत्युदायक हैं । दण्ड में पाँच राज्यदायक हैं ॥ १ ॥

अथ दीपिकाचक्रन्यासः २७ ।

मुख	कण्ठ	मध्य	दण्ड	अङ्ग
५	६	८	५	नक्षत्र
लाभसन्मानप्राप्ति	धनद	स्वामिमृत्यु	राज्यलाभ	फल

अथेक्षुयन्त्रचक्रम् ।

वेद[४]द्वि[२]नेत्र[२]भू[१]भूत[५]बाण[५]हस्त[२]रसाः[६] क्रमात् ।
प्रथमे च भवेल्लक्ष्मीर्द्वितीये हानिरेव च ॥ १ ॥
तृतीये सर्वलाभश्च चतुर्थे च क्षयस्तथा ।
पञ्चमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभं स्मृतम् ॥ २ ॥
सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धनधान्यदः ।
सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रेण योजयेत् ॥ ३ ॥

सूर्यनक्षत्र से दिन नक्षत्रतक ऊख के रस निकालने का चक्र लिखना । उसका क्रम आठ भाग में जानना । प्रथम भाग में चार नक्षत्र देना, उसका फल लक्ष्मीप्राप्तिकारक है । दूसरे भाग में दो नक्षत्र हैं, उसका फल हानिकारक है । तीसरे भाग में दो नक्षत्र हैं, वह सर्वलाभकारी हैं । चौथे भाग में एक नक्षत्र है, वह क्षयकारक है । पाँचवें भाग में पाँच नक्षत्र हैं, वह मृत्युकारक हैं । छठे भाग में पाँच नक्षत्र हैं, उनको शुभकारक जानिये । सातवें भाग में दो नक्षत्र लिखना, वह पीड़ाकारक हैं । अष्टम भाग में छः नक्षत्र हैं उनको धनधान्यदायक जानिये ॥ १ । ३ ॥

अथेत्तुयन्त्रचक्रन्यासः २७ ।

भाग	नक्षत्र	फल
प्रथम भाग	४	लक्ष्मी
द्वितीय भाग	२	हानि
तृतीय भाग	२	सर्वलाभ
चतुर्थ भाग	१	क्षय
पञ्चम भाग	५	मृत्यु
षष्ठ भाग	५	शुभ
सप्तम भाग	२	पीड़ा
अष्टम भाग	६	धनधान्य

अथ कोल्हूचक्रम् ।

सूर्यनक्षत्रमारभ्य गणयेद्दिनभावधिम् ।
त्रयं मूलेऽधरे पञ्च दक्षे पञ्च विधीयते ॥ १ ॥
शीर्षे त्रयं त्रयं शैले शेषं कर्तरि उच्यते ।
शुभं मूलेऽधरे धान्यं दक्षे पीडा विधीयते ॥ २ ॥
शीर्षे नाशश्च शैले च चर्चरा कर्तरिस्तथा ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्रतक कोल्हूचक्र विचारे। तीन नक्षत्र मूल में दे, पाँच अधर में दे, पाँच दाहिने दे ॥ १ ॥ तीन नक्षत्र शीर्ष में दे, तथा तीन नक्षत्र शैल में दे, जो बाक़ी रहे आठ उनको कर्तरी में देना चाहिये ।

अथ फलम्

मूल में पड़े तो शुभ है, अधर में पड़े तो धान्य मिले, दक्षिण में पड़े तो पीड़ा हो ॥ २ ॥ शीर्ष में पड़े तो नाश करे, कर्तरी में पड़े तो चर्चराहट हो ॥ ३ ॥

अथ कोल्हूचक्रन्यासः २७ ।

मूल	अधर	दक्षिण	शीर्ष	शैल	कर्तरी	स्थान
३	५	५	३	३	८	नक्षत्र
शुभ	धान्य	पीड़ा	नाश	नाश	चर्चराहट	फल

अथ मार्जनीचक्रं तथा मुहूर्तः ।

गुणा[३] रामै[३] तर्का[६] गुणा[३] तक तर्का[६]
फलं दग्धधान्यं व्यथा सम्पदा च ।
अरिश्चार्थलाभो रवेर्भाच्च ज्ञेयं
गृहे मार्जनीषु रविर्यामलानि ॥ १ ॥
हरिः सूर्यचित्रादितिमैत्रपुष्ये
मृगे धातृदस्रे विरिक्ते च भौमे ।
त्यजेत्कुम्भमीनौ ह्यलिं गेहशुद्धौ
पवित्रार्थमेतद्रवेर्यामलानि ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक विचारे प्रथम तीन नक्षत्र दग्धप्रद हैं, अर्थात् अग्नि में जरे, फिर तीन नक्षत्र धान्यदायक हैं, फिर छः नक्षत्र व्यथायोग्य हैं, फिर तीन नक्षत्र संपदा देते हैं, फिर छः नक्षत्र शत्रुवृद्धिकारक हैं, फिर छः नक्षत्र धनलाभप्रद हैं, इसी प्रकार से गृह की मार्जनी अर्थात् झाड़ू का चक्र विचारना सूर्ययामल में कहा है ॥ १ ॥ श्रवण, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अनुराधा,

पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी, अश्विनी इन नक्षत्रों में मार्जनीबन्धन शुभ है। रिक्तातिथि, मङ्गलवार और कुम्भ, मीन, वृश्चिक लग्न वर्जित हैं। गृहपवित्रार्थ रवियामल में कहा है और लौकिकमत से रविवार भी वर्जित है ॥ २ ॥

अथ मार्जनीचक्रन्यासः २७ ।

३	३	६	३	६	६	नक्षत्र
दुग्ध	धान्य	व्यथा	सम्पदा	शत्रु	अर्थलाभ	फल

अथ चुल्लीचक्रम् ।

सूर्यभाद्वेदनाशाय वेदसंख्या सुखाय च ।
रससंख्या च दारिद्र्यं वेदसंख्या पुनः सुखम् ॥ १ ॥
बाणसंख्या स्त्रिया नाशः पुत्रलाभश्च शेषके ।
चुल्लिचक्रं प्रवक्ष्यामि यथोक्तं गर्गभाषितम् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्रतक चुल्लीचक्र विचारना। प्रथम चार नक्षत्र नाशप्रद हैं, फिर चार नक्षत्र सुखप्रद हैं ॥ १ ॥ फिर छः नक्षत्र दारिद्र्यप्रद हैं, फिर चार सुखप्रद हैं, फिर पाँच स्त्रीनाशक हैं, शेष चार पुत्रलाभकारक हैं ॥ २ ॥

अथ चुल्लीचक्रन्यासः २७ ।

४	४	६	४	५	४	नक्षत्र
नाश	सुख	दारिद्र्य	सुख	स्त्रीनाश	पुत्रलाभ	फल

अथ रथकर्ममुहूर्तः ।

रथकर्मशुभं क्षिप्रमृदुब्राह्मेन्द्रभैश्चरैः ।
सौम्योदये शुभे वारे रविवारे विशेषतः ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र तथा मृदुसंज्ञक, रोहिणी, ज्येष्ठा तथा चरसंज्ञक नक्षत्रों में शुभग्रहों की लग्न में, रविवार के सहित शुभवार में रथकर्म शुभ होता है ॥ १ ॥

अथ खट्वाचक्रम् ।

सूर्यभाच्चन्द्रभं गण्यं खट्वाचक्रं विचारयेत् ।
मस्तके वेदं[४] शुभदं कोणयोरष्टं[८] मृत्युदम् ॥ १ ॥
शाखामष्टं[८] शुभो नित्यं मध्ये त्रीणि[३] शुभप्रदम् ।
पादयोर्वेदं[४] नक्षत्रं हानिमृत्युमहद्भयम् ॥ २ ॥
खट्वायां सर्वमासेषु पञ्च पक्षं विवर्जयेत् ।
कन्यायां प्रथमे पक्षे धनुर्मीनं तथैव च ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर, खट्वाचक्र विचारे। खट्वा का बनाना तथा शयन, चक्र से समझना चाहिये। मस्तक में चार नक्षत्र दे उसका फल शुभकारक है। और कोणों में आठ नक्षत्र दे उसका मृत्युकारक फल है ॥ १ ॥ शाखा में आठ शुभप्रद हैं। मध्य में तीन शुभप्रद हैं। पाद में चार नक्षत्र हानि, मृत्यु और महाभय देनेवाले हैं ॥ २ ॥ खाट बनाने में, सब मासों में पाँच पक्ष वर्जित हैं। प्रथम कन्या की संक्रांति के पंद्रह अंश, धन और मीन की संक्रांति वर्जित है ॥ ३ ॥

अथ खट्वाचक्रन्यासः २७ ।

मस्तक	कोण	शाखा	मध्य	पाद	अङ्ग
४	८	८	३	४	नक्षत्र
शुभद	मृत्युद	शुभ	शुभप्रद	हानिमृत्युमहाभय	फल

अथ खट्वामुहूर्तः ।

रोहिणी चोत्तरा ज्ञेया हस्तपुष्यपुनर्वसुः ।
अनुराधाश्विनी शस्ता खट्वानिर्माणकर्मणि ॥ १ ॥
शुभे योगे शुभे वारे विदध्यात्खट्वकां नरः ।
मृताशौचे तथा हेया रिक्तामा विष्टिवैधृतौ ॥ २ ॥
पितृपक्षे श्रावणे च भाद्रे मास्यशुभेऽहनि ।
वर्जयेद्भौममन्दे च खट्वानिर्माणकं सदा ॥ ३ ॥

रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, अश्विनी ये नक्षत्र खट्वानिर्माण में शुभ हैं ॥१॥ मनुष्य शुभयोग और शुभवार में खट्वापर शयन करे तथा मृत्युसूतक, रिक्तातिथि, अमावस, भद्रा, वैधृति, पितृपक्ष, श्रावण और भाद्रमास और अशुभ दिन अर्थात् जिस दिन कोई उत्पात हुआ हो वह दिन वर्जित है। मङ्गल और शनैश्चर खट्वानिर्माण में हमेशा वर्जित करे ॥ २–३ ॥

अथ चरहीमुहूर्तः ।

स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुतम् ।
वसुभिश्च हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत् ॥ १ ॥
पशुहानिः पशोर्नाशः पशुलाभः पशुक्षयः ।
पशुरोगः पशोर्वृद्धिः पशुभेदः पशोश्चयः ॥ २ ॥

स्वामी के हाथों के प्रमाण से लम्बाई चौड़ाई का जोड़ करना, चरही के बनाने में आठ का भाग देने से जो शेष अङ्क बचे उसका फल जानना ॥ १ ॥ एक बचे तो पशुहानि, दो बचें तो पशुनाश, तीन बचें तो पशुलाभ, चार बचें तो पशुक्षय, पाँच बचें तो पशुरोग

छः बचें तो पशुवृद्धि, सात बचें तो पशुभेद, आठ बचें तो बहुत पशु होवें ॥ २ ॥

अथ शस्त्राभ्यासमुहूर्तः ।

हस्तत्रये श्रुतौ दास्त्रे पुष्येदित्युत्तरासु च ।
सुदिने सर्वशस्त्राणामभ्यासः सद्भ बुधं विना ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, शुभदिन अर्थात् चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र इनमें शस्त्र सीखने का मुहूर्त शुभ है, और बुधवार वर्जित है ॥ १ ॥

अथ सेतुबन्धनमुहूर्तः ।

ध्रुवर्क्षे स्वातिभे सौम्ये स्थिरलग्ने शुभे सिते ।
सेतूनां बन्धनं कार्यं जीवमन्दार्कवासरे ॥ १ ॥

ध्रुवसंज्ञक, स्वाती, मृगशिरा ये नक्षत्र पुल बाँधने में शुभ हैं । और स्थिर लग्न शुभ हैं । शुक्लपक्ष, बृहस्पति, शनैश्चर और रविवार दिन शुभ है ॥ किसी आचार्य के मत से भूमिसुप्त, पाताल, चन्द्रमा और राहु भी विचारना चाहिये, उसे आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

अथ भूमिसुप्तज्ञानम् ।

प्रद्योतनात्पञ्चनगाङ्कसूर्य
नवेन्दुषड्विंशमितानि भानि ।
शेते मही नैव गृहं विधेयं
तडागवापीखननं न शस्तम् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से सात, पाँच, नव, बारह, उन्नीस और छब्बीस इतने नक्षत्र चन्द्रनक्षत्र तक होवें तो भूमिसुप्त जानिये । उसमें पुल बाँधना, पृथिवी खोदना, खेती इत्यादि तथा गृहारम्भ, तालाब और बावली खोदना शुभ नहीं है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रलोकवासज्ञानम् ।

तिथिं पञ्चगुणीकृत्वा एकेन च समन्विताम् ।
त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं चन्द्रं विचारयेत् ॥ १ ॥
एकेन वसते स्वर्गे द्विके पातालमेव च ।
तृतीये वसते मृत्युः सर्वकर्माणि साधयेत् ॥ २ ॥
पातालस्थो यदा चन्द्रः षट्कर्माणि विवर्जयेत् ।
गृहहोमकृषीयात्रातडागाकूपकर्मणि ॥ ३ ॥

वर्तमान तिथि को पाँच से गुणा करे, उसमें एक जोड़ दे, उसमें तीन का भाग दे शेष जो रहे उसे चन्द्रलोकवास जानिये ॥ १ ॥ एक बचे तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानिये। दो बचें तो पाताल में जानिये। तीन बचें तो मृत्युलोक में जानना । इसमें सब कार्यों का साधन करना योग्य है ॥ २ ॥ पाताललोक में चन्द्रमा बसे तो छः कर्म वर्जित करना चाहिये । एक तो गृहारम्भ, दूसरा होम करना, तीसरा खेती का कार्य, चौथा यात्रा करना, पाँचवाँ तालाब खोदना, छठा कुवाँ खोदना वर्जित है ॥

उदाहरण ।

संवत् १९४८ शके १८१३ भाद्रकृष्णषष्ठ्यां ६ भौमेष्टम् २।५ चन्द्रवासचिन्तनं अर्थात् भादों बदी छठ मङ्गल को चन्द्रवास का उदाहरण। छठ को पाँच से गुणा किया तो तीस हुए, उसमें एक जोड़ दिया तो इकतीस हुए इसमें तीन का भाग दिया तो शेष बचा १, तो चन्द्रमा का वास स्वर्ग में जानना, इसी रीति से सब तिथियों का समझना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ राहुवासज्ञानम् ।

देवालये गेहविधौ जलाशये

राहोर्मुखं शम्भुदिशो विलोमतः।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे
खाते मुखात्पृष्ठविदिक् शुभा भवेत् ॥ १ ॥

देवालय, गृहारम्भ तथा जलाशय में राहु का मुख विचारना चाहिये। क्रम से ईशान दिशा से विलोम होता है, उसका क्रम लिखते हैं। देवालय में मीन के सूर्यों से तीन तीन राशि गिने। ईशान, वायव्य, नैर्ऋत्य, आग्नेय इन विदिशाओं में राहुमुख जानिये। तथा गृहारम्भ में सिंह के सूर्योंसे तीन तीन राशि चारों विदिशाओं में राहुमुख जानना चाहिए। और जलाशय में मकर के सूर्यों से तीन तीन राशि चारों विदिशाओं में राहुमुख जानना चाहिये। चक्र से खुलासा समझ लेना। जिस दिशा में राहु का मुख हो उसका पृष्ठ अर्थात् पीछेवाली दिशा में खात होता है, उसी दिशा में आरम्भ करना शुभ है, अर्थात् उसी दिशा में खोदना चाहिये॥

उदाहरण।

ईशान में राहु का मुख हो तो पृष्ठ आग्नेय दिशा में होता है और जो वायव्य में राहु का मुख हो तो पृष्ठ ईशान होता है और जो नैर्ऋत्य मुख हो तो वायव्य पृष्ठ होता है और आग्नेय मुख हो तो नैर्ऋत्य पृष्ठ होता है ॥ १ ॥

अथ देवालयराहुमुखचक्रम्।

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
मीन-मेष वृष	मिथुन-कर्क सिंह	कन्या-तुला वृश्चिक	धन-मकर कुंभ	सूर्यराशि

अथ गृहारम्भे राहुमुखचक्रम् ।

ईशान	वायव्य	नैऋ॑त्य	आग्नेय	दिशा
सिंह-कन्या तुला	वृश्चिक धन-मकर	कुंभ-मीन मेष	वृष मिथुन कर्क	सूर्यराशि

अथ जलाशये राहुमुखचक्रम् ।

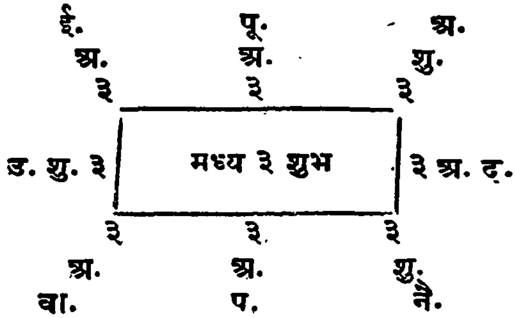
ईशान	वायव्य	नैऋ॑त्य	आग्नेय	दिशा
मकर-कुंभ मीन	मेष-वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला-वृश्चिक धन	सूर्यराशि

अथ कूपचक्रं सूर्यभात् ।

कूपेऽर्कभान्मध्यगतैस्त्रिभिर्भैः
स्वादूदकं पूर्वदिशि त्रिभिस्त्रिभिः ।
खण्डं जलं स्वादुजलं जलक्षयं
स्वादूदकं क्षारजलं शिलाश्च ॥ १ ॥
मिष्टं जलं क्षारजलं क्रमाद्भवेद्
वैसूर्यभात्त्रित्रिमितैः फलं वदेत् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक कूपचक्र गिने, मध्य में तीन नक्षत्र देवे उसका फल स्वादुजल हो, और पूर्वादि आठ दिशाओं में तीन तीन नक्षत्र देना, उसका फल लिखते हैं । पूर्व में पड़े तो खण्डित जल होवे । आग्नेय में स्वादुजल हो, दक्षिण में जलक्षय हो । नैऋ॑त्य में स्वादुजल हो, पश्चिम में क्षारजल हो, वायव्य में शिला निकले, उत्तर में मीठा जल हो, ईशान में क्षारजल हो, इसी प्रकार से सूर्य के नक्षत्र से तीन तीन नक्षत्रों का फल जानिये ॥ १–२ ॥

अथ कूपचक्रन्यासः ।



अथ द्वितीयप्रकारेण कूपचक्रम् ।

रोहिण्यादि लिखेच्चक्रं त्रयं मध्ये प्रतिष्ठितम् ।
पूर्वादिदिक्षु सर्वासु सृष्टिमार्गेण दीयते ॥ १ ॥
मध्ये शीघ्रजलं स्वादु पूर्वे भूमिश्च खण्डिता ।
आग्नेय्यां सुजलं प्रोक्तं दक्षिणे निर्जलं तथा ॥ २ ॥
नैर्ऋत्ये चामृतं वारि पश्चिमे शोभनं जलम् ।
वायव्येऽपि जलं हन्ति चोत्तरे स्वादुकं जलम् ॥ ३ ॥
ईशाने कटुकक्षारं अल्पतीक्ष्णस्य सम्भवम् ॥ ४ ॥

रोहिणी आदि से दिन नक्षत्र तक कूपचक्र गिने । मध्य में तीन नक्षत्र स्थापित करे, और पूर्वादि आठों दिशाओं में तीन तीन नक्षत्र देवे, उसका फल लिखते हैं ॥ १ ॥ मध्य में पड़े तो शीघ्र, सुस्वादु जल हो, पूर्व में कोई विवर पड़े । आग्नेय में सुन्दर जल हो, दक्षिण में निर्जल होवे ॥ २ ॥ नैर्ऋत्य में मधुर जल हो, पश्चिम में शोभन जल हो, वायव्य में जल न हो, उत्तर में मधुर जल होवे ॥ ३ ॥ ईशान में कटु तथा खारी जल हो और थोड़ा और निकम्मा हो ॥ ४ ॥

अथ कूपचक्रन्यासः ।

ई. अ. ३	पू. अ. ३	अ. शु. ३
उ. शु. ३	मध्य ३ शुभ	३ अ. द.
३ अ. वा.	३ शु. प.	३ शु. नै.

अथ तृतीयप्रकारेण भौमभात्कूपचक्रम् ।

शशिशराब्धित्रित्रयाब्धिगुणाब्धये
वधजलेषुससिद्धिरभङ्गदम् ।
रुजमसिद्धियशोऽर्थप्रसिद्धये
जलविभङ्गकरः कुजभादिषु ॥ १ ॥

मङ्गल के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक कूपचक्र विचारे। प्रथम एक में पड़े तो अशुभ जानिये। फिर पाँच में शुभ फल जानना। फिर चार में शुभ जानिये। फिर तीन में रोग होता है। फिर तीन में अशुभ जानिये। फिर चार में यश जानना। फिर तीन नक्षत्रों में अर्थ की प्रसिद्धि जानिये। फिर चार नक्षत्र में जलभङ्ग जानिये॥१॥

अथ भौमभात्कूपचक्रन्यासः २७ ।

१	५	४	३	३	४	३	४	न०
अशुभ	शुभ	शुभ	रोग	अशुभ	यश	अर्थ सिद्धि	जलभङ्ग	फल

अथ चतुर्थप्रकारेण कूपचक्रं राहुभात् ।

राहुऋक्षात्त्रयं पूर्वे त्रयमाग्नेयतः क्रमात् ।

मध्ये चत्वारि ऋक्षान्ते फलं वाच्यं शुभाशुभम् ॥ १ ॥
पूर्वे शोककरं राहुराग्नेय्यां जलदं सदा ।
दक्षिणे स्वामिमरणं नैर्ऋत्यां दुःखदायकम् ॥ २ ॥
पश्चिमे सुखसौभाग्यं वायव्ये जलवर्द्धनम् ।
उत्तरे निर्जलं विद्यादीश्वरे जलसिद्धिदम् ॥ ३ ॥
मध्ये च सजलं वाच्यं नान्यथा रुद्रभाषितम् ।
स्वयंरूपी सदा राहुः फलदस्तत्क्षणे भुवि ॥ ४ ॥
कूपचक्रं प्रवक्ष्यामि विज्ञेयं सर्वदा बुधैः ॥ ५ ॥

राहु के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक कूपचक्र विचारे । प्रथम तीन नक्षत्र कूप के पूर्वदिशा में दे, और तीन तीन नक्षत्र आग्नेय से सब दिशाओं में देना और पीछे के चार नक्षत्र मध्य में देना उसका फल कहते हैं ॥ १ ॥ पूर्व में पड़े तो राहु शोक करे, आग्नेय में जलसंपदा हो, दक्षिण में स्वामी का मरण हो, और नैर्ऋत्य में दुःखप्राप्ति हो, पश्चिम में सुखसौभाग्य हो, वायव्य में जल की वृद्धि हो, उत्तर में निर्जल हो, ईशान में जलसिद्धि हो, मध्य में पड़े तो जल निकले इसमें अन्यथा वचन नहीं है । श्रीमहादेवजी कहते हैं कि अपनेही रूप से सदा राहु फल को देता है पृथ्वी में यह कूपचक्र जो कहा है इसे सब पण्डित लोग सदा विचार करें ॥ २–५ ॥

अथ राहुभात्कूपचक्रन्यासः २८ ।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
अ०	शु०	अ०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	शुभ	फल

अथ कूपमुहूर्तः ।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च
मित्रं पित्रं त्रीणि चैवोत्तराणि ।
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः
कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष, अनुराधा, मघा तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में कुवाँ का खोदना शुभ है, ऐसा मुनीन्द्र कहते हैं ॥ १ ॥

अथ गृहमध्ये कूपदिशाफलम् ।

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाश-
स्त्वीशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ।
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च
संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ॥ १ ॥

गृह के मध्य में कुवाँ खोदे तो अर्थनाश हो, ईशान में पुष्टता हो, पूर्व में ऐश्वर्यवृद्धि हो, आग्नेय में पुत्रनाश हो, दक्षिण में स्त्रीविनाश हो, नैर्ऋत्य में गृहपति की मृत्यु हो, पश्चिम में संपदा हो, वायव्य में शत्रुपीड़ा हो, उत्तर में सुखप्राप्ति हो ॥ १ ॥

इति कूपदिशाफलम् ।

अथ तडागचक्रम् ।

तडागे च प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
सूर्यभाच्चन्द्रभं यावद्गणयेत्सततं बुधैः ॥ १ ॥
दिक्षु ऋक्षद्वयं यस्य मध्ये पञ्च नियोजयेत् ।

षट्कऋक्षे वारिवाहे च फलं तत्र विचारयेत् ॥ २ ॥
पूर्वे तु बहुशोकश्च आग्नेय्यां सजलं बहु ।
दक्षिणे वारिनाशश्च नैर्ऋत्ये चामृतं जलम् ॥ ३ ॥
पश्चिमे च जलं स्वादु वायव्ये वारिशोषणम् ।
उत्तरे च स्थितं तोयमीशाने कुत्सितं जलम् ॥ ४ ॥
मध्ये छिद्रजलं याति वारिवाहेतिपूर्णता ॥ ५ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक तालाब का चक्र गिने ॥१॥ पूर्वादि आठों दिशाओं में दो दो नक्षत्र दे, मध्य में पाँच नक्षत्र दे, और छः नक्षत्र जलस्थ में दे, उसका फल लिखते हैं॥२॥ पूर्व दिशा में पड़े तो बहुत शोक हो, आग्नेय में जल बहुत हो, दक्षिण में जलनाश करे, नैऋर्त्य में मधुर जल होवे, पश्चिम में स्वादुजल हो, वायव्य में जल को सोखे, उत्तर में जल स्थित हो, ईशान में खारी जल होवे, मध्य में छिद्रजल अर्थात् खण्डित जल हो, जलस्थ में परे तो पूर्णजल हो । यह चक्र ब्रह्मयामल में कहा है ॥ ३—५ ॥

अथ तडागचक्रन्यासः सूर्यभात् २७ ।

पूर्व	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	वारिवाह	स्थान
२	२	२	२	२	२	२	२	५	६	नक्षत्र
बहुशोक	बहुजल	जलनाश	अमृतजल	जलस्वादु	जलशोष	जलस्थित	कुत्सितजल	छिद्रजल	पूर्णजल	फल

अथ तडागमुहूर्तः ।

ध्रुववसुजलपुष्यो नैर्ऋतं मैत्रसंज्ञकम् ।
नक्षत्रं शुभदं ज्ञेयं तडागे सर्वदा बुधैः ॥ १ ॥

ध्रुवसंज्ञक, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ, पुष्य, मूल, मैत्रसंज्ञक ये नक्षत्र तालाब खोदने में शुभदायक हैं ॥ १ ॥

अथ निर्वारचक्रम् ।

निर्वारे पूर्वतस्त्रीणि त्रीणि त्रीणि च सर्वतः ।
मध्ये चत्वारि देयानि राहुभाच्चन्द्रभं बुधैः ॥ १ ॥
मध्ये पूर्वजलं सौख्यं चोत्तरे धनवर्द्धनम् ।
याम्यनैर्ऋत्ययोर्दुःखं भयमग्नेः परासु च ॥ २ ॥

राहु के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक नेवार का चक्र गिने, पूर्वादि आठों दिशाओं में तीन तीन नक्षत्र दे । मध्य में चार नक्षत्र दे ॥ १ ॥

अथ फलम् ।

मध्य में या पूर्व में पड़े तो जल का सुख हो, उत्तर में धन की वृद्धि हो, दक्षिण तथा नैर्ऋत्य में अग्नि का दुःख हो, आग्नेय तथा और जो बाक़ी दिशा हैं, उनमें भय होवे ॥ २ ॥

अथ निर्वारचक्रन्यासः २८ ।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
३	३	३	३	३	३	३	३	४	नक्षत्र
सौख्य जल	भय	दुःख	दुःख	भय	भय	धनवर्द्धन	भय	सौख्य जल	फल

अथ जलाशयमुहूर्तः ।

अनुराधामघाहस्तरेवतीषूत्तरात्रये ।
रोहिणीयुगले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा ॥ १ ॥
पूर्वाषाढाभिधेनैव शुभे मासि शुभे दिने ।
वापीकूपतडागानामारम्भः कथितो बुधैः ॥ २ ॥

अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाषाढ इन नक्षत्रों में तथा शुभ मास व शुभ दिनों में बावली, कुवाँ, तालाब खुदवाना शुभ है ॥ १-२ ॥

अथ वापीमुहूर्तः ।

स्वात्यश्विपुष्यहस्तेषु मैत्रे चैव पुनर्वसौ ।
रेवत्यां वारुणे चैव वापीकर्म प्रशस्यते ॥ १ ॥

स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, रेवती, शतभिष इन नक्षत्रों में बावली का कृत्य शुभ है ॥ १ ॥

अथ कार्यभेदेन जन्मनामराशिनिर्णयः ।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशेरतः परम् ॥ १ ॥

देश के कार्य, ग्राम के कार्य, गृह के कार्य तथा युद्धकार्य, नौकरी करना और व्यवहार करना इन कार्यों में नाम राशि प्रधान है। और जो कार्य हैं उनको जन्मराशि से विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्तः ।

आर्द्राचित्रात्र्युत्तरे रेवतीन्दु
ब्राह्मे मित्रे वा धनिष्ठासु दीक्षा ।

आद्या मार्गे फाल्गुने श्रावणोर्जे
माघे वारे मन्दमाहेयहीने ॥ १ ॥

आर्द्रा, चित्रा, तीनों उत्तरा, रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, अनुराधा और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में दीक्षा लेना शुभ है। तथा अगहन, फाल्गुन, श्रावण, कार्त्तिक, माघ ये महीने शुभ हैं तथा शनि और मंगलवार वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण दीक्षामासफलम् ।

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् ।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥
आषाढे बन्धुनाशः स्याच्छ्रावणे च शुभावहम् ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥ २ ॥
कार्त्तिके धनवृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदम् ।
पौषे तु ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्द्धनम् ॥३॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्त्तितम् ॥ ४ ॥

चैत्र में दीक्षा ले तो बहुत दुःख प्राप्त हो, वैशाख में रत्नलाभ, ज्येष्ठ में मरण, आषाढ में बन्धुनाश, श्रावण में शुभ, भाद्र में पुत्रहानि, आश्विन में सर्वसुख, कार्त्तिक में धनवृद्धि, अगहन में शुभदायक, पौष में ज्ञानहानि, माघ में ज्ञानवृद्धि और फाल्गुन में सुख सौभाग्य हो ॥ १-४ ॥

अथ तैलाभ्यङ्गमुहूर्तफलम् ।

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥ १ ॥

इतवार को तेल लगावे तो ज्वर आवे, चन्द्रवार में शोभा हो, मङ्गल में मृत्यु हो, बुध को धन प्राप्ति हो, बृहस्पति में धनहानि हो, शुक्र में दुःख हो, शनैश्चर को सुख हो ॥ १ ॥

अथ तैलाभ्यङ्गपरिहारः ।

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
शुक्रे तु गोमयं क्षिप्त्वा तैलदोषो न विद्यते ॥ १ ॥

इतवार को फूलयुक्त तेल लगावे, मंगल को मिट्टीयुक्त लगावे, बृहस्पति को दूर्वायुक्त लगावे, शुक्र को गोबरयुक्त लगावे तो तेल लगाने का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ राज्याऽभिषेकमुहूर्तः ।

राज्याभिषेकः शुभमुत्तरायणे
गुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः ।
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपै-
र्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥ १ ॥
शाक्रः श्रवः क्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः
शीर्षोदये चोपचये शुभस्तनौ ।
पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः
केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः ॥ २ ॥
पापैस्तनौ रुङ् निधने मृतिः सुते
पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ।
स्यात्खेलशोभ्रष्टपदोद्युनाम्बुगैः
सर्वं शुभं केन्द्रगतैः शुभग्रहैः ॥ ३ ॥

गुरुर्लग्नकोणे कुजारौ सितः खे
स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या ।
तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबन्धो-
र्गुरुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ४ ॥

राजगद्दी पर बैठने का मुहूर्त कहते हैं–उत्तरायण सूर्य हो। बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र उदित हों तथा मङ्गल, सूर्य और जन्म लग्न का स्वामी, महादशादिकों का स्वामी तथा जन्मराशि का स्वामी ये ग्रह बलान्वित हों अर्थात् उच्चादिकस्थान में होवें व मित्र के घरमें हो तथा अपने घर के हों, अथवा मित्रग्रह देखता हो तो बली जानना। चैत्रमास तथा रिक्ता तिथि वर्जित है। तथा मङ्गलवार, रात्रिसमय, और मलमास भी वर्जित है ॥ १ ॥ ज्येष्ठा, श्रवण, क्षिप्रसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, ये नक्षत्र शुभ हैं। तथा शीर्षोदयी उपचयलग्न होयँ अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ ये लग्न शीर्षोदय कहाती हैं। अब उपचयलग्न लिखते हैं–जन्मलग्न तथा जन्मराशि से तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें जो लग्न हो वह उपचयलग्न कहाती हैं। तथा शुभग्रहों की लग्न हो और पापग्रह लग्न से तीसरे, छठे, ग्यारहवें हों, शुभग्रह केन्द्र १।४।७। १० त्रिकोण ९।५ व ग्यारहवें व दूसरे, तीसरे हों, पापग्रह लग्न में पड़े तो राजा के रोग हो, और आठवें जो पापग्रह पड़े तो मृत्यु हो, पांचवें जो पापग्रह हो तो पुत्र को पीड़ा करे, और दूसरे, बारहवें पापग्रह हो तो दरिद्रता हो, दशवें पापग्रह हों तो आलसी हो, चौथे व सातवें पापग्रह हो तो ऐश्वर्य भ्रष्ट करे और जो शुभग्रह केन्द्र में हो तो सब ग्रह शुभकारी हों ॥ २–३ ॥ बृहस्पति लग्न तथा त्रिकोण ९।५ में हो, मङ्गल छठे हो, तथा

शुक्र दशवें हो तो राजा सदा राजलक्ष्मी से आनन्दित हो, तीसरे शनैश्चर, ग्यारहवें सूर्य और दशवें, चौथे बृहस्पति हो तो राजा की पृथ्वी सदा स्थिर रहे ॥ ४ ॥

अथ पशुक्रयविक्रयमुहूर्तः ।

पूर्वामैत्रद्वयं मूलं वासवं रेवती करः ।
पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥ १ ॥

तीनों पूर्वा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, पुनर्वसु और पुष्य ये नक्षत्र पशु बेचने तथा खरीदने में शुभ हैं ॥ १॥

अथ नृत्यारम्भमुहूर्तः ।

हस्तात्तिस्रो वासवं चानुराधा
ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ।
पूर्वाचार्यैः कीर्तिताश्चन्द्रवर्ति-
नृत्यारम्भे शोभनस्त्वृक्षवर्गः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती, शतभिष और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में नृत्यारम्भ शुभ है । परन्तु चन्द्रमा को बली होना चाहिए ऐसा आचार्य कहते हैं ॥ १ ॥

अथ ऋणग्रहणऋणदानमुहूर्तः ।

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ।
नारे ग्राह्यमृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽह्नि य-
त्तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥१॥
तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम् ।
प्रयुक्तश्च विनष्टश्च विष्ट्यां पाते च नाप्यते ॥ २ ॥

ऋणग्राहकनक्षत्रं प्रथममृणादस्य भात् ।
द्वितीयमृणसंबन्धो न कर्तव्यः कदाचन ॥ ३ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष और अश्विनी इन नक्षत्रों में और चर लग्न में ऋण ग्रहण करना शुभ है । परन्तु यदि ऋण लेने में लग्न से नवयें, पांचवें, आठवें घर में कोई ग्रह न हो तथा मङ्गलवार, संक्रान्ति, वृद्धियोग, हस्त नक्षत्र और इतवार दिन हो तो उसके वंश में ऋण बना रहे । तथा बुधवार को ऋण देना वर्जित है ॥ १ ॥ तीक्ष्णसंज्ञक, मिश्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक और उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में यदि द्रव्य किसी को दे या गाड़ दे, या किसी को सौंप दे, अथवा खोजावे तो फिर न मिले । यही फल भद्रा व पात का भी जानना ॥ २ ॥ यदि ऋणी के नक्षत्र से धनी का नक्षत्र दूसरा होवे तो ऋण कभी न लेवे ॥ ३ ॥

अथ हलप्रवाहमुहूर्तः ।

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ।
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे
कर्काजैणधटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥१॥

मूल, विशाखा, मघा, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक और क्षिप्रसंज्ञक इन नक्षत्रों में हलप्रवाह शुभ है । इतवार और शनिवार वर्जित है । और पापग्रह बल से रहित हो और चन्द्रमा जलराशि के नवांश में हो अर्थात् मकर, कुम्भ, मीन, कर्क का नवांश जल राशि का होना है । नवांश का क्रम आगे लिखेंगे । शुक्र, चन्द्रमा बलिष्ठ होयँ उच्चादिक में तथा लग्न में बृहस्पति हो तथा सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर और तुला, ये लग्न वर्जित हैं, और

क्षय को करती हैं, तथा रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४ छठ इनको भी क्षयकारक जानना चाहिए ॥ १ ॥

अथ बीजोप्तिमुहूर्तस्तथा बीजोप्तिचक्रं तथा हलचक्रम् ।

एष्वेव श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना
बीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वगुभतोऽष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ।
रामेन्द्वग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युप्तौ हलेऽर्कोज्झिता-
द्भाद्रामाष्टनवाष्टभानि मुनिभिःप्रोक्तान्यसत्सन्तिच॥१॥

पहले हलप्रवाह में जो नक्षत्रादि कहे हैं उनमें बीजोप्ति भी करना चाहिये, परन्तु श्रवण,शतभिष, पुनर्वसु और विशाखा ये नक्षत्र बीजोप्ति में वर्जित करना उचित है । और मङ्गलवार वर्जित है, शेष सब तिथिवारादि हलप्रवाह के जानना ।

अथ बीजोप्ति का चक्र लिखते हैं ।

राहु के नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिनकर विचारना चाहिए । प्रथम आठ नक्षत्र अशुभ हैं, फिर तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, फिर तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, तीन शुभ हैं, फिर एक अशुभ है, तीन शुभ हैं, फिर चार अशुभ हैं यह बीजोप्तिचक्र है ।

अथ राहुभाद्बीजोप्तिचक्रन्यासः २७ ।

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	फल

अब हलचक्र कहते हैं ।

सूर्य के उज्झित नक्षत्रसे अर्थात् जिस नक्षत्रके सूर्य होयँ, उसके पहलेवाले नक्षत्रसे गिनकर विचारना चाहिए। प्रथम तीन नक्षत्र अशुभ हैं, फिर आठ नक्षत्र शुभ हैं, फिर नव अशुभ हैं, फिर आठ शुभ हैं, इनको अभिजित् समेत अट्ठाइस जानना चाहिए ॥ १ ॥

अथ सूर्यनक्षत्रोज्झिताद्धलचक्रन्यासः २८ ।

३	८	६	८	नक्षत्र
अ.	शु.	अ.	शु.	फल

अथ पुनर्बीजोप्तित्याज्यम् ।

रवौ रौद्राद्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्र बीजवापं परित्यजेत् ॥ १ ॥

जब आर्द्रानक्षत्र के सूर्य प्रवेश होयँ तब से तीन दिन तक पृथ्वी रजस्वलाधर्म को प्राप्त होती है, उसमें बीज बोना वर्जित है ॥ १ ॥

अथ धान्यच्छेदनमुहूर्तः ।

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ १ ॥

तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तथा पूर्वभाद्रपद, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ, भरणी, चित्रा और पुष्य ये नक्षत्र और स्थिर लग्न अन्न काटने में शुभ हैं। परन्तु शनि और मङ्गलवार, तथा रिक्तातिथि वर्जित है और स्थिर लग्न होय ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण हलचक्रम् ।

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्च त्रिभिः पञ्च त्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हले क्रमात् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक हलचक्र विचारकर उसका फल चक्र से समझ लेना चाहिए ॥ १ ॥

अथ हलचक्रन्यासः ।

३	३	३	५	३	५	३	२	नक्षत्र
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	फल

अथ द्वितीयप्रकारेण राजमार्तण्डे धान्यच्छेदनमुहूर्तः ।

रौद्रे पित्र्ये तथा सौम्ये हस्ते पुष्येऽनिले तथा ।
सस्यच्छेदं प्रशंसन्ति मूलश्रवणवासवे ।
गुरौ शुक्रे शुभं हित्वा रिक्तां भौमशनैश्चरौ ॥१॥

आर्द्रा, मघा, मृगशिरा, हस्त, पुष्य और स्वाती इन नक्षत्रों में नवीन धान्यच्छेदन शुभ है। तथा मूल, श्रवण, धनिष्ठा भी धान्यच्छेदन में शुभ हैं। गुरुवार और शुक्रवार शुभ है, तथा रिक्ता ४। ९। १४ तिथि, मङ्गल और शनिवार वर्जित है ॥१॥

अथ तृतीयप्रकारेण मुहूर्तगणपतौ धान्यच्छेदनम् ।

पूर्वोत्तरामघाश्लेषाज्येष्ठार्द्राश्रवणद्वये ।
भरणीद्वितये मूले मृगे पुष्ये करत्रये ॥
धान्यच्छेदः शुभो रिक्तां हित्वा भौमशनैश्चरौ॥१॥

तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, भरणी, कृत्तिका, मूल, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा और स्वाती इन नक्षत्रों में धान्यच्छेदन शुभ है। तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथि मङ्गल और शनैश्चरवार वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ सस्यरोपणमुहूर्तः ।

हस्तत्रयोत्तरामूले धनिष्ठारोहिणीमृगे ।
पुष्याश्विन्यनुराधायां मघायां शुभवासरे ।
त्यक्त्वा रिक्तां शनिं भौमं सस्यस्याङ्कुररोपणम् ॥१॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, तीनों उत्तरा, मूल, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा और मघा इन नक्षत्रों में तथा शुभ वारों में सस्यरोपण शुभ है । और रिक्तातिथि, शनि और मङ्गलवार वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ सस्यवृक्षलतादिसेचनमुहूर्तः ।

सस्यारोपोदिते काले हित्वा ज्ञार्कं मघाकरम् ।
वृक्षसस्यलतादीनां प्रशस्तं जलसेचनम् ॥ १ ॥

सस्यारोपण में जो नक्षत्रादि कहे हैं, उनमें खेती के वृक्ष और लतादिक सींचना शुभ है । परन्तु बुध और इतवार दिन तथा मघा और हस्त नक्षत्र वर्जित है ॥ १ ॥

अथ कणमर्दनमुहूर्तः ।

अनुराधाश्रवे मूले रेवत्यां च मघात्रिभे ।
ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां शुभं स्यात्कणमर्दनम् ॥ १ ॥

अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा, रोहिणी इन नक्षत्रों में कणमर्दन शुभ है ॥ १ ॥

अथ धान्यस्थितिमुहूर्तः ।

पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधाश्रवणात्रये ।
हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥
गुरौ शुक्रेरवीन्द्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में गुरु, शुक्र, इतवार और सोमवार इन दिनों में कोष्ठ में अन्न का रखना शुभ है ॥ १ ॥

अथ हवनचक्रम् ।

सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥१॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक होमचक्र गिने, तीन तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहों में स्थापित करे, उसका फल चक्रन्यास से समझ लेना और ग्रह भी चक्र से जान लेना, क्रूरग्रह का अशुभ फल है, शुभग्रह का शुभ फल है ॥ १ ॥

अथ हवनचक्रन्यासः ।

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	बृ.	रा.	के.	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
अ.	शु.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	अ.	फल

अथाग्निवासज्ञानम् ।

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणे भ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥१॥

शुक्लपक्ष की परीवा से गिनकर जो तिथियाँ होयँ, उनमें वार रविवारादि की संख्या जोड़ देना, उसमें एक और जोड़ देना, उसमें चार का भाग देना, जो शेष तीन बचें तथा शून्य बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में जानना उसमें हवन करने से सुख प्राप्त होता है। और एक बचे तो अग्निवास आकाश में जानना, उसका फल

प्राणनाशक है । और जो दो बचें तो पाताल में अग्निवास जानना, उसका फल अर्थनाशक है ॥ १ ॥

अब उदाहरण दिखाते हैं ।

श्रीसंवत् १९४८ शक १८१३ भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां १४ रवाविष्टम् १ । १५ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तक २९ उन्तीस हुए उसमें एक और जोड़ दिया तो ३० तीस हुए उसमें रविवार जोड़ दिया तो हुए ३१, इसमें चार का भाग दिया तो बचे ३ तीन अग्नि का वास पृथ्वी में जानना ॥ १ ॥

अब दूसरा उदाहरण शुक्लपक्ष का दिखाते हैं ।

श्रीसंवत् १९४८ शक १८१३ भाद्रशुक्ल ८ शुक्रेष्टम् ४ । ०० तिथि अष्टमी में एक जोड़ दिया तो ९ हुए उसमें वार जोड़ दिया तो १५ पन्द्रह हुए इसमें चार का भाग दिया तो शेष बचे ३ तीन इसलिए अग्नि का वास पृथ्वी में जानिये ॥ १ ॥

अथ नवान्नमुहूर्त्तः ।

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम् ।
विना नन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ १ ॥

चरसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, और मृदुसंज्ञक इन नक्षत्रों में तथा शुभग्रहों की लग्नों में नवान्नकर्म शुभ है । परंतु नन्दातिथि १ । ६ । ११ तथा विषघटी, चैत्र और पौषमास तथा शनैश्चर और मङ्गलवार वर्जित है ॥ १ ॥

अथ विषघटीदोषमाह ।

खरामंतोऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे
खवेदैतः के, रदतश्च सार्पभे ।

खबाण[५०]तोऽश्वे, धृति[१८]तोऽर्यमाम्बुपे
कृते[२०]र्भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ १ ॥
मनो[१४]र्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे
कुपक्ष[२१]तः शैवकरेष्टि[११]तोऽजभे ।
युगाश्वि[२४]तो बुध्न्यभतोययाम्यभे
खचन्द्र[१०]तो मित्रभवासवश्रुतौ ॥ २ ॥
मूलेऽङ्गबाणा[५६]द्विषनाडिकाः कृता
वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः ॥
निघ्ना भभोगेन खतर्क[६०]भाजिताः
स्फुटा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ ३ ॥

विषघटीज्ञान ।

रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिका, मघा इन नक्षत्रों में ३० घटी के बाद की ४ घड़ी, रोहिणी में ४० घटी के बाद की ४ घड़ी, आश्लेषा में ३२ घटी के बाद की ४ घड़ी, अश्विनी में ५० घटी के बाद की ४ घड़ी, उत्तराफाल्गुनी और शतभिष में १८ घटी के बाद की ४ घड़ी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढ़, पुष्य इन नक्षत्रों में २० घटी के बाद की ४ घड़ी, विशाखा, स्वाती, मृगशिरा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में १४ घटी के बाद की ४ घड़ी, आर्द्रा और हस्त इन दोनों में २१ घटी के बाद की ४ घड़ी, पूर्वभाद्रपद में १६ घटी के बाद की ४ घड़ी, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढ़, भरणी इन नक्षत्रों में २४ घटी के बाद की ४ घड़ी, अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण इन नक्षत्रों में १० घटी के बाद की ४ घड़ी, और मूल नक्षत्र में ५६ घटी के बाद की ४ घड़ी विषघटी कही जाती हैं, इन विष घटिकाओं में विवाहादि शुभ

कार्य नहीं करना चाहिए । परन्तु इसमें विशेष यह है कि यदि पूर्वोक्त नक्षत्रों का पूरे ६० दण्ड का प्रमाण हो, तब तो पूर्वोक्त नक्षत्रों की उक्त घटियों के बाद ४ दण्ड विषघटीसंज्ञक होते हैं । यदि पूर्वलिखित नक्षत्रों का मान, ६० दण्ड से न्यून किंवा अधिक है, तब तो उस नक्षत्र के प्रस्तुत मान को पहले कहे हुए, उस नक्षत्र के अङ्क से गुणा करे, उस गुणा की हुई संख्या में ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले, उतने ही दण्ड के बाद की ४ घड़ी विषघटीसंज्ञक होती हैं ।

अथ विषघटीचक्रम् ।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	नक्षत्र.
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	घटी.
पुष्य.	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	नक्षत्र.
२०	३२	३०	२०	१८	११	२०	घटी.
स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	नक्षत्र.
१४	१४	१०	१४	५६	२४	२०	घटी.
श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	×	नक्षत्र.
१०	१०	१८	१६	२४	३०	×	घटी.

इन नक्षत्रों की पूर्वलिखित घटियों के अनन्तर चार घड़ी तक विषघटी होती हैं ॥ १—३ ॥

अथ नवान्नचक्रम्

बुधक्षार्त्पुत्रपुत्रेषु पुत्रवेदद्वयेन्दुकैः ।

सच्छुभं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् ॥ १ ॥
नवान्नचक्रं ज्ञातव्यं कथितं गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

बुध के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने प्रथम पाँच नक्षत्र शुभ हैं, फिर पाँच शुभ हैं, फिर पाँच शुभ हैं, फिर पाँच अर्थनाशक हैं, फिर चार शुभ हैं, फिर दो शुभ नहीं हैं। फिर एक शुभ है ॥ १ ॥ यह नवान्नचक्र विचारना चाहिए, उत्तम पण्डितों ने कहा है ॥ २ ॥

अथ नवान्नचक्रन्यासः २७ ।

५	५	५	५	४	२	१	नक्षत्र
शु.	शु.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	फल

अथाग्निपरिहारः ।

विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीते ग्रहणे युगाद्यैः ।
दुर्गाविधानेन सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रंपरिचिन्तनीयम् १

विवाह का होम, यात्रा का होम तथा व्रत का होम, गोचर के ग्रहों का होम तथा मुण्डन और जनेऊ का होम, ग्रहण का होम युगादितिथियों का होम तथा दुर्गाजी का होम, बालक के जन्मप्रसूति का होम अर्थात् मूलादिशान्ति इन कार्यों में अग्निचक्र न विचारे ॥ १ ॥

अथ युगादिमन्वादितिथिज्ञानम् ।

मन्वाद्यास्त्रितिथी मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक्तिथी
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्रिषेनवतपस्यश्वाः सहस्ये शिवाः ।
भाद्रेऽग्निश्च सितेत्वमाष्टनभसः कृष्णे युगाद्याः सिते
गोऽग्नीबाहुलराधयोर्मदनदर्शौ भाद्रमाघासिते ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में मन्वादि तिथियां होती हैं—

तथा क्रमः—

चैत्रमास में तृतीया तिथि, कार्त्तिक में पूर्णमासी तथा द्वादशी, आषाढ़ में दशमी व पूर्णमासी, ज्येष्ठ और फाल्गुन में पूर्णमासी, कुवार में नवमी, माघ में सप्तमी, पौष में एकादशी और भाद्र में तृतीया तिथि मन्वादि होती है। और श्रावणमास के कृष्णपक्ष में अमावस व अष्टमी मन्वादि होती है।

अथ युगादिसंज्ञा लिखते हैं।

शुक्लपक्ष में कार्त्तिक की नवमी और वैशाख की तीज युगादि होती है। और कृष्णपक्ष में भाद्रमास की तेरस तथा माघ में अमावस की युगादिसंज्ञा है, पुण्यकाल होता है॥ १॥

अथ शुक्लपक्षे मन्वादितिथिचक्रम्।

चैत्र	कार्त्तिक	आषाढ़	ज्येष्ठ	फाल्गुन	आश्विन	माघ	पौष	भाद्र	मास
३	१५ १२	१० १५	१५	१५	९	७	११	३	तिथि

अथ कृष्णपक्षे मन्वादितिथिचक्रम्

श्रावण	मास
३०। ८	तिथि

अथ शुक्लपक्षे युगादितिथिचक्रम्।

कार्त्तिक	वैशाख	मास
९	३	तिथि

अथ कृष्णपक्षे युगादितिथिचक्रम् ।

भाद्र	माघ	मास
१३	३०	तिथि

अथ रोगमुक्तस्नानमुहूर्तः ।

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु
सार्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचि-
न्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः ॥ १ ॥
लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे
रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ।
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे
स्नानं हितं रोगविमुक्तकानाम् ॥ २ ॥

सोमवार, शुक्रवार, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाती, मघा और रेवती ये नक्षत्र-वार रोगी के स्नान में वर्जित हैं ॥ १ ॥ चर लग्न १ । ४ । ७ । १० इतवार, मङ्गल और बृहस्पतिवार तथा रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि ये शुभ हैं । और चन्द्रमा बल से हीन होय और केन्द्र त्रिकोण या अर्थ में १ । ४ । ७ । १० । ९ । ५ । २ पापग्रह होने चाहिए ॥ २ ॥

अथ रोगोत्पन्नशुभाशुभज्ञानम् ।

स्वातिश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु
शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे ।

नन्दा रिक्ता यस्य रोगस्य प्राप्ति-
मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षिताऽपि ॥ १ ॥
पक्षाद्धस्ते वासवेषु द्विदैवे
मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्ये नवाहात् ।
याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणे च
नैरुज्यं स्यान्नूनमेकादशाहात् ॥ २ ॥
अहिर्बुध्न्ये तिष्यसंज्ञे सभागे
प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ।
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां
निःसन्दिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥ ३ ॥

स्वाती, आश्लेषा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र हों तथा मङ्गल, शनैश्चर, इतवार ये वार हों, तथा नन्दा १ । ६ । ११ रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि हों तो इनमें जो रोग उत्पन्न हो, उसे यदि महादेवजी भी रक्षा करें तो न जीवे ॥ १ ॥ हस्त में जो रोग उत्पन्न हो तो पन्द्रह दिन में आराम होवे । यदि धनिष्ठा, विशाखा, मूल, अश्विनी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में रोग उत्पन्न होवे तो नव दिन में आराम हो तथा भरणी, चित्रा, श्रवण और शतभिष इनमें यदि रोग उत्पन्न हो तो ग्यारह दिन में आराम हो ॥ २ ॥ उत्तराभाद्रपद, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित् और पुनर्वसु इनमें रोग होवे तो सात दिन रहे, बाद उसके मनुष्य आराम होकर निःसन्देह जीवे ऐसा गर्गाचार्य आदि आचार्य कहते हैं ॥ ३ ॥

अथ सर्पदंशविचारः ।

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखा-
सार्पान्तकार्द्रासु भुजङ्गदष्टः ।

स वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि
प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥ १ ॥

कृत्तिका, मूल, मघा, विशाखा, आश्लेषा, भरणी, आर्द्रा इन नक्षत्रों में जिसको सर्प काटे, गरुड़ भी उसकी रक्षा करें, तो भी मरने से न बचे ॥ १ ॥

अथ शिल्पविद्यामुहूर्तः ।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे ।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ १ ॥

मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और चरसंज्ञक नक्षत्रों में और लग्न में किंवा दशवें स्थान में बुध और बृहस्पति के रहते हुए और बुध और बृहस्पति के षड्वर्ग में चन्द्रमा के रहते शिल्पविद्या अर्थात् लकड़ी, पत्थर, चित्र इत्यादि की कारीगरी सीखना शुभदायक होता है ॥ १ ॥

अथ मुद्रापातनमुहूर्तः ।

चित्रामृगान्त्यकरपुष्यहयानुराधा-
धात्र्युत्तरे श्रवणतास्त्रितयेऽदितौ च ।
स्वातौ विचन्द्ररविजेऽहनि पातनं स्या-
त्पूर्णासु सुष्ठु च जयासु सुमुद्रिकाणाम् ॥१॥

चित्रा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुनर्वसु और स्वाती इन नक्षत्रों में रुपया बनाना शुभ है तथा चन्द्रवार और शनिवार वर्जित है। तथा पूर्णा तिथि ५ । १० । १५ और जया तिथि ३ । ८ । १३ शुभ है ।

अथ काष्ठादिस्थापनचक्रम् ।

सूर्यर्क्षाद्रसभैरधःस्थलगतैः पाको रसैः संयुतः
शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सर्पभीः ।
प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्सङ्गमो रोगभीः
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक काष्ठचक्र गिने, छः नक्षत्र काष्ठ के नीचे स्थापित करे । उसका फल भोजन रस से संयुक्त हो, और दो नक्षत्र शिर में देवे, इसका फल मुर्दा के दाह में इंधन लगे और मध्य में चार देवे उसका फल सर्प निकले, और पूर्वादि चारों दिशाओं में चार चार नक्षत्र देवे उसका फल पूर्व में मित्र से मिलाप हो और दक्षिण में रोग होय । पश्चिम में रोग होय उसका दवा में इंधन लगें । उत्तर में परे तो सुख होय ॥ १ ॥

पञ्चकरहिताद्रविनक्षत्रात्काष्ठादिस्थापनचक्रम् ।

अधः	शीर्ष	मध्य	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	स्थान
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
सरसपाक.	शवदाहक.	सर्प का भय.	मित्रसंगम.	रोग.	क्लेश.	सुख.	फल
शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभाशुभ.

अथ प्रेतकर्ममुहूर्तः ।

क्षिप्राहिमूलेन्द्रहरीशवायुभे
प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे त्रिधौ ।
प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं त्यजे-
च्छय्यावितानं गृहगोपनादि च ॥ १ ॥

क्षिप्रसंज्ञक, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा, स्वाती इन नक्षत्रों में प्रेतकर्म शुभ है । परन्तु कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में प्रेत का दाह त्याज्य है । तथा दक्षिणदिशा की यात्रा वर्जित है । और खटिया का बिनवाना वर्जित है और तंबू वर्जित है । मकान छावना वर्जित है । आदि शब्द से सब तृणक्रिया त्याज्य हैं ॥ १ ॥

अथ नारायणबलिमुहूर्तः ।

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे
पौष्णे वारुणभे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने ।
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतिके शवप्रतिकृतेर्दाहो न पक्षे सिते ॥ १ ॥
जन्मप्रत्यरितारयोर्मृति८ सुखां४न्त्ये१२ऽब्जे च कर्तुर्न स-
न्मध्यो मित्रभगादितिध्रुवविशाखाढ्याङ्घ्रिभे ज्ञेऽपि च ।
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्ये तथा
स्वाशौचात्परतो विचार्यमखिलं मध्ये यथासम्भवम् २

शुक्र, मंगल, शनिवार और अमावस, चतुर्दशी, तेरसि, नन्दा १ । ६ । ११ तिथि, तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र तथा उग्रसंज्ञक, रेवती, शतभिष ये नक्षत्र और त्रिपुष्कर दिन तथा क्षयमास, मलमास ये

संपूर्ण वारादिक नारायणबलिक्रिया में वर्जित हैं । और वर्ष के उपरान्त दक्षिणायन सूर्य वर्जित हैं । पात व परिघयोग व बृहस्पति शुक्र का अस्त तथा भद्रा और वैधृतियोग तथा शुक्लपक्ष वर्जित है ॥ १ ॥ जन्मतारा व पाँचवाँ तारा और चौथा, आठवाँ, बारहवाँ चन्द्रमा ये कर्ता को अशुभ हैं । और अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, ध्रुवसंज्ञक, विशाखा, मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में तथा बुधवार को दाह मध्यम है । इतवार, बृहस्पति, चन्द्रवार ये दिन तथा श्रवण, हस्त, स्वाती, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों में नारायणबलि शुभ है । तथा वर्ष के अनन्तर सब विचार करना उचित है । और वर्ष के भीतर यथासंभव विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

अथ नौकाकर्ममुहूर्तः ।

शुभाहे विष्णुयुग्मेन्द्रमृगमैत्राश्विपाणिषु ।
चालनं घट्टनं स्थानान्नावः शुभतिथीन्दुषु ॥ १ ॥

शुभवार तथा श्रवण, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मृगशिरा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त ये नक्षत्र तथा शुभतिथि तथा शुभचन्द्र में नाव का चलाना व बनाना शुभ है ॥ १ ॥

अथ देवारामजलाशयप्रतिष्ठामुहूर्तः ।

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा
सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे ।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरे ध्रुवे स्या-
त्पक्षे सितस्वर्क्षतिथिक्षणे वा ॥ १ ॥
रिक्तारवर्ज्ये दिवसेऽतिशस्ता
शशाङ्कपापैस्त्रिभवाङ्गसंस्थैः ।
व्ययाष्टान्त्यगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे

सूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः ॥ २ ॥

३।६।९।१२

शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्याः

१।४।७।१०

क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे ।

पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्प-

भूतादयोऽन्त्ये श्रवणेऽजिनश्च ॥ ३ ॥

जलाशय व बाग़ तथा देवता की प्रतिष्ठा का मुहूर्त लिखते हैं— उत्तरायण सूर्य हों और बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र उदित हों, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं । और शुक्लपक्ष हो, जिस नक्षत्र व जिस तिथि का स्वामी, जो देवता हो वे तिथ्यादिक भी प्रतिष्ठा में शुभ हैं । और जिस मुहूर्त का जो देवता स्वामी है, उस मुहूर्त में भी शुभ जानिये ॥१॥ रिक्तातिथि ४।९।१४ और मङ्गलवार वर्जित है । तथा चन्द्रमा व पापग्रह तीसरे, ग्यारहवें, छठे हों और शुभग्रह आठवें बारहवें वर्जित हैं । सूर्य की प्रतिष्ठा सिंहलग्न में करना योग्य है । और ब्रह्माकी प्रतिष्ठा कुम्भ लग्न में शुभ है । और कन्या लग्न में विष्णु की प्रतिष्ठा करे । मिथुनलग्न में महादेवजी की प्रतिष्ठा शुभ है । तथा द्विस्वभावलग्न में ३।६।९।१२ देवीजी की प्रतिष्ठा शुभ है । क्षुद्रदेवता की प्रतिष्ठा चरलग्न में शुभ है । अर्थात् जो छोटे देवता हैं उनकी क्षुद्रसंज्ञा है और स्थिरलग्न में सब देवताओं की प्रतिष्ठा शुभ है ॥२॥ पुष्यनक्षत्र में ग्रह स्थापन करे, तथा गणेश, यक्ष, सर्प, भूतादिक रेवती में स्थापित करे । और श्रवण में अजिन अर्थात् बुद्धदेव की प्रतिष्ठा शुभ है ॥ ३ ॥

अथ सर्वारम्भमुहूर्तः ।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते ।

चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ १ ॥

लग्न से बारहवें आठवें शुद्ध हो, अर्थात् कोई ग्रह न हो और उपचय लग्न हो, अर्थात् जन्म लग्न व जन्मराशि से तीसरा, छठा, दशवाँ, ग्यारहवाँ लग्न हो, और शुभग्रहों की दृष्टि हो, तथा शुभग्रहयुक्त हो, चन्द्रमा जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें हो तो सर्वारंभ शुभ है । अर्थात् शुभाशुभ कार्य करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ मुहूर्तदीपिकायां पादुकासनादिमुहूर्तः ।

मैत्रेऽन्त्यचन्द्रयमभादितिवाजिचित्रा-
हस्तोत्तरात्रयहरीज्यविधातृभानि ।
एतेष्वतीवशयनासनपादुकानां
संभोगकार्यमुदितं मुनिभिः शुभाहे ॥ १ ॥

अनुराधा, रेवती, मृगशिरा, भरणी, पुनर्वसु, अश्विनी, चित्रा, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, पुष्य, रोहिणी इन नक्षत्रों में और शुभ दिन में आसन व खड़ाऊँ धारण करना शुभ है ऐसा मुनि लोग कहते हैं ॥ १ ॥

अथ मुहूर्तगणपतौ नवीनपात्रे भोजनम् ।

रोहिणीयुगले हस्तत्रितये रेवतीद्वये ।
श्रवणत्रितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥ १ ॥
त्र्युत्तरे बुधशुक्रेज्यवारे चामृतयोगके ।
सुवर्णरौप्यपात्रेषु भोजनादि शुभप्रदम् ॥ २ ॥

रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, तीनों उत्तरा

ये नक्षत्र और बुध, शुक्र, गुरुवार अथवा अमृतयोग में सोने चांदी के पात्र में भोजन करना शुभ है॥ १—२॥

अथ रत्नमालायाममृतसिद्धियोगः।

हस्ते रवौ शशधरे च मृगोत्तमर्क्षं
भौमेऽश्विनी बुधदिने च तथानुराधा।
तिष्यो गुरौ भृगुसुतेऽपि च पौष्णधिष्ण्यं
रोहिण्यथार्कतनयेऽमृतसिद्धियोगाः॥ १॥

रविवार के दिन हस्तनक्षत्र हो, चन्द्रवार को मृगशिरा, मङ्गल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, बृहस्पति को पुष्य, शुक्र को रेवती और शनैश्चर को रोहिणी हो तो अमृतसिद्धि योग होता है॥१॥

अथ शक्तियामले नवीनपात्रचक्रम्।

पात्रचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं शक्तियामले।
सूर्यभाच्चन्द्रपर्यन्तं गणनीयं सदा बुधैः॥ १॥
दिक्षु दिक्षु द्वयं न्यस्य मध्ये चैकादशं न्यसेत्।
वर्तुलाकारचक्रस्य भोक्तृपात्रस्य निर्णयः॥ २॥
बन्धनं सौख्यहानी च लाभं सौख्यं मृतिस्तथा।
पुत्रमायुश्शोकवृद्धी पूर्वादिक्रमतो भवेत्।
रिक्तानष्टेन्दुषष्ठीश्च विष्णोः सुप्तं विवर्जयेत्॥ ३॥

पात्रचक्र लिखते हैं—शक्तियामल में कहा है कि सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्रतक गिने पूर्वादि आठ दिशाओं में दो दो नक्षत्र स्थापित करे और ग्यारह नक्षत्र मध्य में रखकर गोल चक्र भोजनपात्र का निर्णय करे। पूर्व में पड़े तो बंधन हो, आग्नेय में सुख, दक्षिण में

हानि, नैर्ऋत्य में लाभ, पश्चिम में सुख, वायव्य में मृत्यु, उत्तर में पुत्रलाभ, ईशान में शोक और मध्य में वृद्धि होवे । रिक्तातिथि ४ । ९ । १४ अमावस, छठ और विष्णुशयन (अर्थात् आषाढ़ सुदी एकादशी से कार्त्तिकसुदी एकादशी तक) ये सब भोजनपात्र में वर्जित हैं ॥ १—३ ॥

अथ पात्रचक्रन्यासः ।

पू०	आ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०	मध्य	दिशा
२	२	२	२	२	२	२	२	११	नक्षत्र
अ०	शु०	अ०	शु०	शु०	अ०	शु०	अ०	शुभ	फल

अथ नवाङ्गनाभोगमुहूर्तः ।

प्रथमाभिगमः शस्तो नववध्वाः शुभेऽहनि ।
गर्भाधानोक्तनक्षत्रे शस्ते ज्योत्स्नाकरे निशि ॥ १ ॥

नवीन स्त्री का भोग गर्भाधान के नक्षत्रों में अर्थात् मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, धनिष्ठा और शतभिष इन नक्षत्रों में शुभ है चन्द्रशुद्धि और रात्रि का समय आवश्यक है ॥ १ ॥

अथेष्टिकारम्भमुहूर्तः ।

उत्तराश्विश्रवे पुष्ये ज्येष्ठान्त्ये रोहिणीकरे ।
स्थिरेऽङ्केऽर्के गुरौ मन्दे इष्टिकारम्भणं चरेत् ॥१॥

तीनों उत्तरा, अश्विनी, श्रवण, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी और हस्त इन नक्षत्रों में ईंट पाथना शुभ है । स्थिर लग्न २ । ५ । ८ । ११ और रविवार, गुरु और शनैश्चरवार शुभ है ॥ १ ॥

अथ रत्नपरीक्षामुहूर्तः ।

पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवे ज्येष्ठे परीक्षणम् ।
रत्नानामष्टमीं भूतं हित्वा भौमं शनैश्चरम् ॥ १ ॥

पुनर्वसु, शतभिष, हस्त, श्रवण, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में रत्न-परीक्षा शुभ है । अष्टमी, चतुर्दशी तिथि, मङ्गल और शनैश्चर-वार वर्जित है ॥ १ ॥

अथ कलशचक्रम् ।

सूर्यभात्पञ्चरामाद्रिवसुपञ्च शुभाशुभम् ।
फलं क्रमाद्बुधैर्ज्ञेयं चक्रे कलशसंज्ञके ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक कलशचक्र लिखे, प्रथम पांच नक्षत्र शुभ, फिर तीन अशुभ, सात शुभ, आठ अशुभ और पांच शुभ क्रम से जानना चाहिये ॥ १ ॥

अथ कलशचक्रन्यासः २८ ।

५	३	७	८	५	नक्षत्र
शु०	अ०	शु०	अ०	शु०	फल

अथ शस्त्रघट्टनमुहूर्तः ।

कृत्तिकासु विशाखायां भौमार्कशनिवासरे ।
सल्लग्ने घटितं शस्त्रं नृपाणां जयदायकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका, विशाखा नक्षत्रमें तथा भौम, रवि, शनिवारों में और शुभग्रहों के लग्नों में हथियार बनवावे तो राजाओं को जयदायक होता है ॥ १ ॥

अथ शस्त्रधारणमुहूर्तः ।

पुनर्वसुद्वये हस्ते चित्रायां रोहिणीद्वये ।
विशाखादित्रये कुर्यात्त्र्युत्तरे रेवतीद्वये ॥ १ ॥
रिक्तां विना तिथौ सूर्यशुक्रजीवदिने तथा ।
सन्नाहच्छुरिकाखड्गकुन्तशस्त्रादिधारणम् ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, रोहिणी, मृगशिरा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, तीनों उत्तरा, रेवती और अश्विनी इन नक्षत्रों में रिक्ता तिथि को छोड़कर रविवार, शुक्रवार, गुरुवार को बख़्तर, छूरी, तरवार, भाला इत्यादि शस्त्रधारण शुभ है ॥ १—२ ॥

अथाग्निशस्त्रघट्टनं धारणं च ।

विशाखाकृत्तिकापूर्वा मघाश्लेषाश्विनीमृगे ।
मूलार्द्राभरणीज्येष्ठा सजीवे क्रूरवासरे ॥
घट्टनं धारणं प्रोक्तं वह्निशस्त्रस्य शोभनम् ॥ १ ॥

विशाखा, कृत्तिका, पूर्वा, मघा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिरा, मूल, आर्द्रा, भरणी और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में और बृहस्पति, रविवार, मङ्गल, शनैश्चर इन वारों में अग्निशस्त्र बनाना और धारण करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ मृगयामुहूर्तः ।

आश्लेषाभरणीज्येष्ठापूर्वार्द्रास्वातिमूलकैः ।
विशाखायां च पापेऽह्नि यायादाखेटकं नृपः ॥ १ ॥

आश्लेषा, भरणी, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा, स्वाती, मूल, विशाखा इन नक्षत्रों में पापवारों में अर्थात् रवि, भौम, शनि में राजा को शिकार खेलना शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ द्रव्यनिधीनां गुप्तस्थाने स्थापनम् ।

धनिष्ठोफाविशाखाख्ये पूर्वाषाढाभिधेऽन्त्यभे ।
रोहिण्यां च निधेर्भूमौ स्थापनं शुभमीरितम् ॥ १ ॥

धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ, रेवती और रोहिणी इन नक्षत्रों में द्रव्य भूमिमें स्थापित करना शुभ है ॥ १ ॥

अथ वाणिज्यमुहूर्तः ।

अनुराधोत्तरापुष्ये रेवतीरोहिणीमृगे ।
हस्तचित्राश्विभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ॥ १ ॥

अनुराधा, तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्विनी ये नक्षत्र और शुभवार वाणिज्यक्रिया में शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ धर्मक्रियामुहूर्तः ।

धर्मक्रियामित्रमृगान्त्यचित्रा-
श्रुतित्रयस्वात्यदितौ कराश्वे ।
पुष्ये च सौम्येषु दिनेषु शस्ते-
त्याहुर्मुहूर्तागमकोविदेन्द्राः ॥ १ ॥

अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी, पुष्य इन नक्षत्रों में और शुभवारों में धर्म कर्म शुभ है, यह मुहूर्तविशारदों का निश्चय है ॥ १ ॥

अथ रक्तमोक्षणविरेकवमनमुहूर्तः ।

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये शतभे रोहिणीद्वये ।
श्रवणे चानुराधायां ज्येष्ठायां रक्तमोक्षणम् ॥ १ ॥

गुरुभौमार्कवारेषु कार्यं शुभतिथौ तथा ।
विरेको वमनं शुक्रे चन्द्रे चैवोक्तभादिषु ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, शतभिष, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, अनुराधा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में रक्तमोक्षण अर्थात् फ़स्त खोलना शुभ है। गुरु, भौम, रविवार और शुभ तिथि हो और वमन (उल्टी) करना व जुलाब लेना पूर्वोक्त नक्षत्रों में शुक्र सोमवार के दिन शुभ है ॥ १--२ ॥

अथ सन्धिमुहूर्तः ।

अनुराधामघापुष्ये तिथ्यर्द्धे तैतिलाभिधे ।
लग्ने सद्दृष्टिगेऽष्टम्यां द्वादश्यां सन्धिरिष्यते ॥ १ ॥

अनुराधा, मघा और पुष्य नक्षत्र तथा तैतिलकरण में मिलाप करना शुभ है। अष्टमी, द्वादशी तिथि शुभ है। और लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि होना चाहिये ॥ १ ॥

अथ कथाप्रारम्भचक्रम् ।

वेदाऽब्धिवेदश्रुतिवेदवेद-
फलं गुरोर्भाद्गुणमेव गण्यम् ।
अर्थश्च लाभश्च तथा च सिद्धि-
र्लाभो मृतीराजभयं च मोक्षः ॥ १ ॥
कथारम्भं प्रकुर्वीत प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः ॥ २ ॥

बृहस्पति के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक कथारम्भचक्र विचारना चाहिए। प्रथम चार नक्षत्र अर्थ के देनेवाले हैं, फिर चार लाभप्रद हैं। फिर चार सिद्धि के देनेवाले हैं, ऐसेही चार लाभप्रद, चार मृत्युकारक, चार राज्यभय को देनेवाले और तीन

नक्षत्र भय को देनेवाले हैं । यह कथारम्भचक्र पूर्वाचार्य ने कहा है ॥ १ । २ ॥

अथ कथारम्भचक्रन्यासः ।

४	४	४	४	४	४	३	नक्षत्र
अर्थ	लाभ	सिद्धि	लाभ	मृत्यु	राजभय	मोक्ष	फल

अथ दुन्दुभिमृदङ्गादिकरवाद्यम् ।

हस्तत्रयेऽनुराधाऽन्त्ये पुनर्वसुयुगेऽश्विभे ।
श्रवत्रयमृगेऽर्केऽह्नि शुभे पूर्णाजयासु च ॥ १ ॥
शुभे दुन्दुभिभेर्यादिकरवाद्यं समीरितम् ।
वंशाद्यं मुखवाद्यं तु पूर्वेष्वेव समीरितम् ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मृगशिरा इन नक्षत्रों में, रविवार समेत शुभ दिनों में, नगाड़ा वा नफीरी तथा मृदंग, वंशी इत्यादि बाजा बजाना शुभ है। पूर्णा ५ । १० । १५ जया ३ । ८ । १३ ये तिथियाँ शुभ हैं ॥ १—२ ॥

अथ शान्तिकपौष्टिककर्ममुहूर्तः ।

पुनर्वसुद्वये स्वातीत्र्युत्तरे श्रवणत्रये ।
रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये ॥ १ ॥
शान्तिकं पौष्टिकं कर्म पुण्याहे कीर्तितं बुधैः ॥ २ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, रेवती, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, रोहिणी और मृगशिरा इन नक्षत्रों में शान्तिकर्म और पुष्टिकर्म करना शुभ है । पुण्यदिन संक्रान्ति

इत्यादि तथा युगादि मन्वादिक तिथि में यह कर्म करना श्रेष्ठ है ॥ १—२ ॥

अथ वीरसाधनमुहूर्तः ।

मघार्द्राभरणीमूले मृगेऽङ्के सद्बुधे गते ।
शुद्धाष्टमे भृगौ तूर्ये वीरवेतालसाधनम् ॥ १ ॥

मघा, आर्द्रा, भरणी, मूल, मृगशिरा इन नक्षत्रों में वीरवेताल का साधन शुभ है। शुभग्रहों का लग्न हो और कुंभराशि का बुध हो, आठवाँ स्थान शुद्ध हो और चौथे शुक्र होना चाहिए॥१॥

अथ मन्त्रयन्त्रव्रतादिमुहूर्तः ।

उफाहस्ताश्विनीकर्णविशाखामृगभेऽहनि ।
शुभे सूर्ययुते शस्तं मन्त्रयन्त्रव्रतादिकम् ॥ १ ॥

उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा और मृगशिरा इन नक्षत्रों में रविवार के सहित शुभ दिनों में मन्त्र, यन्त्र और व्रतादि का साधन शुभ है ॥ १ ॥

अथ रजोवतीस्नानमुहूर्तः ।

ज्येष्ठानुराधाकररोहिणीषु
स्वातीधनिष्ठासु मृगोत्तरासु ।
रजोवतीस्नानविधिं प्रकुर्या-
च्छुभस्य वारे च शुभे तिथौ च ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, धनिष्ठा, मृगशिरा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में और शुभवार और शुभतिथि में रजस्वला स्त्री का स्नान शुभ है ॥ १ ॥

अथ गर्भधारणमुहूर्तः ।

मृगानुराधाश्रुतिरोहिणीषु
हस्तोत्तरास्वातिवसौ शतर्क्षे ।
विहाय षष्ठीं शुभवासरेषु
गर्भस्य चाधानविधिं प्रकुर्यात् ॥ १ ॥
शुभे त्रिकोणकेन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे ।
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥ २ ॥

मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र और शुभ तिथि गर्भधारण में शुभ हैं। छठ तिथि वर्जित है। शुभग्रह केन्द्र व त्रिकोण में हों १ । ४ । ७ । १० । ९ । ५ पापग्रह तीसरे छठें ग्यारहवें हों, पुत्र की कामना से पुरुष स्त्रीप्रसंग, रजोधर्म के दिन से युग्म अर्थात् सम रात्रि में करे ॥ १—२ ॥

अथ सीमन्तपुंसवनकर्ममुहूर्तः ।

आर्द्रात्रयं भाग्ययुग्मं मृगपूषाश्रुतिः करः ।
मूलत्रये गुरुः सूर्ये भौमे रिक्तां विना तिथिः ॥ १ ॥
आद्ये द्वये त्रये मासे लग्ने कन्याझषे स्थिरे ।
चापे पुंसवनं कुर्यात्सीमन्तं चाष्टमे तथा ॥ २ ॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिरा, रेवती, श्रवण, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ ये नक्षत्र सीमन्त किंवा पुंसवनकार्य में शुभ हैं। तथा गुरुवार, रविवार, मङ्गलवार शुभ हैं। रिक्ता तिथि वर्जित है, पहला, दूसरा और

तीसरा महीना गर्भ से पुंसवन में शुभ है। कन्या, मीन तथा स्थिर लग्न २ । ५ । ८ । ११ शुभ हैं और धन लग्न भी शुभ है। सीमन्त कर्म गर्भ से आठवें महीना में शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण सीमन्तपुंसवनकर्म ।

रवीज्यभौमे करमूलपुष्ये
श्रोत्रेदितौ पुंसवनं मृगर्क्षे ।
६ । १२ । ८
चरेत्षडर्काष्टतिथीन् विहाय
सीमन्तकर्माष्टमषष्ठमासे ॥ १ ॥

रविवार, बृहस्पति, मङ्गलवार और हस्त, मूल, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु और मृगशिरा इन नक्षत्रों में पुंसवन शुभ है। तथा छठ, द्वादशी, अष्टमी तिथि वर्जित है। और छठे आठवें महीने में सीमन्तकर्म शुभ है। नक्षत्रादिक पुंसवन के जानना चाहिये॥ १ ॥

अथ जातकर्ममुहूर्तः ।

तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयं
पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽह्नि ।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे
मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥ १ ॥

बालक का जातकर्म पूर्वोक्त पर्व वा रिक्ता तिथि में वर्जित है। शुभ दिन हो और जन्म से ग्यारहवां बारहवां दिन और मृदुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और चरसंज्ञक नक्षत्रों में शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ प्रसूतास्नानमुहूर्तः ।

हस्ताश्विनीत्र्युत्तररोहिणीषु

मृगानुराधापवनान्त्यभेषु ।
स्नायात्प्रसूता गुरुभानुभौमे
त्यक्त्वा हरेर्वासरमष्टषष्ठीम् ॥ १ ॥

हस्त, अश्विनी, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, अनुराधा, स्वाती और रेवती ये नक्षत्र प्रसूतास्नान में शुभ हैं । और गुरुवार, रविवार तथा मङ्गलवार शुभ हैं । द्वादशी, अष्टमी, छठ ये तिथि वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण प्रसूतास्नानम् ।

पौष्णाध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूती-
स्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम् ।
नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमित्रमूल-
त्वाष्ट्रेज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १ ॥

रेवती, ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा ये नक्षत्र प्रसूतास्नान में शुभ हैं । रविवार, बृहस्पति, मङ्गलवार शुभ हैं । आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका, मूल, चित्रा ये नक्षत्र वर्जित हैं । बुध, शनिवार और अष्टमी, छठ, द्वादशी, रिक्ता ये तिथियां वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ दत्तकपुत्रमुहूर्तः ।

हस्तादिपञ्चकभिषग्वसुपुष्यभेषु
सूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु ।
रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्ने
सिंहे वृषे भवति दत्तसुतग्रहोऽयम् ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य ये नक्षत्र और रविवार, मङ्गल, बृहस्पति, शुक्र ये वार दत्तकपुत्र लेने में शुभ हैं। रिक्तातिथि वा कुंभ वृश्चिक लग्न वर्जित और सिंह वृष लग्न शुभ हैं॥ १॥

अथ नामकरणमुहूर्तः ।

चित्रानुराधामृगरेवतीषु
धात्रश्विनीत्र्युत्तरहस्तपुष्ये ।
पुनर्वसौ च श्रवणत्रिकेषु
बुधार्कचन्द्रेज्यसितेषु नाम ॥ १ ॥

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र और बुध, रवि, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र इन वारों में बालक का नाम रखना शुभ है॥ १॥

अथ जलपूजामुहूर्तः ।

मूलादितिद्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दार्कभूमिजाः॥ १ ॥

मूल, पुनर्वसु, श्रवण, मृगशिरा, हस्त इन नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री को जलपूजा शुभ है। शुक्र, शनैश्चर, मङ्गलवार वर्जित हैं॥ १॥

अथ द्वितीयप्रकारेण जलपूजामुहूर्तः ।

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे
जलं पूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ ।
बुधेन्द्विज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि
श्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रे ॥ १ ॥

शुक्र, बृहस्पति का अस्त और चैत्रमास मलमास, तथा पूस मास जलपूजा में वर्जित हैं। बालक के जन्म से पूरे मास में जलपूजा शुभ है। बुध, चन्द्र, गुरुवार शुभ हैं। और रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि वर्जित हैं। श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रों में जलपूजा शुभ है ॥ १ ॥

अथ बालकनिष्काशनमुहूर्तः ।

मैत्रत्रये हरिद्वन्द्वे विधिद्वन्द्वेऽदितिद्वये ।
स्वातिहस्तोत्तराषाढपूर्वार्यमहयेषु सत् ॥ १ ॥
सिंहत्रये घटे लग्ने मासयोस्त्रिचतुर्थयोः ।
यात्रातिथौ च निष्काश्यः शिशुर्नैवार्किभौमयोः ॥ २ ॥

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, हस्त, उत्तराषाढ, तीनों पूर्वा, उत्तराफाल्गुनी, अश्विनी इन नक्षत्रों में बालक का निष्काशन शुभ है। सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ ये लग्न शुभ हैं। तथा जन्म से तीसरा चौथा महीना हो और यात्रा की तिथि हों अर्थात् २ । ५ । ७ । १० । ११ । १३ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा भी श्रेष्ठ है। शनैश्चर और मङ्गलवार वर्जित हैं ॥ १ । २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण निष्काशनं तथा दोलारोहमुहूर्तः ।

दन्तार्क भूप धृतिदिग्मितवासरे स्या-
द्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ।
दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणं चतुर्थ-
मासे गमोक्तसमयेऽर्कमितेऽह्नि वा स्यात् ॥ १ ॥

जन्म के दिन से बत्तीसवां बारहवां सोलहवां अठारहवां और

दसवां दिन, बालक को झूला झुलाने में शुभ है। मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र शुभ हैं। और बाहर निकालने को चौथा महीना अथवा बारहवां दिन शुभ है। अथवा यात्रा के मुहूर्त ॥ १ ॥

अथ दोलारोहचक्रम् ।

दोलारोहेऽर्कभात्पञ्चै शरैः पञ्चेषु सप्तभैः ।
नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः १ ॥

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक झूलाचक्र गिने। प्रथम पांच नक्षत्रों का फल निरोगकारक है, फिर पांच मरणप्रद है इसी प्रकार पांच में कृशता, पांच में व्याधि और सात नक्षत्रों में सुख होता है ॥ १ ॥

अथ दोलाचक्रन्यासः ।

५	५	५	५	७	नक्षत्र
शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	फल

अथ स्त्रीपुरुषयोर्मध्ये कर्मभेदेन चन्द्रशुद्धिः ।

विवाहे गर्भसंस्कारे चन्द्रशुद्धिः स्त्रिया अपि ।
भूषाम्बरादिकार्येषु भर्तुश्चैवैन्दवं बलम् ॥ १ ॥

विवाहकार्य संस्कार और गर्भ इन कार्यों में चन्द्रबल स्त्री के राशि से लेना चाहिये। और भूषण वस्त्रादि धारण करने में पुरुष की राशि से विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ ताम्बूलभक्षणमुहूर्तः ।

वारे भौमार्कहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वम्बुपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ।

सौम्यैः केन्द्रत्रिकोणेःशुभगगनगतैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै-
स्ताम्बूलं सार्द्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा १

मङ्गल और शनैश्चर वार को ताम्बूल खिलाना वर्जित है। ध्रुव, मृदु, लघुसंज्ञक नक्षत्र तथा श्रवण, मूल, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, स्वाती, धनिष्ठा, शतभिष ये नक्षत्र शुभ हैं। तथा मिथुन, कन्या, कुम्भ, वृष, मीन ये लग्न शुभ हैं। शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ९। ५ में हों और पापग्रह दशवें, छठे, ग्यारहवें, तीसरे हों तो जन्म से अढ़ाई महीना में ताम्बूल भक्षण शुभ है अथवा अन्नप्राशन के दिन करे ॥ १ ॥

अथ बालकभूम्युपवेशनं तथा कटिसूत्रबन्धनमुहूर्तः।

पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धे
रिक्ते तिथौ व्रजति पञ्चममासि बालम्।
बद्ध्वा शुभेऽह्नि कटिसूत्रमथ ध्रुवेन्दु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ १ ॥

पृथ्वी और वराह की पूजा करके अपनी राशि से गोचरोक्त मङ्गल शुद्ध हो, रिक्ता तिथि हो, जन्म से पाँचवाँ महीना हो, और शुभ दिन हो, और ध्रुवसंज्ञक, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा और लघुसंज्ञक ये नक्षत्र हों तो कटिसूत्र अर्थात् बालक के करधनी बाँधे और पृथ्वी पर बिठावे ॥ १ ॥

अथान्नप्राशनमुहूर्तः।

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमग्रहलवगं मीनमेषालिकं च।

हित्वा षष्ठात्समे मास्यथहि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैःस्यात्स्थिराख्यैःसमृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनंसत् १
केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे
लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदन्ति पापैः ।
लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं
मैत्राम्बुपानिलजनुर्भमसच्च केचित् ॥ २ ॥

रिक्तातिथि ४। ९। १४ नन्दा १ । ६ । ११ अष्टमी, अमावस, द्वादशी, शनिवार, रविवार, मङ्गलवार और जन्मलग्न, जन्मराशि से आठवाँ लग्न वा आठवाँ नवमांश मीन मेष वृश्चिक लग्न ये संपूर्ण अन्नप्राशन में वर्जित हैं । छठे महीने से सम महीनों में लड़के का अन्नप्राशन करे, अर्थात् छठे आठवें दशवें इत्यादि में करे । कन्या का अन्नप्राशन पाँचवें महीने से विषम महीनों में अर्थात् पाँचवें सातवें नवें इत्यादि में करे। स्थिरसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक, चरसंज्ञक ये नक्षत्र शुभ हैं ॥ १ ॥ केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ९ । ५ वा तीसरे शुभग्रह हों, और दशवें कोई ग्रह न हो तथा पापग्रह तीसरे ग्यारहवें छठे हों, और चन्द्रमा छठे आठवें न हो, अनुराधा शतभिष स्वाती वा जन्म का नक्षत्र को आचार्य के मत से अशुभ हैं। दूसरे वचन से पाँचवें स्थान में क्षीणचन्द्रमा अन्नप्राशन में वर्जित है। अर्थात् कृष्णपक्ष की दशमी से अमावसतक ॥ २॥

अथ कर्णवेधमुहूर्तः ।

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां
युग्माब्दं जन्मताराम्‌ तुमुनिवसुभिःसंमिते मास्यथो वा।

जन्मामाहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेऽ-
थौजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधःप्रशस्तः १

संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेन्द्र-
त्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने ।
पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थै-
र्लग्नस्थे त्रिदशगुरौ शुभावहः स्यात् ॥ २ ॥

चैत्रमास, पौषमास तथा अवमतिथि अर्थात् तिथि की हानि, हरिशयन अर्थात् आषाढसुदी एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशीतक, तथा जन्म का महीना वा रिक्तातिथि ये समस्त कर्णवेध में वर्जित हैं । और युग्मवर्ष अर्थात् जन्म से दूसरा, चौथा, छठा इस क्रम से युग्मवर्ष भी वर्जित हैं । और जन्म तारा वर्जित है । जन्म से छठवाँ, सातवाँ, आठवाँ महीना शुभ है । तथा जन्म से बारहवें, सोरहवें दिन भी शुभ है । तथा बुध, बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रवार शुभ हैं । ओजवर्ष श्रेष्ठ हैं, अर्थात् पहला, तीसरा, पाँचवाँ, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, लघुसंज्ञक इन नक्षत्रों में कर्णवेध शुभ है। लग्न से आठवें कोई ग्रह न हो त्रिकोण ९।५ केन्द्र १ । ४ । ७ । १० तीसरे, ग्यारहवें शुभग्रह हों और शुक्र, बृहस्पति का लग्न हो अर्थात् वृष, तुला, धन, मीन ये लग्न हों और पापग्रह छठें, तीसरे, ग्यारहवें हों और लग्न में बृहस्पति हों तो कर्णवेध शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ मुण्डनमुहूर्तः ।

चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ।

वारेलग्नांशयोश्चास्त्रभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ १ ॥
पञ्चमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ।
पञ्चवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥ २ ॥
तारादौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा
क्षौरं सत्स्यात् सौम्यमित्रस्ववर्गे ।
सौम्येऽभेऽब्जे शोभने दुष्टतारा
शस्ता ज्ञेया क्षौरयात्रादिकृत्ये ॥ ३ ॥
ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादिनाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे केश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥ ४ ॥

विषम वर्ष में मुण्डन श्रेष्ठ है अर्थात् पहले, तीसरे, पाँचवें इस क्रम से विषम वर्ष जानिये । तथा अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता ४ । ९ । १४ परीवा, छठ पूर्वोक्त पर्व वा चैत्रमास ये वर्जित हैं । उत्तरायण सूर्य शुभ हैं । बुध, चन्द्र, शुक्र, बृहस्पतिवार शुभ हैं । जन्म की लग्न वा जन्म की राशि से आठवाँ लग्न वर्जित है । आठवाँ ग्रह शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न होय । ज्येष्ठा नक्षत्र से युक्त और अनुराधा नक्षत्र के विना मृदुसंज्ञक, चरसंज्ञक, लघुसंज्ञक नक्षत्र शुभ हैं । और पापग्रह ग्यारहवें, छठें तीसरे शुभ हैं । जिस बालक की माता के पाँच महीना से अधिक गर्भ हो उस बालक का मुण्डन वर्जित है । तथा जो पाँच वर्ष से बालक अधिक हो तो मुण्डन श्रेष्ठ है । गर्भ का दोष नहीं है । जो तारा दुष्ट हो और चन्द्रमा त्रिकोण ९ । ५ वा उच्च अर्थात् वृष का हो तो तारा का दोष नहीं है । अथवा चन्द्रमा शुभग्रह के षड्वर्ग में हो, वा

मित्र के षड्वर्ग में हो वा शुभग्रह की राशि में हो तो दुष्ट तारा शुभ है । और मुण्डनादि यात्रा भी शुभ है । बालक की माता रजस्वला हो तो बालक का मुण्डन अशुभ है । और जो आदि गर्भ का बालक हो तो ज्येष्ठमास में मुण्डन अशुभ है । कोई आचार्य कहते हैं कि आदि गर्भ का बालक हो तो अगहन में मुण्डन वर्जित है ॥ १ । ४ ॥

अथ नित्यक्षौरमुहूर्तः ।

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥ १ ॥
रिक्ता हेयाष्टमी षष्ठी क्षौरे चन्द्रक्षयो निशा ।
सन्ध्याविष्टयन्तगण्डान्ताभोजनान्तश्चगोगृहम्॥२॥

मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका ये नक्षत्र तथा रविवार, मङ्गल, शनैश्चर ये नित्य क्षौर अर्थात् हजामत बनाने में वर्जित हैं । रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४ अष्टमी, छठ, अमावस, रात्रि, सन्ध्या, भद्रा तथा गण्डान्त और भोजन के पीछे तथा गोशाला में क्षौर वर्जित है ॥ १ । २ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण क्षौरमुहूर्तः ।

पुष्ये पौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवे च
शाक्रे हस्ताद्ये त्रिके भेष्वादित्यः ।
क्षौरं कार्यं वैष्णवादित्रये च
हित्वा भौमादित्यपातङ्गिवारान् ॥ १ ॥
आज्ञया नरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च ।
बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् २

पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, इन नक्षत्रों में क्षौरकर्म शुभ है । तथा रवि, भौम, शनिवार वर्जित हैं । राजा व ब्राह्मण की आज्ञा मानकर क्षौरक शुभ है । दाहकर्म में, सूतकान्त में, बन्दीखाने से छूटने में, यज्ञ में और दीक्षा में क्षौरकर्म शुभ है । मुहूर्त की जरूरत नहीं है ॥ १ । २ ॥

अथाक्षरारम्भमुहूर्तः ।

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पञ्चमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिक्द्विषट्शरात्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवोनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने ॥ १ ॥

गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी का पूजन करके पञ्चम वर्ष में अक्षरारम्भ शुभ है । एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया, छठ, पञ्चमी, तीज ये तिथियां शुभ हैं । उत्तरायण सूर्य हो, लघुसंज्ञक नक्षत्र वा श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं । तथा चरसंज्ञक लग्न १।४।७।१० वर्जित हैं । ऐसे शुभ दिनों में बालक लिखना प्रारम्भ करे ॥ १ ॥

अथ विद्यारम्भमुहूर्तः ।

मृगात्कराच्छ्रुतित्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्शरात्रिके ।
शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता ॥ १ ॥

मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा,

शतभिष, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य, श्लेषा इन नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है । रविवार, गुरुवार, बुधवार, शुक्रवार ये दिन शुभ हैं । और छठ, पञ्चमी, तीज, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया ये तिथियां शुभ हैं । और आचार्यों के मत से ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा रेवती वा अनुराधा ये शुभ हैं और शुभग्रह त्रिकोण ९ । ५ वा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में होने चाहिये ॥ १ ॥

अथ गणितारम्भमुहूर्तः ।

शतद्वयेऽनुराधार्द्रे रोहिणीरेवतीकरे ।
पुष्ये जीवे बुधे कुर्यात्प्रारम्भं गणितादिषु ॥ १ ॥

शतभिष, पूर्वभाद्रपद, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त, पुष्य इन नक्षत्रों में और गुरु, बुधवार को गणितारम्भ शुभ है॥१॥

अथ व्याकरणारम्भमुहूर्तः ।

रोहिणीपञ्चके हस्तात्पुनर्भे मृगभेऽश्विभे ।
पुष्ये शक्रेज्यविद्वारे शब्दशास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ १ ॥

रोहिणी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी, पुष्य, इन नक्षत्रों में तथा शुक्र, बृहस्पति, बुधवार में व्याकरणशास्त्र पढ़ना शुभ है ॥ १ ॥

अथ न्यायादिशास्त्रारम्भमुहूर्तः ।

त्र्युत्तरे रोहिणीपुष्ये पुनर्भे श्रवणे करे ।
अश्विन्यां शतभे स्वातौ न्यायशास्त्रादिकं पठेत्॥१॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, अश्विनी, शतभिष, और स्वाती इन नक्षत्रों में न्यायशास्त्र आदि पढ़ना शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ धर्मशास्त्रपुराणारम्भमुहूर्तः ।

हस्तादिपञ्चके पुष्ये रेवतीद्वितये मृगे ।
श्रवत्रये शुभारम्भो धर्मशास्त्रपुराणयोः ॥ १ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, अश्विनी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष इन नक्षत्रों में धर्मशास्त्रारम्भ और पुराणारम्भ शुभ है ॥ १ ॥

अथ वैद्यविद्या तथा गारुडीविद्यारम्भमुहूर्तः ।

हस्तत्रयेऽनुराधायां पुनर्भे श्रवणत्रये ।
मूले चान्त्येऽश्विनीपुष्ये ज्येष्ठाश्लेषार्द्रभे मृगे ॥ १ ॥
वैद्यविद्या कुजेऽब्जेऽर्के ज्येष्ठाहीनेऽत्र गारुडी ॥ २ ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मूल, रेवती, अश्विनी, पुष्य, ज्येष्ठा, श्लेषा, आर्द्रा, मृगशिरा इन नक्षत्रों में वैद्यविद्या शुभ है । और मंगल, सोमवार, रविवार ये दिन शुभ हैं । और इन्हीं नक्षत्रों में ज्येष्ठा के विना सर्पविद्या शुभ है ॥ १ । २ ॥

अथ जैनविद्यारम्भमुहूर्तः ।

श्रवत्रये मघापूर्वाऽनुराधारेवतीत्रये ।
पुनर्भे स्वातिभे सूर्ये शुक्रे जैनागमं पठेत् ॥ १ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, मघा, पूर्वा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, भरणी, पुनर्वसु, स्वाती नक्षत्र में रवि और शुक्रवार को जैनविद्या पढ़ना शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ फ़ारसीविद्यारम्भमुहूर्तः ।

ज्येष्ठाश्लेषा तथा पूर्वा रेवतीभरणीद्वये ।
विशाखार्द्रोत्तराषाढाशतभे पापवासरे ॥

लग्ने स्थिरे च चन्द्रे च फारसीमारबीं पठेत् ॥ १ ॥

ज्येष्ठा, श्लेषा, तीनों पूर्वा, रेवती, भरणी, कृत्तिका, विशाखा, आर्द्रा, उत्तराषाढ़, शतभिष ये नक्षत्र और शनि, मङ्गल, रविवार को फ़ारसी तथा अरबी विद्या पढ़ना शुभ है ॥ १ ॥

अथ लेखनारम्भमुहूर्तः ।

शुभे तिथौ शुभे वारे रेवतीयुगले तथा ।
श्रवणे चानुराधायां तथैवार्द्रादिषु त्रिषु ॥ १ ॥
हस्तादित्रितये कुर्याल्लेखनारम्भणं सुधीः ॥ २ ॥

शुभतिथि और शुभवारों में लेखनारम्भ शुभ है । रेवती, अश्विनी, श्रवण, अनुराधा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा और स्वाती ये नक्षत्र लिखने में शुभ हैं ॥ १ । २ ॥

अथ बालकजन्मसमये अभुक्तमूलादिज्ञानम् ।

ज्येष्ठान्ते घटिकायुग्मं मूलादौ घटिकाद्वयम् ।
अभुक्तमूलमेतत्स्यादित्येवं नारदोऽब्रवीत् ॥ १ ॥
वशिष्ठस्तु तयोरन्त्याद्ययोरेकद्विनाडिकम् ।
अङ्गिराघटिकामेकामन्ये षट् चाष्ट तत्र तु ॥ २ ॥
जातं शिशुं त्यजेत्तातो न पश्येद्वाष्टहायनम् ॥ ३ ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की दो घड़ी, और मूल के आदि की दो घड़ी, अभुक्तसंज्ञक मूल होते हैं । यह नारदजी का वचन है । और वशिष्ठजी कहते हैं कि ज्येष्ठा के अंत में एक घड़ी, और मूल के आदि में दो घड़ी, अभुक्तसंज्ञक मूल हैं । अङ्गिरा ऋषि कहते हैं कि ज्येष्ठान्त का एक घड़ी और मूलादि की एक घड़ी अभुक्तसंज्ञक मूल हैं । और आचार्यों का मत है कि ज्येष्ठा के अन्त

की छः घड़ी और मूलादि की आठ घड़ी अभुक्त हैं । ऐसे योग में बालक उत्पन्न हो तो पिता उसे त्याग दे, अथवा आठ वर्ष तक न देखे ॥ १ । ३ ॥

अथ मूलजनने पादफलम् ।

मूलाद्यचरणे तातो द्वितीये जननी तथा ।
तृतीये तु धनं नश्येच्चतुर्थे हि शुभावहम् ॥ १ ॥

मूल के पहले चरण में जन्म हो तो पिता का नाश हो, दूसरे में माता का नाश और तीसरे में धन का नाश हो, चौथा शुभ है॥ १॥

अथ द्वितीयप्रकारेण पादफलम् ।

आद्ये पिता नाशमुपैति मूल-
पादे द्वितीये जननी तृतीये ।
धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या
सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम् ॥ १ ॥

पहले चरण में पिता का नाश करे, दूसरे में माता का नाश करे, तीसरे में धन का नाश करे, चौथा शुभ है । शान्ति करने से सब शुभ हैं । और आश्लेषा का विलोम फल होता है, अर्थात् पहला शुभ है, दूसरे चरण में धन का नाश, तीसरे चरण में माता का नाश, और चौथे चरण में पिता का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ ज्येष्ठायाश्चरणफलम् ।

आद्ये पादेऽग्रजं हन्ति ज्येष्ठायामनुजं द्विके ।
तृतीये जननीं जातः स्वात्मानं च तुरीयके ॥१॥

ज्येष्ठा के पहले चरण में बड़े भाई का नाश करे, दूसरे में छोटे

भाई का नाश, तीसरे में माता का नाश करता है। और चौथे में बालक स्वयं नष्ट हो जाता है ॥ १ ॥

अथ मूलवासज्ञानम् ।

माघाषाढाश्विनो भाद्रपदे मूलं वसेद्दिवि ।
कार्त्तिके श्रावणे चैत्रे पौषमासे तु भूतले ॥ १ ॥
वैशाखे फाल्गुने ज्येष्ठे मार्गे पातालवर्ति तत् ।
भूतले वर्तमाने तु ज्ञेयो दोषोऽन्यथा न हि ॥ २ ॥

माघ, आषाढ, क्वार, भाद्रपद इन महीनों में मूलवास आकाश में जानिये। कार्त्तिक, श्रावण, चैत्र, पौष में पृथ्वी में होता है। वैशाख, फाल्गुन, ज्येष्ठ तथा अगहन में मूलवास पाताल में जानिये। जब पृथ्वी में मूल बसे, तब दोष को करता है अन्यथा दोष नहीं होता है ॥ १ । २ ॥

अथ मूलवासचक्रम् ।

आकाश	पृथ्वी	पाताल	मूलवास
माघ आषाढ आश्विन भाद्र	कार्त्तिक चैत्र श्रावण पौष	फाल्गुन ज्येष्ठ मार्गशीर्ष वैशाख	मास

अथ स्तन्यपानमुहूर्तः ।

जातकर्मोक्तनक्षत्रे श्रवणे च पुनर्वसौ ।
त्यक्त्वा स्वातीं स्तन्यपानं शुभं प्रोक्तं शुभेऽहनि ॥ १ ॥

जातकर्म में जो नक्षत्र कहे हैं, तथा श्रवण, पुनर्वसु में बालक को माता का प्रथम दुग्ध पान कराना शुभ है। स्वाती नक्षत्र वर्जित है, शुभ दिन हो ॥ १ ॥

अथ सूतिकाक्काथमुहूर्तः ।

भैषज्यगदिते धिष्ण्ये वारे दुर्योगवर्जिते ।
आरोग्यहेतवे क्काथः सूतिकायाश्च तच्छिशोः ॥१॥

जो नक्षत्र तथा वार भैषज्य अर्थात् दवा खाने में कहे हैं, उनमें सूतिका स्त्री को काढ़ा देना शुभ है। दुर्योग वर्जित करे। इसी मुहूर्त में बालक को भी आरोग्य के वास्ते काढ़ा इत्यादि देना चाहिए ॥१॥

अथ सूतिकापथ्यमुहूर्तः ।

अन्नाशनोक्तनक्षत्रे शुभाहे सांशुमालिनि ।
हित्वा रिक्तां च दुर्योगं सूतिकापथ्यमीरितम् ॥ १ ॥

जो नक्षत्र अन्नप्राशन में कहे हैं, उनमें सूतिका स्त्री को पथ्य देना शुभदायक है और रविवार के समेत शुभदिन होना चाहिए। दुष्टयोग वा रिक्ता तिथि वर्जित है ॥ १ ॥

अथ यवनागमे लिङ्गाण्डच्छेदनमुहूर्तः ।

नराश्ववृषभादीनां लिङ्गाण्डच्छेदनं मतम् ।
अर्कारेज्यान्त्यपुष्यार्कस्वातीन्दुश्रुतिवासवैः ॥ १ ॥

मनुष्य तथा वृषादि का लिङ्गाण्डच्छेदन मुहूर्त यवनशास्त्र के मत से विचारे। रविवार, मङ्गलवार वा गुरुवार तथा रेवती, पुष्य, हस्त, स्वाती, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र और वार शुभ हैं ॥१॥

अथ शुभाशुभतारीखज्ञानम् ।

तृतीया तथैवाष्टमी विश्वसंख्या
तथाष्टादशी च त्रयोविंशतिश्च ।
तथैवाष्टविंशत्तरीखा निषिद्धा
सदा यावनैः शास्त्रविद्भिः प्रदिष्टा ॥ १ ॥

फ़ारसी मासकी तीसरी, आठवीं, तेरहवीं, अठारहवीं, तेईसवीं और अट्ठाईसवीं ये तारीखें निषिद्ध हैं, यवनशास्त्र में प्रदिष्ट हैं ॥ १ ॥

अथ गण्डान्तयोगेन मूलनक्षत्रज्ञानम् ।

ज्येष्ठाश्लेषारेवतीनामन्ते च घटिकाद्वयम् ।
आदौ मूलमघाश्वानां भगण्डो घटिकाद्वयम् ॥१॥

ज्येष्ठा, श्लेषा, रेवती इन नक्षत्रों के अन्त में दो घड़ी और मूल, मघा, अश्विनी की आदि में दो घड़ी नक्षत्रगण्डान्त होता है, और ये छः नक्षत्र मूल के जानना ॥ १ ॥

अथ तिथिगण्डान्तज्ञानम् ।

नन्दिकायास्तिथेरादौ पूर्णानां च तथान्तिमे ।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्डोऽयमुच्यते ॥१॥

नन्दातिथि के आदि में और पूर्णातिथि के अन्त में एक एक घड़ी तिथिगण्डान्त होता है ॥ १ ॥

अथ लग्नगण्डान्तज्ञानम् ।

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिकार्धं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्धकम् ॥१॥

मीन, वृश्चिक, कर्क के अन्त में आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है । और मेष, धन, सिंह के आदि में आधी घड़ी तक लग्नगण्डान्त होता है ॥ १ ॥

अथ गण्डान्तफलम् ।

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः ।
न जीवति तदा जातो जीविते च धनी भवेत् ॥ १ ॥

तिथिगण्डान्त वा नक्षत्रगण्डान्त वा लग्नगण्डान्त में बालक पैदा हो तो न जीवे, और जीवे तो धनी होवे ॥ १ ॥

अथाग्निहोत्रमुहूर्तः ।

प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे
पुष्ये ज्येष्ठाश्वीन्दवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेऽपि
श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

रोहिणी, रेवती, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, अश्विनी, मृगशिरा, कृत्तिका, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र यज्ञ शुभ है। आचार्य कहते हैं कि यह यज्ञ ब्राह्मणों को मुख्य है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेणाग्निहोत्रमुहूर्तः ।

सौम्यायने विशाखायां कृत्तिकारोहिणीमृगे ।
त्र्युत्तरे रेवती ज्येष्ठा पुष्येऽग्न्याधानमिष्यते ॥ १ ॥
कुजेऽर्केऽब्जे गुरौ शुक्रे नो नीचास्तंगतेऽरिभे ।
नो रिक्तायां तिथौ कर्के लग्ने नैव मृगत्रये ॥ २ ॥
अग्न्याधानं प्रकुर्वीत नेन्दौ लग्नगतेऽपि च ।
त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुषु ॥ ३ ॥
शेषे चोपचये शुद्धे रन्ध्रेऽग्न्याधानमुत्तमम् ।
लग्ने जीवे धनुर्गे वा द्यूने खे वा यमे कुजे ।
चन्द्रे वा त्रिषडायस्थे सूर्ये वा दीक्षितो भवेत् ॥४॥

उत्तरायण सूर्यों में विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है। मङ्गल, सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, शुक्र ये न तो नीच के हों और न अस्त हों, और न शत्रु की राशि में हों, और रिक्ता तिथि न हो, तथा कर्क

मकर, कुम्भ, मीन ये लग्न वर्जित हैं। चन्द्रमा लग्न में न हो तथा त्रिकोण ९।५ वा उपचय लग्न अर्थात् जन्मलग्न वा जन्मराशि से तीसरे, छठे, ग्यारहवें लग्न में वा केन्द्र १।४।७।१० में सूर्य, बृहस्पति, मङ्गल, चन्द्रमा हों। और जो ग्रह बाकी रहें सो उपचय लग्न में हों, और आठवें घर में कोई ग्रह न हो तो अग्निहोत्र शुभ है। और बृहस्पति लग्न में हो, वा धनराशि का हो, तथा सातवें, दशवें हो, वा मङ्गल दूसरे हो। अथवा चन्द्रमा तीसरे, छठे, ग्यारहवें हो वा सूर्य की दृष्टि चन्द्रमा पर हो, तब शुभ होता है॥ १—४॥

अथ तृतीयप्रकारेणाग्निहोत्रमुहूर्तो दीपिकायामाह।

पुष्योत्तराविशाखासु ज्येष्ठान्त्याग्निकचन्द्रभे।
अग्न्याधानमरिक्तासु कार्यं वा देवजेऽहनि॥ १॥

पुष्य, तीनों उत्तरा, विशाखा, ज्येष्ठा, रेवती, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा इन नक्षत्रों में अग्निहोत्र शुभ है। रिक्तातिथि वर्जित है॥ तथा बृहस्पतिवार शुभ है॥ १॥

अथ यज्ञोपवीतमुहूर्तः।

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवती
ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते।
गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रे गुरौ भास्करे
पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमिह श्रेष्ठं द्वितीयाद्वये॥ १॥

पूर्वाषाढ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र यज्ञोपवीत में शुभ हैं। तथा उत्तरायण सूर्य हो और शुक्लपक्ष हो, और वृष, मीन, कन्या, धन, सिंह ये लग्न शुभ हैं। और शुक्र, बृह-

स्पति, रविवार शुभ हैं। और पञ्चमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, द्वितीया, तीज ये तिथियां शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण यज्ञोपवीतमुहूर्तः ।

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा
रौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् ।
द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च
कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे ॥ १ ॥
कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः॥ २ ॥
व्रतबन्धेऽष्टषड्रिष्फवर्जिताः शोभनाः शुभाः ।
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ॥ ३ ॥

क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र, ध्रुवसंज्ञक, आश्लेषा, चरसंज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, तीनों पूर्वा, आर्द्रा, ये नक्षत्र यज्ञोपवीत में शुभ हैं। तथा रविवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, चन्द्रवार, ये दिन शुभ हैं। द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, एकादशी, द्वादशी, दशमी ये तिथियां शुभ हैं। शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की पञ्चमी तक शुभ है, शेष कृष्णपक्ष अशुभ जानना। और पराह्ण अर्थात् दिन के तीसरे भाग में वर्जित है अर्थात् दोपहरसे पूर्व ही यज्ञोपवीत शुभ होता है॥ १ ॥

यज्ञोपवीत में लग्न से छठें और आठवें स्थान में स्थित शुक्र,

१—यद्यपि सब वर्णों का यज्ञोपवीत संस्कार क्षिप्रादि संज्ञक हस्तादि नक्षत्रों में कहा है तथापि ब्राह्मण बालकों का यज्ञोपवीत पुनर्वसु नक्षत्र में न होना चाहिए, ऐसा शिष्टाचार है। इसी प्रकार ग्रन्थान्तर से यह भी ज्ञात होता है कि ब्राह्मण का यज्ञोपवीत बसन्त ऋतु में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में, वैश्य का शरद् ऋतु में, व्रतबन्ध संस्कार उत्तम होता है। और मांघ से ज्येष्ठ तक ५ महीने ब्राह्मणादिकों के लिए साधारण कहे हैं।

बृहस्पति, चन्द्रमा, लग्नेश और बारहवें स्थान में स्थित चन्द्रमा और शुक्र, तथा लग्न में किंवा आठवें और पांचवें स्थान में पापग्रह स्थित हों तो अधम अर्थात् बालक के अनिष्टकारक होते हैं ॥ २ ॥

यज्ञोपवीत में लग्न से आठवें, छठें, बारहवें स्थान को छोड़कर अन्य स्थानों में शुभग्रह स्थित हों, और तीसरे, छठें, ग्यारहवें स्थान में पापग्रह स्थित हों तो शुभ होते हैं । तथा वृष और कर्क राशि में स्थित होकर पूर्णचन्द्र यदि लग्न में स्थित हो तो शुभ होता है॥३॥

अथ यज्ञोपवीतलग्ने नवांशफलम् ।

क्रूरो जडो भवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद् वटुः ।
यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे[1] तनौ क्रमात्॥१॥

यज्ञोपवीत के लग्न में जो सूर्य के नवांश का उदय हो तो जिस बालक का यज्ञोपवीत करना है वह बालक क्रूर अर्थात् निर्दय हो। और चन्द्रमा के नवांश का उदय हो तो जड़ अर्थात् विचारहीन हो। तथा मङ्गल के नवांश का उदय हो तो पापी, और बुध के नवांश के उदय में पण्डित हो। और बृहस्पति के नवांश के उदय में षट्कर्म[2] करे। और शुक्र के नवांश का उदय हो तो यज्ञ करनेवाला हो। और शनैश्चर के नवांश के उदय में मूर्ख हो। इसलिए व्रतबन्ध के मुहूर्त लग्न में शुभग्रह के ही नवांश में यज्ञोपवीत करना उत्तम होता है॥१॥

अथ यज्ञोपवीते चन्द्रनवांशफलम् ।

विद्यानिरतः शुभराशिलवे
पापांशगते हि दरिद्रतरः ।

१—रवि आदि के नवांशों का विचार, इसी प्रकरण में करेंगे ।

२—यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना, दान देना, पढ़ना, पढ़ाना ये छः कर्म हैं ।

चन्द्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः
कर्णादितिभे धनवान् स्वलवे ॥ १ ॥

यज्ञोपवीतकाल में चन्द्रमा यदि शुभराशि के नवांश में स्थित हो तो बालक विद्यानिरत हो और पापराशि के नवांश में स्थित हो तो बहुत दरिद्र हो और जो अपनी राशि के अर्थात् कर्क के नवांश में स्थित हो तो बहुत दुःख को प्राप्त हो, तथा श्रवण वा पुनर्वसु नक्षत्र का चन्द्रमा होकर कर्क के नवांश में हो तो बालक धनवान् होवे ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीतमध्ये कुयोगादिज्ञानम् ।

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके ।
प्राक् सन्ध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ॥ १ ॥
त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादिदिनत्रये ।
चतुर्थीमेकमेतेषु अष्टावेते गलग्रहाः ॥ २ ॥

पञ्चमी तक को छोड़कर कृष्णपक्ष में और जिस दिन सायंकाल में प्रदोष हो, उस दिन में और अनध्याय में शनिवार के दिन में और रात्रि में तथा मध्याह्न के बाद जिस दिन प्रातःकाल मेघ गर्जे उस दिन में यज्ञोपवीत अशुभ है । तथा गलग्रह में भी वर्जित है। अब गलग्रह लिखते हैं । तेरस से चार तिथि अर्थात् त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णमासी, परीवा, कृष्णपक्ष में अमावास्या तथा सप्तमी से तीन तिथि अर्थात् सप्तमी, अष्टमी, नवमी तथा चौथि ये आठ तिथि गलग्रह संज्ञक जानिये ॥ १—२ ॥

अथ प्रदोषज्ञानम् ।

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ १ ॥

द्वादशी तिथि में आधी रात से पहले यदि त्रयोदशी का प्रवेश हो तो प्रदोष होता है । तथा षष्ठी तिथि में डेढ़पहर रात्रितक यदि सप्तमी का प्रवेश हो तो प्रदोष जानना । तथा तृतीया तिथि में एक पहररात्रि तक यदि चौथि का प्रवेश हो तो भी प्रदोष जानना ॥ १ ॥

अथानध्यायज्ञानम् ।

शुचिशुक्रपौषतपसां दिगशिवरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः ।
भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणं च व्रतेष्वनध्यायाः ॥ १ ॥

आषाढ़ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, माघ शुक्ल द्वादशी ये सब यज्ञोपवीत में अनध्याय संज्ञक हैं । तथा चतुर्दशी से तीन तिथि अर्थात् चतुर्दशी, पौर्णमासी, कृष्णपक्ष में अमावास्या, प्रतिपदा वा अष्टमी तथा सूर्यसंक्रान्ति का दिन ये भी यज्ञोपवीत में अनध्याय संज्ञक हैं । इनका प्रयोजन कह आए हैं कि, इनमें यज्ञोपवीत न करना चाहिए ॥ १ ॥

अथान्यकुयोगज्ञानम् ।

नान्दीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नान्तरे नहि ।
शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ॥ १ ॥

नान्दीश्राद्ध के अनन्तर जिस बालक की माता रजस्वला हो जावे उस बालक का मुण्डन, यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार पूर्वनिश्चित मुहूर्त को छोड़कर दूसरे मुहूर्त में करना चाहिये, यदि दैवयोग से शुभ मुहूर्त शीघ्र न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त शान्ति करके उसी मुहूर्त में मुण्डनादि संस्कार करे, यदि विना शान्ति किए हुए ही मुण्डनादि संस्कार करे तो शुभ नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ ग्रहयुक्तकुयोगज्ञानम् ।

शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते ।

निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ॥ १ ॥

शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य के संग में हों तो बालक निर्गुण हो। तथा शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, मङ्गल के संग हों तो बालक क्रूरचेष्ट हो । शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा, शनैश्चर के संग हों तो बालक निर्दय हो । और सब शुभग्रह एक घर में हों तो पण्डित हो ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीते रविगुर्वादिबलम् ।

गुरुसूर्यबलं ज्ञेयं विवाहे यद्विवक्ष्यते ।
चन्द्रताराबलं पूर्वमुक्तं ग्राह्यं वटोः शुभम् ॥ १ ॥
वटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयाऽन्यत्र निन्दितः॥२॥
चतुर्थे चाष्टमे चैव द्वादशस्थे दिवाकरे ।
विवाहितो नरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ३ ॥
जन्मन्यथो द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ४ ॥
एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ५ ॥

जिस तरह से विवाह में बृहस्पति और सूर्य का बल विचारा जाता है उसी तरह से जनेऊ में विचारना चाहिये । और पूर्वोक्त चन्द्रमा वा तारा का बल लेना चाहिये । जब अच्छा हो तब जनेऊ बालक का शुभ है । बालक वा कन्या के जन्मराशि से नवम, पञ्चम, ग्यारहवें, दूसरे, सातवें इन स्थानों में बृहस्पति हो तो श्रेष्ठ है । तथा दशवें, छठे, तीसरे, पहिले हो तो दान देने से शुभ है । तथा चौथे, आठवें, बारहवें अशुभ जानिये । जन्म-

राशि से चौथे, आठवें, बारहवें सूर्य हो तो बालक की मृत्यु जानिये । तथा जन्म का हो वा दूसरे स्थान में हो वा पांचवें, सातवें हो वा नवें हो तो पूजा करने से शुभ है । तथा ग्यारहवें, तीसरे, छठे वा दशवें सूर्य हो तो शुभ जानिये ॥ १—५ ॥

अथ गुरुबलचक्रम् ॥ अथ रविबलचक्रम् ॥

स्थानानि	फलम्	स्थानानि	फलम्
११।२।५।७।९	शुभम्	११।३।६।१०	शुभम्
६।१।३।१०	पूज्यः	१।२।५।७।९	पूज्यः
४।८।१२	नेष्टः	४।८।१२	नेष्टः

अथ गुरुपरिहारः ।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रिष्फाष्टतूर्यगोऽपीष्टोनीचारिस्थःशुभोऽप्यसत् ॥ १ ॥

बृहस्पति कर्कराशि का हो वा धन, मीन राशि का हो वा अपने मित्र के घर में हो अर्थात् मेष, वृश्चिक का हो वा धन, मीन के नवांश में हो तथा वर्गोत्तम अर्थात् जिस राशि का बृहस्पति हो उसी राशि का नवांश हो तो बारहवें, आठवें, चौथे शुभ जानिये, अथवा नीच अर्थात् मकरराशि का हो वा शत्रु घर में अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला वृष का हो तो शुभ हो तो भी अशुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ यज्ञोपवीतलग्ने केन्द्रस्थानगतग्रहफलम् ।

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः ।
प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केन्द्रे सूर्यादिखेचरैः ॥ १ ॥

लग्न, चौथा, सातवां, दशवां इन स्थानों की केन्द्र संज्ञा है। यदि यज्ञोपवीतकाल में सूर्य केन्द्र में स्थित हो तो बालक राजा का नौकर हो। और चन्द्रमा केन्द्र में स्थित हो तो वैश्यवृत्ति हो, मङ्गल केन्द्र में हो तो हथियार उठाने की वृत्ति हो, बुध केन्द्र में स्थित हो तो पाठक अर्थात् पढ़ने व पढ़ानेवाला हो, बृहस्पति केन्द्र में हो तो पण्डित हो, शुक्र यदि केन्द्र में हो तो अर्थवान् हो, शनैश्चर केन्द्र में हो तो म्लेच्छ की नौकरी करे ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां केन्द्रफलचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
राजसेवी	वैश्यवृत्तिः	शस्त्रवृत्तिः	पाठकः	प्राज्ञः	अर्थवान्	म्लेच्छसेवी	फलम्

अथ द्वितीयप्रकारेण गुरुपरिहारः ।

चैत्रे मासि रवौ मीने विबलेऽपि गुरौ वटोः ।
व्रतबन्धः प्रशस्तः स्याच्चैत्रे मीनयुतः शुभः ॥ १ ॥

चैत्र महीना हो, मीन के सूर्य हों, तो बालक के बृहस्पति निर्बल होने पर भी जनेऊ शुभ जानिये। क्योंकि चैत्र में मीन के सूर्य बहुत शुभ होते हैं ॥ १ ॥

अथ राज्ञां क्षुरिकाबन्धनमुहूर्तः ।

व्रतोक्तमासतिथ्यादौ विचैत्रे सबले कुजे ।
विभौमे क्षुरिकाबन्धः प्राग्विवाहान्महीभुजाम् ॥ १ ॥

यज्ञोपवीत के मास तिथ्यादि हों, परन्तु चैत्र के विना और मङ्गल राशि से गोचरोक्त बली हो और मङ्गलवार के विना विवाह के प्रथम राजाओं को क्षुरिकाबन्धन शुभ है ॥ १ ॥

अथ विवाहमुहूर्तः ।

मूलानुराधामृगरेवतीषु
हस्तोत्तरास्वातिमघासुधात्रये ।
ज्येष्ठे तपः फाल्गुनराधमार्गे
शुचौ तु पाणिग्रहणं प्रशस्तम् ॥ १ ॥

मूल, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, तीनों उत्तरा, स्वाती, मघा, रोहिणी ये नक्षत्र वा ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, अगहन, आषाढ़ इन महीनों में विवाह शुभ है ॥ १ ॥

अथ वरवरणमुहूर्तः ।

उत्तरात्रितयपूर्विकात्रये
रोहिणीष्वनलभे वरणं सत् ।
योषितो गुरुरिनः पुरुषस्ये-
न्दुर्द्वयोः परिणये सबलः सन् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, रोहिणी, कृत्तिका इन नक्षत्रों में टीका चढ़ाना शुभ है । और स्त्री को गुरुबल और पुरुष को सूर्य-बल लेकर विवाह शुभ है । जैसा कि यज्ञोपवीत[1] में कहा है वैसा विचार करना चाहिये । और चन्द्रमा का बल दोनों को लेना चाहिये ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण वरणमुहूर्तः ।

धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदरः
शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः ।

१—संवत्सर प्रकरण में कह चुके हैं ।

वरवृतिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना
ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ १ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में और शुभदिन, शुभतिथि, शुभ लग्नादि में गीत और बाजा आदि से युक्त होकर ब्राह्मण किंवा कन्या का भाई वस्त्र, यज्ञोपवीत, द्रव्य आदि से वर का वरण करे ॥ १ ॥

अथ विवाहे जन्ममासादिनिषेधः ।

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयो-
र्जन्ममासभतिथौ करग्रहः ।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते
चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥ १ ॥

पहले पहल उत्पन्न पुत्र कन्या हों तो जन्ममास वा जन्मनक्षत्र वा जन्मतिथि विवाह में वर्जित है । और जो दूसरे गर्भ के सुत कन्या हों तो जन्ममासादिक पुत्रप्रद हैं अर्थात् जन्म मासादि में विवाह होने से पुत्र हो ॥ १ ॥

अथ ज्येष्ठमासनिषेधः ।

ज्येष्ठद्वन्द्वं मध्यमं संप्रदिष्टं
त्रिज्येष्ठं स्यान्नैव युक्तं कदापि ।
केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्यमाहु-
र्नैवाऽन्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ १ ॥

दो ज्येष्ठ में विवाह मध्यम है अर्थात् वर कन्या में से एक आदि-गर्भ का उत्पन्न हो और ज्येष्ठ महीना हो उसे दो ज्येष्ठ कहते हैं । और तीन ज्येष्ठ में विवाह वर्जित है अर्थात् वर कन्या ज्येष्ठ हो और ज्येष्ठ

महीना हो इसको तीन ज्येष्ठ जानना । किसी आचार्य का यह मत है कि कृत्तिका नक्षत्र के सूर्य हों तो ज्येष्ठ में विवाह शुभ है और कोई आचार्य के मत से उत्तम नहीं है ॥ १ ॥

अथ विवाहमण्डपादिकमुहूर्तः ।

चित्राविशाखाशततारकाश्विनी
ज्येष्ठाभरण्यां शिवभाच्चतुष्टयम् ।
हित्वा प्रशस्तं फलतैलवेदिका:
प्रदानकं कण्डनमण्डपादिकम् ॥ १ ॥

चित्रा, विशाखा, शतभिष, अश्विनी, ज्येष्ठा, भरणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा इन नक्षत्रों को छोड़कर और जो शेष नक्षत्र हैं उनमें फलदान, तैलपूजन, वेदी बनाना, कण्डन अर्थात् अन्न कूटना तथा मण्डप छावना शुभ है । अथवा मांड़व सेराने का मुहूर्त वा और जो विवाहसम्बन्धी कार्य हैं, वे सब विवाह के कहे हुए जो नक्षत्र हैं उनमें करना उचित है ॥ १ ॥

अथ विवाहादिनिषेधज्ञानम् ।

सुतपरिणयात्षण्मासान्तः सुताकरपीडनं
न च निजकुले तद्वद्वा मण्डनादपि मुण्डनम् ।
न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धेशुभेनपितृक्रिया ॥१॥
चूडाव्रतं चापि विवाहतो व्रता-
च्चूडा च नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे ।
वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः
षण्मासतो वाऽब्दविभेदतः शुभः ॥ २ ॥

अपने कुल में बालक के विवाह से छः महीना तक कन्या का विवाह वर्जित है। उसी प्रकार विवाह से छः महीना तक मुण्डन वर्जित है। सगे दो भाइयों के साथ सगी दो बहिनों का विवाह वर्जित है। तथा छः मास के भीतर ही सहोदर दो भाइयों का विवाह, सगी दो बहिनों का विवाह करना उचित नहीं है। और विवाहादि शुभकार्यों में पितृश्राद्धादि अमाङ्गलिक क्रियाओं का करना उचित नहीं है। अर्थात् विवाहादि का मुहूर्त ऐसा होना चाहिए कि जिस काल में पितृश्राद्धादि का दिन माङ्गलिक कृत्य में न पड़े ॥ १ ॥

पिता, पितामह, प्रपितामह इन तीन पुरुषों में किसी के विवाह होने के अनन्तर उस कुल में किसी का मुण्डन तथा यज्ञोपवीत, और उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत के अनन्तर छः मास के भीतर ही किसी का चूड़ाकर्म अर्थात् मुण्डन, तथा वधूप्रवेश होने के अनन्तर छः मास तक लड़की को पति के घर भेजना शुभ नहीं है। यदि आवश्यक हो तो छः महीने के भीतर ही संवत्सर के भेद से शुभ होता है। जैसे माघ में किसी का विवाह हुआ हो तो और संवत्सर के भेद से वैशाख में मुंडन, यज्ञोपवीत आदि पूर्वोक्त कार्य करना शुभ है ॥ २ ॥

अथ पञ्चशलाकावेधचक्रम् ।

अपि तिर्यग्गतोर्ध्वपञ्चरेखाः
प्रतिकोणं द्वयमग्निमीशकोणे ।
इतराणि लिखेत्क्रमेण भानि
प्रथितं पञ्चशलाकचक्रमुक्तम् ॥ १ ॥
यदृक्षगो यः खचरः स तत्र
प्रलेखनीयो गणकैस्तु पूर्वैः ।

या पौर्णमासी निकटे विवाहा-
त्तत्तारकस्थो विधुरत्र देयः ॥ २ ॥

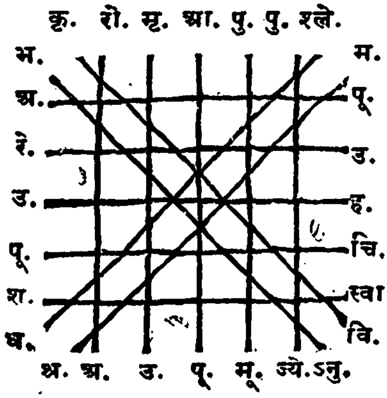
पांचरेखा बेंड़ी करे, पांच खड़ी करे, पञ्चशलाकाचक्र बनावे और कोणों में दो दो रेखा लिखे । उसमें ईशान दिशा से कृत्तिकादि से अट्ठाइसों नक्षत्र लिखे । जो ग्रह जिस नक्षत्र में हो वह लिखे । और विवाह के समीप जो पूर्णमासी हो उस पूर्णमासी को जो नक्षत्र हो उसी नक्षत्र में चन्द्रमा लिख देना ॥ १—२ ॥

अथ पञ्चशलाकावेधफलम् ।

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासान्ते न जीवति कदाचन ॥ १ ॥

एक रेखा में परस्पर विवाह का नक्षत्र और कोई ग्रह हो तो वेध होता है । उसमें विवाह हो तो एक महीना के बाद अशुभ होता है ॥ १ ॥

अथ पञ्चशलाकाचक्रन्यासः ।



अथ लत्तादोषज्ञानम् ।

सूर्यो द्वादशमष्टमं रविसुतः षष्ठं गुरुर्भूमिज-
स्तार्तीयैकमथो निहन्ति पुरतो नक्षत्रकं लत्तया ।

द्वाविंशं तुहिनांशुकश्च नवमं राहुर्बुधः सप्तमं
शुक्रः पञ्चमकं तु पृष्ठत इह प्रायेण लत्तां त्यजेत् ॥१॥

सूर्य अपने नक्षत्र से बारहवें नक्षत्र को लत्ता मारते हैं । और शनैश्चर आठवें नक्षत्र को मारता है । बृहस्पति छठे को हनता है । मङ्गल तीसरे को मारता है ये ग्रह अपने आगेवाले नक्षत्रों को मारते हैं । तथा चन्द्रमा अपने से बाईसवें नक्षत्र को मारता है । और राहु अपने से नवें नक्षत्र को मारता है । बुध सातवें को मारता है । शुक्र पांचवें नक्षत्र को लत्ता मारता है । ये ग्रह अपने से पीछेवाले नक्षत्र को मारते हैं । ये लत्ता विवाह में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ पातदोषज्ञानम् ।

शूलस्य गण्डस्य च वैधृतेश्च
साध्यव्यतीपातकहर्षणानाम् ।
यत्तारकं स्यादवसानसंस्थं
तत्पातितं वङ्गकलिङ्गदुष्टम् ॥ १ ॥

शूल, गण्ड, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, हर्षण इन योगों का जिस नक्षत्र में अन्त होवे उस नक्षत्र में पातदोष लगता है । वङ्ग तथा कलिङ्ग देश में वर्जित है ॥ १ ॥

अथ युतिदोषज्ञानम् ।

यत्र गेहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥ १ ॥
रविणा संयुतो हानिं भौमेन निधनं शशी ।
करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनैश्चरैः ॥ २ ॥

वर्गोत्तमगते चन्द्रे स्वोच्चे मित्रर्क्षगे तथा ।
युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ॥ ३ ॥

जिस घर में चन्द्रमा हो उसी घर में और कोई ग्रह हो तो युतिदोष जानिये । परन्तु शुक्र को छोड़कर अन्य अशुभ हैं अर्थात् शुक्र शुभ है । सूर्यसंयुक्त हो तो हानि हो, मङ्गलयुक्त हो तो मृत्यु हो तथा राहु, केतु, शनैश्चर युक्त हों तो मूल नाश करें । अब परिहार लिखते हैं—चन्द्रमा वर्गोत्तम हो अर्थात् जिसकी राशि हो उसीका नवांश हो अथवा उच्च का हो तथा मित्र के घर में हो तो युतिदोष नहीं होता है । दम्पति अर्थात् स्त्री पुरुष सुखी हों ॥ १—३ ॥

अथ यामित्रदोषज्ञानम् ।

पाणिग्रहस्य शीतांशोर्नक्षत्रं यच्चतुर्दशम् ।
नक्षत्रं खेटयुक्तं चेद्यामित्रं स्याद्विगर्हितम् ॥ १ ॥

विवाह के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो यामित्र-दोष जानिये सो वर्जित है ॥ १ ॥

अथ पञ्चकदोषज्ञानम् ।

रविक्रान्तियातांशयुक्ताश्च तिथ्यो
रविर्दिग्गजाः सिन्धवः खेटभक्ताः ।
भवेत्पञ्चकं रोगवह्नीशचौर-
मृतिर्दोषमेनं प्रजह्याद्विवाहे ॥१॥

सूर्य के गतांश और पन्द्रह वा बारह वा दश वा आठ वा चार इनको अलग अलग रखकर जोड़ना, उन अङ्कों में नव का भाग देना, शेष पांच बचें तो क्रम से पांचों स्थान में पांच पञ्चक, रोग १ अग्नि २ राज ३ चौर ४ मृत्यु ५ होते हैं, ये विवाह में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ पञ्चकदोषपरिहारः ।

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो-
र्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ।
रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे
वर्ज्याश्चक्रमतो बुधैरुगनलक्ष्मापालचौरामृतिः॥१॥

रात्रि को चौर वा रोगपञ्चक वर्जित है । दिन में नृपपञ्चक वर्जित है और अग्निपञ्चक हमेशा वर्जित है । और दोनों संध्याओं में मृत्युपञ्चक वर्जित है ॥ अथ वारपरत्वेन परिहारः॥ शनैश्चर को नृपपञ्चक वर्जित है । बुधको मृत्युपञ्चक और मंगल को अग्नि वा चौरपञ्चक वर्जित है । और रविवार को रोगपञ्चक वर्जित है ॥ अथ कार्यभेदेन परिहारः ॥ जनेऊ में रोगपञ्चक वर्जित है और मकान बनाने में अग्निपञ्चक वर्जित है। तथा राजसेवा में नृपपञ्चक, यात्रा में चौरपञ्चक तथा विवाह में मृत्युपञ्चक त्याज्य है ॥ १ ॥

अथ विवाहाङ्गे ग्रहविचारः ।

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये
भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः ।
लग्नेट्कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लौ-
र्लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥ १ ॥

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केशरी ॥ २ ॥

त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रा-
स्त्र्यायारिगाः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः ।

सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू सितोऽष्ट-
त्रिद्यूनषड्व्ययग्रहान् परिहृत्य शस्तः ॥ ३ ॥
शुक्रो दश सहस्राणि बुधो दशशतानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ ४ ॥

बारहवें शनैश्चर, दशवें मङ्गल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा व क्रूरग्रह शुभ नहीं हैं । लग्न का स्वामी व शुक्र व चन्द्रमा छठे शुभ नहीं हैं । और आठवें स्थान में चन्द्रमा व लग्नेश व शुभग्रह व मङ्गल शुभ नहीं हैं । और सातवें स्थान में शुभग्रह शुभ नहीं हैं। विवाह के लग्न में सप्तम स्थान को छोड़कर केन्द्र में यदि बृहस्पति हो तो और ग्रह क्या कर सकते हैं, जिस तरह से मत्त हाथियों के समूह को एकही सिंह नाश कर देता है, उसी तरह से गुरु सर्वदोषनाशक है । तीसरे, ग्यारहवें, आठवें, छठे सूर्य, केतु, राहु, शनैश्चर हों और तीसरे, ग्यारहवें, छठे मङ्गल हो और दूसरे, तीसरे, ग्यारहवें चन्द्रमा हो और सातवें, बारहवें, आठवें बुध, बृहस्पति न हों और शुक्र आठवें, तीसरे, सातवें, छठे, बारहवें वर्जित है। लग्न में शुक्र हो तो दशहज़ार दोष नष्ट करें और बुध लग्न में हो तो एकहज़ार दोष को नाश करें और जो बृहस्पति लग्न में हो तो एकलाख दोष को नाश कर देता है ॥ १—४ ॥

अथैकार्गलदोषज्ञानम् ।

विष्कुम्भ-वज्र-परिघ-व्यतिपात-शूल-
व्याघातवैधृतिषु गण्ड इहातिगण्डे ।
एकार्गलो भवति चेत्किल साभिजित्कः
पीयूषकान्तिरसमर्क्षगतो रवेर्भात् ॥ १ ॥

विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, व्यतीपात, शूल, व्याघात, वैधृति, गण्ड, अतिगण्ड इन योगों में एकार्गल होता है । सूर्य के नक्षत्र

से चन्द्रमा के नक्षत्रतक अभिजित् समेत गिने, जो नक्षत्र समसंज्ञक हों और पूर्वोक्त योग भी हो तो एकार्गल नामक दोष होता है । वह विवाह में त्याज्य है ॥ १ ॥

अथोपग्रहदोषज्ञानम् ।

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्य-
स्तिथिर्धृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च ।
उपग्रहः सूर्यभतोऽब्जतारा
शुभा न देशे कुरुबाह्लिकानाम् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने जो पांच, आठ, दश, चौदह, सात, उन्नीस, पन्द्रह, अठारह, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पचीस इतने नक्षत्र हों तो उपग्रह दोष जानिये, वह कुरु व बाह्लीकदेश में शुभ नहीं होता ॥ १ ॥

अथ क्रान्तिदोषज्ञानम् ।

पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ
कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे ।
तत्रान्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं
क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ॥ १ ॥

सिंह, मेष–वृष, मकर–तुला, कुम्भ–कन्या, मीन–कर्क, वृश्चिक–धन, मिथुन इन राशियों में परस्पर सूर्य, चन्द्रमा हों तो क्रांतिसाम्य दोष होता है । वह विवाह में अशुभ है ॥ १ ॥

अथ दग्धातिथिज्ञानम् ।

मीने चापे द्वितीयार्के चतुर्थीवृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायां मिथुनेऽष्टमी ॥ १ ॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ २ ॥

मीन व धन के सूर्यों में द्वितीया तिथि दग्धा होती है। और वृष व कुम्भ के सूर्यों में चतुर्थी, मेष, कर्क के सूर्यों में छठ तथा कन्या व मिथुन के सूर्यों में अष्टमी दग्धा है। और वृश्चिक, सिंह के सूर्यों में दशमी दग्धा है। और मकर वा तुला के सूर्यों में द्वादशी दग्धा है, ये सब शुभकर्म में वर्जित हैं॥ १—२॥

अथ लत्तादिदोषपरिहारः।

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ १॥

लत्तादोष मालव देश में वर्जित है। और पातदोष कुरुजाङ्गल देश में वर्जित है। एकार्गलदोष काश्मीरदेश में वर्जित है। और वेध दोष सब देशों में वर्जित है॥ १॥

अथ शूद्रादीनां पुनर्विवाहार्थे गान्धर्वविवाहचक्रम्।

गान्धर्वादिविवाहेऽर्काद्वेदनेत्रगुणेन्दवः।
कुयुगाङ्गानि भूरामात्रिपद्यामशुभाः शुभाः॥ १॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गान्धर्व विवाह का विचार करना। चार, दो, तीन, एक, एक, चार, छः, एक, तीन फिर तीन इस क्रम से प्रथम अशुभ फिर शुभ जानिये॥ १॥

अथ गान्धर्वविवाहचक्रन्यासः॥ २८॥

४	२	३	१	१	४	६	१	३	३
अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.

अथ स्वयंवरकालमुहूर्तः।

पिता पितामहो भ्राता माता बन्धुर्यदा न हि।
ऋतौ वर्षत्रयादूर्ध्वं कन्या कुर्यात्स्वयंवरम्॥ १॥

कन्या का पिता, व पिता का पिता, व भाई व माता व कुटुम्बी ये कोई न हों तो कन्या रजस्वला होने पर तीन वर्ष के अनन्तर अपने मन से पति कर लेवे ॥ १ ॥

अथ गोधूलिकाज्ञानम् ।

यदा नास्तं गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः ।
सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिः शस्यते सदा ॥ १ ॥

सूर्य जब अस्त होने पर हो, जिस समय गौओं की धूरि आकाश में पूरित हो, उस समय जितने मंगलकार्य हैं वे सब शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ अन्धादिलग्नज्ञानम् ।

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा
रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।
मृगस्तुलालिर्बधिरोऽपराह्णे
सन्ध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः ॥ १ ॥
दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवान्धलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशान्धलग्ने ।
पङ्ग्वङ्गे निखिलधनानि नाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ॥ २ ॥

दिनको वृष, मेष, सिंह लग्न सदा अन्ध होते हैं । और रात्रिको कन्या, मिथुन, कर्क अन्ध होते हैं । और पराह्ण में मकर, तुला, वृश्चिक ये बहिरे हैं । और कुम्भ, धन, मीन ये सन्ध्या में कुबरे हैं ॥

अथ फलम् ।

बहिरे लग्न में विवाह होने से दारिद्र्य आता है । और दिन के अन्धलग्न वैधव्यकारक हैं । और रात्रि के जो अन्ध लग्न हैं, वे बालकों के मृत्युकारक हैं । और लँगड़े लग्न में धन नाश होता है ।

विवाह में तथा लग्न के स्वामी पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो दोष नहीं है । इति परिहारः ॥ १-२ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण लग्नफलम् ।

घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ
रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवान्धाः ।
कन्यानृयुक्कर्कटका निशान्धा
दिने घटोऽन्त्ये निशि पंगुसंज्ञः ॥ १ ॥
दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः ।
दुःखदो बधिरो लग्नः कुब्जा वंशविनाशिनी ॥ २ ॥

दिनको तुला, वृश्चिक लग्न और धन, मकर रात्रि को बहिरे होते हैं । सिंह, मेष, वृष ये दिन को अन्धे हैं । कन्या, मिथुन, कर्क ये रात्रि को अन्धे हैं । और दिनको कुम्भ लँगड़ा है । रात्रि को मीन लँगड़ा है । फल पूर्वोक्त जानिये । अब दूसरे प्रकार से लिखते हैं-दिन का अन्ध लग्न वरको हने और रात्रि का अन्ध धन नाश करे । और बहिरे लग्न में दुःख हो और कुबरे लग्न में वंश का नाश हो ॥ १-२ ॥

अथ विवाहमध्ये कर्तरीदोषज्ञानम् ।

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा ।
कर्तरीनामसा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ १ ॥

विवाह के लग्न से कर्तरीदोष विचार करे । पापग्रह मार्गी होकर लग्न के बारहवें हों और पापग्रह वक्री होकर लग्न के दूसरे घर में हो तो कर्तरीनाम दोष होता है । मृत्यु, दारिद्र्य और शोक को देनेवाला है ॥ १ ॥

अथ कुलिकयोगज्ञानम् ।

सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठी भौमे च पञ्चमी ।

बुधे चतुर्थी देवेज्ये तृतीया भृगुनन्दने ॥ १ ॥
द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे ।
कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥२॥

रविवार को सप्तमी, सोमवार को छठ, मङ्गल को पञ्चमी, बुधको चौथ, तीज को गुरु, द्वितीया को शुक्र, परीवा को शनैश्चर इन तिथि-वारों में कुलिकयोग होता है। वह विवाहादिक में शुभ नहीं है ॥ १-२ ॥

अथ कुलिकयोगचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
७	६	५	४	३	२	१	तिथयः

अथ नवांशज्ञानम् ।

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशा मेषतः स्मृताः ।
वृषकन्या मृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥ १ ॥
कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतः स्मृताः ।
नृयुग्मतौलिकाभेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥ २ ॥

मेष, सिंह, धन लग्न का नवांश मेष से गिनना । तथा वृष, कन्या, मकर लग्न का नवांश मकर से गिनना । और कर्क, वृश्चिक, मीन का नवांश कर्क से गिनना । मिथुन, तुला, कुम्भ का नवांश तुला से गिनना । गिनने का क्रम यह है कि-तीस अंश का लग्न होता है, उसका नवांश तीन अंश बीस कला का हुआ उसे प्रथम नवांश जानिये। इसी क्रम से नव नवांश होते हैं। स्पष्ट लग्न में तथा स्पष्ट ग्रहों में जितने अंश व कला बीते हों, उसका नवांश इसी रीति से विचारना और चक्र से स्पष्ट जानना चाहिए ॥ १-२ ॥

अथ नवांशचक्रम् ।

अंश कला	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं	तु	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३ । २०′	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	कं.
६ । ४०′	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.
१० । ०	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.
१३।२०′	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.
१६।४०′	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.
२० । ०	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.
२३।२०′	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.	तु.	क.	मे.	म.
२६।४०′	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.	वृ.	सिं.	वृ.	कुं.
३० । ०	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.	ध.	कं.	मि.	मी.

नवांश का उदाहरण ।

स्पष्टलग्नम् ५ । १० । २० । २५ ।

कन्या लग्न दश अंश, बीस कला, पचीस विकला स्पष्ट है, उसका नवांश कहो ।

उत्तर ।

कन्या लग्न का नवांश मकर से गिना जाता है, और दश अंश

बीसकला पच्चीस विकला स्पष्ट है, तो तीन अंश बीसकला के क्रमसे चौथा नवांश हुआ । कन्या का मकर से गिना जाता है, तब मेष का नवांश हुआ, उसका स्वामी मङ्गल[१] हुआ ॥

अथ होराज्ञानम् ।

होरयोरोजराशौ तु रवीन्दू क्रमतः पती ।
समराशौ तु चन्द्रार्कौ होरेशौ क्रमतो वदेत् ॥ १ ॥

विषम लग्न में पन्द्रह अंशतक सूर्य की होरा होती है, फिर पन्द्रह अंश चन्द्रमा की होरा होती है । और समराशि में प्रथम पन्द्रह अंशतक चन्द्रमा की होरा होती है, फिर पन्द्रह अंशतक सूर्य की होरा होती है ॥ १ ॥

अथ होराचक्रम् ।

राशि	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०
१५ अंश	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.
३० अंश	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.

अथ द्रेष्काणज्ञानम् ।

द्रेष्काण आद्ये लग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्य च ।
द्रेष्काणश्च तृतीयश्च लग्नान्नवमराशितः ॥ १ ॥

द्रेष्काण का प्रकार ।

राशि के तीनभाग करने से दश दश अंश का एक द्रेष्काण होता है । उसमें प्रथम दश अंशतक जिस राशि का द्रेष्काण जानना है—

[१]—"मेषवृश्चिकयोर्भौमः" इत्यादि राशियों के स्वामी पहले ही लिख चुके हैं ।

उस लग्न का प्रथम द्रेष्काण होता है। और उस राशिका स्वामी ही पहले द्रेष्काण का स्वामी होता है। और दूसरे भाग में अर्थात् ग्यारह अंश से बीस अंशतक लग्न से पांचवीं राशि का द्रेष्काण होता है, उस राशि का स्वामी दूसरे द्रेष्काण का स्वामी जानिये तथा तीसरे भाग अर्थात् इक्कीस अंश से तीस अंशतक लग्न से नवीं राशि का द्रेष्काण हुआ, उस राशि का स्वामी उस तीसरे द्रेष्काण का स्वामी होता है ॥ १ ॥

अथ द्रेष्काणचक्रम् ।

राशि	मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	०
प्रथम द्रेष्काण	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	द्रेष्काण की राशि
१० अंशतक	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०	द्रेष्काण का स्वामी
द्वितीय द्रेष्काण	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	द्रेष्काण की राशि
२० अंशतक	सू०	बु०	शु०	मं०	बृ०	श०	श०	बृ०	मं०	शु०	बु०	चं०	द्रेष्काण का स्वामी
तृतीय द्रेष्काण	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	द्रेष्काण की राशि
३० अंशतक	बृ०	श०	श०	बृ०	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	द्रेष्काण का स्वामी

अथ त्रिंशांशज्ञानम् ।

कुजार्कीज्यज्ञशुक्राणां बाणेष्वष्टादिमार्गणाः ।
भागाः स्युर्विषमे भे तु समराशौ विपर्ययात् ॥ १ ॥
कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् ।
पञ्चपञ्चाष्टशैलेषु भागानां विषमे गृहे ॥ २ ॥

मेष, मिथुन, सिंह आदि विषमराशियों का प्रथम त्रिंशांश पांच अंश का होता है, उसका स्वामी मङ्गल है । तदनन्तर पांच अंश का स्वामी शनैश्चर, तदनन्तर आठ अंशों का स्वामी बृहस्पति, तदनन्तर सात अंशों का स्वामी बुध होता है । तदनन्तर पांच अंशों का स्वामी शुक्र को जानिये । और समराशि में विलोम अर्थात् विपरीत जानना । अब खुलासा समराशि का त्रिंशांश लिखते हैं–समराशियों में प्रथम पांच अंशों का स्वामी शुक्र, तदनन्तर सात अंशों का स्वामी बुध, तदनन्तर आठ अंशों का स्वामी बृहस्पति, फिर पांच अंशों का स्वामी शनैश्चर, फिर पांच अंशों का स्वामी मङ्गल को जानना ॥ १–२ ॥

अथ विषमत्रिंशांशचक्रम् ।

अंश	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.	राशि
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	स्वामी
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	स्वामी
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	स्वामी
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	स्वामी
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	स्वामी

अथ समत्रिंशांशचक्रम्।

अंश	वृष	कर्क	कं.	वृ.	म.	मीन	राशि
५	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	स्वामी
७	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	स्वामी
८	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.	स्वामी
५	श.	श.	श.	श.	श.	श.	स्वामी
५	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	स्वामी.

अथ द्वादशांशज्ञानम्।

स्याद्द्वादशांश इह राशित एव गेहं
होराऽथ दृक्कनवमांशकसूर्यभागाः।
त्रिंशांशकश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः
सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पापैः॥ १॥

दो अंश तीस कलाओं का एक द्वादशांश होता है, इसलिए एक राशि में बारह द्वादशांश होते हैं। जिस राशि में द्वादशांशों का विचार करना है, उसी राशि से लेकर क्रम से १२ राशियों के द्वादशांश सिद्ध होते हैं।

उदाहरण।

मेष राशि में पहला द्वादशांश मेष का, दूसरा वृष का, तीसरा

मिथुन का, चौथा कर्क का, पांचवां सिंह का, छठां कन्या का, सातवां तुला का, आठवां वृश्चिक का, नवां धन का, दशवां मकर का, ग्यारहवां कुम्भ का, बारहवां मीन का द्वादशांश होता है। इसी प्रकार वृष में पहला वृष का, दूसरा मिथुन का, तीसरा कर्क का, चौथा सिंह का इत्यादि क्रम से बारहवां मेष का द्वादशांश होता है। मिथुन इत्यादि सब राशियों का द्वादशांश चक्र से समझ लेना चाहिए।

गेह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश ये छः वर्ग कहे हैं सो इस षड्वर्ग में शुभग्रह हों तो शुभ जानिये तथा पापग्रह हों तो अशुभ फल देनेवाले जानिये ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां गेहचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
सिं.	कर्क	मे. वृ.	मि. कन्या	ध. मी.	वृष तु.	म. कुं.	राशयः

अथ द्वादशांशचक्रम् ।

अंश कला	मे.	वृष	मि.	कर्क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्न
२।३०	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	ग्रह
५	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	ग्रह
७।३०	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	ग्रह
१०	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु	३ बु.	ग्रह
१२।३०	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु	३ बु.	४ चं.	ग्रह
१५	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं	५ सू.	ग्रह
१७।३०	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	ग्रह
२०	८ म.	९ बृ.	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	ग्रह
२२।३०	९ बृ.	१० श.	११ श	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	ग्रह
२५	१० श.	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	ग्रह
२७।३०	११ श.	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं.	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	ग्रह
३०	१२ बृ.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ चं	५ सू.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ बृ.	१० श.	११ श.	ह

अथ विवाहमध्ये राशिमेलनविचारः ।

तत्रादौ होढ़ाचक्रम् ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धन	मकर	कुम्भ	मीन
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी
चे	ऊ	की	पुन.	मी	पा	री	वि.	यो	जा	गे	पू.भा.
चो	ए	मृ.	हू	मू	पी	चि.	ना	भा	जी	ध.	दू
ला	कृ.	कू	हे	मे	उ.फा.	रू	नी	भी	उ.षा	गो	थ
अ.	ओ	घ	हो	म.	पू	रे	नू	मू.	जू	सा	झ
ली	वा	ङ	डा	मो	ष	रो	ने	भू	जे जो	सी	ञ
लू	वी	छ	पुष्य	टा	ण	ता	अ.	धा	खा	सू	उ.भा.
ले	वू	आ.	डी	टी	ठ	स्वा.	नो	फा	अभि खी	शत.	दे
लो	रो.	के	डू	टू	हस्त	ती	या	ढा	खू खे	से	दो
भ.	वे	को	डे	पू.फा.	पे	तू	यी	पू.षा.	खो	सो	चा
आ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	श्र. गा	दा	ची
०	०	०	श्ले.	०	०	०	ज्ये.	०	गी	०	रे.

अथ वर्णादिगुणज्ञानम् ।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ १ ॥

वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाड़ी ये वर्णादिक एकसे एक अधिक गुणवाले होते हैं ॥ १ ॥

तत्रादौ वर्णज्ञानम् ।

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः ।
शूद्रयुग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यकन्यावृषो मृगः ॥ १ ॥
नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा सदृशो यदि ॥ २ ॥
विप्रवर्णेषु या नारी शूद्रवर्णेषु यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३ ॥

मीन, वृश्चिक, कर्क ये राशि ब्राह्मणवर्ण हैं । मेष, सिंह, धन क्षत्रियवर्ण हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ, शूद्रवर्ण हैं और कन्या, वृष, मकर वैश्यवर्ण हैं । वर्ण में श्रेष्ठ कन्या उत्तम नहीं है, ब्राह्मणी विशेष वर्जित है । और वर्णहीन वर की मृत्यु होती है, चाहे वह ब्रह्मा के समान हो और ब्राह्मणवर्ण की स्त्री हो और उसका पति यदि शूद्रवर्ण हो तो शीघ्रही विधवा होजावे । चाहे वह शुक्राचार्य की कन्या क्यों न हो ॥ १–३ ॥

अथ वर्णचक्रम् ।

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२।८।४	१।५।६	६।२।१०	३।७।११

अथ वश्यज्ञानम् ।

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहो धनुर्वृषः ।
चतुष्पदाकीटसंज्ञा कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥ १ ॥
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्धो धनुषस्तथा ।
द्विपदाख्या पश्चिमार्धं मकरस्य तथा पुनः ॥ २ ॥
कुम्भमीनौ जलचरा राशयः परिकीर्तिताः ।
सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ॥ ३ ॥
भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ४ ॥

मकरराशि का पहलाभाग अर्थात् आधा मकर वा मेष, सिंह, धन का दूसरा भाग व वृष इन राशियों की चतुष्पदसंज्ञा है। और कर्क की कीटसंज्ञा है। वृश्चिक की सर्पसंज्ञा है। तुला, मिथुन, कन्या, धनका पहलाभाग इनकी द्विपदसंज्ञा है। और मकर का दूसरा भाग, कुम्भ, मीन जलचर हैं। इसप्रकार राशि कहे हैं। द्विपद के सब वश्य हैं एक सिंह नहीं वश है। और जलचर द्विपद के भोजन हैं, और सर्प से द्विपद को भय होता है ॥ १-४॥

इति वश्यफलम् ।

अथ वश्यचक्रम् ।

मकर पूर्वार्ध । मेष । सिंह । धन परार्ध । वृष	चतुष्पद
कर्क	कीट
वृश्चिक	सर्प
तुला । मिथुन । कन्या । धन पूर्वार्ध	द्विपद
मकर परार्ध । कुम्भ । मीन	जलचर

अथ ताराज्ञानम् ।

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृत् शेषे [३]त्रीष[५]वेद्रि[७] भमसत्स्मृतम् ॥ १ ॥

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिने, और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने, दोनों अङ्क जुदे जुदे स्थापित करे, उनमें नव का भाग देवे, तीन, पांच वा सात शेष रहें, तो अशुभ तारा जानिये ॥ १ ॥

अथ योनिज्ञानम् ।

अश्विन्याः शतभस्याश्वो महिषः स्वातिहस्तयोः ।
पूभाधनिष्ठयोः सिंहो भरण्यन्त्यभयोर्गजः ॥ १ ॥
कृत्तिकापुष्ययोर्मेषः श्रुतिपूषाढ्योः कपिः ।
उषाभिजिद्भयोर्बभ्रूरोहिणीमृगयोरहिः ॥ २ ॥
ज्येष्ठानुराधयोरेणः श्वा मूलार्द्राभयोस्तथा ।
पुनराश्लेषयोरोतुराखुः पूफामघर्क्षयोः ॥ ३ ॥
विशाखाचित्रयोर्व्याघ्रो गोरुफोत्तरभाद्रयोः ।
मैत्री वैरं विचार्यैवं भानां प्रोक्तास्तु योनयः ॥ ४ ॥
गोव्याघ्रं महिषाश्वं च श्वैणं मार्जारमूषकम् ।
सिंहेभं कपिमेषं च वैरं तु नकुलोरगम् ॥ ५ ॥
त्याज्यं परस्परं वैरं दम्पत्योः स्वामिभृत्ययोः ॥ ६ ॥

अश्विनी और शतभिष अश्व (घोड़ा) योनि है । स्वाती और हस्त महिष योनि है । पूर्वाभाद्रपद और धनिष्ठा सिंहयोनि है । भरणी, रेवती हाथी योनि है । कृत्तिका, पुष्य मेष (मेढा) योनि है । श्रवण, पूर्वाषाढ इन दोनों की वानर योनि है । उत्तराषाढ वा अभिजित् नेउला योनि है । रोहिणी, मृगशिरा सर्प योनि है ।

ज्येष्ठा, अनुराधा मृग (हरिण) योनि है। मूल, आर्द्रा कुत्ता योनि है। पुनर्वसु तथा आश्लेषा बिलार योनि है। पूर्वाफाल्गुनी वा मघा मूषक योनि है। विशाखा और चित्रा व्याघ्र योनि है। उत्तराफाल्गुनी वा उत्तराभाद्रपद की गो योनि है। इसी प्रकार से मैत्री वा वैर का विचार नक्षत्र से कहा है।

योनिवैरज्ञानम् ।

गौ और बाघ का, महिष वा घोड़ा का, कुत्ता वा मृग का, सिंह वा हस्ती का, वानर वा मेढ़ा का और नेउला वा सर्प का परम वैर होता है। इसलिये विवाह तथा नौकरी में ये सब वर्जित हैं ॥१–६॥

अथ योनिचक्रम् ।

नक्षत्र	अ. श.	स्वा. ह.	ध. पूर्वाभा.	भ. रे.	पुष्य. कृ.	श्र. पू. षा.	उ. षा., अभि.	मृ. रो.	ज्ये. अनु.	मू. आ.	पुनर्वसु. श्ले.	म. पू. फा.	वि. चि.	उ. भा. उ. फा.
योनि	अश्व	महिष	सिंह	हस्ती	मेष	वानर	नकुल	सर्प	हरिण	श्वान	मार्जार	मूषक	व्याघ्र	गौ

अथ ग्रहमैत्रीज्ञानम् ।

मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ
सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत् ।
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशिभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥१॥
मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समा गीष्पते-
र्मित्राण्यर्ककुजेन्दवो बुधसितौ शत्रू समः सूर्यजः ।

मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ
मित्रे शुक्रबुधौ शनेः रविशशिक्ष्माजा द्विषोऽन्यः समः॥२॥

सूर्य के मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा मित्र; बुध सम; शुक्र और शनैश्चर शत्रु हैं। चन्द्रमा के बुध और सूर्य मित्र; मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि सम और शत्रु कोई नहीं है। मंगल के चन्द्रमा बृहस्पति और सूर्य मित्र; बुध शत्रु; शुक्र और शनि सम हैं। बुध के शुक्र और सूर्य मित्र; चन्द्रमा शत्रु; बृहस्पति, शनैश्चर और मंगल सम हैं। बृहस्पति के सूर्य, मंगल और चन्द्रमा मित्र; बुध और शुक्र, शत्रु तथा शनिश्चर सम हैं। शुक्र के बुध, शनिश्चर मित्र; चन्द्रमा, सूर्य शत्रु; मंगल और बृहस्पति सम हैं। शनिश्चर के शुक्र, बुध मित्र; सूर्य, चन्द्रमा, मंगल शत्रु और बृहस्पति सम है॥ १ । २ ॥

अथ मैत्रीचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
मं.बृ.चं.	सू.बु.	चं.बृ.सू.	सू. शु.	सू.मं.चं.	बु.श.	बु. शु.	मित्र
बु.	मं.बृ.शु.श.	शु. श.	मं.बृ.श.	श.	मं.बृ.	बृ.	सम
शु. श.	००	बु.	चं.	बु.श.	चं.सू.	सू.चं.मं.	शत्रु

अथ गणमैत्रीज्ञानम् ।

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहि-
वस्विन्द्रमूलवरुणानिलतक्षराधाः ।
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ १ ॥

निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र ॥ २ ॥

मघा, श्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिष, कृत्तिका, चित्रा और विशाखा ये नक्षत्र राक्षसगण; तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा इन नक्षत्रों का मनुष्य गण; अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त, अश्विनी और पुष्य इन नक्षत्रों का देवतागण है ॥ १ ॥

फल ।

अपने अपने गण में अति उत्तम प्रीति होवे, अर्थात् वर कन्या का जन्म नक्षत्र एकही गण में हो, तो विवाह होनेपर वर कन्या दोनों की बड़ी गाढ़ प्रीति होती है। और वर कन्या इन दोनों में किसी का जन्म नक्षत्र देवतागणमें हो, और किसीका मनुष्यगणमें हो, तो मध्यम प्रीति होती है। और किसी का जन्मनक्षत्र राक्षसगण में हो, और किसी का मनुष्य गण में हो तो वर कन्या की मृत्यु होती है। यदि वर कन्या इन दोनों में एक का जन्म नक्षत्र राक्षस गण में और दूसरे का देवता गण में हो तो दोनों का परस्पर वैर रहता है ॥ २ ॥

अथ गणचक्रम् ।

म.	श्ले.	ध.	ज्ये.	मू.	श.	कृ.	चि.	वि.	राक्षस
पू.भा.	पू.षा.	पू.फा.	उ.भा.	उ.षा.	उ.फा.	रो.	भ.	आ.	मनुष्य
अनु.	पुन.	मृ.	श्र.	रे.	स्वा.	ह.	अ.	पुष्य	देवता

अथ भकूटज्ञानम् ।

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ १ ॥

कन्या की जन्मराशि से वर की जन्मराशि और वर की जन्मराशि से कन्या की जन्मराशि छठी या आठवीं हो, तो दोनों की मृत्यु; और नवीं या पांचवीं हो, तो सन्तान की हानि; और दूसरी या बारहवीं हो, तो दोनों निर्धन होते हैं, और इनसे अतिरिक्त हों तो दोनों सुखी रहते हैं ॥ १ ॥

अथ मृत्युषडष्टकज्ञानम् ।

कन्यामेषे वृषे चापे कामालिघटकर्कटे ।
मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषडष्टके ॥ १ ॥

कन्या–मेष से, वृष–धन से, मिथुन–वृश्चिक से, कुंभ–कर्क से, मकर–सिंह से और तुला–मीन से मृत्युषडष्टक होता है ॥१॥

अथ वृद्धिषडष्टकज्ञानम् ।

मेषालिमकरे युग्मे कन्याकुम्भतुले वृषे ।
सिंहमीने धने कर्के षडष्टं प्रतिवृद्धिदम् ॥ १ ॥

मेष, वृश्चिक; मकर, मिथुन; कन्या, कुम्भ; तुला, वृष; सिंह, मीन; धन, कर्क इनको परस्पर वृद्धिषडष्टक जानना चाहिए ॥१॥

अथ वर्गगुणज्ञानम् ।

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥ १ ॥

अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, शवर्ग ये आठ वर्ग

होते हैं। इनमें गरुड़ का अवर्ग, बिलार का कवर्ग, सिंह का चवर्ग, श्वान का टवर्ग, साँप का तवर्ग, मूषक का पवर्ग, हरिण का यवर्ग और भेंड़ का शवर्ग है। इनमें अपने से पांचवाँ वैरी होता है। जैसे गरुड़ का साँप, बिलार का मूषक, सिंह का हरिण, श्वान का भेंड़, साँप का गरुड़, मूषक का बिलार, हरिण का सिंह और भेंड़ का श्वान (कुत्ता) वैरी होता है। इसलिये कन्या के नाम का पहला अक्षर जिस वर्ग का हो, उससे वर के वर्ग को पांचवाँ न होना चाहिए। यदि कन्या और वर के नाम का पहला अक्षर एक ही वर्ग का हो, तो विवाह होने पर दोनों की परस्पर प्रीति होती है ॥१॥

वर्गचक्रम् ।

अ इ उ ए ओ	गरुड़	१	त थ द ध न	सर्प	५
क ख ग घ ङ	मार्जार	२	प फ ब भ म	मूषक	६
च छ ज झ ञ	सिंह	३	य र ल व	मृग	७
ट ठ ड ढ ण	श्वान	४	श ष स ह	मेष	८

अथ नाडीविचारः ।

ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भःपतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या।
वाय्वग्निव्यालविश्वोडयुगयुगमथो पौष्णभंचापरास्या-
द्दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यांहिमृत्युः १

ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफा-

ल्गुनी, हस्त, अश्विनी इन नक्षत्रों की आदि नाड़ी; पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद इनकी मध्य नाड़ी; स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, श्लेषा, मघा, उत्तराषाढ, श्रवण, रेवती इनकी अन्त नाड़ी हैं।

फल।

एक नाड़ी में वर कन्या का नक्षत्र हो तो विवाह अशुभ है, और मध्य नाड़ी में हो तो मृत्यु होती है ॥ १ ॥

नाड़ीचक्रम्।

अ.	आ.	पुन.	उ.फा.	ह.	ज्ये.	मू.	श.	पू.भा.	आदिनाड़ी
भ.	मृ.	पुष्य.	पू.फा.	चि.	अनु.	पू.षा.	ध.	उ.भा.	मध्य नाड़ी
कृ.	रो.	श्ले.	म.	स्वा.	वि.	उ.षा.	श्र.	रे.	अन्त्यनाड़ी

अथ नक्षत्रनिषेधज्ञानम्।

भामिनीजन्मनक्षत्राद्द्वितीयं पतिसम्भवम्।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ॥ १ ॥

ब्रह्मयामल में कहा है कि स्त्री के जन्मनक्षत्र से दूसरा नक्षत्र पति का हो तो विवाह शुभ नहीं, किन्तु पतिनाशक है ॥ १ ॥

अथ भकूटादिपरिहारः।

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-
ऽथोराशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि।
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यर्क्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशिताभावे निरुक्तो बुधैः ॥ १ ॥

उक्त प्रकार से जो दुष्टभकूट कहा गया है उसका परिहार इस प्रकार है—

यदि वर-कन्या की राशियों का स्वामी एक ही हो, जैसे मेष-वृश्चिक का (भौम) वृष-तुला का (शुक्र) तो विवाह शुभ होता है। और राशीशों की मैत्री हो तो भी शुभ है, यदि नाड़ीशुद्धि और नक्षत्रशुद्धि हो। और उक्त राशीश और अंशेशों की परस्पर मैत्री हो, बलवान् भी हों, नाड़ीशुद्धि और ताराशुद्धि हो; एवं राशिवश्यता भी उचित हो तो ग्रहों के शत्रुभाव का दोष नहीं होता। यहाँ (ग्रहमैत्री) मित्रषट्काष्टक (१) एकाधिपत्य (२) सबलांशेशमैत्री (३) राशिवश्यता (४) ताराशुद्धि (५) प्रकार षट्काष्टकों के परिहार हैं। इनमेंसे एकके होनेमें भी षट्काष्टक दोष नहीं होता॥ १॥

अथ गणपरिहारः ।

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ-
द्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः ।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं
खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥ १ ॥

दोनों राशियों के स्वामियों से और दोनों राशियों के नवांश के स्वामियों से मित्रता हो तो गणों का दोष नहीं होता। यदि शुभ भकूट हो अर्थात् कन्या की जन्मराशि से वर की जन्मराशि, वर की जन्मराशि से कन्या की जन्मराशि तीसरी, चौथी, सातवीं, दशवीं, और गेरहवीं हो, तो वर कन्या के जन्मराशि के स्वामियों की शत्रुता का विनाश करता है, और यदि दोनों जन्मराशीशों की परस्पर मित्रता हो, तो दुष्ट भकूट का विनाश करती है॥ १॥

अथ नाडीगणदोषपरिहारः ।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्या-
न्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।

नाडीदोषो नो गणानां च दोषो
नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥ १ ॥

जो वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो तथा नक्षत्र दोनों का एक हो राशिही भिन्न हो, तो नाड़ीदोष और गण का दोष नहीं होता । और जो दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण का भेद हो तब भी विवाह शुभ होता है ॥१॥

अथ केनचिन्मतेन वर्णादिदोषपरिहारः ।

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडष्टकम् ।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ॥ १ ॥

गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष और षडष्टक ये चारों गुण ग्रह-मैत्री हो, तो दोष नहीं कर सकते हैं ॥ १ ॥

अथ पुनः परिहारः ।

न वर्गवर्णौ न गणो न योनि-
र्द्विर्द्वादशे[1] नैव षडष्टके[2] वा ।
ताराविरुद्धे नवपञ्चमे[3] वा
मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ॥ १ ॥

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, तारा और नवपञ्चक ये सब दोष होने पर भी यदि केवल ग्रहमैत्री बनती हो तो विवाह शुभदायक होता है ॥ १ ॥

---

१ मीन मेष, वृष मिथुन, कर्क सिंह, कन्या तुला, वृश्चिक धनु और मकर कुम्भ ये दो-दो राशियां 'द्विर्द्वादश' कहलाती हैं ।

२ मेष कन्या, तुला मीन, मिथुन वृश्चिक, मकर सिंह, कुंभ कर्क, और वृष धन इन दो-दो राशियों की 'मृत्युषडष्टक' संज्ञा होती है ।

३ मीन वृश्चिक, कर्क मीन, कर्क वृश्चिक, कुंभ मिथुन और मकर कन्या इन दो-दो राशियों की 'नवपंचक' संज्ञा होती है ।

अथ नवपञ्चकपरिहारः ।

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः ।
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥ १ ॥

वर के पञ्चम राशि में कन्या हो और कन्या के राशि से नवीं राशि वर की हो, तो नवपञ्चक शुभ होता है, और पुत्र-पौत्र का सुख देनेवाला होता है ॥ १ ॥

अथ मङ्गलीयदोषज्ञानम् ।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्तुर्भार्या न जीवति ॥ १ ॥
एवंविधे कुजे सख्ये विवाहो न कदाचन ।
कार्यो वा गुणबाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ २ ॥

यदि स्त्री के जन्मलग्न में या बारहवें, सातवें, चौथे तथा आठवें मङ्गल हो तो पति का विनाश करे । और जो पति के हो तो स्त्री को विनाश करे, इन स्थानों में यदि मङ्गल हो तो कभी विवाह न करे । अथवा बहुत गुण मिलें तो विवाह करे, या दोनों मङ्गली हों, तो शुभ होता है ॥ १–२ ॥

अथ कस्यचिन्मतेन भौमपरिहारः ।

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ।
नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ १ ॥

जिसके जन्मलग्न से सातवें तथा लग्न में या चौथे, नवें तथा बारहवें शनैश्चर हो, तो मङ्गल का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ नाड्यादिदानम् ।

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम् ।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना ॥ १ ॥

हिरण्मयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके ।
गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषापहारकम् ॥ २ ॥

नाड़ी-दोष में मृत्युञ्जय का जप करना चाहिये और ब्राह्मण को सुवर्ण (सोना) देना उचित है। वर्णादिकूट में अर्थात् वर्णादि दोष में सुवर्ण (सोना) दान देवे और गो-दान, अन्न-दान, वस्त्र-दान और सुवर्ण के दान करने से सर्वदोष नष्ट होते हैं ॥ १-२ ॥

अथ गुणप्रमाणेन शुभाशुभज्ञानम् ।

साम्ये च वर्णोत्तमजे वरे भू-
गुणोऽथ वश्याशनके गुणार्धम् ।
एकोऽरिवश्ये द्वितयं सखित्वे
स्याद्वैरभक्ष्ये गुणहानिरेव ॥ १ ॥
ताराशुभेऽथो वरकन्ययोस्तु
त्रयस्तदर्ध सदसद्भसत्वे ।
महारिवैरे सममित्रतायाः
खेन्दुत्रिकाम्बुप्रमिता गुणाः स्युः ॥ २ ॥
वैरेऽरिसाम्येऽरिसुहृत्त्वकेऽपि
द्वयोश्च साम्ये सममित्रतायाम् ।
एकाधिपत्योभयमित्रतायां
खैकद्वि वह्न्यम्बुशरा गुणाः स्युः ॥ ३ ॥
साम्ये च षड्नामनुजश्च देवी
पत्नीशराः स्युः विपरीतके षट् ।
दैत्यङ्गनाराक्षसनात्र चैको
गुणोऽन्यथा खं त्वथ दुष्टकूटे ॥ ४ ॥

चेद्योनिमैत्री रमणी सुदूरं
वेदॉनचेत्खं त्वनयोः पदैकम् ।
भूं रिक्षपादैक्य अभाव इष्टे
चेत्कंटकेभारिनृदूरते षट् ॥ ५ ॥
भिन्नर्क्षराश्यैक्य इषून्मिताः स्यु-
स्त्वन्यस्य सँहाथ च नाडिभेदे ।
गर्जांगुणैक्यं धृतितोऽधिकं चे-
त्स्त्रीकान्तयोः सौख्यकरं प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥

वर कन्या दोनों का वर्ण एकही हो तथा वर का वर्ण उत्तम हो तो एक गुण होता है । और वश्य जो भक्षक हो तो आधा गुण होता है । शत्रु वश्य हो तो एक गुण होता है । मित्र वश्य हो या सम वश्य हो तो दो गुण होते हैं ।

अथ तारागुणाः ।

जो वर; कन्या दोनों का तारा शुभ हो ता तीन गुण होते हैं । एक तारा शुभ एक अशुभ हो तो डेढ़ गुण होता है । अन्यथा शून्य जानिये ।

अथ योनिगुणाः ।

महावैर योनि हो तो शून्य गुण तथा वैर में एक गुण होता है । समयोनि में तीन गुण होते हैं और मित्रयोनि में चार गुण होते हैं ।

अथ मैत्रीगुणाः ।

दोनों वर कन्या की राशि से शत्रुता हो तो शून्य गुण होता है । एक शत्रु हो एक सम हो तो एक गुण होता है । एक शत्रु एक मित्र हो तो दो गुण होते हैं । और दोनों सामान्य हों तो तीन गुण होते हैं । एक सम हो एक मित्र हो तो चार गुण होते हैं । दोनों

राशियों का स्वामी एकही हो तथा दोनों राशियों से मित्रता हो तो पाँच गुण होते हैं ।

अथ गणमैत्रीगुणाः ।

दोनों वर कन्या का समगण हो तो छः गुण होते हैं और वर मनुष्यगण हो कन्या देवतागण हो तो पाँच गुण होते हैं । वर देवता गण हो कन्या मनुष्यगण हो तो छः गुण होते हैं । कन्या देवतागण वर राक्षसगण हो तो एक गुण होता है । और अन्यथा हो अर्थात् मनुष्य राक्षस हो तो शून्य गुण होता है ।

अथ भकूटगुणाः ।

वर कन्या से षडष्टकादि दुष्टभकूट हो परन्तु पुरुष की राशि से स्त्री की राशि दूर हो और दोनों से योनि में मैत्री हो अर्थात् योनि गुण में मित्रता हो तो चारगुण होते हैं । और ये बातें न हों तो शून्य गुण जानना चाहिए । जो वर कन्या का नक्षत्र एक हो और चरणभेद हो तो एक गुण होता है । और दोनों का नक्षत्र वा चरण अभाव हो अर्थात् और और हो तो भी एक गुण होता है । और दुष्टकूट हो, राशीश से शत्रुता हो और स्त्री से पुरुष दूर हो तो छः गुण होते हैं । नक्षत्र भिन्न हो राशि एकही हो तो पाँच गुण होते हैं । और इनसे अन्य हो तो सात गुण होते हैं ।

अथ नाडीगुणाः ।

नाड़ी दोनों वर कन्या की अन्य-अन्य हो तो आठ गुण और जो एक नाड़ी हो तो शून्य गुण होता है । ये ऊपर लिखे सब गुणों का जोड़ यदि अठारह से अधिक हो तो विवाह शुभ है और स्त्री पुरुष को सुखदायक है । और जो अठारह से कम हो तो विवाह अशुभ है और जो अठारह पूरे हों तो मध्यम जानना चाहिए ॥ १–६ ॥

अथ कस्यचिन्मतेन वर्णदोषपरिहारः ।

हीनवर्णो यदा राशी राशीशो वर्णमुत्तमम् ।
तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तस्य राशिं न चिन्तयेत् ॥ १ ॥

राशि से जिसका वर्ण हीन हो और राशिस्वामी का वर्ण उत्तम हो तो विवाह शुभ है । राशि का विचार न करे; स्वामी का ग्रहण करे ॥ १ ॥

अथ राशीश्वरवर्णचक्रम् ।

१ । ८	२ । ७	३ । ६	९।१२	१०।११	४	५	राशि
मं.	शु.	बु.	बृ.	श.	चं.	सू.	स्वामी
क्षत्रिय	ब्राह्मण	शूद्र	ब्राह्मण	शूद्र	वैश्य	क्षत्रिय	वर्ण

अथ वधूप्रवेशमुहूर्तः ।

समादि पञ्चाङ्कदिने विवाहा-
द्वधूप्रवेशोष्टिदिनान्तराले ।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमास-
दिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥ १ ॥
ध्रुवाक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परैः ॥ २ ॥

विवाह के दिन से सोलह दिन के भीतर सम दिन में अर्थात् दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशवें, बारहवें, चौदहवें, सोलहवें और सातवें, पाँचवें, नवें दिन में और सोलह दिनों के बाद पहले, तीसरे, पाँचवें वर्ष में और पहले, तीसरे, पाँचवें, सातवें, नवें, ग्यारहवें महीने में वधूप्रवेश शुभ होता है । और पाँच वर्ष बीतने के

बाद अपनी इच्छा के अनुसार सम-विषम वर्ष, मास आदि का विचार न करके किंवा जहाँ तक वधूप्रवेश के मुहूर्त मिल सकें, वहाँ तक वर्ष, मास आदि का विचार करके वधूप्रवेश शुभ होता है ॥ १ ॥ ध्रुवसंज्ञक[1] नक्षत्र, क्षिप्रसंज्ञक[2] और मृदुसंज्ञक[3] तथा श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती इन नक्षत्रों में वधूप्रवेश शुभ होता है। और चौथि, नवमी, चतुर्दशी इन तिथियों में रविवार, भौमवार इन दिनों में और किसी आचार्य के मत से बुध दिन में भी वधूप्रवेश अशुभ होता है ॥ २ ॥

अथ द्विरागमनमुहूर्तः ।

विवाहाद्विषमे वर्षे कुम्भमेषालिगे रवौ ।
बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनीमृगे ॥ १ ॥
रेवतीरोहिणी पुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये ।
हस्तत्रये पुनर्वस्वौ तथा मूलानुराधयोः ॥ २ ॥
कन्यामीनतुले युग्मे वृषे प्रोक्तबलान्विते ।
लग्नें पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते ॥ ३ ॥
संमुखे दक्षिणे शुक्रे नो गच्छेत्तु कदाचन ।
गर्भिणी तु विगर्भास्यान्नवोढा वन्ध्यतामियात् ॥
बालकश्चेद्विपद्येत विगेहादपि चेद्व्रजेत् ॥ ४ ॥

विवाह से विषम वर्ष में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, मेष, वृश्चिक के सूर्य हों और सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति बली हों और शुभ दिन हों; अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, रोहिणी, पुष्य, तीनों उत्तरा,

---

१ रोहिणी और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र ध्रुवसंज्ञक हैं।
२ हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित् ये नक्षत्र क्षिप्रसंज्ञक हैं।
३ मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा और रेवती ये मृदुसंज्ञक नक्षत्र हैं।

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु तथा मूल और अनुराधा ये नक्षत्र शुभ हैं । तथा कन्या, मीन, तुला, मिथुन, वृष ये लग्न स्त्रियों के द्विरागमन में शुभ हैं । तथा संमुख और दक्षिण शुक्र में कभी न जावे । यदि गर्भिणी स्त्री जावे तो विना गर्भ की हो जावे और जो नवीन अर्थात् विना गर्भवाली जावे तो बन्ध्या होवे, यदि बालक को साथ ले जावे तो बालक मृत्यु को प्राप्त होवे ॥ १-४ ॥

अथ शुक्रपरिहारः ।

एकग्रामे चतुष्कोणे दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।
विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

एक ग्राम में, चारों कोणों में तथा दुर्भिक्ष में, राजा से बिगाड़ होने में और विवाह में अर्थात् वधूप्रवेशादि में या तीर्थयात्रा आदि में शुक्र के संमुख तथा दक्षिण का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

अथ गोत्रभेदेन शुक्रपरिहारः ।

कश्यपेषु वशिष्ठेषु भृगावाङ्गिरसेषु च ।
भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

कश्यपगोत्र, वशिष्ठगोत्र, भृगुगोत्र, आङ्गिरसगोत्र, भरद्वाजगोत्र वा वत्सगोत्र इन गोत्रों में शुक्र के संमुख तथा दक्षिण का दोष नहीं होता है ॥ १ ॥

पुनः शुक्रपरिहारः ।

पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः
स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः ।
भृग्वङ्गिरावत्सवशिष्ठकश्यपा-
ऽत्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥ १ ॥

पिता के घर में जिस स्त्री के कुच उठें या रजस्वला हो उस स्त्री के लिये शुक्र के सम्मुख और दक्षिण का दोष नहीं है । भृगु-गोत्र, अङ्गिरस-गोत्र, वत्स-गोत्र, वशिष्ठ-गोत्र, कश्यप-गोत्र, अत्रि-गोत्र, भरद्वाज-गोत्र इन गोत्रों में संमुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता है १॥

अथ शुक्रान्धमतेन परिहारः ।

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ १ ॥

रेवती से मृगशिरा तक नक्षत्रों में चन्द्रमा हो, तो शुक्र अन्ध होता है । वह सम्मुख और दक्षिण शुभदायक होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण शुक्रान्धज्ञानम् ।

यावच्चन्द्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये
पादे शुक्रोऽन्धो न दुष्टोग्रदक्षे ।
मध्ये मार्गे भार्गवास्तेऽपि राजा
तावत्तिष्ठेत्सम्मुखत्वेऽपि तस्य ॥ १ ॥

चन्द्र नक्षत्र, रेवती से कृत्तिका के पहले चरण तक शुक्र अन्ध रहता है उसमें यात्रा करने से संमुख और दहिने शुक्र का दोष नहीं होता है । तथा राजा की यात्रा में मध्यमार्ग में ही यदि शुक्र अस्त हो जाय तो राजा टिके जबतक उदय न हो तबतक वास करे, अथवा संमुख रहे तबतक वास करे ॥ १ ॥

दानेन शुक्रपरिहारो दीपिकायाम् ।

सितमश्वं सितं छत्रं हेममौक्तिकसंयुतम् ।
ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥ १ ॥

सफेद घोड़ा, सफ़ेद छाता, मोतीसंयुक्त सोना ब्राह्मण को देवे, तो संमुख दक्षिण शुक्र का दोष शान्त हो जाता है ॥ १ ॥

अथ त्रिरागमनमुहूर्तः ।

आदित्यहस्तेऽन्त्यमृगाश्विमैत्रे
तथा श्रविष्ठास्वपि वातपित्र्ये ।
वध्वास्तृतीयं गमनं प्रशस्तं
स्याद्योगिनी शूलतमोविशुद्धौ ॥ १ ॥

पुनर्वसु, हस्त, रेवती, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, धनिष्ठा, स्वाती, मघा इन नक्षत्रों में वधू का त्रिरागमन (थवन) शुभ है। योगिनी, दिशाशूल और राहु का शुद्ध होना आवश्यक है ॥ १ ॥

अथ त्रिरागमने मासिकराहुविचारः ।

आद्येऽर्के भ्रमते राहुः पूर्वाशादिकचतुष्टये ।
संमुखे दक्षिणे त्याज्यस्तृतीयगमने स्त्रियाः ॥ १ ॥

मेष-राशि के सूर्य से पूर्वादि चारों दिशाओं में राहु बसता है वह स्त्रियों के थवने में संमुख दहिने वर्जित है, चक्र से प्रत्यक्ष जानना ॥ १ ॥

अथ मासिकराहुवासचक्रम् ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राहुदिशावासः
मेष, सिंह, धन	वृष, कन्या, मकर	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	सूर्य-राशि

अथ राहुफलम् ।

अग्रे राहौ च वैधव्यं दक्षिणे दुःखदो भवेत् ।
पृष्ठे पुत्रवती नारी वामे सौभाग्यशालिनी ॥ १ ॥

संमुख राहु हो, तो वैधव्य करे, दहिने हो, तो दुःख दे, पीछे हो, तो पुत्रवती स्त्री हो और बायें सौभाग्यशालिनी हो ॥ १ ॥

अथ कस्यचिन्मतेन त्रिमासिकराहुज्ञानम् ।

गमोक्ततिथ्यादिषु कारयेद्बुधो
वध्वास्तृतीयं पतिवेश्मनो गमः ।
तत्रालितस्त्रित्रिभसंस्थिते रवौ
प्रागादि राहुर्न शुभोऽग्रदक्षे ॥ १ ॥

यात्रा की तिथ्यादिकों में पति के घर में वधू-प्रवेश तीसरी बार अर्थात् थवने में प्रवेश करावे, तथा वृश्चिक के सूर्यों से तीन तीन महीना राहु पूर्वादि चारों दिशाओं में वास करता है, वह राहु संमुख और दहिने वर्जित है, चक्र में प्रत्यक्ष देखना ॥ १ ॥

अथ त्रिमासिकराहुचक्रम् ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	राहुदिशावासः
वृश्चिक, धन, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क	सिंह, कन्या, तुला	सूर्य-राशि

अथ गृहारम्भमुहूर्तः ।

मृगे धातृचित्रानुराधोत्तरान्त्ये
धनिष्ठाकरस्वातिपुष्याम्बुपेषु ।
नभोमार्गवैशाखपौषे तपस्ये
समन्दे शुभाहे गृहारम्भणं सत् ॥ १ ॥

मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, स्वाती, पुष्य, शतभिष ये नक्षत्र गृहारंभ में शुभ हैं। तथा श्रावण, अगहन, वैशाख, पौष, फाल्गुन ये मास शुभ हैं। तथा शनैश्चर-समेत शुभ दिन होने चाहिए ॥ १ ॥

अथ गृहारम्भे भूमि-लक्षणम् ।

श्वेता शस्ता द्विजेन्द्राणां रक्ता भूमिर्महीभुजाम् ।
विशां पीता च शूद्राणां कृष्णान्येषां तु मिश्रिता ॥ १ ॥

सफ़ेद भूमि ब्राह्मण को श्रेष्ठ है और क्षत्रिय को लालवर्ण, वैश्य को पीतवर्ण और शूद्रों को कृष्णवर्ण श्रेष्ठ है। और वर्णों को मिश्रित अर्थात् मिली हुई शुद्ध है ॥ १ ॥

अथ ग्रहविचारः ।

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनेङ्ग विपञ्चके ।
व्यष्ट्यान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ १ ॥

गृहारंभ में मङ्गल, रविवार, रिक्तातिथि, चर लग्न, पञ्चक ये संपूर्ण वर्जित हैं। तथा आठवें, बारहवें शुभ-ग्रह अशुभ हैं और तीसरे, ग्यारहवें और छठे पापग्रह शुभ हैं ॥ १ ॥

अथ गृहारम्भचक्रम् ।

गेहाद्यारम्भेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे
रामैर्दाहो वेदभैरग्रपादे ।
शून्यं वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं
रामैः पृष्ठे श्रीर्युगैर्दक्षकक्षौ ॥ १ ॥
लाभो रामैः पुच्छगैः स्वामिनाशो
वेदैर्नैःस्वं वामकुक्षौ मुखस्थैः ।
रामैः पीडा सन्ततं वार्कधिष्ण्या-
दश्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तं त्वसत्सत् ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से गृहारम्भ का वत्स चक्र विचारे। तीन नक्षत्र वत्स के शीर्ष में दे उसका फल दाहकारक है और चार नक्षत्र अग्र-पाद में देवे उसका फल शून्य है और चार नक्षत्र पृष्ठपाद में देवे

उसका फल स्थिरता होवे और तीन नक्षत्र पृष्ठ में देवे उसका फल लक्ष्मीप्रद है । और चार नक्षत्र दहिनी कोख में देवे उसका फल लाभप्रद है और तीन नक्षत्र पुच्छ में देवे उसका फल स्वामि-नाशक है और चार नक्षत्र वाम कोख में देवे उसका फल निःस्वताकारक अर्थात् दरिद्रता हो । और तीन नक्षत्र मुख में देवे उसका फल सन्तानपीड़क है अथवा सूर्य के नक्षत्र से सात नक्षत्र अशुभ हैं फिर ग्यारह शुभ हैं फिर दश अशुभ हैं इसी क्रम से जानना चाहिए ।। १-२ ।।

अथ गृहारम्भचक्रन्यासः सूर्यभात् २८ ।

शीर्ष	अग्र पाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	दक्षिण-कुक्षि	पुच्छ	वाम-कुक्षि	मुख	अङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिरता	लक्ष्मी	लाभ	स्वामि-नाश	निर्धनता	पीड़ा	फल

पुनश्चक्रम् ।

७	११	१०	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रामस्य ऋणधनविचारः ।

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण संयुतम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।। १ ।।

अवर्ग आदि जो आठ वर्ग विवाह में कह आये हैं उनसे ग्राम का ऋण धन विचारे । अपने नाम का वर्ग दूना करे फिर उसको

ग्राम के वर्गाङ्क में जोड़ दे, उसमें आठ का भाग दे, जो शेष बचे, वह अलग धरे, फिर ग्राम के वर्गाङ्क को दूना करके अपने वर्गाङ्क में जोड़ दे उसमें आठ का भाग दे, जो शेषाङ्क बचे उसे अलग धरे, दोनों अङ्क में देखे जो अधिक हो सो ऋणी होता है और जो कम हो सो धनी होता है ।

उदाहरण ।

जैसे ग्राम का नाम लखनऊ है और नाम है नवलकिशोर साहब, तो लखनऊ का वर्ग सातवाँ अङ्क हुआ और नवल-किशोर साहब का वर्गाङ्क पांचवाँ हुआ तो पहिले ग्राम के अङ्क को दूना किया तो हुआ १४ इसमें नाम के वर्गाङ्क जोड़ने से हुए १६ उसमें आठ का भाग दिया तो शेषाङ्क रहा तीन ये ग्रामके अङ्क हुए। अब नाम के वर्गाङ्क को दूना किया तो दस हुए उसमें ग्राम का वर्गाङ्क जोड़ा तो १७ हुए, उसमें आठ का भाग लिया तो शेषाङ्क एक बचा । अब दोनों अङ्कों में ग्राम का अङ्ग अधिक आया और मुंशीनवलकिशोर साहब का न्यून हुआ इस लिये इनको धनी जानिये और ग्राम को ऋणी जानना चाहिये ॥ १ ॥

अथ गृहारम्भे राहुमुखचक्रं पूर्वोक्तम्[१] ।

ईशान	वायव्य	नैर्ऋत्य	आग्नेय	दिशा
सिंह, कन्या तुला	वृश्चिक, धन, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क	सूर्य-राशि

१—पहले इसी प्रकरण में 'देवालये गेहविधौ' इत्यादि श्लोक द्वारा राहु के वास आदि का व्याख्यान कर चुके हैं ।

जिस दिशा में मुख हो उसके पहिली दिशा में खात होता है उसमें खोदना शुभ है तथा पूर्वोक्त[1] भूमिसुप्त भी विचारना चाहिये॥

अथ परहस्तगतयोगज्ञानम्।

द्यूनाम्बरे यदैकोऽपि परांशस्थो ग्रहो गृहम्।
अब्दान्तः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः॥ १॥

जिस घर के प्रारम्भ काल में कोई एक भी ग्रह शत्रु के नवांश में स्थित होकर लग्न से सातवें और दशवें स्थान में स्थित हो, तो वह ग्रह वर्ष के भीतर ही घर को, बनवानेवाले के हाथ से दूसरे के हाथ में कर देता है। परन्तु जो उसके वर्ण का स्वामी बली हो, तो शुभ होता है अर्थात् शुक्र, बृहस्पति ब्राह्मण के स्वामी हैं; मङ्गल, सूर्य क्षत्रिय के स्वामी हैं और चन्द्रमा वैश्य का स्वामी है; बुध शूद्र का स्वामी है॥ १॥

अथ रक्षोभूतयुतयोगः।

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः।
समन्दैर्मन्दवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम्॥ १॥

शनिवार युक्त पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाती, भरणी इन नक्षत्रों में और शनिवार के दिन आरम्भ किये हुए घर में राक्षसों और भूतों का निवास रहता है॥ १॥

अथ ग्रामवासफलम्।

ग्रामो यत्र भवेदृक्षे तदाद्याः सप्त मस्तके।
पृष्ठे सप्त हृदि[2] सप्त सप्त पादे च तारकाः॥ १॥

१—इसका विवरण भी राहुवास के प्रथम ही 'प्रद्योतनात्पञ्च' इत्यादि श्लोक द्वारा इसी प्रकरण में कर आए हैं।

२—'हृदि-सप्त' यहां पर यद्यपि यति-भङ्ग है, पर सौ वर्ष के ऊपर की लिखित शीघ्रबोध की प्रति में भी यही पाठ प्राप्त हुआ है इसलिए सह्य है।

मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥ २ ॥

ग्राम के नक्षत्र से सात नक्षत्र ग्राम के मस्तक पर दीजिये और सात नक्षत्र पीठ में देना और सात हृदय में स्थापित करना और सात नक्षत्र चरण में देना चाहिए ॥ १ ॥

अथ फलम् ।

अपना नक्षत्र यदि ग्राम के मस्तक में पड़े, तो धनी हो और ग्राम में सन्मान पावे । पीठ में पड़े, तो हानि हो और निर्धन हो, हृदय में पड़े, तो सुख सम्पदा हो और चरण में पड़े, तो विदेश में भ्रमण करावे ॥ २ ॥

अथ ग्रामराशिविचारः ।

एकभे सप्तमे ग्रामे वैरं हानिस्त्रिषष्ठगे ।
तुर्याष्टद्वादशे रोगः शेषस्थाने सुखं भवेत् ॥ १ ॥

अपने नाम-राशि से ग्राम की राशि एक ही हो या सातवीं हो, तो विरोध होवे तथा तीसरे छठे हो, तो हानि हो और चौथे, आठवें, बारहवें हो, तो रोग होवे और शेष स्थान सुखकारक होते हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रामे निवासदिग्विचारः ।

मध्ये ग्रामस्य गोद्वन्द्वनक्रसिंहाख्यराशयः ।
मीनालिकन्यकाः पूर्वे दक्षिणे कर्कराशिकः ॥ १ ॥
धन्विनः पश्चिमे मेषस्तुलाकुम्भस्तथोत्तरे ।
नो वसेयुर्नराः सौख्यधनलाभात्मजार्थिनः ॥ २ ॥

वृष, मिथुन, मकर और सिंह राशिवाले नगर के मध्य में निवास न करें । तथा मीन, वृश्चिक, कन्या राशिवाले पूर्व दिशा में निवास न करें और कर्क राशिवाले दक्षिण दिशा में न निवास

करें । धन राशिवाले पश्चिम दिशा में निवास न करें तथा मेष, तुला और कुम्भ राशिवाले उत्तर दिशा का परित्याग करें । जो मनुष्य सुख, धन और सन्तान को चाहें उनको इन दिशाओं में निवास करना उचित नहीं है ॥ १–२ ॥

वैनतेयमुखा वर्गा बलिष्ठाः पूर्वतः क्रमात् ।
स्वदिशास्य गृहं श्रेष्ठं पञ्चम्यां दिशि मृत्युदम् ॥ ३ ॥

पूर्व आदि आठ दिशाओं के क्रम से गरुड़ आदि आठ वर्ग उत्तरोत्तर बली हैं, यह विषय नीचे लिखे चक्र से भलीभाँति विदित हो जावेगा । जिस वर्ग की जो दिशा है वही श्रेष्ठ है, परन्तु अपने से पांचवीं दिशा को मृत्युदायक समझना चाहिये ॥

अथ वर्गदिशाश्रेष्ठचक्रम् ।

गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष	वर्ग
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्ण
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	वर्ण
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स	वर्ण
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	वर्ण
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	०	०	वर्ण
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्गाङ्क
०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ पिण्डज्ञानम् ।

एकोनितेष्टर्क्षहतादितिथ्यो
रूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ।
युक्ता घनैश्चापि युता विभक्ता
भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिण्डः ॥ १ ॥
स्वेष्टायनक्षत्रभवोऽथ दैर्घ्यहृ-
त्स्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ।
आया ध्वजो धूमहरिश्वगोखरे-
भध्वांक्षकाः पिण्ड इहाष्टशेषिते ॥ २ ॥

जिस प्रकार विवाह में वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से मेलापक का विचार किया जाता है, वैसेही ग्राम आदि के निवास में भी ग्राम के प्रसिद्ध नाम से तथा निवास करनेवाले के प्रसिद्ध नाम से विचार करना चाहिए । ग्राम के नाम नक्षत्र को इष्ट मानकर उस इष्ट नक्षत्र की संख्या में एक घटा दे जो शेष रहे उससे एक सौ बावन को गुणा करे फिर उसे अलग रख देना और अपने इष्टाय में एक घटा देना उसे इक्यासी से गुणा करना फिर दोनों अङ्कों को जोड़कर उसमें सत्रह और जोड़ देना और उसमें दोसौ सोलह का भाग देना शेष पिण्ड (क्षेत्रफल) होता है । पिण्ड के अङ्क में वा इष्टाय नक्षत्र के अङ्क में अर्थात् जिसमें दोसौ सोलह का भाग दिया है वही अङ्क इष्टाय नक्षत्र का है । उसमें कल्पित हाथों की लम्बाई का भाग देने से लब्ध चौड़ाई आवेगी । चौड़ाई का भाग देने से लम्बाई सिद्ध होगी शेषाङ्क को चौबीस से गुणा करके पूर्वप्रकार से भाग देने से लम्बाई चौड़ाई के अंगुल निकलेंगे । और कमती बढ़ती

लम्बाई चौड़ाई किया चाहे तो पूर्वोक्त अङ्क में दोसौ सोलह घटा-बढ़ा ले फिर उसमें भाग देकर अपने कार्यार्थ लम्बाई चौड़ाई निकाल लेवे यह ऊपर से ज्ञात होता है और पिण्ड में आठ का भाग देने से लब्ध ध्वजादिक आठ आय होते हैं। क्रम से नाम ध्वज १ धूम २ हरि ३ श्वान ४ गो ५ खर ६ हाथी ७ काक ८ इस क्रम से शेषाङ्क में आठ आय जानना चाहिए ॥ १—२ ॥

अथायप्रकारस्तथा द्वारप्रकारः ।

ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं
कार्यं हरा पूर्वयमोत्तरे तथा ।
प्राच्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजेऽथवा
पश्चादुदक्पूर्वयमे द्विजादितः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त ध्वज आय का चारों दिशाओं में द्वार प्रसिद्ध है । तथा सिंहाय का मुख, पूर्व-दक्षिण-उत्तर प्रसिद्ध है । और वृषाय का पश्चिम मुख का द्वार प्रधान है । और गजाय का पूर्व दक्षिण मुख प्रधान है । अथवा ब्राह्मण को पश्चिम मुख, क्षत्रिय को उत्तर मुख, वैश्य को पूर्व मुख और शूद्र को उत्तर मुख द्वार करना उचित है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेणायज्ञानम् ।

विस्तारगुणितं दैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं लभेत् ।
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायोध्वजादिकः ॥ १ ॥
ध्वजो धूम्रोऽथ सिंहः श्वा सौरभेयः खरो गजः ।
ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥ २ ॥
ध्वजे कृतार्थो मरणञ्च धूमे
सिंहे जयश्चाथ शुनि प्रकोपः ।

वृषे च राज्यं च खरे च दुःखं
ध्वांक्षे मृतिश्चैव गजे सुखं स्यात् ॥ ३ ॥
ब्राह्मणस्य ध्वजो ज्ञेयो सिंहो वै क्षत्रियस्य च ।
वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥ ४ ॥

कल्पित लम्बाई-चौड़ाई को अथवा चौड़ाई-लंबाई को आपस में गुणने से क्षेत्रफल होता है । और उसीमें आठ का भाग देने सेजो बाकी बचे वे ध्वज आदि आय होती हैं । ध्वज १, धूम २, सिंह ३, श्वान ४ बैल ५, खर ६, हाथी ७, काक ८, ये आठ आय क्रम से जानिये ।

अथ फलम् ।

ध्वजसंज्ञक आय का फल कृतार्थ अर्थात् प्रसन्नता, धूम का फल मरण, सिंहाय का फल जयकारक, श्वान आय का फल कोप, वृष का फल राज्य, खर आय का फल दुःख, ध्वांक्ष आय का फल मृत्यु और गजाय का फल सुख होता है । ब्राह्मण-वर्ण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय और वैश्य को वृषाय शुभ है तथा संपूर्ण वर्णों को गजाय शुभ है ॥ १-४ ॥

अथेष्टर्क्षज्ञानम् ।

पुष्याश्विनीवारुणपूर्वभाद्र-
मित्राणि पूर्वोत्तरहस्तचित्रा ।
ज्येष्ठार्यमामित्रशशाङ्कमूल-
कर्णो धनिष्ठाभगभं मघा च ॥ १ ॥
श्लेषान्त्यपूभान्त्यमथाम्बुपेश-
मूलेन्दुपौष्णोत्तरभाद्रभानि ।
अश्वादिनक्षत्रसमुद्भवाना-
मिष्टर्क्षभानां क्रमशो गृहेषु ॥ २ ॥

अश्विन्यादि सत्ताइसों नक्षत्रों का इष्टर्क्ष इस चक्र के क्रम से जानना चाहिए । जैसे अश्विनी जिसका नाम नक्षत्र हो, उसका इष्टर्क्ष पुष्य हुआ । उसका अङ्क आठ हुआ भरणी का अश्विनी १ इष्टर्क्ष है । शेष चक्र से अर्थ जान लेना चाहिए ॥ १-२ ॥

अथेष्टर्क्षचक्रम् ।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	नक्षत्र
पुष्य ८	अ. १	श. २४	पू. भा. २५	अनु. १७	पू.फा. ११	उ. फा. १२	हस्त १३	चित्रा. १४	ज्ये. १८.	उ. फा. १२	अनु. १७	मृ. ५	मूल. १६	इष्टर्क्ष
स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	[illegible]	पू. षा.	उ. षा.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती	०	नक्षत्र
श्र. २२	ध. २३	पू.फा. ११	म. १०	श्ले. ६	रेवती २७	पू. भा. २५	रेवती २७	श. २४	मूल. १६	मृ. ५	रेवती २७	उ. भा. २६	० ०	इष्टर्क्ष

अथ खननप्रकारः ।

जलान्तं प्रस्तरान्तं वा पुरुषान्तमथापि वा ।
क्षेत्रं संशोध्य चोद्धृत्य शल्यं सदनमारभेत् ॥ १ ॥

जलान्त तक अथवा जहाँ पत्थर मिले वहाँ तक, अथवा एक पुरुष की गहराई तक खोदकर जगह शुद्ध करे और शल्य अर्थात् हाड़ निकाल कर मकान बनाना उचित है ॥ १ ॥

अथ शुभाशुभभूमिज्ञानम् ।

खन्यमाने यदा क्षेत्रे पाषाणः प्राप्यते तदा ।
धनायुश्चिरता वै स्यादिष्टकासु धनागमः ॥
कपालाङ्गारकेशादौ व्याधिना पीडितो भवेत् ॥ १ ॥

यदि क्षेत्र के खोदने पर पत्थर निकलें तो धन और आयु की वृद्धि होवे । और यदि ईंट निकलें तो धन प्राप्ति हो । और कपाल, कोइला और केश आदि निकलें, तो रोग से पीड़ा होवे ॥ १ ॥

अथ गृहस्थानविचारः ।

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजेश्च धान्य-
भाण्डारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः ।
तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्या-
भ्यासाख्यरोदनरतौषधसर्वधाम ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में स्नान-गृह, आग्नेय में पाक-गृह अर्थात् रसोई घर, दक्षिण में शयन-गृह, नैऋत्य में शस्त्र-गृह, पश्चिम में भोजन-गृह, वायव्य में धान्य-संग्रह-गृह, उत्तर में भाण्डार-गृह अर्थात् बरतन रखना आदि, और ईशान में देवता-गृह होना चाहिये । इन सबके बीच में क्रम से दधि-मथन-गृह, घृत-संग्रह-गृह, पुरीष-गृह अर्थात् विष्ठा के त्याग का घर वा विद्याभ्यास का घर, रोदन-गृह, रति-गृह तथा औषध-गृह

और सर्वधाम-गृह ये सब होने चाहिए । यह बात 'गृह-चक्र' से स्पष्ट ज्ञात हो जावेगी ॥ १ ॥

अथ गृहचक्रम् ।

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान्य	पूर्व	दिशा
स्थान-गृह	पाकगृह	शयनगृह	शस्त्रगृह	भोजन-गृह	धान्य-संग्रह गृह	भाण्डा-रगृह	देवतागृह	००	स्थान
दधिमथन	घृत	पुरीष	विद्या	रोदन	रति	औषध	सर्वधाम		मध्यस्थानगृह

अथ गृहायुर्ज्ञानम् ।

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु
लग्नारिजामित्रसुखात्रिगेषु ।
स्थितिः शतं स्याच्छरदां सितार्का-
रेज्ये तनुत्र्यङ्गसुतं शते द्वे ॥ १ ॥

लग्नाम्बरायेषु भृगुज्ञभानुभिः
केन्द्रे गुरौ वर्षशतायुरालयम् ।
बन्धौ गुरुर्व्योम्नि शशीकुजार्कजौ
लाभे तदाऽशीतिसमायुरालयम् ॥ २ ॥

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथवा ।
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ॥ ३ ॥

गृहारम्भ की लग्न में बृहस्पति लग्न में, सूर्य छठे, बुध सातवें, शुक्र चौथे, और शनि तीसरे हो, तो गृह की आयु सौ वर्ष की होवे।

यदि शुक्र लग्न में, सूर्य तीसरे, मङ्गल छठे और बृहस्पति पाँचवें हो तो मकान की आयु दोसौ वर्ष की होवे।

यदि लग्न में शुक्र, दशवें बुध, ग्यारहवें सूर्य, लग्न को छोड़कर केन्द्र अर्थात् १।४।७।१० में बृहस्पति हो तो सौ वर्ष की आयु हो।

और यदि बृहस्पति चौथे, चन्द्रमा दशवें, और मङ्गल, शनैश्चर ग्यारहवें हों तो असी वर्ष की आयु होती है।

यदि उच्च का शुक्र अर्थात् मीनराशि का होकर लग्न में पड़े, बृहस्पति चौथे, और शनैश्चर उच्च का अर्थात् तुला का होकर ग्यारहवें हो तो मकान लक्ष्मीयुक्त और चिरंजीवी होवे ॥२-३॥

अथ नाशयोगः।

गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशो-
ऽर्केन्द्वीज्यशुक्रे विबलेऽस्तनीचे।
कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे
पुरःस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ॥ १ ॥

गृहारम्भ काल में यदि सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र निर्बल, अस्त, किंवा नीच के हों तो क्रम से गृहेश, गृहेश की स्त्री, सुख और धनका नाश करें। और चन्द्रनक्षत्र द्वारके संमुख पड़े तो कर्ता (मकान बनानेवाले) की स्थिति न रहे। यदि पीछे पड़े तो खोदा जावे।

अथ [1]चन्द्रनक्षत्रज्ञानम्।

कृत्तिका आदि सात-सात नक्षत्र पूर्व आदि चारों दिशाओं में

१–चन्द्रमा और वास्तु नक्षत्रों के जानने की रीति मुहूर्त-चिन्तामणि में विशदरूप से वर्णित है।

वास करते हैं यह जानना चाहिए। गृह का द्वार पहले निश्चित करके विचार लेना। नींव देने के समय विचारना कि नींव का नक्षत्र किस दिशा में है वह द्वार के संमुख पीछे त्याग करना अशुभ है तथा दहिने पीछे शुभ है।

अथ गृहनामज्ञानम् ।

दिक्षु पूर्वादितः शालाध्रुवाभूद्वौकृतौगजाः ।
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैको वेश्मध्रुवादिकम् ॥ १ ॥
ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमम् ।
सुमुखं दुर्मुखोग्रं च रिपुदं धनदं क्षयम् ॥ २ ॥
आक्रन्दं विपुलं ज्ञेयं विजयं चेति षोडश ।
गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नामतुल्यफलप्रदम् ॥ ३ ॥

पूर्व आदि चारों दिशाओं में शाला के अङ्क क्रम से जोड़ देवे। पूर्व में १, दक्षिण में २, पश्चिम में ४ और उत्तर में ८। जिस दिशा में शाला हो उस दिशा के अङ्क जोड़कर एक और जोड़ देना। जितने अङ्क हों वे ही ध्रुव आदि गृह के नाम होते हैं—ध्रुव १, धान्य २, जय ३, नन्द ४, खर ५, कान्त ६, मनोरम ७, सुमुख ८, दुर्मुख ९, उग्र १०, रिपुद ११, धनद १२, क्षय १३, आक्रन्द १४, विपुल १५ और विजय १६ ये सोलह नाम हैं इनका फल नाम के तुल्य ही जानना चाहिए ॥ १-३ ॥

अथ गृहाख्यशुभाशुभफलचक्रम् ।

ध्रुव १	धान्य २	जय ३	नन्द ४	खर ५	कान्त ६	मनोरम ७	सुमुख ८	गृह नाम
शुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	फल
दुर्मुख ९	उग्र १०	रिपुद ११	धनद १२	क्षय १३	आक्रन्द १४	विपुल १५	विजय १६	गृह नाम
अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	फल

अथांशफलज्ञानम् ।

भं नागतष्टं व्यय ईरितोऽसौ
ध्रुवादिनामाक्षरयुक्स पिण्डः ।
तष्टो गुणैरिन्द्रकृतान्तभूपा
ह्यंशा भवेयुर्न शुभोऽन्तकोऽत्र ॥ १ ॥

पूर्व कहे हुए-इष्ट नक्षत्र की संख्या में आठ का भाग देने से जो शेष बचे, वही व्यय कहा जाता है । इसका प्रयोजन यह है कि आय की अपेक्षा न्यून व्ययवाला घर शुभ होता है । व्यय में ध्रुवादिकों के नामके अक्षर जोड़ना, उस अङ्क में पिण्ड जोड़ देना, उसमें तीन का भाग देना एक शेष रहे तो इन्द्र का अंश, दो शेष बचें तो यमराज का अंश और तीन बचें तो राजा का अंश होता है । जिस घर में यम का अंश रहता है, वह घर शुभ नहीं होता है ।

ध्रुवादिकों के नामाक्षर जानने की संख्या ।

ध्रुव, धान्य, जय, नन्द, खर, कान्त इनके नाम में दो अक्षर, मनोरम में चार अक्षर, सुमुख वा दुर्मुख में तीन अक्षर, उग्र में दो

अक्षर, रिपुद में तीन अक्षर, धनद में तीन अक्षर, क्षय में दो अक्षर; आक्रन्द, विपुल और विजय में तीन अक्षर होते हैं ॥ १ ॥

अथ पृथ्वीशोधनप्रकारः ।

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे
प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथमं स्फुटीभवेत् ।
वर्गादिवर्णाः किल तद्दिशि स्मृतं
शल्यं मुनीन्द्रैर्हपयैस्तु मध्यतः ॥ १ ॥

नवीन मकान के लिए प्रथम पृथ्वी-शोधन करे । प्रश्नकर्ता के मुख से जो आदि अक्षर निकले उसी से प्रश्न विचारे । अवर्गादिक जो आठ वर्ग हैं उनसे पूर्वादि आठों दिशाओं में शल्य क्रम से जानना चाहिए । और ह, प, य ये अक्षर मध्य में जानना ॥ १ ॥

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ।
गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यं सम्यग्विचार्यते ॥ २ ॥

पहले प्रश्नकर्ता इष्ट देवता का स्मरण करके प्रश्न करे । प्रश्न के आदि अक्षर से शल्याशल्य का विचार करे ॥ २ ॥

अथ प्रश्नाक्षरफलानि ।

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।
सार्द्धहस्तप्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युकृत् ॥ ३ ॥

प्रष्टा के मुख से आदि अक्षर अवर्ग का निकले, तो पूर्वदिशा में डेढ़ हाथ गहरा खोदने से मनुष्य की हड्डियाँ निकलेंगी उनको मृत्युकारक जानना चाहिए ॥ ३ ॥

आग्नेय्यां दिशि कः प्रश्ने खरशल्यं करद्वये ।
राजदण्डो भवेत्तत्र भयं नैव निवर्त्तते ॥ ४ ॥

यदि पहला अक्षर कवर्ग का निकले तो आग्नेय कोण में दो हाथ खोदने पर गदहे की हड्डियाँ निकलेंगी, उससे राजदण्ड का भय कभी निवृत्त नहीं होता है ॥ ४ ॥

याम्यायां दिशिः चः प्रश्ने तदा स्यात्कटिसंस्थितम्।
नरशल्यं गृहे तस्य मरणं चिररोगतः ॥ ५ ॥

यदि आदि का अक्षर चवर्ग का हो तो दक्षिण दिशा में कमर के बराबर गहरे में मनुष्य की हड्डी निकले उससे चिरकाल के रोग में मरण हो ॥ ५ ॥

नैर्ऋत्यां यदि टः प्रश्ने सार्द्धहस्तादधःस्थले।
शनोऽस्थि जायते तत्र बालानां जायते मृतिः ॥६॥

यदि आदि में टवर्ग निकले तो नैर्ऋत्य दिशा में डेढ़ हाथ खोदने से कुत्ते की हड्डी निकले उसका फल बालकों की मृत्यु है ॥ ६ ॥

तः प्रश्ने पश्चिमायां तु शिशोः शल्यं प्रजायते।
सार्द्धहस्ते गृहस्वामी न तिष्ठति सदा गृहे ॥ ७ ॥

तवर्ग का उच्चारण करे तो पश्चिमदिशा में डेढ़ हाथ गहरे में बालक की हड्डी निकलेगी उसका फल घर का स्वामी सदा घर में न रह सके ॥ ७ ॥

वायव्यां दिशि पः प्रश्ने तुषाङ्गाराश्चतुष्करे।
कुर्वन्ति मित्रनाशं च दुःस्वप्नदर्शनं सदा ॥ ८ ॥

पवर्ग का उच्चारण हो तो वायव्यदिशा में चार हाथ के गहरे में जरी हुई धान की भूसी व कोइला निकले उसका फल मित्र-नाशक तथा दुःस्वप्नदर्शन है ॥ ८ ॥

उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यं करादधः ।
तच्छीघ्रं निर्धनत्वाय कुबेरसदृशस्य हि ॥ ९ ॥

यवर्ग का उच्चारण हो तो उत्तरदिशा में एक हाथ गहरे में ब्राह्मण की हड्डियाँ निकलें इसका फल कुबेर के समान भी धनाढ्य निर्धनी हो जावे ॥ ९ ॥

ईशान्यां यदि शः प्रश्ने गोशल्यं सार्द्धहस्ततः ।
तद्गोधनस्य नाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ १० ॥

शवर्ग का उच्चारण हो तो ईशान दिशा में डेढ़ हाथ खोदने से गौ के हाड़ निकलें उनका फल गोधन का नाश है ॥ १० ॥

हपयाः कोष्ठमध्ये च वक्षोमात्रं भवेदधः ।
नृकपालमथो भस्मलोहं तत्कुलनाशकृत् ॥ ११ ॥

ह, प और य का उच्चारण आदि प्रश्न में हो तो घर के बीच में छाती के बराबर गहरे में मनुष्य की खोपड़ी वा भस्म वा लोह निकले उसका फल कुल का नाश है ॥ ११ ॥

अथ द्वारमुहूर्तः ।

अश्विन्यामुत्तराहस्तपुष्यश्रुतिमृगेषु च ।
स्वातौ पौष्णे च रोहिण्यां द्वारशाखावरोपणम् ॥ १ ॥

अश्विनी, तीनों उत्तरा, हस्त, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, रेवती और रोहिणी इन नक्षत्रों में द्वार रखना शुभ है ॥ १ ॥

अथ द्वारचक्रम् ।

सूर्यभाद्वेदभैः शीर्षे संस्थितैर्धनसम्पदः ।
गृहस्योद्वसनं तस्मादष्टभिः कोणसंस्थितैः ॥ १ ॥

शाखास्वष्टभिस्तस्माद्धनं सौख्यं भवेद्गृहे ।
देहल्यां तु त्रिभिर्धिष्ण्यैर्मृत्युर्गृहपतेर्भवेत् ॥ २ ॥
चतुर्भिर्मध्यगैस्तस्माद्द्रव्यलाभं सुखं भवेत् ।
एतच्चक्रं विचार्यादौ द्वारं कुर्यात्स्वमन्दिरे ॥ ३ ॥

सूर्य-नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक द्वार-चक्र गिने अर्थात् जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उससे लेकर चार नक्षत्र द्वार के शिर अर्थात् उतरंग में देवे, उसका फल लक्ष्मीदायक है । आठ नक्षत्र चारों कोणों में देवे, उसका फल उजाड़ है । आठ नक्षत्र शाखा (बाजू) में देवे, उसका फल धन और सुख है । तीन नक्षत्र देहली (चौखट) में देवे, उसका फल गृहेश की मृत्यु है । चार नक्षत्र मध्य में देवे, उसका फल द्रव्य का लाभ तथा सुख है । इस प्रकार मकान के द्वार को विचारकर मकान का दरवाजा स्थापित करना चाहिए ॥ १-३ ॥

अथ सूर्यभाद्द्वारचक्रन्यासः ।

शिर	कोण	बाजू	देहली	मध्य	स्थान
४	८	८	३	४	नक्षत्र
लक्ष्मी	उद्वसन	सुख	गृहपतिमरण	सुख	फल

अथ कपाटचक्रम् ।

कृतांकराब्धियुग्मरामान्तकाश्चवारिधौ
करौ समुद्रसूर्यभाद्दिनर्क्षकं फलं वदेत् ।
धनागमं विनाशसौख्यबन्धनं मृतिः क्षतिः
शुभं च मन्दमङ्गलं शुभं कपाटचक्रयोः ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक किंवाड़ का चक्र विचारना चाहिए । प्रथम चार नक्षत्र धनागम करते हैं फिर दो नक्षत्र विनाश

करते हैं फिर चार नक्षत्र सुखकारी हैं। फिर दो नक्षत्र बन्धन करते हैं फिर तीन नक्षत्र मृत्युदायक हैं फिर दो नक्षत्र घाव देते हैं फिर चार नक्षत्र शुभदायक हैं फिर दो नक्षत्र मङ्गलकारक हैं फिर चार नक्षत्र शुभ होते हैं ॥ १ ॥

अथ कपाटचक्रन्यासः ।

४	२	४	२	३	२	४	२	४	नक्षत्र
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	फल

अथ सूर्यराशिमध्ये द्वारमुखविचारः ।

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरे ।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः ॥ १ ॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणम् ॥ २ ॥
धनुर्मिथुनकन्यासु मीने च यदि भानुमान् ।
न कर्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

कर्क, कुम्भ, सिंह, मकर इन राशियों के सूर्य हों तो पूर्व व पश्चिम दिशा में द्वार करना चाहिये। मेष, वृष, वृश्चिक, तुला इन राशियों के सूर्य हों तो उत्तर-दक्षिण द्वार शुभ है। धन, मिथुन, कन्या, मीन इनके सूर्य में गृह न बनावे, यदि बनावे, तो दुःख पावे ॥ १–३ ॥

अथ राशिमध्ये द्वारविचारः ।

द्विजो वैश्यस्तथा शूद्रः क्षत्रियो राशिजो नरः ।
द्वारं च पूर्वतः कुर्याद्दिशानां च चतुष्टयम् ॥ १ ॥

जो राशि ब्राह्मण-वर्ण है अर्थात् मीन, वृश्चिक और कर्क राशि

का द्वार पूर्व-मुख, वैश्यवर्ण-राशि अर्थात् कन्या, वृष और मकर राशि का द्वार दक्षिण-मुख, शूद्र-वर्ण राशि अर्थात् मिथुन, तुला और कुम्भ राशि का द्वार पश्चिम-मुख, क्षत्रिय-वर्ण राशि अर्थात् मेष, सिंह और धन राशि का द्वार उत्तर-मुख शुभ होता है ॥१॥

अथ राशिमध्ये द्वारविचारचक्रम् ।

ब्राह्मण	वैश्य	शूद्र	क्षत्रिय	वर्ण
मीन, वृश्चिक, कर्क	मकर, कन्या, वृष	मिथुन, तुला, कुम्भ	मेष, सिंह, धन	राशि
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	द्वार-दिशा

अथ प्लवविचारः ।

पूर्वे प्लवो वृद्धिकरो धनदश्चोत्तरे प्लवः ।
दक्षिणे मृत्युदश्चैव धनहा पश्चिमे प्लवः ॥ १ ॥
ईशाने प्रागुदक्प्लवस्त्वत्यन्तवृद्धिदो नृणाम् ।
अन्यदिक्षु प्लवो नेष्टः शश्वदत्यन्तहानिदः ॥ २ ॥

अब पनारे का विचार लिखते हैं—पूर्व दिशा में पनारा निकाले तो वृद्धि करे, उत्तर दिशा में धन दे, दक्षिण दिशा में मृत्यु दे, पश्चिम दिशा में धन-हानि हो । ईशान, पूर्व और उत्तर दिशा में पनारा शुभ और अत्यन्त वृद्धिदायक है । अन्य दिशाओं में अशुभ और हानिकारक है ॥ १–२ ॥

अथ गृह-प्रवेशमुहूर्तः ।

तपः फाल्गुने ज्येष्ठराधेषु पौष्णे
मृगे ब्राह्मचित्रानुराधोत्तरासु ।

सिते रौहिणीये शनौ शीतभानौ
सुरेज्ये प्रवेशः शुभः सद्मनि स्यात् ॥ १ ॥

माघ, फाल्गुन, ज्येष्ठ और वैशाख इन महीनों में रेवती, मृगशिरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में शुक्र, बुध, शनैश्चर, सोमवार और गुरुवार इन दिनों में गृहप्रवेश शुभ होता है ॥ १ ॥

अथ गृहादिविचारः ।

त्रिकोणकेन्द्रायधनत्रिगैः शुभै-
र्लग्ने त्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः ।
शुद्धाम्बुरन्ध्रे विजनुर्भमृत्यौ
व्यर्कारारिक्ताचरदर्शचैत्रे ॥ २ ॥

त्रिकोण ९ । ५ वा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इनमें तथा ग्यारहवें व दूसरे और तीसरे शुभग्रह हों, तथा लग्न में तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें पापग्रह भी शुभ हैं । और चौथे, आठवें स्थान में कोई ग्रह न होना चाहिए और जन्म की लग्न वा जन्म की राशि से आठवाँ लग्न वर्जित है । रविवार, भौमवार, रिक्तातिथि, चर लग्न, अमावस्या और चैत्रमास ये भी गृहप्रवेश में वर्जित हैं॥१॥

अथ गृहप्रवशे कुम्भचक्रम् ।

वक्त्रे भू रविभात्प्रवेशसमये कुम्भेऽग्निदाहः कृताः
प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे ।
श्रीर्वेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भे विनाशो गुदे
रामाः स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कण्ठे भवेत्सर्वदा ॥ १ ॥

गृह-प्रवेश समय में घड़े के समान कलशचक्र बनाना चाहिए जिसमें—मुख, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, गर्भ, गुदा और कंठ का विभाग करके जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उसको कंठ में स्थापित करे, उस नक्षत्र में यदि गृह-प्रवेश हो, तो घर अग्नि से जले। इसके बाद के चार नक्षत्र चक्र के पूर्व स्थापित करे, इनमें गृह-प्रवेश हो तो घर उजर जावे। बाद चार नक्षत्रों को दक्षिण में स्थापित करे, इनमें गृहप्रवेश हो तो लाभ होवे। इनके बाद के चार नक्षत्र पश्चिम दिशा में स्थापित करे, इनमें गृह-प्रवेश हो, तो घर में सम्पत्ति होवे। इनके बाद के चार नक्षत्र उत्तर दिशा में स्थापित करे, इनमें यदि गृह-प्रवेश हो, तो घरवालों में झगड़ा होवे। इनके बाद के चार नक्षत्र चक्र के मध्य में स्थापित करे, इन नक्षत्रों में गृह-प्रवेश हो, तो विनाश होवे। इनके बाद के तीन नक्षत्र गुदा में और बाद के तीन नक्षत्र कंठ में स्थापित करे, इनका फल घर की स्थिरता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यभात्कलशचक्रम् ।

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदा	कंठ	अंग
१	४	४	४	४	४	३	३	नक्षत्र
अग्नि-दाहः	उद्वसनं	लाभः	श्रीला०	कलि-प्रदः	विनाश-कारकः	स्थिरत्वं	सर्वदा स्थिरत्वं	फल

अथ वामरविज्ञानम् ।

वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽ-
    र्के पञ्चभे प्राग्वदनानि मन्दिरे ।
पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभो
    नन्दादिके याम्यजलोत्तरानने ॥ १ ॥

प्रवेश के लग्न से आठवें स्थान से पाँचवें स्थान तक सूर्य हों तो पूर्व दिशा के द्वारवाले को वाम सूर्य होते हैं वह शुभ हैं और पाँचवें स्थान से पाँचवें स्थान तक सूर्य हों तो दक्षिण दिशाके द्वारवाले को वाम सूर्य होते हैं वे शुभ हैं । दूसरे स्थान से पाँचवें स्थान तक सूर्य हों तो पश्चिम दिशा के द्वारवाले को वाम सूर्य होते हैं वे शुभ हैं । ग्यारहवें स्थान से पाँचवें स्थान तक सूर्य हों तो उत्तर के द्वारवाले को वामार्क होते हैं वे शुभ हैं । पूर्णा तिथि में पूर्वदिशा के द्वार में प्रवेश शुभ है और नन्दादि तिथियों में क्रमसे दक्षिण, पश्चिम और उत्तर द्वार में प्रवेश शुभ है । जैसे नन्दा दक्षिण-द्वार, भद्रा पश्चिम-द्वार और जया उत्तर-द्वार के प्रवेश में शुभ है ॥ १ ॥

अथ ग्रहबलाबलज्ञानम् ।

गजेशरर्तुयुगाश्वमहीगुणा
    द्विसहिता मघवादिदिशः क्रमात् ।
गृहपतेरवधापुरादिञ्भिति-
    र्वसुहृतास्य ग्रहस्य दशा भवेत् ॥ १ ॥

पूर्व आदि आठों दिशाओं में अङ्क स्थापित करे । क्रम से पूर्व में आठ, आग्नेय में पाँच, दक्षिण में छः, नैऋत्य में चार, पश्चिम में सात, वायव्य में एक, उत्तर में तीन, ईशान में दो ये अङ्क

पूर्व आदि दिशाओं के होते हैं। जिस दिशा का मकान विचारे उस दिशा का अङ्क धरे और गृहपति के नामोद्भव वर्ग का अङ्क धरे, क्रम से अवर्गादि आठ वर्ग हैं वे आठ अङ्क हैं उसका क्रम लिखते हैं:--

अवर्ग में आठ, कवर्ग में पाँच, चवर्ग में छः, टवर्ग में चार, तवर्ग में सात, पवर्ग में एक, यवर्ग में तीन, शवर्ग में दो, इसी प्रकार से पुर का नाम जिस वर्ग का हो वह अङ्क धरे, इन तीनों अङ्कों को जोड़कर आठ का भाग देवे शेष जो बचे वह अष्टोत्तरी दशा के क्रम से दशा होती है। उसका फल शुभ-ग्रह की दशा हो तो शुभ है, पापग्रह की दशा अशुभ है और अपनी राशि के स्वामी की हो तो शुभ जानना चाहिए। इसी प्रकार सब दिशाओं की शाला को विचार लेना चाहिए॥ १॥

अथ दशाचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेषाङ्क
सू०	चं०	मं०	बु०	श०	बृ०	रा०	शु०	दशा

अथ देवालयमठाद्यारम्भमुहूर्तः ।

गृहारम्भोक्तनक्षत्रैर्मठं कुर्यात्तु साश्विभैः ।
सर्वदेवालयं तैस्तु पुनर्भश्रवणान्वितैः ॥ १ ॥

गृहारम्भ में जो नक्षत्र कहे हैं वे शिवालय वा ठाकुरद्वारा के बनाने में भी शुभ हैं; तथा अश्विनी, पुनर्वसु और श्रवण इन नक्षत्रों में सर्व देवालयों का आरम्भ करना शुभ है॥ १॥

अथ यात्रामुहूर्तविचारः ।

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता
शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या ।
रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा
जनुःपञ्चसप्तत्रितारारश्च नेष्टाः ॥ १ ॥
न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो
सिताद्या तिथिः पूर्णिमामा न रिक्ता ।
हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्त-
श्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ २ ॥

धन, मेष और सिंह के सूर्यों में यात्रा उत्तम और मकर, कुम्भ, मिथुन, कन्या, वृष और तुला के सूर्यों में मध्यम; कर्क, मीन और वृश्चिक के सूर्यों में दीर्घ यात्रा जाननी चाहिए अर्थात् यात्रा में बहुत दिन लगें और यात्रा में पहली और पाँचवीं, सातवीं और तीसरी तारा निषिद्ध है ॥ १ ॥

छठ, द्वादशी, अष्टमी और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, पूर्णमासी, अमावास्या, रिक्ता ४ । ९ । १४ ये तिथियाँ यात्रा में वर्जित हैं । और अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण और धनिष्ठा ये नक्षत्र यात्रा में शुभ हैं ॥ १-२ ॥

अथ दिक्शूलज्ञानम् ।

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में शनि-सोम को, दक्षिण दिशा में बृहस्पति को, पश्चिम दिशा में रवि-शुक्र को, उत्तरदिशा में बुध-मंगल को दिशाशूल होता है अर्थात् इन दिनों में पूर्व आदि दिशाओं की यात्रा वर्जित है ॥ १ ॥

अथ वार-नक्षत्र-शूलचक्रम् ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्ये.	पू. भा.	रो.	उ. फा.	नक्षत्रशूल
श. चं.	बृ.	शु. र.	मं. बु.	वारशूल

अथ विदिक्शूलचक्रम् ।

आग्नेय्याञ्च गुरौ चन्द्रे नैर्ऋत्यां रविशुक्रयोः ।
ईशान्याञ्चन्द्रजे वायौ मङ्गले गमनं त्यजेत् ॥ १ ॥

बृहस्पति और सोमवार को आग्नेय में, रविवार और शुक्रवार को नैर्ऋत्य में, बुध को ईशान में और मङ्गलवार को वायु कोण में दिक्शूल होता है ॥ १ ॥

अथ शूल-दोष-निवारण-भक्ष्यः ।

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ।
गुडमङ्गारके वारे बुधवारे तिलानपि ॥ १ ॥
गुरुवारे दधि ज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ।
माषान्भुक्त्वा शनौ गच्छेच्छूलदोषोपशान्तये ॥२॥

रविवार को घी, सोम को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, बृहस्पति को दही, शुक्र को जव, शनैश्चर को उड़द ये भक्षण करके यात्रा करे, तो शूल-दोष शांत हो जाता है ॥ १-२ ॥

अथ सर्वदिग्गमननक्षत्रज्ञानम् ।

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥ १ ॥

हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सब दिशाओं की यात्रा में शुभ हैं। और पुष्य नक्षत्र विद्यारम्भ में बृहस्पति के समान, यात्रा में सिद्धिकारक है ॥ १ ॥

अथ योगिनीविचारः ।

नव[९] भूम्यः[१] शिव[११]वह्नयो[३]ऽक्ष[५]विश्वे[१३]ऽ-
[१२]र्क[८]कृताः[४] शक्र[१४]रसा[६]स्तुरङ्ग[७]तिथ्यः[१५] ।
द्वि[२] दिशो[१०]ऽमा[३०]वसवश्च[८] पूर्वतः स्यु-
स्तिथयः संमुखवामगा न शस्ताः ॥ १ ॥

नवमी-प्रतिपदा को पूर्वदिशा में, एकादशी-तृतीया को आग्नेय दिशा में, त्रयोदशी-पञ्चमी को दक्षिणदिशा में, द्वादशी-चौथ को नैर्ऋत्य दिशा में, चतुर्दशी-छठको पश्चिमदिशा में, पूर्णमासी-सप्तमी को वायव्यदिशा में, दशमी-द्वितीया को उत्तर में और अमावस-अष्टमी को ईशान दिशा में योगिनी का वास होता है, यह यात्रा में संमुख और बायें अशुभ होती है ॥ १ ॥

अथ योगिनीचक्रम् ।

पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
९।१	३।११	१३।५	१२।४	१४।६	१५।७	१०।२	३०।८	तिथि

अथ काल-पाशयोगयोर्विचारः ।

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो
वारेऽर्काद्ये संमुखे तस्य पाशः ।

१—तथा चोक्तं विजयकल्पलतायाम्—
पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनी गमने हिता ।
वामसंमुखयोर्नेष्टा वायुमेवं विचिन्तयेत् ॥ १ ॥

रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ
यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ ॥ १ ॥

उत्तर दिशा से लेकर रवि-चन्द्र आदि वारों में कालयोग विपरीत क्रम से रहता है। उसका क्रम इस प्रकार है—

रविवार को उत्तर में, सोमवार को वायव्य में, मंगल को पश्चिम में, बुध को नैऋत्य में, बृहस्पति को दक्षिण में, शुक्र को आग्नेय में और शनैश्चर को पूर्वदिशा में काल रहता है। और काल के संमुख पाश रहता है उसका क्रम यह है—रवि को दक्षिण में, सोम को आग्नेय में, मंगल को पूर्व में, बुध को ईशान में, बृहस्पति को उत्तर में, शुक्र को वायव्य में और शनैश्चर को पश्चिम में पाश रहता है।

काल और पाश दोनों ही रात्रि में विपरीत रहते हैं। जैसे रविवार की रात्रि को दक्षिण में काल और उत्तर में पाश रहता है। इसी प्रकार सोम आदि की रात्रि में भी काल-पाश का विचार जान लेना चाहिए। काल और पाश दोनों ही यात्रा और युद्ध में संमुख वर्जित हैं॥ १ ॥

अथ काल-पाशचक्रम् ।

र०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	वार
उ०	वा०	प०	नै०	द०	आ०	पू०	दिन में काल की दिशा.
द०	आ०	पू०	ई०	उ०	वा०	प०	दिन में पाश की दिशा.
द०	आ०	पू०	ई०	उ०	वा०	प०	रात्रि में काल की दिशा.
उ०	वा०	प०	नै०	द०	आ०	पू०	रात्रि में पाश की दिशा.

अथ यात्रायामनिष्टलग्नज्ञानम् ।

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः ।
तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ १ ॥

कुम्भ लग्न और कुम्भ राशि का नवांश इन दोनों का त्याग यात्रा में अवश्य करे। क्योंकि इन दोनों में यात्रा करनेवाले राजा का मनोरथ पद-पद में नष्ट होता है ॥ १ ॥

अथ मृत्युयोगः ।

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा
स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते ।
लग्नगास्तदधिपा यदाथवा
स्युर्गतं हि नृपतेर्मृतिप्रदम् ॥ १ ॥

जन्म राशि से किंवा जन्मलग्न से आठवाँ लग्न यात्रा का हो अथवा शत्रु की राशि से छठा लग्न यात्रा का हो अथवा इन राशियों के स्वामी लग्न में हों तो यात्रा करनेवाले राजा की यात्रा मृत्यु देनेवाली होती है ॥ १ ॥

अथ वाञ्छितयोगः ।

लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमस्थे
यात्रा प्रोक्ता वाञ्छितार्थैकदात्री ।
अम्भोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं
नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥ १ ॥

मीन और कुंभ लग्न तथा जलचर-राशि के नवांश को छोड़ अन्य लग्न हो अथवा लग्न में चन्द्रमा हो किंवा वर्गोत्तम में हो अर्थात् जिस राशि का चन्द्रमा हो उसी राशि का नवांश हो तो यात्रा वाञ्छित फल को देनेवाली होती है । जलचर लग्न में या

जलचर राशि के नवांश में की हुई नाव की यात्रा सब सिद्धियों की देनेवाली होती है ॥ १ ॥

अथ लग्नफलम् ।

द्विग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता
यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयञ्च
कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥ १ ॥

यात्रा काल में दिग्द्वार राशि की लग्न में यात्रा करे तो शुभ है अर्थात् जिस दिशा को जानेवाला हो उसी दिशा की लग्न हो तो द्विग्द्वार जानिये, तथा दाहने हो तो भी शुभ है । उस लग्न में यात्रा करने से अर्थ और जय की प्राप्ति हो, तथा विलोम अर्थात् पीछे, बायें लग्न का वास हो तो हानि, विनाश और शत्रुभय होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा भी विचारना चाहिए ॥ १ ॥

अथ लग्नवास-चन्द्रवासचक्रम् ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
मेष सिंह धन	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चिक मीन	राशि

अथ कालवर्ज्यज्ञानम् ।

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना ।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाभिजित्॥१॥

पूर्व दिशा को छोड़, अन्य दिशाओं में यात्रा करने के लिये प्रातःकाल, पश्चिम को छोड़ अन्य दिशाओं की यात्रा में गोधूलि

काल, उत्तर दिशा को छोड़ अन्य दिशाओं की यात्रा में निशीथ (आधीरात का समय), दक्षिण को छोड़ अन्य दिशाओं का यात्रा में अभिजित् मुहूर्त शुभ होता है अर्थात्—प्रातःकाल पूर्व दिशा को, सायंकाल पश्चिम दिशा को, अर्द्धरात्रि में उत्तर दिशा को और अभिजित्[1] मुहूर्त में दक्षिण दिशा को न जावे ॥ १ ॥

अथ वर्णनिर्णयः ।

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीना-
मृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् ।
चौराणामपि शकुनैरुक्ता
भवति मुहूर्तादपि मनुजानाम् ॥ १ ॥

राजाओं को योगसिद्धि, ब्राह्मणों को नक्षत्रगुण, चोरों को शकुनबल, और मनुष्यों को मुहूर्तबल लेना चाहिए ॥ १ ॥

अथ पूर्वादियात्रायां वाहनानि ।

प्राच्यां गच्छेद् गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ।
दिशि प्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥ १ ॥

पूर्वदिशा में हाथी की सवारी पर, दक्षिणदिशा में रथ पर, पश्चिम में घोड़े पर, उत्तर में पालकी आदि की सवारी पर राजा को यात्रा करनी चाहिए ॥ १ ॥

अथावश्यके यात्रायां दिशादोहदम् ।

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम् ।
भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ॥ १ ॥

---

१ अभिजित् मुहूर्त का विवरण संवत्सर प्रकरण में आ चुका है । उसका आशय यह है कि दिन के आठवें मुहूर्त का नाम अभिजित् है तथा दिन के पन्द्रहवें भाग को मुहूर्त कहते हैं ।

पूर्वदिशा में घी, दक्षिण में तिल, चावल और पश्चिम में मछली खाकर तथा उत्तर में दूध पीकर यात्रा करे ॥ १ ॥

अथ दिशादोहदचक्रम् ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
घृत	तिल, चावल	मछली	दूध	भक्ष्य

अथ चन्द्रवासज्ञानम् ।

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥

मेष, सिंह और धन राशि का चन्द्रमा पूर्वदिशा में; वृष, कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिणदिशा में; तुला, मिथुन और कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक और मीन का चन्द्रमा उत्तरदिशा में वास करता है ॥ १ ॥

अथ चन्द्रवासचक्रम् ।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१	२	३	४	
५	६	७	८	राशि
९	१०	११	१२	

अथ चन्द्रफलम् ।

सम्मुखे त्वर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ।
पृष्ठे शोकश्च सन्तापो वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥ १ ॥

सम्मुख चन्द्रमा अर्थलाभकारक, दक्षिण चन्द्र सुखसम्पत्ति देनेवाला, पृष्ठ चन्द्र शोक-संताप देनेवाला और वाम चन्द्रमा धन का क्षय करनेवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रस्थानप्रकारः ।

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलम्बो
भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ।
क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं
सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥ १ ॥

यात्राकाल के निश्चित होने पर किसी आवश्यक कार्य से यदि यात्रा में विलम्ब हो तो ब्राह्मण जनेऊ, क्षत्रिय हथियार, वैश्य शहद, शूद्र उत्तम फल अथवा जो वस्तु अधिक प्रिय हो, उस वस्तु का प्रस्थान यात्रा की दिशा में करे। उसके बाद आवश्यक कार्य हो जाने पर यात्रा करे ॥ १ ॥

अथ प्रस्थानदिनप्रमाणम् ।

पूर्वे दिनानि सप्तैव याम्ये पञ्च दिनानि च ।
पश्चिमे दिवसांस्त्रीन्वै दिनानां द्वयमुत्तरे ॥ १ ॥

पूर्वदिशा का प्रस्थान सात दिन तक, दक्षिण दिशा का पाँच दिन तक, पश्चिमदिशा का तीन दिन तक, और उत्तरदिशा का प्रस्थान दो दिन तक रखना उचित है ॥ १ ॥

अथ प्रस्थानप्रमाणज्ञानम् ।

प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पञ्च
केचिच्छतद्वयमुशन्ति दशैव चान्ये ।
सम्प्रस्थितो य इह मन्दिरतः प्रयातो
गन्तव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्यम् ॥ १ ॥

पाँच सौ धनुष पर्यन्त प्रस्थान धरे, धनु चार हाथ लम्बा होता है और कोई आचार्य कहते हैं कि दो सौ धनुष पर प्रस्थान करे और किसी का मत यह है कि दश धनुष पर्यन्त प्रस्थान करना उचित है । अपने मकान से यात्रा करनेवाली दिशा में प्रस्थान रखना चाहिए ॥ १ ॥

अथ दुग्धादित्याज्यम् ।

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रं
क्षौरं त्याज्यं पञ्चरात्रं च पूर्वम् ।
क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन्वमिश्च
त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनम् ॥ १ ॥

यात्रा के तीन दिन पूर्व दूध और पाँच दिन पहिले क्षौर वर्जित है यात्रा के दिन शहद, तेल और वमन यत्नपूर्वक राजा को वर्जित करना चाहिए ॥ १ ॥

अथ वारदोहदम् ।

रसालां पायसं काञ्जीं शृतं दुग्धं तथा दधि ।
पयोऽश्रितं तिलान्नं च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥ १ ॥

रविवार को शिखरन, सोम को खीर, भौम को कांजी, बुध को पका हुआ दूध, बृहस्पति को दही, शुक्रवार को कच्चा दूध, शनैश्चर को तिल मिला भात दोहद है । जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन में कहे हुए दोहद को भक्षण करके यात्रा करे तो शुभ होता है ॥ १ ॥

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
शक्कर	पायस	कांजी	पका दूध	दही	कच्चा दूध	तिलान्न	दोहद

अथ नक्षत्रदोहदम् ।

कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि
त्याज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा ।
तद्वत्पायसमेव चाषपललं मार्गं च शाशं तथा
षाष्टिक्यं च प्रियंग्वपूपमथवा चित्राण्डजान्सत्फलम् १
कौर्मं सारिकगौधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हया-
दृक्षे स्यात्कृशरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा ।
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवं क्रमा-
द्भक्ष्याभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान्भक्षेत्तथाऽलोकयेत् २

अश्विनी में पकाये हुए खड़े उड़द, भरणी में तिल मिले चावल, कृत्तिका में उड़द, रोहिणी में गौ का दही, मृगशिरा में गौ का घी, आर्द्रा में गौ का दूध, पुनर्वसु में हरिण का मांस, पुष्य में हरिण का रुधिर, आश्लेषा में खीर, मघा में नीलकण्ठ पक्षी का मांस, पूर्वाफाल्गुनी में मृग (हरिण) का मांस, उत्तराफाल्गुनी में खरगोश का मांस, हस्त में साठी का चावल, चित्रा में काकुनि, स्वाती में अपूप (पुआ), विशाखा में अनेक प्रकार के पक्षियों का मांस, अनुराधा में उत्तम फल, ज्येष्ठा में कछुआ का मांस, मूल में मैना पक्षी का मांस, पूर्वाषाढ़ में गोह का मांस, उत्तराषाढ़ में शाही जानवर का मांस, अभिजित् में मूंग आदि हविष्यान्न; श्रवण में खिचड़ी, धनिष्ठा में मूंग-भात, शतभिषा में जौका आटा, पूर्वभाद्रपद में मछली-भात, उत्तरभाद्रपद में अनेक प्रकार का पका हुआ अन्न, रेवती में दही-भात दोहद है । जिस नक्षत्र में, जिस दोहद का विधान है उसमें उस दोहद का भक्षण करे, यदि भक्षण के योग्य न हो तो उस दोहद-वस्तु को देख कर यात्रा करे ॥ १–२ ॥

अथ नक्षत्रदोहदचक्रम् ।

नक्षत्र	दोहद	नक्षत्र	दोहद
अ.	पकाये हुए खड़े उड़द	स्वा.	अपूप अर्थात् पुआ
भ.	तिल चावल	वि.	अनेक प्रकार के पक्षियों का मांस
कृ.	उड़द	अनु.	उत्तम फल
रो.	गौ का दही	ज्येष्ठा.	कछुआ का मांस
मृ.	गोघृत	मू.	मैना पक्षी का मांस
आ.	गोदुग्ध	पू.षा.	गोह का मांस
पुन.	हरिण का मांस	उ. षा.	शाही का मांस
पुष्य	हरिण का रुधिर	अभिजित्	मूंग आदि हविष्यान्न
आश्लेषा	खीर	श्र.	कृशरान्न (खिचड़ी)
मघा	नीलकण्ठ पक्षीकामांस	ध.	मूंग-भात
पू. फा.	मृग का मांस	श.	यवपिष्ट (जौका आटा)
उ. फा.	खरगोश का मांस	पू. भा.	मछली-भात
ह.	साठी का चावल	उ. भा.	अनेक प्रकार का पका हुआ अन्न
चि.	काकुनि	रे.	द -भात

अथ तिथिदोहदम् ।

पक्षादितोऽर्कदलतण्डुलवारिसर्पिः
श्राणा हविष्यमपि हेमजलं त्वपूपम् ।
भुक्त्वा व्रजेद्रुचकमम्बु च धेनुमूत्रं
यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्रान् ॥ १ ॥

प्रतिपदा को मदार का पत्र, द्वितीया को चावल धोया जल, तृतीया को घी, चौथ को पतला हलुआ, पञ्चमी को हविष्यान्न, छठ को सुवर्ण धोया जल, सप्तमी को पुआ, अष्टमी को बिजौरा नींबू, नवमी को कमल-जल, दशमी को गोमूत्र, एकादशी को जौ का भात, द्वादशी को खीर, त्रयोदशी को गुड़, चतुर्दशी को रुधिर और पूर्णमासी तथा अमावास्या को मूंग-भात दोहद है। जिस तिथि में यात्रा करनी हो उसमें कहे हुए दोहद का भक्षण, स्पर्श तथा अवलोकन आदि करके यात्रा करने से कार्य-सिद्धि होती है ॥१॥

अथ तिथिदोहदचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५ ३०
मदार का पत्र	चावल धोयाजल	घृत	लपसी	हविष्यान्न	सुवर्ण धोयाजल	अपूप (पुआ)	बिजौरा नींबू	कमल का जल	गोमूत्र	यव का भात	पायस (खीर)	गुड़	रुधिर	मूंग-भात

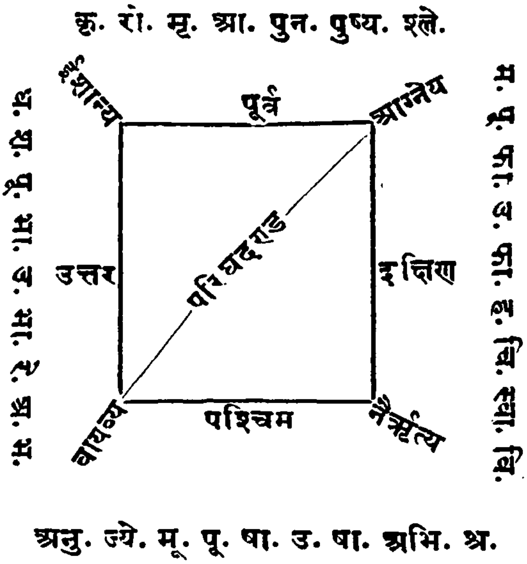
अथ परिघदण्डज्ञानम् ।

भानि स्थाप्यान्यग्न्यधिदिक्षु सप्त सप्तानलर्क्षतः ।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं परिघं नैव लङ्घयेत् ॥ १ ॥

पूर्वादि चारों दिशाओं में कृत्तिका आदि सात सात नक्षत्र वास करते हैं और वायव्य दिशा से आग्नेय दिशा तक गई हुई रेखा का

नाम परिघ-दण्ड है । उसका उल्लंघन (नाँघना) यात्रा में वर्जित है अर्थात् उत्तर-पूर्व के नक्षत्रों में दक्षिण-पश्चिम की यात्रा और दक्षिण-पश्चिम के नक्षत्रों में उत्तर-पूर्व की यात्रा वर्जित है ॥ १ ॥

अथ परिघदण्डचक्रम् ।



अथ होराफलं तत्रादौ सूर्यहोराफलानि ।

काकत्रयं विप्रचतुष्टयं च
बभ्रुद्वयश्चाष्टवृषाम्बराणि ।
मिलन्ति मार्गे रजकी कुमारी
सूर्यस्य होराचलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

सूर्य की होरा में यात्रा करे तो तीन कौवा, चार ब्राह्मण, दो नेवले, आठ बैल, वस्त्र तथा धोबी की कन्या रास्ते में मिलते हैं ॥ १ ॥

अथ चन्द्रहोराफलम् ।

गोपुष्पमेषाश्च मृदङ्गभेरी
　　नारीद्वयं बभ्रुखगः क्रमेण ।
काकस्तुरङ्गो द्विजयुग्ममिन्दो-
　　र्होराप्रयाणे चलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

गौ, फूल, मेढ़ा, मृदङ्ग, बड़ा नगाड़ा या ढोल, दो स्त्री, नेवला, पक्षी, कौवा, घोड़ा और दो ब्राह्मण ये जीव चन्द्रमा की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

अथ भौमहोराफलम् ।

मार्जारयुद्धं कलहं कुटुम्बे
　　रजस्वलानारित्रियं च षण्ढः ।
रण्डाग्निनग्नं भवनस्य दाहः
　　कुजस्य होराच्चलितस्य पुंसः ॥ १ ॥

बिलार-युद्ध, कुटुम्ब में कलह, तीन रजस्वला स्त्रियाँ, नपुंसक (हिजड़ा), विधवा स्त्री, अग्नि, नङ्गा, जलता हुआ मकान इतने पदार्थ मङ्गल की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलते हैं ॥१॥

अथ बुधहोराफलम् ।

बाला सलज्जा जलपूर्णकुम्भं
　　पुष्पान्नवामे खलु चाषपक्षी ।
श्रीमान् कुमारो विधुनन्दनस्य
　　होराप्रयाणे शकुना मिलन्ति ॥ १ ॥

लज्जाशील स्त्री, जल-पूर्ण कलश, फूल, अन्न, वाम-मार्ग में

नीलकण्ठ पक्षी, धनवान् और बालक इतने पदार्थ बुध की होरा में यात्रा करने पर मार्ग में मिलें ॥ १ ॥

अथ गुरुहोराफलम् ।

दैवज्ञधेनुद्विजबभ्रुवाहा
राज्ञः कुमारः खलु पुष्पकं च ।
सपुत्रका स्त्री च घटोऽम्बुपूर्णः
सुरेज्यहोरा शकुनं करोति ॥ १ ॥

ज्योतिषी पण्डित, गौ, ब्राह्मण, नेवला, सवारी, राजा का बालक, फूल, पुत्र-समेत स्त्री और जल भरा घट ये शकुन बृहस्पति के होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलते हैं ॥ १ ॥

अथ शुक्रहोराफलम् ।

धेनुर्द्विजः काकचतुष्टयश्च
नपुंसको वा गणितागमज्ञः ।
मद्यश्च मांसं गणिका च शूद्रा
मिलन्ति मार्गे यदि शुक्रहोरा ॥ १ ॥

गौ, ब्राह्मण, चार कौआ, नपुंसक, ज्योतिषी, मदिरा, मांस, वेश्या और शूद्र इतने पदार्थ शुक्र की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलें ॥ १ ॥

अथ शनिहोराफलम् ।

खरः पिशाचो यदि वाऽथ वह्नि-
र्नपुंसको वा पुरुषः प्रमत्तः ।

रजस्वला भानुसुतस्य होरा
प्रस्थानकाले शकुनं करोति ॥ १ ॥

गधा, पिशाच, अग्नि, नपुंसक, मतवाला पुरुष, रजस्वला स्त्री इतने पदार्थ शनैश्चर की होरा में यात्रा करने से मार्ग में मिलें॥१॥

अथ मार्गमध्ये प्रमिताक्षरायां शुभशकुनयोगः।

लग्ने गीष्पतिशुक्राणां ब्राह्मणाः सम्मुखाः स्त्रियः।
बुधशुक्रौ च केन्द्रस्थौ सवत्सा गौः प्रदृश्यते ॥१॥
चन्द्रसूर्यौ च भवतो दशमस्थौ यदाथवा।
दीपादर्शौ सुमनसो रजका धौतवाससः ॥ २ ॥
सुतस्थाने यदा सौम्यो वृषो वृद्धस्तु सम्मुखः।
गुरुश्चेत्पञ्चनवमो दक्षभागे च वायसः ॥ ३ ॥
चन्द्रो गुरुश्च सहजे श्वानो वामाङ्गभागतः।
सर्वे कर्मायभवने भारद्वाजोऽथ नाकुलः ॥ ४ ॥
चाषस्य दर्शनं वा स्याद्वामाङ्गेऽत्यन्तदुर्लभम्।
आदित्यो राहुसौरी च सहजस्थौ कुमारिका ॥५॥
प्रौढानां सुभगानां वा दर्शनं सर्वकामदम्।
षष्ठे तृतीये कर्मायेे भौमश्चेत्तत्फलं भवेत् ॥ ६ ॥
दास्यो वेश्या सुरा मांसं लाभश्चैव सुनिश्चितः।
सप्ताष्टपञ्चमे यस्य जीवो ज्ञो वात्र वर्त्तते ॥ ७ ॥
आदर्शपुष्पमांसानि सुरादर्शश्च लाभदः।
राहुर्भौमश्च मन्दश्च लग्नाद्यदि तृतीयगः॥
उद्धृतं गोमयं पश्येच्छीघ्रं लाभं धनं दिशेत् ॥ ८ ॥

यात्रा के लग्न में बृहस्पति शुक्र हों तो सम्मुख ब्राह्मण और

स्त्री मिले । बुध शुक्र केन्द्र में हों तो सहित बछड़ा के गौ मिले । चन्द्रमा सूर्य दशवें हों तो दीपदर्शन हो, किंवा फूल नज़र में आवे अथवा कपड़ा धोते धोबी मिले । पञ्चम स्थान में बुध हो तो संमुख बँधा बैल मिले । बृहस्पति यदि पाँचवें या नवें स्थान में हो तो दक्षिण भाग में कौआ मिले । चन्द्रमा और बृहस्पति तीसरे स्थान में हों तो वामभाग में कुत्ता मिले । संपूर्ण ग्रह यदि दशवें या ग्यारहें स्थान में हों तो भदूल पक्षी मिले किंवा नेवला मिले अथवा नीलकण्ठ पक्षी वाममार्ग में मिले वह अत्यन्तदुर्लभ है । सूर्य, राहु और शनैश्चर तीसरे हों तो कुमारिका मिले, किंवा युवती स्त्री, अथवा सौभाग्यवती स्त्री मिले, इनका दर्शन सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाला होता है व छठे, तीसरे और दशवें मङ्गल हो तो भी पूर्वोक्त फल का लाभ हो तथा दासी, वेश्या और मदिरा-मांस देखे तो वे भी लाभदायक हैं । सातवें, आठवें और पाँचवें बृहस्पति वा बुध हों तो दर्पण, फूल, मांस, मदिरा देखे वे भी लाभकारी हैं । राहु, मङ्गल और शनैश्चर लग्न से तीसरे स्थान में हों तो पशु को गोबर करते देखे वह शीघ्र ही धन-लाभ कराता है ॥ १-८ ॥

अथ शुभशकुनज्ञानम् ।

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुला बद्धैकपश्वामिषम् ।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥१॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शावं रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ।

भारद्वाजनृयानवेदनिनदा माङ्गल्यगीताङ्कुशा
दृष्टाः सत्फलदःप्रयाणसमयेरिक्तो घटःस्वानुगः॥२॥

ब्राह्मण, घोड़ा, हाथी, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसों, कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर-पक्षी, नीलकण्ठ, नेवला, बँधा हुआ पशु, मांस, शुभवचन, कुसुम (फूल), ऊख, पूर्णकलश, छत्र, मट्टी, कन्या, रत्न, पगड़ी, सफ़ेद बैल, मदिरा, बालक समेत स्त्री, दीपक, जलती हुई अग्नि, दर्पण, अञ्जन, धुले वस्त्र लिये धोबी, मछली, घी, सिंहासन, रोदनरहित मुर्दा, पताका, शहद, छाग, अस्त्र, गोरोचन, भर्दूलपक्षी, पालकी, वेदध्वनि, माङ्गल्यगीत और अंकुश इतने शकुन यात्रा के समय में मिलें तो शुभफल देवें। और छूंछा घड़ा अपने पीछे मिले तो भी शुभ है॥ १—२ ॥

अथ अशुभशकुनज्ञानम् ।

वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यङ्गक्षुधार्त्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरटः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥१॥
काषायी गुडतक्रपङ्कविधवा कुब्जा कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुड्गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्यानदृष्टाःशुभाः२॥

बाँझ स्त्री, चमड़ा, भूसा, हाड़, सर्प, नमक, अङ्गार (निर्धूम अग्नि), ईंधन, हिजड़ा, विष्ठा, तेल, मतवाला, चर्बी, औषध, शत्रु, जटाधारी संन्यासी, तृण, रोगी, नंगा, उबटन लगाये हुए

मनुष्य, खुले बालवाला, पतित, अङ्गरहित, भूखा, रुधिर, स्त्री का रज, गिर्गिट, अपना घर जलना, बिलार की लड़ाई, छींक, लाल वस्त्र पहिने मनुष्य, गुड़, माठा, कीचड़, विधवा स्त्री, कुबड़ी स्त्री, अपने कुटुम्ब में झगड़ा, वस्त्रादि का देह पर से गिर पड़ना, भैंसों की लड़ाई, काला अन्न, कपास, वमन होना, दाहने ओर गधे का शब्द होना, क्रोध की अधिकता, गर्भवती स्त्री, मुण्डे शिरवाला, ओदे वस्त्रवाला, दुर्वचन, अन्धा, बहिरा और रजस्वला स्त्री इतने दुःशकुन हैं ये यात्रा में शुभ नहीं हैं ॥ १–२ ॥

अथ दुःशकुनपरिहारः ।

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादशं व्रजेत् ।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न कचिद्व्रजेत् ॥१॥

पहले पहल कोई दुःशकुन हो तो स्थिर होकर ग्यारह श्वासें लेकर चले, दूसरी बार दुःशकुन हो तो स्थिर होकर सोलह श्वासें लेकर चले, तथा तीसरी बार दुःशकुन हो तो यात्रा कभी न करे किंतु लौट आवे ॥ १ ॥

अथ चन्द्रघातविचारः ।

भू[1]प[5]श्वाङ्क[9]द्व्य[2]ङ्ग[6]दिग्[10]वह्नि[3]सप्त[7]-
वेदा[4]ष्टे[8]शा[11]र्का[12]श्च घाताख्यचन्द्रः ।
मेषादीनां राजसेवाविवादे
वर्ज्यो युद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ॥१॥

मेष राशि का पहला, वृष का पाँचवाँ, मिथुन का नवाँ, कर्क का दूसरा, सिंह का छठाँ, कन्या का दशवाँ, तुला का तीसरा, वृश्चिक का सातवाँ, धन का चौथा, मकर का आठवाँ, कुम्भ राशि

का ग्यारहवाँ और मीन का बारहवाँ चन्द्रमा घातक होता है। यह घात चन्द्र राजसेवा, विवाद, यात्रा और युद्ध में वर्जित है । और कार्यों में निषिद्ध नहीं है ॥ १८ ॥

अथ घातचन्द्रचक्रम् ।

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	रा०
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घात

अथ तिथिघातज्ञानम् ।

गोस्त्री झषे घाततिथिस्तु पूर्णा
भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा ।
कौर्प्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता
जया धनुः कुम्भहरौ न शस्ताः ॥ १ ॥

वृष, कन्या और मीनराशिवाले प्राणियों को पूर्णातिथि घात है । मिथुन व कर्क को भद्रा घात है । वृश्चिक व मेष को नन्दा घात है । मकर व तुला को रिक्ता घात है । धनु, कुम्भ और सिंह को जया घात है इस कारण यात्रा आदि में वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ तिथिघातचक्रम् ।

वृष, कन्या, मीन	मिथुन, कर्क	वृश्चिक, मेष	मकर, तुला	धन, कुम्भ, सिंह	राशि
पूर्णा ५। १०। १५	भद्रा २। ७। १२	नन्दा १। ६। ११	रिक्ता ४। ९। १४	जया ३। ८। १३	घात तिथि

अथ नक्षत्रघातज्ञानम् ।

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम् ।
याम्यब्राह्मेशसार्पं च मेषादेर्घातभं न सत् ॥१॥

मेषराशिवाले मनुष्य को मघा नक्षत्र घात, वृषराशि को हस्त घात, मिथुनराशि को स्वाती घात, कर्क को अनुराधा घात, सिंह को मूल घात, कन्या को श्रवण घात, तुला को शतभिष घात, वृश्चिक को रेवती घात और धन को भरणी घात जानना चाहिए। मकरराशिवाले को रोहिणी नक्षत्र घात, कुम्भ को आर्द्रा घात है और मीन को आश्लेषा घात जानिये ये सब यात्रा में अशुभ हैं ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रघातचक्रम् ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र

अथ घातलग्नम् ।

१ २ ४ ७ १० १२ ९ ८ ६ ११ ३ ५
भूमिद्व्यब्ध्यद्रिदिक्सूर्याङ्काष्टाङ्केशाग्निसायकाः ।
मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥ १ ॥

मेषराशिवाले को मेषलग्न घात है। वृषराशि को वृष लग्न घात है। मिथुनराशिवाले को कर्कलग्न घात है। कर्कराशि को तुला लग्न घात है। सिंहराशिवाले को मकर लग्न घात है। कन्याराशि को मीन लग्न घात है। तुलाराशि को कन्या लग्न घात है। वृश्चिक राशि को वृश्चिक लग्न घात है। धनराशि को धन लग्न घात है। मकरराशि को कुम्भ लग्न घात है। कुम्भराशि को मिथुन लग्न घात है। मीनराशि को सिंह लग्न घात है इसलिये यात्रा में त्याज्य हैं ॥ १ ॥

अथ घातलग्नचक्रम् ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
मेष	वृष	कर्क	तु.	म.	मीन	क.	वृ.	ध.	कुं.	मि.	सिं.	घात लग्न

अथ सर्वाङ्कविचारः ।

तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी ।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्या-
त्स्थानत्रयेङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ १ ॥

जिस दिन यात्रा करनी हो, उस दिन में शुक्लपक्ष की परीवा से लेकर जो तिथि हो और अश्विनी से लेकर जो नक्षत्र हो, रविवार से लेकर जो वार हो, इनकी संख्याओं के योग को तीन स्थानों में स्थापन करके प्रथम स्थान में सात का, दूसरे स्थान में आठ का और तीसरे स्थान में तीन का भाग देवे उन तीनों स्थानों में से या पहले स्थान में जो शून्य बचे तो यात्रा करनेवाला दुःख पावे। दूसरे स्थान में शून्य बचे तो धन का क्षय हो। तीसरे स्थान में शून्य बचे तो मृत्यु हो। और यदि तीनों स्थानों में अङ्क शेष बचें तो यात्रा करनेवाला सुखी और विजयी होता है ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रनाडीनिषिद्धज्ञानम् ।

पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां
भूपप्रकृत्युग्रतुरङ्गमाः स्युः ।
स्वातीविशाखेन्द्रभुजङ्गमानां
नाड्यो निषिद्धा मनुसंमिताश्च ॥ १ ॥

तीनों पूर्वाओं की आदि की सोलह घड़ी, कृत्तिका की इक्कीस घड़ी, मघा की ग्यारह घड़ी, भरणी की सात घड़ी और स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा और आश्लेषा इन नक्षत्रों की चौदह चौदह घड़ी यात्रा में निषिद्ध होती हैं ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रनाड़ीनिषिद्धचक्रम् ।

पू. ३	कृ.	मघा	भ.	स्वाती	वि.	ज्येष्ठा	आश्लेषा	नक्षत्र
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	त्याज्यघटिका

अथ महाडलदोषः ।

रवेर्भतोऽब्जभोन्मितिर्नगावशेषिताद्व्यगा ।
महाडलो न शस्यते त्रिषण्मिताभ्रमो भवेत् ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र में सूर्य स्थित हो उससे लेकर चन्द्रमा के नक्षत्रतक जितनी संख्या हो उसमें सात का भाग देने से यदि दो या सात बचें तो महाडल दोष होता है । और यदि तीन व छः बचें तो भ्रमण दोष होता है ये दोनों दोष यात्रा में निषिद्ध होते हैं ॥१॥

अथ डिम्बरयोगः ।

शशाङ्कभं सूर्यभतोऽत्र गण्यं
पक्षादितिथ्या दिनवासरेण ।
युतं नवाप्तं नगशेषकं चे-
त्स्याड्डिम्बरं तद्गमनेऽतिशस्तम् ॥ १ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने जितनी संख्या हो उसमें शुक्ल या कृष्ण पक्ष की वर्तमान तिथि की संख्या को जोड़

कर नव का भाग देने से यदि सात शेष बचें तो हिम्बर योग होता है वह यात्रा में अति शुभ है ॥ १ ॥

अथ पन्थाराहुज्ञानम् ।

स्युर्धर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथो भानि कामे। वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षेऽथ रोहिण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणि पंथादिराहौ १

अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिष, विशाखा और अनुराधा इन नक्षत्रों की धर्मसंज्ञा है। भरणी, पूर्वाभाद्रपद, ज्येष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु, मघा और स्वाती इनकी अर्थसंज्ञा है। कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित् और पूर्वाफाल्गुनी इनकी कामसंज्ञा है। रोहिणी, पूर्वाषाढ, मृगशिरा, रेवती, उत्तराषाढ, उत्तराफाल्गुनी और हस्त इनकी मोक्षसंज्ञा है। यही पन्था राहुचक्र है इसे यात्रा में विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ पथिराहुचक्रम् ।

अ.	पुष्य	आश्ले.	वि.	अनु.	ध.	श.	धर्म
भ.	पुन.	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्र.	पू.भा.	अर्थ
कृ.	आ.	पू. फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	काम
रोहिणी	मृ.	उ. फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्ष

अथ पथिराहुफलम् ।

धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी
वित्तगे धर्ममोक्षस्थितिः शस्यते ।

कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभनो
मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते ॥ १ ॥

इस पहले चक्र में धर्म मार्ग में सूर्य के रहते यदि चन्द्रमा अर्थ वा मोक्ष में स्थित हो, तो यात्रा शुभ होती है और अर्थ मार्ग में सूर्य हो, धर्म वा अर्थ में चन्द्रमा हो, तो भी शुभ जानिए। जैसे काम में सूर्य हो, धर्म, मोक्ष और अर्थ में चन्द्रमा हो, तो यात्रा को शुभ जानिए। और मोक्ष में सूर्य हो तथा धर्मसंज्ञक नक्षत्र में चन्द्रमा हो, तो भी शुभ जानिए अन्यथा अशुभ जानिए।

अथ द्वितीयप्रकारेण पन्थाराहुफलम्।

धर्ममार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि।
तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विविधैः शुभैः ॥ १ ॥

यदि धर्ममार्ग में सूर्य और अर्थमार्ग में चन्द्रमा हो, तो यात्रा करने से शत्रुभय होता है ॥ १ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते।
संहारश्च भवेत्तत्र भङ्गो हानिः प्रजायते ॥ २ ॥

यदि धर्ममार्ग में सूर्य और उसी में चन्द्रमा भी हो तो संहार, भङ्ग और हानि होती है ॥ २ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि।
गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ३ ॥

यदि अर्थमार्ग में सूर्य और धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो, तो यात्रा करने से हाथी और बहुत सुख प्राप्त हो ॥ ३ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते।
प्रथमं जायते कार्यं पुनर्भङ्गो भविष्यति ॥ ४ ॥

यदि अर्थमार्ग में सूर्य हो और उसी में चन्द्रमा भी हो, तो यात्रा करने से पहले कार्य हो फिर भङ्ग हो ॥ ४ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षस्थिते यदि ।
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ५ ॥

यदि अर्थमार्ग में सूर्य हो और मोक्षमार्ग में चन्द्रमा हो, तो यात्रा करने से भूमि-लाभ, हर्षयुक्त और सुखी हो ॥ ५ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते ।
गजाश्वाश्च विलभ्यन्ते राजसन्मानसंभवात् ॥६॥

यदि काममार्ग में सूर्य हो और धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो, तो यात्रा करने से राजसम्मान तथा हाथी, घोड़ा भी मिलें ॥ ६ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे चैवार्थसंस्थिते ।
सकलं जायते तस्य विघ्नभङ्गो विनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥

यदि काममार्ग में सूर्य हो और चन्द्रमा अर्थमार्गी हो, तो सब कार्यों की सिद्धि और विघ्नभङ्ग हो ॥ ७ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिर्दिशेत् ॥ ८ ॥

यदि काममार्ग में सूर्य हो और चन्द्रमा मोक्षमार्गी हो, तो दारुण विग्रह और कार्यनाश हो ॥ ८ ॥

काममार्गे गते सूर्ये चन्द्रे मोक्षगतेऽपि वा ।
राज्ञो लाभो भवेत्तस्य स्वेष्टलाभं विनिर्दिशेत् ॥६॥

यदि काममार्गी सूर्य हो और मोक्षमार्गी चन्द्रमा हो, तो राज्यलाभ और सोना लाभ हो ॥ ६ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मस्थिते यदि ।
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्ध्यति ॥ १० ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और धर्ममार्ग में चन्द्रमा हो, तो सोना लाभ हो और सब कार्यों की सिद्धि हो ॥ १० ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये अर्थांशे चन्द्रमा यदि ।
विफलं तस्य कार्यं च चौरराजरिपोर्भयम् ॥ ११ ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और अर्थमार्ग में चन्द्रमा हो, तो कार्य निष्फल और चोर, राजा और शत्रु से भय हो ॥ ११ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे कामस्थिते यदि ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्ये च जयमेव च ॥ १२ ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और काममार्ग में चन्द्रमा हो, तो यात्रा करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं कार्य में विजय होता है ॥ १२ ॥

मोक्षमार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ।
विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥ १३ ॥

यदि मोक्षमार्ग में सूर्य हो और मोक्षमार्गी चन्द्रमा भी हो तो यात्रा करने से दारुण विग्रह तथा विघ्न हो ॥ १३ ॥

यात्रायुद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ।
व्यापारेषु च सर्वेषु पन्थाराहुः प्रशस्यते ॥ १४ ॥

यात्रा, युद्ध और विवाह में, ग्रामादि प्रवेश में और व्यापार में पन्थाराहु का विचार करना उचित है ॥ १४ ॥

अथ ग्रहाधीनेन शुभयोगज्ञानम् ।

स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः

सिध्यन्ति कार्याणि च पञ्चमेऽह्नि ।

राज्यास्पदं वा सुखदेशलाभं

मासस्य मध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥ १ ॥

यात्रा के लग्न में गुरु, बुध और शुक्र स्थित हों, तो पाँचवें दिन कार्य सिद्ध करें और राज्य, सुख और देश का लाभ करें अथवा एक मास में ग्रहभाव के युक्त होने से फल जानना चाहिए ॥१॥

अथ योगाधियोगयोगाधियोगाः ।

बुधेज्यभृगुपुत्राणामेकश्चेत्केन्द्रकोणगः ।

तदा योगोऽत्र गमने क्षेमो भवति भूभुजाम् ॥ १ ॥

अधियोगो भवेद्द्वाभ्यामत्र क्षेमजयो ध्रुवम् ।

त्रिभिर्योगाधियोगोऽत्र यशःक्षेमधनागमः ॥ २ ॥

बुध, बृहस्पति और शुक्र इन तीन ग्रहों में से एक ग्रह केन्द्र १।४।७।१० व त्रिकोण ६।५ में हो, तो योगसंज्ञक योग होता है उसमें यात्रा करने से राजाओं का कल्याण होता है। और इन तीनों ग्रहों में से दो ग्रह केन्द्र वा त्रिकोण में हों, तो अधियोगसंज्ञक योग होता है उसमें यात्रा करने से क्षेम और जय हो। तथा तीनों ग्रह केन्द्र वा त्रिकोण में हों, तो योगाधियोगसंज्ञक योग होता है उसमें यात्रा करने से यश, क्षेम और धनलाभ होता है। और किसी आचार्य के मत से योगाधियोग में भूमि का भी लाभ होता है ॥ १-२ ॥

अथ यात्रायां मासमध्ये तिथिचक्रं फलञ्च ।

पौषे पक्षत्यादिका द्वादशैवं
तिथ्यो माघादौ द्वितीयादिकास्ताः ।
कामात्तिस्रः स्युस्तृतीयादिवच्च
याने प्राच्यादौ फलं तत्र वक्ष्ये ॥ १ ॥
सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च
शून्यं नैःस्वं निस्वता मिश्रता च ।
द्रव्यक्लेशौ दुःखमिष्टाप्तिरर्थो
लाभः सौख्यं मङ्गलं वित्तलाभः ॥ २ ॥
लाभो द्रव्याप्तिर्धनं सौख्ययुक्तं
भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च ।
लाभः कष्टद्रव्यलाभौ सुखं च
कष्टं सौख्यं क्लेशलाभौ सुखं च ॥ ३ ॥
सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिश्च कष्टं
क्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थो धनं च ।
मृत्युर्लाभो द्रव्यलाभश्च शून्यं
शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥ ४ ॥

पौषमास से बारह महीनों का चक्र लिखे । उसके नीचे पौष महीने से बारह तिथि खड़ी परीवा से लिखे और माघ से द्वितीया आदि देकर बेंड़ी तिथि लिखे इसीप्रकार सब चक्र भरे अर्थात् फाल्गुन में तीज से खड़ी तिथि लिखे तथा चैत्र में चौथ से लिखे । इसीतरह से सब महीनों में लिखे । और तेरस तीज का एक फल

जानिये । चौथ चतुर्दशी का एक फल जानिये । पञ्चमी पूर्णमासी का एक फल जानिये । और एक पंक्ति में पूर्व आदि चारों दिशाओं का फल चक्र के क्रम से जानना ॥ १–४ ॥

अथ तिथिचक्रम् ।

मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्वा	दक्षिणा	पश्चिमा	उत्तरा
ति.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्यम्	क्लेशः	भीतिः	अर्थागमः
ति.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यम्	दरिद्रता	दरिद्रता	मिश्रता मिलापः
ति.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेशः	क्लेशः	इष्टाप्तिः	अर्थः
ति.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभः	सुखप्राप्तिः	मंगलम्	धनलाभः
ति.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभः	द्रव्याप्तिः	धनम्	सौख्यम्
ति.	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भीतिः	लाभः	मृत्युः	अर्थागमः
ति.	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभः	कष्टम्	द्रव्यलाभः	सुखम्
ति.	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टम्	सौख्यम्	क्लेशालाभः	सुखम्
ति.	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्यम्	लाभः	कार्यसिद्धिः	कष्टम्
ति.	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेशः	कष्टासिद्धिः	अर्थः	धनलाभः
ति.	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्युः	लाभः	द्रव्यलाभः	शून्यम्
ति.	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्यम्	सौख्यम्	मृत्युः	अत्यन्तकष्टम्

अथ युद्ध-यात्रा कथ्यते ।

राहुभुक्तानि ऋक्षाणि जीवपक्षस्त्रयोदश ।
मृतपक्षस्तु भोग्यानि कर्तरी तदधिष्ठितम् ॥ १ ॥
ततः पञ्चदशे ग्रस्तं चिन्त्यं युद्धे गमादिषु ।
जीवपक्षः शुभो ज्ञेयो मृतपक्षस्त्वशोभनः ॥ २ ॥
मृतपक्षाच्छुभं ग्रस्तं ग्रस्तभात्कर्तरी शुभा ।
मृतपक्षे सहस्रांशौ जीवपक्षे विधौ स्थिते ॥ ३ ॥
यात्रायां विजयस्तत्र विपरीते पराजयः ।
उभौ चेज्जीवपक्षस्थौ यात्रा तत्रापि शोभना ॥ ४ ॥
चेदुभौ मृत्युपक्षस्थौ रवीन्दू तत्र कष्टदौ ।
यायिनो जयदश्चन्द्रो जीवपक्षे व्यवस्थितः ।
भानुमान् जीवपक्षस्थः स्थायिनो विजयावहः ॥ ५ ॥

राहु के नक्षत्र से पहलेवाले तेरह नक्षत्र जीवपक्ष संज्ञक हैं। और आगेवाले तेरह नक्षत्र मृतपक्षसंज्ञक हैं। और जिस नक्षत्र में राहु स्थित हो वह नक्षत्र कर्तरीसंज्ञक है। और राहु के नक्षत्र से पन्द्रहवां नक्षत्र ग्रस्त संज्ञक है। इनका युद्ध यात्रा आदि में विचार करना उचित है। जीवपक्ष शुभ और मृतपक्ष अशुभ है। और मृतपक्ष से ग्रस्त और ग्रस्त से कर्तरी शुभ है। मृतपक्ष में सूर्य और जीवपक्ष में चन्द्रमा हो तो यात्रा करने से युद्ध में जय हो। और विपरीत अर्थात् मृतपक्ष में चन्द्रमा हो, जीवपक्ष में सूर्य हो तो यात्रा में पराजय हो। और दोनों सूर्य चन्द्रमा जीवपक्ष में हों तो यात्रा शुभ है। यदि चन्द्रमा सूर्य दोनों मृत्युपक्ष में हों, तो भी कष्टदायक हैं और जीवपक्ष

में चन्द्रमा हो, तो युद्ध में जानेवाले को अर्थात् युद्ध पर चढ़ जानेवाले को जयदायक है । यदि सूर्य जीवपक्ष में हो, तो स्थायी अर्थात् जो अपने क़िले में बैठा है उसकी जीत हो ॥ १–५ ॥

अथ यामराहुविचारः ।

अष्टासु प्रहरार्द्धेषु प्रथमाद्येष्वहर्निशम् ।
पूर्वस्यां वामतो राहुस्तुर्यां तुर्यां दिशं व्रजेत् ॥ १ ॥
यात्रायां दक्षिणे राहुर्युद्धकाले जयी भवेत् ।
पृष्ठे च समता ज्ञेया सम्मुखे वामकृत्युदः ॥ २ ॥

आठ प्रहरार्द्ध अर्थात् आधे २ पहर से पूर्वा आदि चौथी २ दिशा में राहु चलता है । सो युद्ध यात्रा में दहिने राहु जीत को देनेवाला है तथा पीछे सामान्य जानना और सम्मुख बायें मृत्युदायक है॥ १–२॥

अथ राहुचक्रम् ।

पू.	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४	दिनप्रहरार्द्धः
४॥	५	५॥	६	६॥	७	७॥	८	रात्रिप्रहरार्द्धः

अथ पञ्चस्वरचक्रज्ञानम् ।

कादिहान्ताँल्लिखेद्वर्णान् स्वराधोङञणोज्झितान् ।
तिर्यक्पंक्तिक्रमेणैव पञ्चत्रिंशत्प्रकोष्ठके ॥ १ ॥
नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वरादधः स्थितः ।
स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ॥ २ ॥
न प्रोक्ता ङञणा वर्णा नामादौ सन्ति ते नहि ।
चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमम् ॥ ३ ॥

यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः ।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥ ४ ॥
अस्वरो मेषसिंहालीरिःकन्यायुग्मकर्कटाः ।
धनुर्मीनावुकारःस्यादेकारश्च तुलावृषौ ॥ ५ ॥
ओस्वरो मृगकुम्भौ च राशीशास्तु ग्रहस्वराः ।
स्वराधःस्थापयेत्खेटान् राशेर्यो यस्य नायकः ॥ ६ ॥
अकारे सप्त ऋक्षाणि रेवत्यादिक्रमेण च ।
पञ्च पञ्च इकारादावेवमृक्षस्वरोदयः ॥ ७ ॥
अकारादिक्रमान्न्यस्य नन्दादितिथिपञ्चकम् ।
दिनस्वरोदयो नित्यं स्वस्वातिथ्यादिजायते ॥ ८ ॥
नभस्य मार्गवैशाखेष्वकारस्योदयो भवेत् ।
आश्विनश्रावणाषाढेष्विकारो नायकः स्मृतः॥ ९ ॥
उकारश्चैत्रपौषे स्यादेकारो ज्येष्ठकार्त्तिके ।
ओकार उदयं याति माघफाल्गुनमासयोः ॥ १० ॥
आद्यो बालः कुमारश्च युवा वृद्धो मृतस्तथा ।
किञ्चिल्लाभकरो बालः कुमारस्त्वर्धलाभदः ॥ ११ ॥
सर्वसिद्धो युवा प्रोक्तो वृद्धो मध्योऽधमोऽन्तिमः ।
युद्धकाले विचिन्त्येषु तिथिमार्गेण निश्चितम्॥ १२॥

स्वरों के नीचे का आदि अक्षर लिखे। ङ ञ ण इन अक्षरों को छोड़ कर लिखे। तिरछी पंक्ति के क्रम से पैंतिस कोठे का चक्र भरे। नर के नाम का आदि अक्षर जिस स्वर के नीचे हो, वही उसका वर्णज स्वर अर्थात् बालस्वर जानिये । ङ ञ ण ये अक्षर स्वर में नहीं कहे हैं परन्तु जिसके नामादि में हों तो ग ज ड इस क्रम से जान ले अर्थात् ङ के जगह में ग और ञ के जगह में ज, तथा

ण के जगह में ड अक्षर का ग्रहण करना चाहिए। यदि नाम के अक्षर में दो अक्षर मिले हों, तो आदि का अक्षर ग्रहण करना ब्रह्मयामल में कहा है।

अकार स्वर में मेष, सिंह और वृश्चिक लग्न स्थापित करे तथा कन्या, मिथुन, कर्क इकार स्वर के नीचे लिखे। धन मीन उकार स्वर के नीचे लिखे। तुला-वृष एकार स्वर में लिखे तथा मकर-कुम्भ ओकार स्वर के नीचे लिखे। उसके नीचे ग्रह स्थापित करे। इसी क्रम से जिस राशि का स्वामी जो ग्रह हो, उसी ग्रह को उसी राशि के साथ स्थापित करना अकारादि स्वरों में चक्र से जानना। तथा अकारस्वर के नीचे रेवत्यादि सात नक्षत्र स्थापित करना और पुनर्वसु से पाँच नक्षत्र इकार स्वर में लिखना तथा उत्तराफाल्गुनी से पाँच नक्षत्र उकार स्वर में लिख देना। और अनुराधा से पाँच नक्षत्र एकार स्वर में स्थापित करना वा श्रवण से पाँच नक्षत्र ओकार स्वर में लिखना। अकारादि स्वरों में नन्दादि पाँच तिथियाँ क्रम से लिखना सो नित्य दिन और स्वरोदय है। अपने २ स्वर से चक्र में जानना। भाद्र, अगहन और वैशाख ये महीना अकार स्वर के नीचे लिखे तथा कुँवार, श्रावण और आषाढ़ इकार स्वर में लिखना। और चैत्र, पौष उकार स्वर में स्थापित करना। ज्येष्ठ, कार्त्तिक एकार स्वर में लिखना; माघ, फाल्गुन महीना उकार स्वर में स्थापित करना। प्रथम कोठा में बालस्वर है, दूसरे में कुमार है, तीसरे में युवा है और चौथे में वृद्धा, पाँचवे में मृता जानिये। बाल-स्वर थोड़ा लाभ करता है, कुमार संज्ञक आधा लाभ करता है। और युवास्वर सर्वसिद्धिकारक है तथा वृद्धास्वर मध्यम है, मृतास्वर अधम जानिये। युद्धकाल में विशेष विचार करना उचित है। तिथि से जानना तथा युद्धकाल में नामादि अक्षर से लेना तथा गोचर में जन्मनामाक्षर से विचारना उचित है॥ १-१२॥

अथ पञ्चस्वरचक्रन्यासः ।

बाल	कुमार	युवा	वृद्धा	मृता	स्वर
अ	इ	उ	ए	ओ	वर्ण
क	ख	ग	घ	च	वर्ण
छ	ज	झ	ट	ठ	वर्ण
ड	ढ	त	थ	द	वर्ण
ध	न	प	फ	ब	वर्ण
भ	म	य	र	ल	वर्ण
व	श	ष	स	ह	वर्ण
नन्दा १।६।११	भद्रा २।७।१२	जया ३।८।१३	रिक्ता ४।६।१४	पूर्णा ५।१०।१५	तिथि
र. मं.	बु. चं.	बृ.	शु.	श.	वार
रेवत्यादि ७	अदित्यादि ५	अर्यमादि ५	मित्रादि ५	श्रवणादि ५	नक्षत्र
मे. सि. वृश्चिक	कन्या. मि. कर्क	ध. मी.	तु. वृष.	म. कुं.	लग्न
मार्ग. वै. भाद्र.	आ. श्रा. आश्वि.	चैत्र. पौष	ज्ये. का.	मा. फा.	मास

अथ युद्धयात्रायां अकुलादिनक्षत्रज्ञानम् ।

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः ।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुलाज्ञो
मूलाम्बुपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः ॥ १ ॥
पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः ।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कले
सन्धिःस्यादुभयोःकुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः॥२॥

स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु व ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र तथा विषम तिथि १ । ३ । ५ । ७ ९ । ११ । १३ वार शनि, चन्द्र, गुरु और सूर्य इन नक्षत्रादिकों की अकुलगणसंज्ञा है । मूल, शतभिष, आर्द्रा और अभिजित् ये नक्षत्र,दशमी, छठ और द्वितीया तिथि, बुधवार इनकी कुलगणसंज्ञा है । तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा और चित्रा ये नक्षत्र शुक्र व मङ्गलवार तथा द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी और चौथ तिथि इनकी कुलाकुलगणसंज्ञा है। जानेवाले को अकुलसंज्ञक नक्षत्रादिकों में जीत होती है। युद्ध समय में तथा स्थायी अर्थात् स्थिर होनेवाले को कुलगण के नक्षत्रादिकों में जीत होती है और कुलाकुलगण में राजाओं के युद्ध में दोनों से मिलाप होता है ॥ १-२ ॥

अथ वारघातविचारः ।

मेषे रविर्बुधः कर्के मिथुने चन्द्र एव च ।
कन्यावृषभसिंहेषु शनिः स्यान्मकरे कुजः ॥ १ ॥

धनुर्वृश्चिकमीनेषु शुक्रोऽथ तुलकुम्भयोः ।
जीवश्चैते जन्मराशौ घातवारा बुधैः स्मृताः ॥१॥

मेषराशिवाले को रविवार घात है। और कर्क को बुधवार घात है। मिथुन को चन्द्रवार घात है। तथा कन्या, वृष और सिंह को शनिवार घात है। और मकर को मङ्गलवार; धनु, वृश्चिक और मीन को शुक्रवार घात है तथा तुला वा कुम्भ को बृहस्पतिवार घात है। ये जन्मराशि पर पण्डित घातवार कहते हैं ॥ १-२ ॥

अथ घातवारचक्रम् ।

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
र.	श.	चं.	बु.	श.	बृ.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	वार

अथ ग्रहयोगज्ञानम् ।

तनौ जीव इन्दुर्मृतौ वैरिगोऽर्कः
प्रयातो महीन्द्रो जयत्येव शत्रुम् ॥ १ ॥
लग्ने गुरौ रिपौ भौमे लाभेऽर्के सहजे शनौ ।
जयत्याशु रिपून् यानेऽनुकूलो यदि भार्गवः ॥ २ ॥
गुरौ लग्नेऽष्टमे चन्द्रे षष्ठे सूर्ये जयत्यरीन् ।
तनौ जीवेऽथवा शेषैर्वित्तायस्थैर्जयोगमे ॥ ३ ॥
लग्ने सूर्ये विधौ द्यूने धनस्थैर्ज्ञेज्यभार्गवैः ।
प्रयाति नृपतिः सोऽरीञ्जयेत्तार्क्ष्य इवोरगान् ॥ ४ ॥
मन्दारौ त्रिषडायस्थौ बलिनो ज्ञेज्यभार्गवाः ।
प्रयाणे भूपतेर्यस्य वसुधा तस्य हस्तगा ॥ ५ ॥
लग्ने जीवे विधौ द्यूने चतुर्थे ज्ञे तथा भृगौ ।
पापैस्त्रिगैर्महीपालः प्रस्थितो लभते श्रियम् ॥ ६ ॥

लाभेऽर्के खे बुधे शुक्रे दुश्चिक्ये भूमिजे शनौ ।
द्यूनेऽब्जे तनुगे जीवे प्रस्थितस्य भवेज्जयः ॥ ७ ॥
लग्नेऽब्जे वा गुरौ षष्ठे सूर्ये व्योमगते शनौ ।
सुतेज्ये हिबुके शुक्रे राजा हन्ति गमे रिपून् ॥ ८ ॥
शुक्रे तुर्ये त्रिलाभस्थे केन्द्रस्थगुरुवीक्षिते ।
सप्ताष्टाङ्कगतैः पापैर्योगोऽयं बहुलाभदः ॥ ९ ॥
शुक्रार्केज्यैस्त्रितुर्यस्थैः शत्रुस्थे मन्दभूमिजे ।
यात्रा भूमिभुजां शस्ता शत्रुवृन्दविदारिणी ॥१०॥

लग्न में बृहस्पति और चन्द्रमा हों छठे, आठवें सूर्य हो ऐसे योग में यात्रा करने से राजा शत्रु को जीते । लग्न में बृहस्पति, छठे मङ्गल, ग्यारहवें सूर्य और तीसरे शनैश्चर हो, तो ऐसे योग में यात्रा करने से शत्रु को जीते परन्तु शुक्र बायें या पीछे हो । बृहस्पति लग्न में हो, आठवें चन्द्रमा हो, छठे सूर्य हो, तो शत्रु को जीते अथवा लग्न में बृहस्पति हो और शेषग्रह राहु केतु छोड़कर दूसरे ग्यारहवें हों, तो जीत हो । लग्न में सूर्य हो, चन्द्रमा सातवें हो तथा दूसरे बुध, बृहस्पति और शुक्र हों ऐसे योग में राजा यात्रा करे, तो जिस प्रकार गरुड़ सर्पों को जीतते हैं उसी प्रकार शत्रु को जीते । शनैश्चर मङ्गल तीसरे, छठे, ग्यारहवें हों और बुध बृहस्पति शुक्र बली हों, ऐसे योग में राजा यात्रा करे, तो पृथ्वी लाभ हो । लग्न में बृहस्पति हो, चन्द्रमा सातवें हो, चौथे बुध और शुक्र हों, पापग्रह तीसरे हों ऐसे योग में यात्रा करे, तो लक्ष्मी प्राप्त हो । ग्यारहवें सूर्य हो, दशवें बुध व शुक्र हों, तीसरे मङ्गल व शनैश्चर हों, सातवें चन्द्रमा हो, बृहस्पति लग्न में हो, तो यात्रा करने से जय हो । लग्न में चन्द्रमा हो वा गुरु हो तथा छठे सूर्य हो, दशवें

शनैश्चर हो, पाँचवें, चौथे शुक्र हो ऐसे योग में राजा यात्रा करे, तो शत्रु को जीते। शुक्र चौथे, तीसरे, ग्यारहवें हो और केन्द्र में होकर बृहस्पति शुक्र को देखता हो और सातवें, आठवें और नवें पापग्रह हों, तो यात्रा करने से बहुत लाभ हो। शुक्र, सूर्य और बृहस्पति तीसरे चौथे हों और शनैश्चर मङ्गल छठे हों, तो यात्रा राजाओं को शुभ है और शत्रु का समूह नाश करनेवाली है ॥ १-१० ॥

अथ पुनः शत्रुञ्जययोगः ।

सिते लग्नगते सूर्ये लाभगे हिबुके विधौ ।
ततो राजा रिपून् हन्ति केशरीवेभसंहतिम् ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र हो, सूर्य लाभस्थान में हो तथा चन्द्रमा चौथे हो ऐसे योग में राजा यात्रा करे, तो जिस प्रकार सिंह हाथी को मार डालता है उसी प्रकार शत्रु को मारे ॥ १ ॥

अथ शत्रुञ्जययोगचक्रम् ।

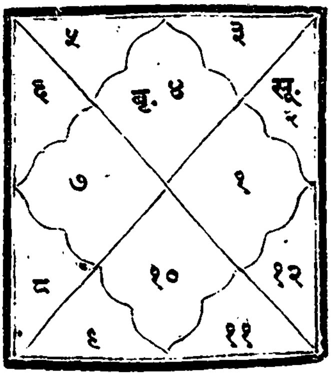


अथ पुण्डरीकयोगः ।

गुरा कर्कटगे लग्ने भानावेकादशस्थिते ।
पुण्डरीको महायोगः शत्रुपक्षविनाशकृत् ॥ १ ॥

कर्कराशि का बृहस्पति लग्न में हो और ग्यारहवें सूर्य हो, तो पुण्डरीक महायोग होता है वह शत्रुपक्षनाशकारक है ॥ १ ॥

अथ पुण्डरीकयोगचक्रम् ।

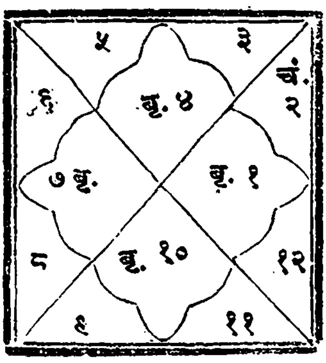


अथ कामदो योगः ।

वृषराशिगते चन्द्रे लाभस्थे केन्द्रगे गुरौ ।
कामधेनुरयं योगः कामदो यायिनो रणे ॥ १ ॥

वृषराशि का चन्द्रमा होकर ग्यारहवें हो और केन्द्र में बृहस्पति हो, तो कामधेनुसंज्ञक योग जानिये। जानेवालों को रण में कामना देनेवाला है ॥ १ ॥

अथ कामदयोगचक्रम् ।

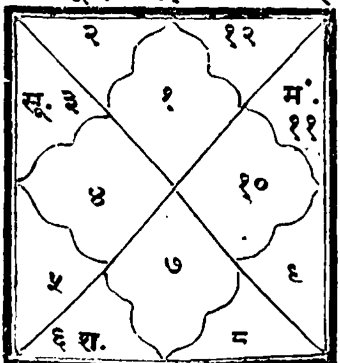


अथ पूर्णचन्द्रयोगः ।

त्रिषष्ठलाभगेष्वेषु रविमन्दकुजेषु च ।
पूर्णचन्द्रो महायोगः पूर्णराज्यप्रदः सदा ॥१॥

तीसरे सूर्य, छठे शनैश्चर और ग्यारहवें मङ्गल हों, तो पूर्णचन्द्र महायोग होता है वह यात्रा में राज्यदायक है ॥ १ ॥

अथ पूर्णचन्द्रयोगचक्रम् ।

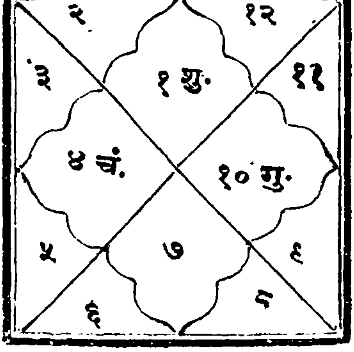


अथ मृगेन्द्रयोगज्ञानम् ।

लग्ने शुक्रे शशी बन्धौ कर्मस्थाने गुरुर्यदा ।
मृगेन्द्रयोगो विख्यातो यातुः सर्वार्थसाधकः॥१॥

लग्न में शुक्र हो, चन्द्रमा चौथे हो और दशवें बृहस्पति हो, तो मृगेन्द्रसंज्ञक योग होताहै । उसमें यात्रा सर्वार्थ-साधिका होती है॥१॥

अथ मृगेन्द्रयोगचक्रम् ।

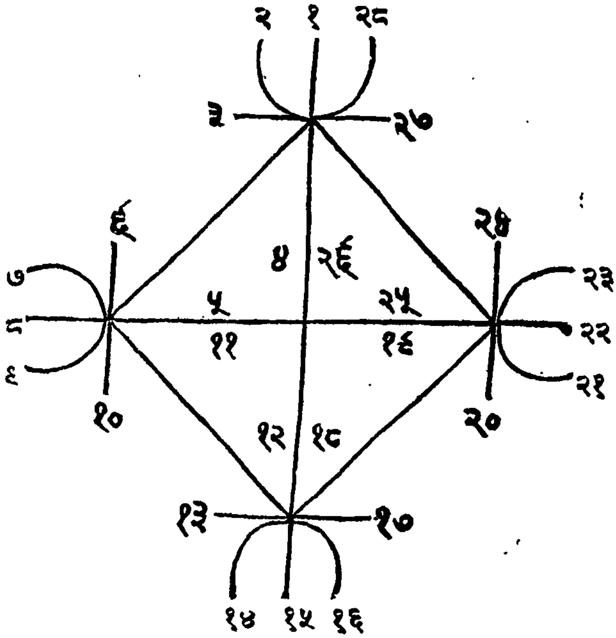


अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ।

पूर्वत्रिशूलमध्यान्तं दिनऋक्षादि गण्यते ।
त्रिशूलानां भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टकम् ॥ १ ॥
लाभक्षेमं विजानीयाच्चन्द्रगर्भे न संशयः ।
चन्द्रकालानलं चक्रं नामभं दृश्यते रणः ।
गर्भे द्वयं द्वयं दद्यादन्यत्रैकैकमेव च ॥ २ ॥

पूर्व के त्रिशूल से मध्य के अन्त तक चक्र लिखे अभिजित्समेत चन्द्रमा के नक्षत्र से अपने नाम नक्षत्र तक विचारे । नाम नक्षत्र त्रिशूल में पड़े तो युद्ध में मृत्यु हो । और त्रिशूल के पास जो एक शूली है उसमें पड़े, तो मध्यम जानिये । और चन्द्र-गर्भ में नाम-नक्षत्र पड़े, तो लाभक्षेम जानिये । इस चन्द्रकालानलचक्र में नामनक्षत्र युद्ध में देखना उचित है । गर्भ में दो दो नक्षत्र दे अन्यत्र एक एक दे ॥ १–२ ॥

अथ चन्द्रकालानलचक्रन्यासः ।



अथ युद्धनाडीज्ञानम् ।

आर्द्रादौ मृगपर्यन्तं मध्ये मूलं प्रतिष्ठितम् ।
रवीन्दुनामनक्षत्रं यद्येको नाडिगो भवेत् ।
तस्य मृत्युर्न सन्देहो रोगाद्वाथ रणेऽपि वा॥१॥

आर्द्रा-नक्षत्र को आदि देकर मृगशिरा के अन्ततक त्रिनाड़ी-चक्र लिखे । तथा बीचोंबीच में मूल-नक्षत्र स्थापित करे ।

फलम् ।

सूर्य-चन्द्रमा का नक्षत्र तथा नाम-नक्षत्र एक नाड़ी में पड़े, तो मृत्यु हो, युद्ध और रोग में नाड़ी-चक्र विचारना चाहिये ॥ १ ॥

अथ युद्धनाडीचक्रम् ।

आ.	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.
पुन.	म.	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू. भा.	अ.	रो.
पुष्य	आश्ले.	चि.	स्वा.	पू. षा.	उ. षा.	उ. भा.	रे.	मृ.

अथ भूमिबलाबलज्ञानम् ।

भूम्यक्षरं चतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् ।
शिवनेत्रैर्हरेद्भागं शेषं भूमिबलाबलम् ॥ १ ॥
चन्द्रशेषे बला भूमिः शन्या नेत्रे च शेषके ।
वह्निशेषे भवेन्मृत्युर्युद्धकाले विचिन्तयेत् ॥२॥

भूमि नाम के अक्षर चौगुने करे, तिथि वार जोड़ दे, तीन का भाग दे, जो शेष बचे उससे भूमिबलाबल विचारे । एक बचे, तो भूमि बल जानिये । दो शेष बचें, तो शून्य भूमि जानिये और तीन बचें तो भूमि को मृत्युकारक जानिये ॥ १–२ ॥

अथ युद्धसमये नारदविचारः ।

तिथिवारयुतं कार्यं त्रिभिर्भागो विधीयते ।
स्वर्गपातालमृत्युश्च क्रमतो याति नारदः ।
मृत्युलोके यदा तिष्ठेत्तदा युद्धं न संशयः ॥१॥

तिथि-वार जोड़ दे उसमें तीन का भाग दे शेष क्रम से नारद जानिये । एक बचे, तो स्वर्ग में, दो बचें, तो पाताल में और तीन बचें, तो मृत्युलोक में जानिये । उसका फल यह है कि मृत्युलोक में जब नारद आवें, तब युद्ध जानिये इसमें कुछ संदेह नहीं है ॥ १ ॥

अथ युद्धकालज्ञानम् ।

जन्मभाद्दिनभं यावद्गणनीयं यथाक्रमात् ।
तिथियुक्तं च वेदघ्नं त्रिभिर्भागो विधीयते ॥१॥
एको मृत्युर्द्वयोर्घातं शून्ये सुखसमन्वितम् ।
कालज्ञानमितिख्यातं युद्धकाले विचिन्तयेत्॥२॥

जन्म-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिने उसमें तिथि जोड़ दे उसे चार से गुणा करे उस अङ्क में तीन का भाग दे । एक शेष बचे तो मृत्यु हो, दो बचें तो घात हो, शून्य बचे तो सुखयुक्त जानना । इस काल-ज्ञान को युद्ध-समय में विचारना चाहिये ॥ १-२ ॥

अथ शस्त्रघट्टनयुक्तिज्ञानम् ।

कृत्तिका च विशाखा च भौमवारेण संयुता ।
तद्योगे घटितं शस्त्रं संग्रामे सिद्धिदायकम् ॥ १ ॥

कृत्तिका व विशाखानक्षत्र मङ्गलवार से युक्त पड़े, तो उसी दिन यदि हथियार गढ़ा जाय, तो युद्ध में सिद्धिदायक हो ॥ १ ॥

अथ शस्त्रलेपनम् ।

अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लेपयेत् ।
जायन्ते यानि संग्रामे वज्रसाराणि निश्चितम् ॥१॥

लटजीरे के रस से शस्त्र लेपन करे तो युद्ध में वज्र-समान हो जाय ॥ १ ॥

अथ यात्रान्ते गृहप्रवेशमुहूर्तः ।

हरेर्वासरं चाष्टषष्ठीश्च रिक्तां
विहाय प्रभुः सन्निवृत्तः प्रयाणात् ।
शुभाहे विशेन्मन्दिरं मित्रचित्रा-
मृगात्र्युत्तरारेवतीरोहिणीषु ॥ १ ॥
प्रवेशान्निर्गमस्तस्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ ।
नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ॥ २ ॥

द्वादशी, अष्टमी, छठ और रिक्ता ४ । ६ । १४ इन तिथियों को जब राजा यात्रा से लौट आवे, तो गृहप्रवेश में वर्जित करे। और शुभ-दिन में मन्दिर में प्रवेश करे। अनुराधा, चित्रा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, रेवती और रोहिणी ये नक्षत्र शुभ हैं। प्रवेश से यात्रा वा यात्रा से प्रवेश नवयें दिन वा नवयें नक्षत्र तथा नवई तिथि में वर्जित है ॥ १-२ ॥

अथ रुद्रयामले शिवद्विघटिकामुहूर्तः ।

त्रिपुरहरमुहूर्तं केन दृष्टं श्रुतं वा
सकलमपि हि दिष्टं शम्भुना भूतहेतोः ।
यदि शुभमशुभं वा यादृशं तादृशं वा
तदिदमपि नरेन्द्रैः सर्वदा चिन्तनीयम् ॥१॥

श्रीमहादेवजी के द्विघटिका मुहूर्त को किसने देखा व सुना है ? इसे प्राणियों के कल्याण के लिये श्रीमहादेजी ने ही कल्पित किया है । शुभ किंवा अशुभ चाहे जैसा कार्य हो उसमें राजाओं को चाहिए कि इस मुहूर्त का विचार कर लिया करें ॥ १ ॥

श्रीपार्वत्युवाच ।

श्रीशम्भो प्राणनाथेश वद मे करुणानिधे ।
त्रिपुरस्य वधे प्रोक्ता मुहूर्ता ये शुभप्रदाः ॥२॥
भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ।
पुरुषार्थप्रदं ब्रूहि करुणाकर शङ्कर ॥ ३ ॥

श्रीपार्वतीजी श्रीमहादेवजी से प्रश्न करती हैं कि हे प्राणनाथ, दया के समुद्र, श्रीशम्भो ! जो मुहूर्त त्रिपुर दैत्य के वध में कहे गए हैं जो कि शुभ के देनेवाले, सर्वकालिक सिद्धि के देनेवाले और पुरुषार्थ के देनेवाले हैं ऐसे उन मुहूर्तों को प्राणियों के उपकार के लिये दया-निधान शंकरजी ! आप मुझसे वर्णन करिए ॥ २-३ ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपकम् ।
ज्योतिःसारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४ ॥
न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगः करणं तथा ।
कुलिकं यमयोगश्च न भद्रा न च चन्द्रमाः ॥ ५ ॥
न शूलं योगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः ।
व्यतीपाते च संक्रान्तौ भद्रायामशुभे दिने ॥ ६ ॥
शिवालिखितमित्येतत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।
कदाचिच्चलते मेरुः सागराश्च महीधराः ॥ ७ ॥

श्रीमहादेवजी उत्तर देते हैं कि हे देवि! तुम सुनो, मैं तीन लोक के प्रकाशक-ज्ञान को कहता हूँ। जोकि ज्योतिःसार का सार है अर्थात् ज्योतिःशास्त्र के सारांश का सारांश अर्थात् उससे भी महीन है और निश्चय करके देवताओं को भी दुर्लभ है। इस मुहूर्त में तिथि, नक्षत्र, योग, करण, कुलिक, यम-योग, काल, चन्द्रमा, दिशाशूल, योगिनी, राशि अर्थात् लग्न, काल-होरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रान्ति, भद्रा और अशुभ दिन इतने कुयोग इस मुहूर्त में नहीं विचारने योग्य हैं। शिवजी का लिखा हुआ यह मुहूर्त सब प्रकार के विघ्नों की शान्ति करनेवाला है। चाहे सुमेरु पर्वत चलायमान हो किंवा समुद्र, पर्वत, चलें, पर ये वाक्य अटल हैं ॥ ४-७ ॥

सूर्यः पतति वा भूमौ वह्निर्वा याति शीतताम् ।
निश्चलश्च भवेद्वायुर्नान्यथा मम भाषितम् ॥ ८
तत्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्तानि च षोडश ।
गुणत्रयप्रयोगेन चलत्येव अहर्निशम् ॥ ९ ॥

सूर्य पृथ्वी पर गिरें किंवा अग्नि ठंढी हो व वायु निश्चल हो, ऐसे कर्म हों परन्तु हमारा वाक्य अन्यथा न होगा, ऐसा महादेवजी कहते हैं। आदि में सोलह मुहूर्त हैं सो तीन गुणों के प्रयोग करके दिन रात्रि में चलते हैं ॥ ८-९ ॥

अथ मुहूर्तज्ञानम् ।

रौद्रं श्वेतं तथा मैत्रं चार्वटश्च चतुर्थकम् ।
पञ्चमं जयदेवं च षष्ठं वैरोचनं तथा ॥ १० ॥

तुरगं सप्तमश्चैव ह्यष्टमं चाभिजित्तथा ।
रावणं नवमं प्रोक्तं बालवं दशमं तथा ॥ ११ ॥

रौद्र १ श्वेत २ मैत्र ३ चार्वट ४ जयदेव ५ वैरोचन ६ तुरगदेव ७ अभिजित् ८ रावण ६ बालव १० ॥ १०-११ ॥

विभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशञ्च सुनन्दनम् ।
याम्यं त्रयोदशं ज्ञेयं सौम्यं प्रोक्तं चतुर्दशम् ॥१२॥
भार्गवं तिथिसंज्ञं च सविता षोडशं तथा ।
एतानि प्रोक्तकार्येषु नियोज्यानि यथाक्रमात्॥१३॥

विभीषण ११ नन्दन १२ याम्य १३ सौम्य १४ भार्गव १५ सावित्र १० ये सोलह मुहूर्त उक्त कार्य में क्रम से योजित करे ॥ १२-१३ ॥

अथ मुहूर्तकर्मज्ञानम् ।

रौद्रे रौद्रतरं कार्यं श्वेते कुञ्जरबन्धनम् ।
स्नानदानादिकं मैत्रे चार्वटे स्तम्भनं भवेत् ॥१४॥
कार्यं यज्जयदेवसंज्ञकवरे सर्वार्थकं साधये-
त्तद्वैरोचनसंज्ञके प्रभवति पट्टाभिषेकं क्रमात् ।
ज्ञात्वैवं तुरदेवनाम्नि विदिते शस्त्रास्त्रकं साधयेत्
कायस्यादभिजिन्मुहूर्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा॥१५॥

रौद्र-मुहूर्त में घोर-कार्य शुभ है तथा श्वेत में हाथी-बन्धन शुभ है, मैत्र में स्नानदानादि श्रेष्ठ है तथा चार्वट में स्तम्भन प्रतिष्ठादि शुभ हैं। और जयदेव में सब कार्य शुभ हैं तथा वैरोचन में

राजगद्दी शुभ है । तुरदेव में शस्त्राभ्यास शुभ है तथा अभिजित् मुहूर्त में ग्रामप्रवेश सदा शुभ है ॥ १४–१५ ॥

रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यं च बालवे ।
विभीषणे शुभं कार्यं यन्त्रकार्यं सुनन्दने ॥१६॥
याम्ये भवेन्मारणकार्यमुग्रं
सौम्ये सभायामुपवेशनं स्यात् ।
स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्ते
सावित्रनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥ १७ ॥

रावण में वैरसाधन, बालव में युद्ध कार्य, और विभीषण में शुभ कार्य तथा नन्दन में यन्त्र अर्थात् पेंच चलावे । याम्य में मारण कार्य करे, सौम्य में सभाप्रवेश करे तथा भार्गव में स्त्रीप्रसङ्ग करे और सावित्र मुहूर्त में विद्या पढ़े ॥ १६–१७ ॥

अथ वारपरत्वेन मुहूर्तोदयज्ञानम् ।

उदये रौद्रमादित्ये मैत्रं सोमे प्रकीर्तितम् ।
जयदेवं कुजे वारे तुरदेवं बुधे स्मृतम् ॥ १८ ॥
रावणं च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् ।
शनौ याम्यं मुहूर्तं च दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ १९ ॥
दिनादौ यत्प्रवर्त्तेत रात्र्यादौ तदनन्तरम् ।
दिनान्ते यः समायाति तस्मादेकान्तरेण वै ॥२०॥

रविवार के उदय में प्रथम रौद्र-मुहूर्त का प्रवेश, सोमवार के उदय में मैत्रमुहूर्त, मङ्गलवार के उदय में जयदेव और बुधवार के उदय में तुरदेव होता है । बृहस्पति के उदय में रावण मुहूर्त, शुक्र के उदय

में विभीषणसंज्ञक और शनैश्चर के उदय में याम्यमुहूर्त होता है। इसी क्रम से दिन रात्रि के क्रम से मुहूर्तवास जानिये। दिनमान में सोलह का भाग देना। जो लब्ध मिले, वही मुहूर्त का प्रमाण जानिये। और दिनमान को साठ में घटा देना जो शेष रहे वही रात्रिमान है। उसमें सोलह का भाग देकर लब्ध मिले उसी के प्रमाण से रात्रि में भी सोलह मुहूर्त होते हैं दिन रात्रि के प्रयोग से। दिन के आदि में जो मुहूर्त हो उससे दूसरा रात्रि को होता है। और जो मुहूर्त दिन के अन्त में होता है वह एक मुहूर्त छोड़कर रात्रि के अन्त में होता है ॥ १८–२० ॥

अथ गुणोदयज्ञानम् ।

गुरुसोमदिने सत्त्वं रजश्चाङ्गारके भृगौ ।
रवौ मन्दे बुधे वारे तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ २१ ॥

गुणों का वास ।

बृहस्पति और सोमवार के उदय में दो मुहूर्त तक सतोगुण का निवास, मङ्गल वा शुक्र को दो मुहूर्त तक रजोगुण का वास होता है। तथा रविवार, शनैश्चर और बुधवार को दो मुहूर्त तक तमोगुण का वास जानना चाहिए ॥ २१ ॥

अथ गुणानां वर्णज्ञानम् ।

सत्त्वं गौरं रजः श्यामं तामसं कृष्णमेव च ।
इमं वर्णं विजानीयात्सत्त्वादीनां यथोदितम् ॥ २२ ॥

गुणों के वर्ण ।

सतोगुण गौर अर्थात् गोरावदन है, रजोगुण श्यामवर्ण है, तमोगुण कृष्णवर्ण है, ये वर्ण सत्त्वादि अर्थात् सतोगुण आदि जानिये ॥ २२ ॥

अथ गुणानां फलम् ।

सत्त्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसम्पदाम् ।
तमसा छेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ २३ ॥

गुणों का फल ।

सतोगुण में सिद्ध साधन और रजोगुण में धन सम्पदा साधन करे और तमोगुण में छेद-भेदादि अर्थात् काटना और तोड़-फोड़ करना शुभ है तथा मोक्षमार्ग शुभ है ॥ २३ ॥

अथ मुहूर्ताङ्करेखाज्ञानम् ।

शून्यं नभः खादिभिरेव वर्णै-
र्विघ्नं धनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ।
मृत्युस्तथा पादयमादिवर्णैः
श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ २४ ॥

मुहूर्तों की रेखा ।

शून्य तथा नभ व ख संज्ञा तथा अभ्रसंज्ञा ये नाम शून्यरेखा के हैं तथा विघ्न धनु युग्म गणाधिप ये विघ्नरेखा के नाम हैं । मृत्युपाद यम ये नाम कालरेखा के हैं । श्रीविष्णु अमृतसिद्धि ये अमृतरेखा के नाम हैं ॥ २४ ॥

अथ रेखास्वरूपम् ।

अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत् ।
विघ्नमावर्त्तकं ज्ञेयं शून्ये शून्यमितिक्रमः ॥ २५ ॥

रेखा का स्वरूप ।

एक रेखा ऊर्ध्व करने से अमृतरेखा का स्वरूप होता है । तीन रेखा ऊर्ध्व करने से कालसंज्ञक अर्थात् मृत्युसंज्ञक जानिये । गोल रेखा

करने से विघ्नसंज्ञक होती है इसी को धन भी जानना और शून्य का स्वरूप लिखने से शून्यसंज्ञक जानिये ॥ २५ ॥

अथ रेखाफलम् ।

शून्येनैव भवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तके भवेत् ।
स्यान्मृत्युः कालरेखायां सर्वसिद्धिस्तथामृते ॥२६॥

अब रेखाओं का फल कहते हैं ।

शून्य में कार्य न हो और गोल अर्थात् विघ्न रेखा में विघ्न हो । कालरेखा में मृत्यु और अमृतरेखा में सर्वसिद्धि जानिये ॥ २६ ॥

अथ राशीनां घातगुणाः ।

धनुर्मीनकर्कटानां सत्त्वे घातो विनिर्दिशेत् ।
तुलावृषभमेषानां घातो रजसि निश्चितम् ॥ २७ ॥
कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्य मकरस्य च ।
घातस्तमसि वेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ २८ ॥

राशियों के घात-गुण

धनु, मीन, कर्क राशियों का सतोगुण घात है । तुला, वृष और मेष इनका रजोगुण घात है । कन्या, मिथुन, सिंह, कुम्भ और मकर इनका तमोगुण घात है । इनके विपरीत अर्थात् छोड़कर शुभ है ॥ २७–२८ ॥

अथ राशीनां वर्णाः ।

धनुष्कर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः प्रकीर्तिताः ।
वृषमेषतुलाश्चैव वृश्चिकः श्यामवर्णकः ॥ २९ ॥
मिथुनो मकरः कुम्भः कन्या सिंहश्च कृष्णकः ।

गौरश्च म्रियते सत्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ।
कृष्णस्तामसवेलायां म्रियते नात्र संशयः ॥ ३० ॥

राशियों के वर्ण

धनु, कर्क और मीन राशि का गौरवर्ण है तथा वृष, मेष, तुला और वृश्चिक का श्यामवर्ण है। मिथुन, मकर, कुम्भ, कन्या और सिंह का कृष्णवर्ण है ।

फल

गौरवर्ण राशि का सतोगुण मृत्युकारक और श्यामवर्ण का रजोगुण मृत्युकारक जानिये। और कृष्णवर्ण का तमोगुण मृत्यु कारक जानिये ॥ २९–३० ॥

अथ मासेषु मुहूर्तव्यवस्थाज्ञानम् ।

माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा ।
नभस्यमासि वाराणां मुहूर्तानि यथाक्रमात् ॥ ३१ ॥

महीनों में मुहूर्त-व्यवस्था

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण तथा भाद्रपद इन महीनों में रविवारादि मुहूर्त यथाक्रम पूर्वोक्त प्रकार से जानना ॥ ३१ ॥

अथ प्रोक्तमासेषु रव्यादिवारे क्रमेण दिनरात्रि-रेखा ।

रवौ नभःकेशवविघ्नराजो
गोविन्दनामा नभश्चाखुगामी ।
रात्रौ नृसिंहो युगलं नभःप-
लक्ष्मीशलम्बोदररामसंज्ञौ ॥ ३२ ॥
सोमे हरिर्विघ्नपतिः सुरेशः

शून्यं च गौरीसुतविष्णुसंज्ञौ ।
पदं निशायां खखविष्णुशून्यं
युग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥ ३३ ॥

अब इन महीनों में रव्यादिवारों में क्रम से
दिन रात्रि के प्रसङ्ग से रेखा कहते हैं ।

रविवार के दिन प्रथम मुहूर्त में शून्यरेखा होती है फिर अमृतरेखा तीन मुहूर्त तक जानिये । फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है । फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है। फिर एक मुहूर्त में शून्यरेखा जानना शेष में विघ्नरेखा जानना। तथा रात्रि को प्रथम तीन मुहूर्त में अमृतरेखा जानिये । फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है । बाद उसके एक मुहूर्त कालरेखा है, फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानिये बाद उसके चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक अमृतसंज्ञा जानिये । सोमवार के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा हैं फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा है बाद उसके एक मुहूर्त शून्यरेखा है फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा जानना और रात्रि को प्रथम मुहूर्त कालरेखा होती है फिर दो मुहूर्त शून्यरेखा जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है । बाद उसके दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये । फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है शेष विघ्नरेखा जानना ॥ ३२-३३ ॥

भौमे यमौ मारमणोऽथ युग्मं
युग्मं हरिश्चैव गजाननश्च ।

नक्तं च विघ्नो द्विपदं मुकुन्दः
पदत्रयं श्रीपतिखंनभश्रीः ॥ ३४ ॥
बुधे धनुः कृष्णयमौ च सौरिः
सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः ।
रात्रौ सुपर्णध्वज एव युग्मं
नभोऽथ दामोदरकुञ्जरास्यौ ॥ ३५ ॥

मङ्गल के दिन प्रथम दो मुहूर्त कालरेखा है फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा है फिर चार मुहूर्त विघ्नसंज्ञक जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा जानना शेष विघ्नरेखा हैं । और रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त कालरेखा जानना । फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा है बाद उसके तीन मुहूर्त तक कालरेखा जानना। फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त तक शून्य-रेखा जानना फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है । बुध के दिन प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा है फिर दो कालरेखा है फिर तीन अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त तक विघ्न-संज्ञा है फिर दो मुहूर्त अमृत जानिये बाद उसके दो मुहूर्त तक कालरेखा है शेष अमृतरेखा जानना। रात्रि को प्रथम पाँच मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्य का होता है फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा होती है शेष विघ्नरेखा जानना ॥ ३४–३५ ॥

गुरौ गोपिनाथस्तथा विघ्नराजो
नभः केशवः कुञ्जरास्यस्तथैव ।
निशायां पदं नन्दजः सूर्यसूनु-
र्नभोमाधवश्चापमेकं हरिश्च ॥ ३६ ॥

शुक्रे कृष्णः स्याद्यमः खं मुरारि-
गौरीपुत्रः श्रीपतिः शून्यमेकम् ।
नक्तं कालः कंसहा खं च युग्मं
पादद्वन्द्वो वामनः खं च पादौ ॥ ३७ ॥

बृहस्पति के दिन प्रथम चार मुहूर्त अमृतरेखा है फिर चार विघ्नरेखा फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा है शेष विघ्नरेखा जानिये । और रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा है फिर चार मुहूर्त कालरेखा जानिये । और फिर एक मुहूर्त शून्यसंज्ञक है फिर तीन मुहूर्त अमृत रेखा जानना फिर दो मुहूर्त तक विघ्न है शेष अमृत जानना। शुक्र के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त कालरेखा है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानना । फिर चार मुहूर्त विघ्नसंज्ञक है फिर तीन मुहूर्त अमृत संज्ञक है शेष शून्य जानिये । और रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त कालरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा है फिर एक शून्य है फिर दो मुहूर्त विघ्नसंज्ञक रेखा जानना । फिर दो मुहूर्त कालरेखा होती है बाद इसके तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर एक शून्य है शेष कालरेखा जानिये ॥ ३६–३७ ॥

शनौ पदं श्रीः खनभोनभः खं
नारायणः खं हरिखं हरिश्च ।
रात्रौ च शून्यं यमयुग्ममाधवो
खविघ्नराजौ नृहरिश्च पादौ ॥ ३८ ॥

शनैश्चर के दिन प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा है फिर एक अमृत है फिर चार तक शून्य है फिर चार अमृतरेखा जानना बाद उसके फिर एक शून्यसंज्ञक है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा है फिर एक शून्यरेखा होती है शेष अमृतरेखा का वास जानना । और रात्रि को प्रथम शून्यरेखा होती है फिर दो कालरेखा जानिये फिर तीन अमृतरेखा होती हैं बाद उसके एक शून्यरेखा जानिये फिर चारतक विघ्नसंज्ञक जानिये फिर तीन अमृतरेखाएँ होती हैं शेष कालरेखा जानना ॥ ३८ ॥

अथ प्रोक्ताश्विनकार्त्तिकादिमासेऽर्कादिवारेषु रेखाः ।

अथाश्विने कार्त्तिकमार्गपौष-
सूर्यादिवारेषु मुहूर्तरेखाः ।
नामाक्षराणां वचनप्रवृत्त्या
विचारपूर्वं विबुधैर्विचिन्त्यम् ॥ ३९ ॥
सूर्ये नृसिंहो द्विपदश्च चापो
हरिर्नभः खं पदमच्युतोऽङ्घ्रिः ।
रात्रौ पदं चापखमच्युतश्च
युग्मं यमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ४० ॥

अब आश्विनकार्त्तिकादि महीनों के रविवारादि दिन-रात्रि में रेखा लिखते हैं—

आश्विन, कार्त्तिक, अगहन और पौष इन महीनों के रविवारादि मुहूर्त रेखा का विचार पूर्वाचार्य चिन्तन करते हैं कि नाम के तथा वचन के प्रमाण से रेखा जानना अर्थात् रेखा के दूसरे नाम में जितने अक्षर हों उतने मुहूर्त तक वही रेखा जानिये तथा वचन अर्थात्

जो प्रथम प्रधान नाम रेखाओं के कह आये हैं उनमें से किसी का नाम पाठ में आवे, तो एक मुहूर्त तक वही रेखा जानना । विघ्न-रेखा धन्वाकार होती है इससे दो मुहूर्त तक वास करती है अर्थात् धन्वा की प्रत्यञ्चा दोनों भ्रमर अर्थात् दोनों तरफ़ से जुड़ी होती है इससे दो कोठों में स्थापित है यह व्याख्यान ऊपर से जानना । रविवार के दिन जो प्रथम तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा है फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये । फिर दो अमृतरेखा हैं बाद उसके दो मुहूर्त शून्यरेखा वास करती हैं । फिर एक मुहूर्त कालरेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती है, शेष कालरेखा जानिये । तथा रात्रि को प्रथम कालरेखा एक मुहूर्त तक होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये । फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है शेष अमृत जानिये ॥ ३९-४० ॥

सोमेऽङ्घ्रिचापं खनभोमुकुन्दो
नभश्च युग्मं हरिखं हरिश्च ।
पदं निशायां खयुगं मुरारि-
र्विनायको विष्णुनभश्च विष्णुः॥ ४१ ॥
भौमे तथेभास्यनभोऽथ विष्णु-
र्नभोयुगं गोपतिखं गणेशः ।
नक्तं गजेन्द्रास्यखमच्युतश्च
युग्मञ्च शून्यं नृहरिश्च शून्यम्॥ ४२ ॥

सोमवार के दिन प्रथम कालरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त तक शून्यरेखा जानना फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा है शेष अमृतरेखा जानना । मङ्गल के दिन प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर दो मुहूर्त अमृतसंज्ञक हैं फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा है बाद उसके तीन मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये शेष विघ्नरेखा होती हैं । तथा रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्य है फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं शेष विघ्नरेखा जानना ॥ ४१-४२ ॥

बुधे धनुः श्रीपतिपादयुग्मं
नारायणः स्याद्गणनाथसिद्धिः ।
रात्रौ तु कालौ हरिशून्यकालौ
गोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥ ४३ ॥

गुरौ हरिः शून्ययुगं सुरेशः
श्रीविघ्नराजो गगनं तथा श्रीः ।
निश्यंघ्रिदैत्यारिखकार्मुकञ्च
पदे मुरारिः खयुगं पुनः श्रीः ॥ ४४ ॥

बुध के दिन प्रथम दो मुहूर्त विघ्नरेखा के हैं फिर तीन अमृतरेखा

के जानिये । फिर दो मुहूर्त कालरेखा के जानना । फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं, बाद उसके चार मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक जानिये शेष शून्यरेखा होती हैं । रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त कालरेखा के होते हैं । फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के जानिये । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर दो मुहूर्त कालरेखा के जानिये । फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है शेष अमृतरेखा के जानिये । बृहस्पति के दिन प्रथम दो मुहूर्त अमृतरेखा के जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा की होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये बाद उसके दो मुहूर्त शून्यरेखा के होते हैं शेष अमृतरेखा के जानिये । और रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त तक काल का वास होता है फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर एक शून्यसंज्ञक होता है । फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है । बाद उसके दो मुहूर्त तक कालरेखा जानिये । फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा वास करती है । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है । फिर दो मुहूर्त विघ्नसंज्ञक जानिये, शेष अमृतसंज्ञक रेखा वास करती है ॥ ४३-४४ ॥

शुक्रेऽमृतश्चापमरिन्दमश्च
लम्बोदरः केशवशून्यपादम् ।
नक्रश्च युग्मं नृहरिः खयुग्मं
नृसिंहयुग्मं गगनश्च युग्मम् ॥ ४५ ॥
शनौ पदं श्रीर्न नभो न कृष्णः
खं श्रीपदं विष्णुनभो हरिः पत् ।

रात्रौ पदं खं पदनन्दसूनु-
गंजाननौ गोपतिशून्यपादाः ॥ ४६ ॥

शुक्र के दिन प्रथम एक मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा के जानिये फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा वास करती है । फिर चार मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक जानिये । फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा के जानिये । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है शेष कालसंज्ञक जानिये । और रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्न-संज्ञक रेखा वास करती है । फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त विघ्नसंज्ञक होते हैं । फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा के जानना । फिर एक मुहूर्त तक शून्यरेखा होती है शेष विघ्नरेखा के जानिये। शनैश्चर के दिन प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा का होता है । फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त तक शून्यरेखा होती है । फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा का जानना । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का जानना फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त अमृतरेखा होती है । फिर एक मुहूर्त कालरेखा का होता है बाद इसके दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा जानिये । शेष कालरेखा जानिये । और रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त कालरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर एक मुहूर्त कालरेखा का जानना चाहिए फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा वास करती है, फिर चार मुहूर्त विघ्न रेखा के होते हैं फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा के जानिये । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है शेष कालरेखा जानिये ॥ ४५–४६ ॥

अथ ज्येष्ठाषाढमलमासेषु रव्यादिवारे मुहूर्तरेखाः ।

ज्येष्ठेमासे तथाषाढे तथा वै मलमासके ।
सूर्यादिवारे संशोध्याः क्रमशो नामभादिमे ॥ ४७ ॥
अर्के शून्ये च कृष्णो युगपदयुगलं खं हरिर्विष्णुचापं
रात्रौ लक्ष्मीशयुग्मं युगलहरियुगं युग्मकृष्णं च शून्यम् ।
सोमे चापद्वयं नो नृहरिखयुगलं पीतवासाश्च शून्यं
चापं द्वन्द्वं निशायामजपदखमजं चापपद्मेशपादाः॥४८॥

ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा मलमास में कार्य के निमित्त रेखा लिखते हैं--

ज्येष्ठमास तथा आषाढमास व मलमास में रविवारादि के क्रम से नाम की राशि से द्विघटिका मुहूर्त शोधन करे । एतवार के दिन प्रथम दो मुहूर्त तक शून्यरेखा है फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के जानिये फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर एक मुहूर्त कालरेखा है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये। फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा है शेष विघ्नसंज्ञक जानिये। तथा रात्रि को प्रथम तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा बसती है । फिर चार मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक जानिये फिर दो मुहूर्त अ तरेखा होती है फिर चार मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक जानिये उपरान्त इसके दो मुहूर्त तक अमृतरेखा है शेष शून्यरेखा जानना । और सोमवार के दिन प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त तक शून्य-रेखा है फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है । इसके उपरान्त दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक वास करती है फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा, शेष शून्यरेखा जानिये । तथा रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा बसती है फिर दो मुहूर्त

तक अमृतरेखा का वास जानना फिर एक मुहूर्त कालरेखा होती है फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक जानिये फिर तीन मुहूर्त अमृतरेखा होती है शेष कालरेखा जानना ॥ ४७-४८ ॥

भौमे शून्ये च कृष्णो युगगगनहरिस्त्रीणिचापानि सिद्धि-
र्नक्तं युग्मं द्विशून्यं युगयुगलपदं श्रीखचापं हरिश्च ।
सौम्ये श्रीविघ्ननाथोऽथ हरिगणपतिः पद्मनाभश्च पादा
दोषायांसिद्धियुग्मंहरिखगजमुखाःकृष्णशून्येचकृष्णः॥४९
जीवे विष्णुश्च चापो गगनमजितखश्चाङ्घ्रिपादौ नृसिंहो
रात्रौ नो खं मुरारिर्गगनयुगगजोविष्णुचापाङ्घ्रियुग्मम् ।
शुक्रे युग्मं मुरारिर्गगनयुगगजो रामचापोऽथ पादौ
तद्रात्रौ युग्मगोपीपतियुगगगनं श्रीवरः खंपदे श्रीः ५०

मङ्गलके दिन प्रथम दो मुहूर्त तक शून्यरेखा जानिये । फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यसंज्ञक जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा होती है फिर छः मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये शेष अमृत जानिये । और रात्रि को प्रथम चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त तक शून्यरेखा है फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त तक कालरेखा होती है । इसके उपरान्त एक मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा का जानना शेष अमृत जानिये । बुध के दिन प्रथम एक मुहूर्त अमृतरेखा की होती है फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा के होते हैं ।

फिर चार मुहूर्त विघ्नरेखा वास करती है फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना शेष कालरेखा होती है । और रात्रि को प्रथम अमृतरेखा वास करती है । फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है । फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक शून्यरेखा जानिये शेष अमृतरेखा होती हैं । बृहस्पति के दिन प्रथम दो मुहूर्त तक अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा बसती है फिर एक मुहूर्त शून्य होती है, तीन मुहूर्त अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है उपरान्त इसके चार मुहूर्त तक काल-संज्ञक जानिये शेष अमृत मानिये । तथा रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक शून्यरेखा है फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा बसती है इसके उपरान्त दो मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्त विघ्नरेखा के होते हैं शेष कालसंज्ञक जानिये । शुक्र के दिन प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानना फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है बाद इसके चार मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है । फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है शेष कालसंज्ञक जानिये । तथा रात्रि को प्रथम दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर चार मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये इसके उपरान्त एक मुहूर्त तक शून्यरेखा जानना फिर दो मुहूर्त तक कालरेखा होती है शेष अमृत जानिये ॥ ४९–५० ॥

मन्दे श्रीयुग्मसिद्धिः खहरिहरिनभः

शौरिखं सिद्धिखं वा ।
नक्तं श्रीयुग्मसिद्धिः खखयुगलहरि-
व्योमगोविन्दशून्यम् ॥ ५१ ॥
इति मासव्यवस्था ज्ञातव्या ।

शनैश्चर के दिन प्रथम मुहूर्त अमृतरेखा वास करती है फिर दो मुहूर्त तक विघ्नसंज्ञक रेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है । फिर एक मुहूर्त शून्यरेखा का होता है फिर चार मुहूर्त अमृतरेखा जानिये उपरान्त इसके एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा जानना फिर एक मुहूर्त तक शून्यरेखा वास करती है फिर एक मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है शेष शून्यरेखा जानिये । तथा रात्रि को प्रथम एक मुहूर्त तक अमृतरेखा होती है । फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा होती है फिर दो मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त तक शून्यरेखा होती है । फिर दो मुहूर्त तक विघ्नरेखा जानिये फिर दो मुहूर्त अमृतरेखा वास करती है उपरान्त इसके एक मुहूर्त शून्यरेखा होती है फिर तीन मुहूर्त तक अमृतरेखा जानिये शेष शून्यसंज्ञक जानना ॥ ५१ ॥

इति मासव्यवस्था समाप्ता ।

रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले ।
गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यःप्रत्ययकारकम् ॥ ५२ ॥
इति प्रकीर्णके शिवद्विघटिका समाप्ता ।

यह द्विघटिका मुहूर्त का ज्ञान रुद्रयामल ग्रन्थ में श्रीमहादेवजी ने श्रीपार्वतीजी से वर्णन किया है सो इसे यत्न से गुप्त रक्खे शीघ्र सिद्धिकारक है ॥ ५२ ॥

इति श्रीमत्पण्डितसूर्यनारायणत्रिपाठिसंगृहीते ज्योतिःसारसंग्रहे
मुहूर्तप्रकरणं द्वितीयं समाप्तम् ।

अथ शिवप्रोक्तद्विघटिकामुहूर्तचक्राणां प्रारम्भः ।

तत्रादौ षोडशमुहूर्तचक्रम् ।

मु.	फ.
सावित्र	विद्यारंभ
भार्गव	स्त्रीसेवा
सौम्य	सभाप्रवेश
याम्य	मारणकर्म
दिन	यन्त्रचालन
विभी-षण	शुभकार्य
बालव	युद्धकार्य
रावण	वैरकार्य
अभि-जित्	ग्रामप्रवेश
तुरग	शस्त्रसाधन
वैरो-चन	शुभपट्टाभिषेक (राजगद्दी)
जय-देव	सर्वकार्यसिद्धि
चार्वट	स्तम्भन
मैत्र	स्नानदानादि शुभकार्य
श्वेत	कुञ्जरबन्धन
रौद्र	रौद्रकार्य

अथ वारपरत्वे मुहूर्तोदयचक्रम् ।

वार	मुहूर्तोदय
शनि	याम्य
शुक्र	विभीषण
गुरु	रावण
बुध	तुरदेव
भौम	जयदेव
चन्द्र	मैत्र
रवि	रौद्र

अथ वारपरत्वे गुणोदयचक्रं फलं च ।

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वार
तमोगुण (कृष्णवर्ण)	सतोगुण (गौरवर्ण)	रजोगुण (श्यामवर्ण)	तमोगुण (कृष्णवर्ण)	सतोगुण (गौरवर्ण)	रजोगुण (श्यामवर्ण)	तमोगुण कृष्णवर्ण	गुणो-दय
अशुभ कर्म	सिद्धि	धन सम्पत्ति	अशुभ कर्म	सिद्धि	धन सम्पत्ति	अशुभ कर्म	फल

अथ रेखाज्ञानचक्रम् ।

अमृत	काल	विघ्न	शून्य	रेखानाम
सिद्धिकर	मृत्युकर	विघ्नकर	कार्यहानि	फल.
श्री, विष्णु, अमृत, सिद्धि	मृत्यु, पाद, यम, काल	विघ्न, धनुः, युग्म, गणाधिप	शून्य, नभ, ख, अभ्र	रेखा संज्ञा

अथ राशीनां गुणघातचक्रम् ।
तथा गुणराशिवर्णज्ञानं घातचक्रं च ।

सतोगुण	रजोगुण	तमोगुण	गुण
गौर	श्याम	कृष्ण	गुणवर्ण.
धनु-मीन-कर्क	तुला-वृष-मेष वृश्चिक	कन्या-सिंह-मिथुन कुम्भ-मकर	घातलग्न.
गौरवर्ण	श्यामवर्ण	कृष्णवर्ण	घातवर्ण.

अथ माघ-फाल्गुन-चैत्र-वैशाख-श्रावण-भाद्रपदमासेषु,
आश्विन-कार्तिक-मार्ग-पौषमासेषु, ज्येष्ठाषाढ-
मलमासेषु च सूर्यादिवारे मुहूर्तानि
नामराशितः शोध्यानि.

तत्रादौ रविदिने मुहूर्तचक्रम् ।

रौद्र	श्वेत	मैत्र	चारभट	जयदेव	वैरोचन	तुरग	अभिजित	रावण	बालव	विभीषण	सुनन्दन	याम्य	सौम्य	भार्गव	सविता	मुहूर्त
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त	स.	स.	गुण
०	δ	δ	δ	ᘏ		ᘏ		δ	δ	δ	०	ᘏ		ᘏ		माघ.फा. चै. वै. श्रा भाद्रेषु
δ	δ	δ	ॐ	ॐ	ᘏ		δ	δ	०	०	ॐ	δ	δ	δ	ॐ	आश्विन कार्तिक मार्गशीर्ष पौषेषु
०	०	δ	δ	ᘏ		ॐ	ᘏ		०	०	δ	δ	δ	ᘏ		ज्येष्ठा-षाढ. मल-मासेषु

अथ रविरात्रौ मुहूर्तचक्रम् ।

श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	या.	सौ.	भा.	स.	रौ.	मु.
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गु.
δ	δ	δ	ᘏ		०	ॐ	δ	δ	δ	ᘏ		ᘏ		δ	δ	माघ फा. चै. वै श्रा. भाद्रेषु
ॐ	ᘏ		०	δ	δ	δ	ᘏ		ॐ	ॐ	δ	δ	०	δ	δ	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
δ	δ	δ	ᘏ		ᘏ		δ	δ	ᘏ		ᘏ		δ	δ	०	ज्येष्ठा-षाढ मल-मासेषु

अथ चन्द्रदिने मुहूर्तचक्रम् ।

मै	वा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि	सु.	या.	सौ	भा.	स.	रौ.	श्वे	मु.
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त	त	स.	स	र.	र.	गु.
ऽ	ऽ	०⁀०		०⁀०		ऽ	ऽ	ऽ	०	०⁀०		०⁀०		ऽ	ऽ	माघ.फा. चै. वै.श्रा. भाद्रेषु
५	०⁀०		०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⁀०		ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
०⁀०		०⁀०		०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⁀०		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०	ज्येष्ठा-षाढ मल-मासेषु

अथ चन्द्ररात्रौ मुहूर्तचक्रम् ।

वा	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा	वि.	सु.	या	सौ	भा.	स.	रौ	श्वे	मै.	मु.
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गु.
५	०	०	ऽ	ऽ	०	०⁀०		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⁀०		०⁀०		माघ. फा. चै. वै. श्रा. भाद्रेषु
५	०	०⁀०		ऽ	ऽ	ऽ	०⁀०		०⁀०		ऽ	ऽ	०	ऽ	ऽ	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
०⁀०		०⁀०		ऽ	ऽ	५	०	ऽ	ऽ	०⁀०		ऽ	ऽ	ऽ	५	ज्येष्ठा-षाढ मल-मासेषु

अथ भौमदिने मुहूर्तचक्रम् ।

ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	धा.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	मु.
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गु.
ष	ष	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		०⌒०		ऽ	ऽ	०⌒०		०⌒०		माघ. फा. चै. वै. आ भाद्रेषु
०⌒०		०⌒०		०	ऽ	ऽ	०	०⌒०		ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒०		आश्विन का. मार्ग पौषेषु
०	०	ऽ	ऽ	०⌒०		०	ऽ	ऽ	०⌒०		०⌒०		०⌒०		ऽ	ज्येष्ठाषाढ, मलमासेषु

अथ भौमरात्रौ मुहूर्तचक्रम् ।

वै.	तु.	अ.	रा.	बा.	वि.	सु.	धा.	सौ.	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	मु.
स.	स.	र.	र.	स.	त.	स.	स.	र.	र	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गु.
०⌒०		ष	ष	ऽ	ऽ	ऽ	ष	ष	ष	ऽ	ऽ	ऽ	०	०	ऽ	माघ फा. चै. वै. आ भाद्रेषु
०⌒०		०⌒०		०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		आश्विन का. मार्ग पौषेषु
०⌒०		०⌒०		०	०⌒०		०⌒०		ष	ऽ	०	०⌒०		ऽ	ऽ	ज्येष्ठाषाढ मलमासेषु

अथ बुधदिने मुहूर्तचक्रम् ।

तु	अ	रौ	वा	वि	खु	या	सौ	मा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	मु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	गु
ᘐ		ऽ	ऽ	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	ᘐ		ऽ	ऽ	४	४	ऽ	माघ.फा. चै. वै.भ्र भाद्रेषु
ᘐ		ऽ	ऽ	ऽ	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ᘐ		ᘐ		ऽ	आश्विन का.मार्ग पौषेषु
ऽ	ᘐ		ᘐ		ऽ	ऽ	ᘐ		ᘐ		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	४	ज्येष्ठाषाढ, मलमासेषु

अथ बुधरात्रौ मुहूर्तचक्रम् ।

अ	रा	वा	वि	स	या	सौ	भा	स	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	मु
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	गु
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ᘐ		०	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ᘐ		ᘐ		माघ.फा. चै. वै.भ्रा भाद्रेषु
४	४	ऽ	ऽ	०	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	ᘐ		ᘐ		०	ऽ	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
ऽ	ᘐ		ऽ	ऽ	०	ᘐ		ᘐ		ऽ	ऽ	०	०	ऽ	ऽ	ज्येष्ठाषाढ मलमासेषु

अथ गुरुदिने मुहूर्त्तचक्रम् ।

रा·	वा·	वि	सु	या·	सौ	भा·	ब्र·	रौ	श्वे	मै.	चा	ज.	वै.	तु·	अ.	मु·
स.	स.	र·	र·	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गु·
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		०⌒०		०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		०⌒०		माघ. फा. चै. वै. श्र. भाद्रेषु
ऽ	ऽ	०	०⌒०		ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		०⌒०		०	०	ऽ	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
ऽ	ऽ	०⌒०		०	ऽ	ऽ	ऽ	०	४	४	४	४	ऽ	ऽ	ऽ	ज्येष्ठाषाढ, मलमासेषु

अथ गुरुरात्रौ मुहूर्त्तचक्रम् ।

वा.	वि·	सु	या	सौ	भा	स.	रौ.	श्वे	मै.	चा	ज.	वै.	तु·	अ.	रा·	मु·
त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	गु·
४	ऽ	ऽ	ऽ	४	४	४	४	०	ऽ	ऽ	ऽ	०⌒०		ऽ	ऽ	माघ. फा. चै. वै. भा. भाद्रेषु
४	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒०		४	४	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒०		ऽ	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
०	०	ऽ	ऽ	ऽ	०	०⌒०		०⌒०		ऽ	ऽ	०⌒०		४	४	ज्येष्ठाषाढ मलमासेषु

अथ शुक्रदिने मुहूर्तचक्रम् ।

वि	सु.	या	सौ	भा.	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	मु.
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गु.
δ	δ	४	४	०	δ	δ	δ	o⌒o		o⌒o		δ	δ	δ	०	माघ फा. चै. वै. श्रा. भाद्रेषु
δ	o⌒o		δ	δ	δ	δ	o⌒o		o⌒o		δ	δ	δ	०	४	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
o⌒o		δ	δ	δ	०	o⌒o		o⌒o		δ	δ	o⌒o		४	४	ज्येष्ठाषाढ, मल-मासेषु

अथ शुक्ररात्रौ मुहूर्तचक्रम् ।

सु.	या.	सौ	भा	स.	रौ.	श्वे	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	मु.
स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	गु.
४	४	δ	δ	δ	०	o⌒o		४	४	δ	δ	δ	०	४	४	माघ. फा. चै. वै. श्रा भाद्रेषु
o⌒o		δ	δ	δ	०	o⌒o		δ	δ	δ	o⌒o		०	o⌒o		आश्विन का. मार्ग पौषेषु
o⌒o		δ	δ	δ	δ	o⌒o		०	δ	δ	δ	०	४	४	δ	ज्येष्ठाषाढ मल-मासेषु

अथ शनिद्दिने मुहूर्तचक्रम् ।

या.	सौ	भा	स.	रौ.	श्वे.	मै.	चा	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु	मु.
त.	त.	स.	स.	र.	र.	ल.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स	गु.
४	८	०	०	०	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	८	माघ. फा. चै. वै. श्रा भाद्रेषु
४	८	०	८	०	८	८	०	८	४	८	८	०	८	८	४	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
८	[illegible]		८	८	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	४	ज्येष्ठाषाढ, मलमासेषु

अथ शनिरात्रौ मुहूर्तचक्रम् ।

सो	भा	स	रौ	श्वे	मै.	चा.	ज.	धै.	तु	अ	रा.	वा.	वि.	सु.	या.	मु.
र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	स.	स.	र.	र.	त.	त.	गु.
०	४	४	८	८	८	०	[illegible]		[illegible]		८	८	८	४	४	माघ. फा. चै. वै. श्रा भाद्रेषु
४	०	४	८	८	८	८	[illegible]		[illegible]		८	८	८	०	४	आश्विन का. मार्ग पौषेषु
८	[illegible]		८	८	०	०	[illegible]		८	८	०	८	८	८	०	ज्येष्ठाषाढ मलमासेषु

इति श्रीसूर्य्यनारायणत्रिपाठिविरचिते ज्योतिःसार संग्रहे भाषाटीकायां मुहूर्तप्रकरणं द्वितीयं समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ वर्षप्रवेशज्ञानम् ।

सपादमर्धसार्द्धं च त्रिस्थानस्थं गताब्दकम् ।
वारनाडीपलेभ्यश्च जन्मवारादिसंयुतम् ॥ १० ॥

गत वर्षको तीन जगह स्थापित करे प्रथम को सवाई करे उनको वार जानिये दूसरे अङ्क को आधा करे वे घटी होती हैं, तीसरे अङ्क को ड्योढ़ा अङ्क करें वे पल होते हैं उनमें जन्म वारादि के जोड़ने से वर्ष के इष्ट वारादि होते हैं ॥ १ ॥ उदाहरण ॥ गत वर्ष २० बीस को सवाई किया तो पच्चीस २५ हुए । बीस को आधा किया तो दश १० हुए । फिर बीस को ड्योढ़ा किया तो तीस ३० हुए । उनको क्रम से तीनों अङ्क वार घड़ी पल जानना २५ । १० । ३० । वार सात से अधिक हैं इस कारण से सात का भाग प्रथम अंक में दिया तो शेष रहे चार ४ अब शुद्ध ध्रुवा हुआ ४ । १० । ३० ॥ ये बीस वर्ष के गताब्द का ध्रुवा जानना । तथा पल जब साठ से अधिक होयँ तब साठ का भाग देकर शेषांक पलों की जगह में रखना लब्धाङ्क को घटी के अङ्क में शामिल करना । और घटी जो साठ से अधिक होयँ तो उसमें साठ का भाग देकर शेषाङ्क को घटी के जगह रखना और लब्धाङ्क को वारों के अङ्क में जोड़ देना । तथा वारों का अङ्क सात से अधिक हो तो सात से भाग लेकर शेषाङ्क को वार की जगह रखना और लब्धाङ्क को छोड़ देना तब शुद्ध ध्रुवा बनेगा उसमें जन्म वारादि जोड़ देना उसमें भी इसी क्रिया से अङ्क को घटा लेना तब वर्षप्रवेश के इष्ट वारादि शुद्ध होंगे । अथवा, अङ्क चढ़ाने काबिल न हो अर्थात् अपने प्रमाण के भीतर हो तो वही शुद्ध जानिये तथा गतवर्ष को सवाई करने से कुछ घड़ी आवें तो वे घड़ी, घड़ी के अङ्क में जोड़ देना अर्थात्

दूसरी जगह जिसको आधा किया है वही घड़ी का अङ्क है उसमें वह अङ्क जोड़ देना तथा घड़ी के अङ्क में जो अङ्क अधिक आवें वे वार के अङ्क में जोड़ देना अर्थात् जिसे ड्योढ़ा किया है वही पल का अङ्क है और जो पल से अधिक हो वह विपल की जगह स्थापित करना । उसका उदाहरण दिखाते हैं—

गत वर्ष ११ सवाई करने से पौने चौदह १३॥। हुए इनके तेरह वार आये और तीन पाइयों की पैंतालीस घड़ी हुई इसलिये तेरह पैंतालीस स्थापित किये १३ । ४५ फिर वही गताब्द को आधा किया तो साढ़े पाँच हुए इसको पैंतालीस में जोड़ा तो साढ़े पचास ५०॥ हुए इस अङ्क की पचास घड़ी हुई और दो पाइयों के तीस ३० पल हुए । अब ये अङ्क वारादि स्थापित किया तो तेरह, पचास, तीस १३।५०।३० हुए। अब उसी गताब्द को ड्योढ़ा किया तो साढ़े सोलह १६॥ हुए सोलह पल पाये और दो पाइयों के तीस विपल हुए उन पलों को पलों में जोड़ने से छियालिस ४६ पल हुए बाद उसके ऊपर तीस ३० विपल हुए तो अब क्रम से अङ्क स्थापित किया तो ध्रुवाङ्क हुआ १३ । ५० । ४६ । ३० ये वारादि हुए इसमें प्रथम वार के अङ्क में तेरह हैं इसमें सात का भाग दिया तो शेष बचे छः तो शुद्ध ध्रुवा हुआ ६ । ५० । ४६ । ३० इसी में जन्मवारादि जोड़ने से इष्टवारादि होंगे । तथा जन्म के सूर्यों के समान वर्ष के सूर्य देखना उतने सूर्यों पर वर्षप्रवेश होगा और इष्टवार उन्हीं सूर्यों पर मिलेगा ॥ १ ॥

अथेष्टसमये चन्द्रं हित्वा सूर्यादिग्रहस्पष्टसाधनम् ।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी खषड्हृता ।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥१॥

इष्टकालो यदाग्रे स्यात्प्रस्तारं शोधयेत्तदा ।
अग्रे प्रस्तारकश्चेत्स्यादिष्टं संशोधयेत्तथा ॥ २ ॥

चालक के दिनादिक गत वा एष्य हों उनको गोमूत्रिका से ग्रह की गति से गुणे तथा विगति से भी वारादिक गुणे । उसको साठ से चढ़ाकर दोनों के अङ्क में फिर साठ का भाग दे लब्ध अंशादि मिलेंगे सो जिस पंक्ति से चालक बनाया है उसी पंक्ति के ग्रहों में क्रम से घटाना जोड़ना अर्थात् गतचालक हो, तो घटा देना और एष्य हो तो जोड़ देना तो स्पष्ट ग्रह बन जायगा । वक्री ग्रह को विलोम जानिये अर्थात् जोड़ना हो, तो घटा देना और घटाना हो, तो जोड़ देना । अब चालक स्पष्ट लिखते हैं--

प्रस्तार से इष्टकाल आगे हो तो इष्टकाल के वारादिकों में प्रस्तार के वारादि घटा देना तब एष्य चालक बनेगा । और प्रस्तार आगे हो और इष्टकाल प्रथम हो, तो प्रस्तार के वारादिकों में इष्ट के वारादि घटाने से गतचालक बनेगा अथवा वार में वार न घट सके, तो सात और जोड़ कर घटा देना वा घड़ी, घड़ी में न घटे, तो एक अङ्क वार से उतार लेना । इसी प्रकार पल न घट सकें तो एक अङ्क घड़ी से उतार लेना ॥ १-२ ॥

अथ चन्द्रस्पष्टज्ञानम् ।

खषट्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं त-
त्खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तु भुक्तिः
खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥ १ ॥

इष्ट समय के भयात को साठ से गुणा करना और भभोग का भाग लेना लब्ध जो मिले उसमें अश्विन्यादि गतनक्षत्र, साठ से

गुणकर जोड़ देना उस अङ्क को दूना करना उसमें नव का भाग देना लब्ध जो मिलें उन्हें स्पष्ट चन्द्रमा के अंशादि जानना। अंश तीस से अधिक हों, तो तीस का भाग देने से जो लब्ध मिले उसे राशि जानना। अब गतिसाधन लिखते हैं--

अड़तालीस हज़ार ४८००० को ६० से गुणा करे, उसमें भभोग का भाग देने से लब्ध गति मिलेगी, शेषाङ्क को साठ से गुणा करके फिर भभोग के भाग देने से विगति जानना चाहिये ॥ १ ॥

अथ भभोगभयातज्ञानम् ।

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः
सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य
निजर्क्षनाडीसहितो भभोगः ॥ १ ॥

गत नक्षत्र की घड़ी, साठ में घटा देना उसमें जो सूर्योदय से इष्ट घड़ी हो उसे जोड़ देना वह भयात होता है। और साठ में जो घटा हुआ नक्षत्र है उसमें वर्तमान नक्षत्र की घड़ी जोड़ने से भभोग होगा। अब दूसरा भभोग का क्रम लिखते हैं---जो नक्षत्र का अवम भया हो, तो गत-नक्षत्र अवम के नक्षत्र में घटाने से भभोग बनेगा। तथा नक्षत्र की वृद्धि हुई हो तो वर्तमान में जोड़कर उसी में वृद्धि की भी घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। अब भयात का दूसरा क्रम लिखते हैं---जिस दिन का इष्ट हो उसी दिन सूर्योदय में जो नक्षत्र हो उससे दूसरा नक्षत्र इष्टसमय में हो ऐसा समय पड़े, तो प्रथम नक्षत्र के घट्यादि इष्टकाल में घटाने से भयात होता है ॥१॥

अथायनांशज्ञानम् ।

वेदाब्धिवेदहीनात्तु शकात्खरसभाजितात् ।
अयनांशा भवन्त्येते ब्रह्मपक्षाश्रिता: किल ॥ १ ॥

शालिवाहन के शक में चारसौ चवालिस ४४४ घटा देना, उसमें साठ का भाग देना जो लब्ध मिले सो अयनांश ब्रह्मसिद्धान्त पक्ष के मत से होते हैं ॥ १ ॥

अथ लक्ष्मणपुर्यां लग्नप्रमाणचक्रम् ।

मेष	वृष	मि.	कर्क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	ल.
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घटी
३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८	पल

अथ लग्नस्पष्टज्ञानम् ।

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना
भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ।
एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो
भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥ १ ॥
तदनु विशोध्य गृहोदयांश्च शेषं
गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाढ्यम् ।
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वै-
र्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम् ॥ २ ॥
भोग्यतोऽल्पेष्टकालात् खरामाहता-
त्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः ।

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो
युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ ३ ॥
यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशा-
न्तरहतउदयःस्यात् खाग्निहृत्विष्टकालः ।
इनत उदयऊनश्चेत्स शोध्यो द्युरात्रा-
न्निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥४॥

इष्ट-समय के सूर्य में अयनांश जोड़कर उसको तीस अंश में घटा देने से भोग्यांश होते हैं। और सायनसूर्य जिस राशि का हो वह उदय लेना। उस उदय के पल से भोग्यांशों को गुणा करना, उसमें तीस का भाग देना, जो लब्ध मिले सो पलात्मक सूर्य का भोग्यकाल होगा। अब सूर्य के भुक्तकाल लाने का क्रम लिखते हैं—

सायनसूर्य के अंशादिक उसी के उदय के पलों से गुणदे उसमें तीस का भाग दे, जो लब्ध मिले वह पलात्मक सूर्य का भुक्तकाल होता है। फिर भोग्यकाल के पल इष्ट-घटी के पल करके उसमें घटा देना। अब उस अङ्क में सायन-सूर्य जिस लग्न के हों उससे दूसरी लग्न के पलों को घटा देना। फिर उसके आगेवाली लग्न के पलों को उसी अङ्क में हीन करना इसी प्रकार से जो जो लग्न घटें वे घटा देना और जो लग्न न घट सके उसकी अशुद्धसंज्ञा है। फिर जो शेषाङ्क बचा है उसे तीस से गुणा करना। उस अङ्क में अशुद्ध लग्न के पलों से भाग लेना, जो लब्ध मिले उसे अंशादि जानना। फिर मेषादिक लग्नों में जो लग्न अशुद्ध-संज्ञक है उससे जो प्रथम लग्न है वह अंशादिकों में जोड़ देना अर्थात् अंशादिक उसके बाद स्थापित करना तब राश्यादि अङ्क

प्राप्त होंगे । उसमें अयनांश हीन करने से स्पष्ट लग्न होगा । भोग्य-काल इष्ट-घटी के पलों में हीन न हो उसकी क्रिया लिखते हैं—भोग्य के पलों से इष्ट-काल के पल कम हों तो इष्टकाल के पलों को तीस से गुणा करना और सायन-सूर्य के पलों से भाग लेना जो लब्ध अंशादिक मिलें वे स्पष्ट सूर्य में जोड़ देने से लग्न स्पष्ट होती है ।

लग्न से इष्टकाल लाने का क्रम ।

सूर्य को सायन करके भोग्यकाल पूर्वोक्त रीति से बना लेना उसको अलग रखना फिर स्पष्ट लग्न को सायन करना उसके अंशादि उसी के उदय के पलों से गुण देना उसमें तीस का भाग देना पूर्वोक्त रीति से जो लब्ध अंशादि मिलें उसे लग्न का भुक्तकाल जानिये । दोनों अङ्क एक में जोड़ देना अर्थात् सूर्य का भोग्यकाल और लग्न का भुक्त-काल जोड़ देना । उसमें मध्य लग्नों के पल जोड़ देना अर्थात् सायन सूर्य जिस लग्न के हों उसके दूसरे लग्न से सायन लग्न की पहली लग्न तक जोड़ना यही मध्य की लग्न हैं, ये तीनों अङ्क जोड़ने से इष्ट-काल के पल निकलेंगे । पलों में साठ का भाग देने से इष्टकाल की घड़ी होंगी और शेष पल होंगे ।

सूर्य और लग्न एक राशि के हों तो इष्टकाल लाने का क्रम ।

सूर्य और लग्न एक राशि के हों तो दोनों का अन्तर करना उसे उदय के पलों से गुणकर उसमें तीस का भाग दे लब्ध इष्ट-काल पलात्मक होता है । सूर्य से लग्न कम हो तो लब्ध पलात्मक जो मिला है वह साठ घटी में घटा दे तो इष्टकाल निकलता है उसे घट्यादिक जानना। और रात्रि की लग्न वा इष्टसाधन हो, तो सूर्य

की राशि में छः मिलावे शेष क्रिया पूर्ववत् समझ लेना परन्तु जब रात्रि का लग्न साधन करे, तो इष्टकाल सायंकाल से लेना और पूर्वोक्त प्रकार से लग्न बना लेना ॥ १-४ ॥

अथ मासप्रवेशज्ञानम् ।

मासार्कस्य तदासन्नपंक्त्यर्केण सहान्तरम् ।
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥ १ ॥

वर्ष-प्रवेश के सूर्यों के निकट जो मास सूर्य हो उसका अन्तर करना । जो अंशादि हों उनकी कला करके सूर्य की गति का भाग लेना तीन बार लब्ध वारादि मिलेंगे उसे जिस सूर्य की पंक्ति का अन्तर किया हो, उसी पंक्ति के वारादि मिश्रमान में जोड़ना तथा घटाना । जो वर्ष-प्रवेश का सूर्य पंक्ति से अधिक हो, तो जोड़ देना और हीन हो, तो घटा देना तो मासस्पष्ट वार आदि होगा ॥१॥

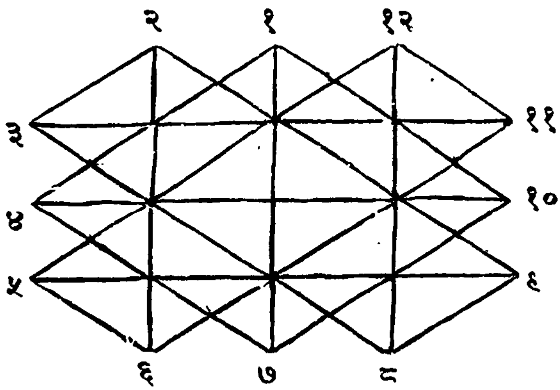
अथ त्रिपताकीचक्रम् ।

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थ-
मन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकिचक्रं
प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ॥ १ ॥
न्यसेद्ग्रचक्रं किल तत्र सैकां
याताब्दसंख्यां विभजेन्नभोगैः ।
शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशे-
स्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥२॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये
स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः ।

स्वभानुविद्धे हिमगौ त्वरिष्टं
तापोऽर्कविद्धे रुगिणोऽर्किविद्धे ।
महीजविद्धे तु शरीरपीडा
शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ॥ ३ ॥

तीन रेखा सीधी, तीन वेंड़ी करना और परस्पर ईशान कोण से रेखा का वेध करना इसको पण्डित लोग त्रिपताकीचक्र कहते हैं। इसके पूर्व के मध्यरेखा पर वर्षलग्न का न्यास करना। फिर गत वर्ष में एक और जोड़ देना उसमें नव का भाग देना शेष जो अङ्क रहे तो जन्मस्थान से चन्द्रमा लिखना। और ग्रहों में चार का भाग देकर शेष रहे तो जन्मस्थान से लिखना। और राहु केतु जन्मस्थान से पीछे लिखना। त्रिपताकीचक्र में चन्द्रमा और राहु से वेध हो, तो अरिष्ट जानना। और सूर्य से चन्द्रमा का वेध हो तो ताप जानना। और शनैश्चर का चन्द्रमा से वेध हो तो रोग जानना। मङ्गल से चन्द्रमा का वेध हो, तो शरीरपीड़ा जानना। और चन्द्रमा से शुभग्रह का वेध हो तो जय, सुख और लाभ जानिये ॥ १-३ ॥

अथ त्रिपताकीचक्रन्यासः ।



अथ पञ्चाधिकारिज्ञानम् ।

मुन्थेशो वर्षलग्नेशस्तथा त्रैराशिनायकः ।
दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौ चन्द्रर्क्षनायकः ॥ १ ॥
जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षपञ्चाधिकारिणः ।
पञ्चवर्गीबलाधिक्यं लग्नदर्शी च वर्षराट् ॥ २ ॥

मुन्था-लग्न का स्वामी तथा वर्षलग्न का स्वामी तथा त्रिराशिप और दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्यराशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्रमा की राशि का स्वामी तथा जन्मलग्न का स्वामी इनको पञ्चाधिकारी जानना। इन पाँचों में से पञ्चवर्गी में जो अधिक बली हो तथा वर्षलग्न को देखता हो वही वर्षेश होता है ॥ १–२ ॥

अथ त्रिराशिपज्ञानम् ।

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्रा
दिने निशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं
नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ १ ॥

मेष आदि बारह राशियों में त्रिराशिपों को कहते हैं—

दिन के वर्षप्रवेश में मेष से चार राशियों के सूर्य, शुक्र, शनैश्चर और शुक्र ये त्रिराशिप होते हैं। जैसे दिन में वर्षप्रवेश के समय मेष लग्न हो तो सूर्य, वृष लग्न हो तो शुक्र, मिथुन हो तो शनैश्चर और कर्क लग्न हो तो शुक्र, त्रिराशिप होता है। और रात्रि में वर्ष-प्रवेश के समय मेष आदि चार राशियों के गुरु, चन्द्र, बुध और ंगल ये त्रिराशिप होते हैं अर्थात् रात्रि में मेष लग्न का स्वामी

गुरु, वृष का चन्द्रमा, मिथुन का बुध और कर्क का मंगल त्रिराशिप होता है । और पूर्वोक्त त्रिराशिप सिंह से चार राशियों के विलोम होते हैं अर्थात् मेष आदि के जो दिनेश हैं वे रात्रि के ईश होते हैं और जो मेष आदि के रात्रीश हैं, वे दिनेश होते हैं । जैसे दिन में सिंह लग्न का बृहस्पति, कन्या का चन्द्रमा, तुला का बुध और वृश्चिक का मंगल तथा रात्रि में सिंह का सूर्य, कन्या का शुक्र, तुला का शनैश्चर और वृश्चिक का शुक्र त्रिराशिप होता है । और धन आदि चार राशियों के सदा दिन और रात्रि के वर्षप्रवेश में शनैश्चर, मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमा ये त्रिराशिप होते हैं । जैसे धन का शनैश्चर, मकर का मंगल, कुम्भ का बृहस्पति और मीन का चन्द्रमा त्रिराशिप होता है । इन राशियों में त्रिराशिपों का विपर्यय नहीं होता है ।

अथ त्रिराशिपचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्न
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिने त्रिराशिपाः
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रौ त्रिराशिपाः

अथ दृष्टिचक्रम् ।

स्थान	३।५।६।११	मित्रदृष्टि
स्थान	७।१।४।१०	शत्रुदृष्टि

अथ पञ्चवर्गीसाधनार्थं चैत्रादिबलचक्रम् ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
३० । ००	२२ । ३०	१५ । ००	०७ । ३०	बलप्रमाणम्

अथ स्वगृहसंज्ञाचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
५	४	१ ८	३ ६	६ १२	२ ७	१० ११	लग्न

अथ मित्रसमशत्रुसंज्ञाचक्रम् ।

स्थान	३ । ५ । ६ । ११	मित्र
स्थान	२ । ६ । ८ । १२	सम
स्थान	१ । ४ । ७ । १०	शत्रु

अथ उच्चबलज्ञानं तथा नवांशज्ञानम् ।

सूर्यादितुङ्गर्क्षमजोक्षनक्र-
कन्याकुलीरान्त्यतुलालवैः स्युः ।
दिग्भिः[१०] गुणैः[३] रष्टयमैः[२८] शरैर्कै-[१५]
भूतैर्[५] भसंख्यै[२७] र्नखसम्मितैश्च[२०] ॥ १ ॥
तत्सप्तमं नीचमनेन हीनो
ग्रहोऽधिकश्चेद्भसभाद्विशोध्यः ।
चक्रात्तदंशाङ्कलवो बलं स्यात्
क्रियेणतौलीन्दुभतो नवांशाः ॥ २ ॥

सूर्यादि ग्रहों का उच्च स्थान ।

सूर्य आदि ग्रहा की मेष आदि राशियां दश आदि अंशों से उच्च होती हैं । जैसे—मेषराशि का सूर्य, वृष का चन्द्रमा, मकर का मङ्गल, कन्या का बुध, कर्क का बृहस्पति, मीन का शुक्र और तुला का शनैश्चर उच्च होता है ।

सूर्यादि ग्रहों की परमोच्चता ।

मेष का जब दश अंश पूरा होगा तब सूर्य और चन्द्रमा वृष राशि के तीन अंश पूरे होने तक परमोच्च होता है । मङ्गल मकर के अट्ठाइस अंश तक, बुध कन्या के पंद्रह अंश तक, बृहस्पति कर्क के पाँच अंश तक, शुक्र मीन के सत्ताइस अंशतक और शनैश्चर को तुला के बीस अंश तक परमोच्च और इनसे सप्तम राशि को नीच जानिये । स्पष्ट ग्रह में वही, ग्रह का नीच घटा देना । छः राशि से अधिक हो तो वही अङ्क बारह में घटा देना, उस अङ्क में नव का भाग देना । जो लब्ध मिले, उसे उच्चबल जानना । परमोच्च हो तो पूरा बीस बिस्वा उच्चबल जानना । तथा नवांश मेष, मकर तुला और कर्क से मेषादि तीन आवृत्ति करके चक्र से समझ लेना । तीन अंश बीस कला का एक भाग होता है इसी के समान नव भाग होते हैं ॥ १–२ ॥

अथोच्चनीचचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
०	१	९	५	३	११	६	उच्चराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमोच्चांश
६	७	३	११	९	५	०	नीचराशि
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमनीचांश

अथ नवांशचक्रम् ।

मे.	वृष.	मि.	कर्क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
मे.	म.	तु.	कर्क	मे.	म.	तु.	कर्क	मे.	म.	तु.	कर्क	राशि-गणना

अथ नवांशप्रमाणचक्रम् ।

३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०	अंश
२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	क.
प्रथम भाग	द्वितीय भाग	तृतीय भाग	चतुर्थ भाग	पञ्चम भाग	षष्ठ भाग	सप्तम भाग	अष्टम भाग	नवम भाग	भाग

अथ पञ्चवर्गीमध्ये नवांशबलचक्रम् ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
०५ । ००	०३ । ४५	०२ । ३०	०१ । १५	बलप्रमाणम्

अथ हद्दाप्रमाणचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	कर्क	सिं.	कन्या	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अंशाः
बृ.	शु.	बु.	मं	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	बु.	शु.	हद्देशाः
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अंशाः
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	शु.	बृ.	हद्देशाः
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अंशाः
बु.	बृ.	बृ.	बु	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	हद्देशाः
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	६	अंशाः
मं.	श.	मं.	बृ.	बु.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.	हद्देशाः
५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अंशाः
श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	हद्देशाः

अथ हद्दाबलचक्रम् ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
१५ । ००	११ । १५	०७ । ३०	०३ । ४५	बलप्रमाणम्

अथ दृकाणचक्रम् ।

मे.	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	लग्नानि
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	दृकाणेशाः
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	दृकाणेशाः
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अंशाः
शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	दृकाणेशाः

अथ पञ्चवर्गीमध्ये दृकाणबलचक्रम् ।

स्वगृही	मित्रगृही	समगृही	शत्रुगृही	ग्रहस्थान
१० । ००	०७।३०	०५।००	०२ । ३०	बलप्रमाणम्

अथ वर्षेशफलम् ।

बलपूर्णोऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम् ।
अधमे दुःखरोगारिभयानि विविधाः शुचः ॥ १ ॥

वर्ष का स्वामी पूर्णबली हो अर्थात् १३ । २० तेरह बीस के उपरान्त बल हो, तो वर्ष भर पूर्ण शुभ फल जानिये । यदि मध्यबल अर्थात् ६ । ४० छः चालिस के उपरान्त १३ । २० तेरह बीस के भीतर तक हो, तो मध्यम फल जानिये । और अधमबल अर्थात्

६ । ४० छः चालिस के भीतर हो तो दुःख, रोग, शत्रुभय और अनेक प्रकार के शोकों को करता है ।

वर्षेश का निर्णय ।

जो पञ्चाधिकारी किसी ग्रह की दृष्टि लग्न पर न हो, तो जो ग्रह पञ्चवर्गी में अधिक बली हो वही वर्षेश होता है । और बल सब का बराबर हो तो मुन्था का स्वामी वर्षेश होता है ।

बल निकालने का यत्न ।

पञ्चवर्गी में पाँचों अधिकार अर्थात् क्षेत्रबल, उच्चबल, हद्दाबल, दृकाणबल, नवमांशबल–इन पाँचों अङ्कों को इकट्ठा जोड़ देना इसमें चार का भाग देना जो लब्ध मिले उसे बल जानिये ॥ १ ॥

अथ मुन्थाज्ञानम् ।

जन्मलग्नगताब्दश्च युक्तं द्वादशहृत्तथा ।
शेषराशिं प्रदातव्यं मुन्थहा वर्षमध्यगः ॥ १ ॥

जन्मलग्न में गतवर्ष युक्त करना उसमें बारह का भाग देना शेष बचे तो उसी लग्न में मुन्था जानना ॥ १ ॥

अथ मुद्दादशाज्ञानम् ।

जन्मर्क्षसंख्यासहिता गताब्दा
द्व्यूनिता नन्दहृतावशेषात् ।
आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वा
भवन्ति मुद्दादशिकाक्रमोऽयम् ॥ १ ॥

जन्मनक्षत्र की संख्या अश्विन्यादि से गिनकर गतवर्षों को जोड़ देना । उसमें दो घटा देना फिर नव का भाग देने से शेष रहे तदनुसार सूर्य आदि की दशा जानिये । एक बचे तो सूर्य की दशा, दो बचें तो चन्द्रमा की, तीन बचें तो मङ्गल की, चार बचें तो राहु की

पाँच बचें तो बृहस्पति की, छः बचें तो शनैश्चर की, सात बचें तो बुध की, आठ बचें तो केतु की, नव बचें तो शुक्र की मुद्दा दशा जानिये ॥ १ ॥

अथ दशाप्रमाणचक्रम्।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
००	०१	००	०१	०१	०१	०१	००	०२	मास
१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	००	दिन

अथ लग्नस्थमुन्थहायाः फलम्।

शत्रुक्षयं मानसुताश्वलाभं
प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम्।
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च
ददादि वित्तं मुथहा तनुस्था ॥ १ ॥

वर्षलग्न में यदि मुन्था हो तो शत्रु का क्षय, मान, सुत और घोड़े का लाभ, प्रताप की वृद्धि, राजा की प्रसन्नता, शरीर में पुष्टता, अनेक प्रकार के उद्यम और धन को देती है ॥ १ ॥

अथ धनस्थमुन्थहायाः फलम्।

उत्साहतोऽर्थागमनं यशश्च
स्वबन्धुसम्माननृपाश्रयाश्च।
मिष्टान्नभोगो बलपुष्टिसौख्यं
स्यादर्थभावे मुथहा यदाऽब्दे ॥ २ ॥

दूसरे स्थान में मुन्था हो तो उत्साह से धन की प्राप्ति, कीर्ति, अपने बन्धुओं में सम्मान, राजा का आश्रय, मिष्टान्न भोजन, बल, पुष्टि तथा सुख करे ॥ २ ॥

अथ सहजस्थमुन्थहायाः फलम् ।

पराक्रमाद्वित्तयशःसुखानि

स्यादर्थसौख्यं द्विजदेवपूजाः ।

सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकीर्ति-

र्नृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीये ॥ ३ ॥

तीसरे स्थान में मुन्था हो तो पराक्रम से धन, यश और सुख प्राप्त हो तथा भ्रातृसुख हो, ब्राह्मण तथा देवता का पूजन करे तो सर्वोपकार से शरीर पुष्ट और कान्ति तथा नृपाश्रय हो ॥ ३ ॥

अथ सुखभावस्थमुन्थहायाः फलम् ।

शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्ग्य-

वैरं मनस्तापनिरुद्यमत्वे ।

स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां

जनापवादामयवृद्धिदुःखम् ॥ ४ ॥

चौथे स्थान में मुन्था हो तो शरीर-पीड़ा, शत्रुभय, स्ववर्ग से वैर, मनसन्ताप, उद्यमरहित और जनापवाद करावे तथा रोगवृद्धि और दुःख यह फल होता है ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमभावस्थमुन्थहायाः फलम् ।

यदीन्थिहा पञ्चमगाऽब्दवेशे

सद्बुद्धिसौख्यात्मजवित्तलाभः ।

प्रतापवृद्धिर्विविधा विलासा

देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ॥ ५ ॥

मुन्था पञ्चमस्थान में हो तो उत्तम बुद्धि हो, सुख, पुत्र और धन

का लाभ हो, प्रतापवृद्धि हो, नाना प्रकार के विलास हों, देवता-ब्राह्मण की पूजा करे तो राजा की प्रसन्नता हो ॥ ५ ॥

अथारिभावस्थमुन्थहायाः फलम्।

कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च
भयं रुजस्तस्करतो नृपाद्वा।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चे-
द्दुर्बुद्धिवृद्धिः स्वकृतेऽनुतापः ॥ ६ ॥

मुन्था षष्ठ-स्थान में हो तो शरीर के लिये कृशता हो, शत्रु का उदय हो, रोग और चोर तथा राजा से भय हो। कर्म और अर्थ का नाश करे, दुर्बुद्धि की वृद्धि करे तथा स्वकीयकृत में सन्ताप हो ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थमुन्थहायाः फलम्।

कलत्रबन्धुव्यसनारिभीति-
रुत्साहभङ्गो धनधर्मनाशः।
द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनौ स्या-
द्रुजा मनोमोहविरुद्धचेष्टः ॥ ७ ॥

सप्तम स्थान में मुन्था हो तो स्त्री से, बन्धु से, व्यसन से और शत्रु से भय हो और उत्साहभङ्ग, धन और धर्म का नाश होता है। मोह और विपरीत चेष्टा होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थमुन्थहायाः फलम्।

भयं रिपोस्तस्करतो विनाशो
धर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च।

मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां
बलक्षयः स्याद्गमनं सुदूरे ॥ ८ ॥

अष्टम-स्थान में मुन्था हो तो शत्रुभय, चोरभय, धर्म और अर्थ का नाश, दुष्ट व्यसन, रोग, बलक्षय और दूरदेश में गमन हो ॥ ८ ॥

अथ नवमस्थमुन्थहायाः फलम् ।

स्वामित्वमर्थोपगमो नृपेभ्यो
धर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
देवद्विजार्चा परमं यशश्च
भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहायाम् ॥ ९ ॥

मुन्था नवम-स्थान में हो तो राजा से धन की प्राप्ति हो, धर्मोत्सव हो, पुत्र और स्त्री से सुख हो, देव-ब्राह्मण का पूजन करावे, परम यश और भाग्योदय करे ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थमुन्थहायाः फलम् ।

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं
सत्कर्मसिद्धिं द्विजदेवभक्तिम् ।
यशोऽभिवृद्धिं विविधार्थलाभं
दत्तेऽम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥ १० ॥

दशम-स्थान में मुन्था हो तो राजा प्रसन्न हो, स्वजन से उपकार हो, उत्तम-कर्म की सिद्धि हो, ब्राह्मण तथा देवता की भक्ति हो, यश की वृद्धि हो, नानाप्रकार के द्रव्य का लाभ और श्रेष्ठपद का लाभ हो ॥ १० ॥

अथायस्थमुन्थहायाः फलम् ।

यदीन्थिहा लाभगता विलास-
सौभाग्यनैरुज्यमनःप्रसादाः ।

भवन्ति राजाश्रयतो धनानि

सन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ॥ ११ ॥

लाभस्थान में मुन्था हो तो विलास, सौभाग्य, नीरोगता और मन को प्रसन्न करे। राजा के आश्रय से धन मिले और उत्तम मित्र और पुत्र की इच्छा प्राप्त हो ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थमुन्थहायाः फलम् ।

व्ययोऽधिको दुष्टजनैश्च सङ्गो

रुजा तनौ विक्रमतोऽर्थसिद्धिः ।

धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था

यदा तदा स्याज्जनतोऽपि वैरम् ॥१२॥

बारहवें स्थान में मुन्था हो तो खर्च बहुत करावे और दुष्ट जनों से संग हो तथा शरीर में रोग हो, पराक्रम से भी कार्य सिद्ध न हो, धर्म-अर्थ की हानि और सज्जनों से वैर हो ॥१२॥

अथारिष्टयोगः ।

अब्दलग्नं जन्मलग्नराशिभ्यामष्टमं यदा ।

कष्टं महाव्याधिभयं मृत्युः पापयुतेक्षणात् ॥ १ ॥

जन्मलग्न और जन्मराशि से वर्षलग्न आठवाँ हो तो कष्ट और महाव्याधियों का भय होता है। और यदि वह वर्षलग्न पापग्रहों से युक्त हो किंवा उसको पापग्रह देखते हों तो मृत्यु होती है ॥ १ ॥

अथारिष्टभङ्गयोगः ।

लग्नाधिपो बलयुतः शुभेक्षितयुतोऽपि वा ।

केन्द्रत्रिकोणगोरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ १ ॥

लग्नेश पञ्चवर्गी के बल से बलिष्ठ हो और शुभग्रहों की दृष्टि हो अथवा शुभग्रहों से युक्त लग्नेश त्रिकोण ९ । ५ वा केन्द्र अर्थात् १ । ४ । ७ । १० में पड़ा हो, तो अरिष्ट का नाशकर सुख और धन को देता है ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां भावफलम् ।

तत्र तावल्लग्नस्थितसकलग्रहफलम्—

सूर्यारमन्दास्तनुगा ज्वरार्तिं
धनक्षयं पापयुगिन्दुरित्थम् ।
शुभान्वितः पुष्टतनुश्च सौख्यं
जीवज्ञशुक्रा धनधान्यलाभम् ॥ १ ॥
चन्द्रज्ञजीवास्फुजितो धनस्था
धनागमं राजसुखं च दद्युः ।
पापा धनस्था धनहानिदाः स्यु-
र्नृपाद्भयं कार्यविघातमार्किः ॥ २ ॥
दुश्चिक्यगाः खलखगा धनधर्मराज्य-
लाभप्रदा बलयुताः क्षितिलाभदाः स्युः ।
सौम्याः सुखार्थसुतलाभयशोविलास-
लाभाय हर्षमतुलं किल तत्र चन्द्रः ॥ ३ ॥
चन्द्रः सुखे खलयुतो व्यसनं रुजं च
पुष्टः शुभेन सहितः सुखमातनोति ।
सौम्याः सुखं विविधमत्र खलाः सुखार्थ-
नाशं रुजं व्यसनमप्यतुलं भयं च ॥ ४ ॥

पुत्रवित्तसुखसञ्चयं शुभाः
पुत्रगा भृगुसुतोऽतिहर्षदः ।
पुत्रवित्तधनहानिकारका-
स्तस्करामयकलिप्रदाः खलाः ॥ ५ ॥
षष्ठे पापा वित्तलाभं सुखाप्तिं
भौमोऽत्यन्तं हर्षदः शत्रुनाशम् ।
सौम्या भीतिं वित्तनाशं कलिं च
चन्द्रो रोगं पापयुक्तः करोति ॥ ६ ॥
सपापः शशी सप्तमे व्याधिभीतिं
खलाः स्त्रीविनाशं कलिं भृत्यभीतिम् ।
शुभाः कुर्वते वित्तलाभं सुखाप्तिं
यशोमानराज्योदयं बन्धुसौख्यम् ॥७॥
चन्द्रोऽष्टमे निधनदः खलखेटयुक्तः
पापाश्च तत्र मृतितुल्यफला विचिन्त्याः ।
सौम्याः स्वधातुवशतो रुजमर्थहानिं
मानक्षयं मुथशिलेऽशुभजं शुभं च ॥८॥
तपसि सोदरभीः पशुपीडनं
खलखगेऽतिमुदो रविरत्र चेत् ।
शुभखगा धनधर्मविवृद्धिदाः
खलखगे च शुभान्यपरे जगुः ॥ ९ ॥
गगनगो रविजः पशुवित्तहा
रविकुजौ व्यवसायपराक्रमैः ।
धनसुखानि परे च धनात्मजा-

वनिपसङ्गसुखानि वितन्वते ॥ १० ॥

लाभे धनोपचयसौख्ययशोऽभिवृद्धि-

सन्मित्रसङ्गबलपुष्टिकरास्तु सर्वे ।

क्रूरा बलेन रहिताः सुतवित्तबुद्धि-

नाशं शुभास्तु तनुतां स्वफलस्य कुर्युः ॥ ११ ॥

पापा व्यये नेत्ररुजं विवादं

हानिर्धनानां नृपतस्करादेः ।

सौम्या व्यये सद्व्यवहारमार्गे

कुर्युः शनिर्हर्षविवृद्धिमत्र ॥ १२ ॥

इसकी टीका चक्र से समझना । विशेष यह है कि पापग्रह पापग्रहों के संग होकर चन्द्रमा से इत्थशाल करते हों, तो धन का क्षय जानिये । तथा शुभग्रहों के संग होकर पापग्रह लग्न में पड़े हों, तो पुष्ट तनु और सुख करें तथा आठवें स्थान में चन्द्रमा पापग्रह के संग में हो, तो मृत्यु होती है । शुभ ग्रह आठवें होकर अन्य शुभ ग्रहों से इत्थशाल करते हों, तो शुभ जानिये । अर्थात् जिस ग्रह की बड़ी गति हो और अंशों में कम हो तथा थोड़ी गतिवाले ग्रहों के बहुत अंश हों, तो इत्थशाल योग होता है तथा पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें हो, तो व्याधिभय हो ॥ १–१२ ॥

इति श्रीपण्डितसूर्यनारायणसंगृहीते ज्योतिःसारे

ताजिकप्रकरणं तृतीयं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ भावफलचक्रम् ।

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श. रा. के	ग्रहाः
१	ज्वरागमः धनक्षयः	पुष्टतनुः सुखम्	ज्वरागमः धनक्षयः	धनराज्यलाभः	धनराज्यलाभः	धनराज्यलाभः	ज्वरागमः धनक्षयः	फलं
२	धनहानिदः	धनागमः राजसुखं	धनहानिः	धनागमः राजसुखं	धनागमः राजसुखं	धनागमः राजसुखं	धनहानिः कार्यहानिः राजभयं	फलं
३	धनधर्मराज्यप्रदः	अतुलहर्षदः	धनधर्मराज्यलाभः	सुखार्थः, सुतलाभः, यशोमानविलासदः	सुखार्थः, सुतलाभः, यशोमानविलासदः	सुखार्थः, सुतलाभः, यशोमानविलासदः	धनधर्मराज्यलाभः	फलं
४	सुखार्थनाशः, रोगभयदः	सुखप्राप्तिः	सुखार्थनाशः, रोगभयदः	सुखप्राप्तिः	सुखप्राप्तिः	सुखप्राप्तिः	सुखार्थनाशः, रोगभयदः	फलं
५	पुत्रधननाशः, कलिप्रदः चौरभयं	पुत्रधनसुखप्रदः	पुत्रधननाशः, कलिप्रदः, चौरभयम्	पुत्रधनसुखप्रदः	पुत्रधनसुखप्रदः	अतिहर्षदः	पुत्रधननाशः, कलिप्रदः, चौरभयम्	फलं
६	धनलाभःसुखप्राप्तिः	भयं, धननाशः, कलिप्रदः	अत्यन्तहर्षदः, शत्रुनाशः	भयं, धननाशः, कलिप्रदः	भयं, धननाशः, कलिप्रदः	भयं, धननाशः, कलिप्रदः	धनलाभः सुखाप्तिः	फलं

अथ भावफलचक्रम् ।

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श. रा. के.	फलं
७	स्त्रीनाशः कलिप्रदः भृत्यभयम्	वित्तलाभः, सुखाप्तिः, यशोमानराज्योदयः बन्धुसौख्यम्	स्त्रीनाशः कलिप्रदः भृत्यभयम्	वित्तलाभः सुखाप्तिः, यशोमानराज्योदयः, बन्धुसौख्यं	वित्तलाभः सुखाप्तिः, यशोमानराज्योदयः, बन्धुसौख्यं	धनलाभः सुखाप्तिः, यशोमानराज्योदयः, बन्धुसौख्यं	स्त्रीनाशः कलिप्रदः मृत्युभयम्	फलं
८	मृत्युतुल्यः	रोगप्रदः, अर्थहानिःमानक्षयः	मृत्युतुल्यः	रोगप्रदः, अर्थहानिः मानक्षयः	रोगप्रदः, अर्थहानिः मानक्षयः	रोगप्रदः, अर्थहानिः मानक्षयः	मृत्युतुल्यः	फलं
९	अत्यानन्ददः	धनधर्मवृद्धिः	भ्रातृभयं, पशुपीडनं	धनधर्मवृद्धिः	धनधर्मवृद्धिः	धनधर्मवृद्धिः	भ्रातृभयं पशुपीडनं	फलं
१०	घातः	धनसुखप्राप्तिः	घातः	धनसुखप्राप्तिः	धनसुखप्राप्तिः	धनसुखप्राप्तिः	पशुधनहानिः	फलं
११	धनदः अत्यन्तसुखम्, यशोवृद्धिदः	धनदः अत्यन्तसुखम्, यशोवृद्धिदः	धनदःअत्यन्तसुखम्,यशोवृद्धिदः	धनदः, अत्यन्तसुखम्, यशोवृद्धिदः	धनदः, अत्यन्तसुखम्, यशोवृद्धिदः	धनदः,अत्यन्तसुखम्, यशोवृद्धिदः	धनदः,अत्यन्तसुखम्, यशोवृद्धिदः	फलं
१२	नेत्ररुजं, विवादः, राजचौराद्धनहानिः	शुभव्यवहारकार्यम्	नेत्ररुजं, विवादः, राजचौराद्धनहानिः	शुभव्यवहारकार्यम्	शुभव्यवहारकार्यम्	शुभव्यवहारकार्यम्	हर्षवृद्धिदः	फलं

अथ जातकप्रकरणम् ।

तत्रादौ दिनेष्टज्ञानम् ।

चैत्रे माधवचाश्विने कृतमनुर्मार्गे यमःसप्तभू-
रूर्जेफाल्गुनचाष्टबाणक्षितयः पौषे खषट्विन्दवः ।
ज्येष्ठे श्रावणभाद्रयोः स्वरत्रिभूराषाढबाणार्कयो-
र्माघे नेत्ररसेन्दुमासध्रुवकाः शंकुश्च सप्तांगुलः ॥१॥

दिन में इष्टकाल जानने के लिये सात अंगुल का शंकु खड़ा करे और शंकु सीधा हो और पृथ्वी बराबर हो उसमें सीधी तरह से खड़ा करे । जितने अंगुल छाया हो उसमें सात जोड़े, उस अंक को महीना के ध्रुवा में भाग दे, जो लब्ध मिले उसे इष्ट-घटी जानिये और जो शेषांक बचे, उसे साठ से गुणा करके फिर उसी अंक का भाग दीजिये । जो लब्ध मिले उसे इष्टपल जानिये । परन्तु दोपहर के भीतर नापने पर जो अंक आवे उसी को इष्टकाल जानना तथा दोपहर के उपरान्त जो नापने से लब्ध मिले वे घड़ी पल दिन-प्रमाण में घटा देना जो शेष रहे उसी को इष्ट जानिये तथा मास का ध्रुवा चक्र से जानना ॥ १ ॥

अथेष्टकालज्ञानार्थं मासध्रुवचक्रम् ।

चैत्र	वै.	ज्येष्ठ	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौष	माघ	फा.	मास
१४४	१४४	१३७	१२५	१३७	१३७	१४४	१५८	१७२	१६०	१६२	१५८	ध्रुवांक

अथ रात्रीष्टज्ञानम् ।

सूर्यभान्मौलिभं गण्यं सप्तहीनं च शेषकम् ।
द्विगुणं च द्विहीनं च गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥१॥

रात्रि को खड़ा होकर अपने शिर के ऊपर आकाश की तरफ देखे, जो नक्षत्र शिर के ऊपर हो उसे स्थापित करे, फिर जिस

नक्षत्र के सूर्य हों, उस नक्षत्र से शिर के नक्षत्र तक गिने । जो अङ्क हों उसमें सात घटा दे, शेष को दूना करे, उसमें दो और घटा दे, जो शेष रहे उसी को इष्ट घट्यादिक माने । परन्तु अर्द्धरात्रि के भीतर हो, तो वह अङ्क दिन-मान में जोड़ दे तो सूर्योदय से इष्टकाल होता है । तथा अर्द्धरात्रि के उपरान्त हो, तो वही अङ्क साठ में घटा दे तो सूर्योदय से इष्टकाल होता है ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रप्रचारज्ञानम् ।

पुनर्वसुर्मृगश्चार्द्रा ज्येष्ठा मैत्रं करस्तथा ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढो मूलं दक्षिणचारिणः ॥ १ ॥
कृत्तिका रोहिणी पुष्यश्चित्राश्लेषा च रेवती ।
शतं धनिष्ठा श्रवणो नव मध्यमचारिणः ॥ २ ॥
अश्विनी भरणी स्वातिर्विशाखा फाल्गुनीद्वयम् ।
मघा भाद्रपदायुग्मं नव चोत्तरचारिणः ॥ ३ ॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, अनुराधा, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ और मूल, ये नक्षत्र दक्षिणचारी हैं । कृत्तिका, रोहिणी, पुष्य, चित्रा, आश्लेषा, रेवती, शतभिष, धनिष्ठा और श्रवण, ये नव नक्षत्र मध्यमचारी हैं । अश्विनी, भरणी, स्वाती, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, मघा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद, ये नव नक्षत्र उत्तरचारी हैं ॥ १–३ ॥

अथ नक्षत्रप्रचारचक्रम् ।

पुन.	मृ.	आ.	ज्ये.	अनु.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	मूल	दक्षिणचारी
कृ.	रो.	पुष्य	चि.	आश्ले.	रे.	श.	ध.	श्र.	मध्यमचारी
अ.	भ.	स्वा.	वि.	पू.फा.	उ.फा.	म.	पू.भा.	उ.भा.	उत्तरचारी

अथ नक्षत्रोदयज्ञानम् ।

त्रयं यमेऽश्वे चाग्नौ षड् विधौ पञ्चमृगे त्रयम् ।
एकमार्द्रासु नक्षत्रं चत्वारि च पुनर्वसौ ॥ १ ॥
पुष्ये त्रयं रसः सार्पे मघायां भानि पञ्चकम् ।
द्वयं द्वयं च फाल्गुन्योर्ज्ञेयं हस्ते तु पञ्चमम् ॥ २ ॥
चित्रास्वात्योरेकमेकं चतुष्कं च द्विदैवते ।
त्रयं स्यादनुराधायां ज्येष्ठायां च त्रयं स्मृतम् ॥ ३ ॥
मूले रुद्राश्चतुष्कं च पूर्वाषाढे तथोत्तरे ।
त्रयं चाभिजिति प्रोक्ता श्रवणे च त्रयं तथा ॥ ४ ॥
धनिष्ठायां च चत्वारि शतं शतभिषासु च ।
द्वयं द्वयं भाद्रयोश्च द्वात्रिंशदपि चान्तिभे ॥ ५ ॥

तीन नक्षत्र से अश्विनी और भरणी उदय होता है । कृत्तिका छः नक्षत्र से उदय होता है । रोहिणी पाँच से, मृगशिरा तीन नक्षत्र से, आर्द्रा एक से, पुनर्वसु चार नक्षत्र से उदित होता है । पुष्य तीन नक्षत्र से, आश्लेषा छः नक्षत्र से, मघा पाँच नक्षत्र से उदित होता है । पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी दो-दो नक्षत्र से उदित होते हैं । हस्त का पाँच से उदय होता है । चित्रा और स्वाती का एक-एक नक्षत्र से उदय जानिये । विशाखा का चार नक्षत्र से उदय होता है । अनुराधा का तीन नक्षत्र से उदय होता है । और ज्येष्ठा का भी तीन नक्षत्र से उदय जानिये । मूल ग्यारह नक्षत्र से उदय होता है । पूर्वाषाढ तथा उत्तराषाढ चार नक्षत्र से उदय होता है । तीन नक्षत्र से अभिजित् उदय होता है । श्रवण तीन नक्षत्र से उदय होता है । धनिष्ठा चार नक्षत्र से उदय होता है । शतभिष

सौ नक्षत्र से उदय होता है। पूर्वाभाद्रपद व उत्तराभाद्रपद दो-दो नक्षत्रसे और रेवती बत्तीस नक्षत्र से उदय होता है ॥ १–५ ॥

अथ नक्षत्रोदयचक्रम् ।

नक्षत्राणि	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.
तारोदयः	३	३	६	५	३	१	४	३	६	५	२	२	५	१
नक्षत्राणि	स्वा.	वि.	अनु.	ज्येष्ठा	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
तारोदयः	१	४	३	३	११	४	४	३	३	४	१००	२	२	३२

अथ नक्षत्रस्वरूपचक्रम् ।

नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	म.	पू. फा.	उ. फा.	ह.	चि.
स्वरूप	अश्वमुखसदृश	योनिसदृश	छुरासदृश	शकटसदृश	हरिणसदृश	मणिसदृश	गृहसदृश	बाणसदृश	चक्रसदृश	भवनसदृश	मञ्चकसदृश	शय्यासदृश	हस्तसम	मोतीसम
नक्षत्र	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	पू. भा.	उ. भा.	रे.
स्वरूप	मूंगासम	तोरणसम	बलिसम	कुण्डलसम	सिंहपुच्छसम	गजदन्तसम	मञ्चकसम	त्रिकोणाकार	त्रिचरणसदृश	मृदङ्गसम	वर्तुलाकार	मञ्चकसम	यमलासदृश	मृदङ्गाकार

अथ राशिस्वामिचक्रम् ।

सू.	चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	स्वामी
५	४	१	३	६	२	१०	६	१२	राशि
		८	६	१२	७	११			

अथोच्चनीचग्रहविचारः ।

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मकरे च महीसुतः ।
कन्यायां रोहिणीपुत्रो गुरुः कर्के झषे भृगुः ॥ १ ॥
शनिस्तुलायामुच्चस्थो मिथुने सिंहिकासुतः ।
उच्चात्सप्तमगो नीचः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

मेष राशि का सूर्य, वृषराशि का चन्द्रमा, मकर का मङ्गल, कन्या का बुध, कर्क का बृहस्पति, मीन का शुक्र, तुला का शनैश्चर और मिथुन का राहु उच्च का होता है । ये ग्रह उच्चस्थान से सप्तमस्थान में नीच के होते हैं । चक्र से जानना । तथा केतु धन का उच्च अनुमान से जानना योग्य है ॥ १-२ ॥

अथोच्चनीचग्रहचक्रम् ।

ग्रह	सू.	चं	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
उच्च	मे.	वृष	म.	कं.	कर्क	मी.	तु.	मि.	ध.
नीच	तु.	वृश्चि.	कर्क	मी.	म.	कर्क	मेष	धन	मि.

अथ योगिनीदशाप्रकारः ।

स्वकीयं च भं रुद्रनेत्रैर्युतं तद्
विधायाष्टभिर्भागमाहार्यशेषात् ।

क्रमान्मङ्गलादिर्दशा शून्यशेषं
तदा सङ्कटा प्राणसन्देहकर्त्री ॥ १ ॥

अश्विनी आदि जन्मनक्षत्र में तीन जोड़कर आठ का भाग दे, जो शेष हो उसे मङ्गला आदि दशा जाने । शून्य बचे तो संकटा, वह प्राण को सन्देह करनेवाली है ॥ १ ॥

अथ दशाक्रमज्ञानम् ।

अभून्मङ्गला पिङ्गला धान्यका च
तथा भ्रामरी भद्रिका चोल्किका च ।
तथा सिद्धिका सङ्कटाख्या शिवस्तु
शिवायै पुरा योगिनीत्युक्तवांश्च ॥१॥

मङ्गला १ पिङ्गला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ उल्का ६ सिद्धा ७ और संकटा ८ ये आठ योगिनीदशा पहले पार्वतीजी से श्रीमहादेवजी ने कही हैं ॥ १ ॥

अथ दशास्वामिज्ञानम् ।

अथासामधीशाः क्रमान्मङ्गलातो
भवेच्चन्द्रभानू गुरुर्भूमिसूनुः ।
तथा सौम्यमन्दौ भृगुः सिंहिकायाः
सुतः सङ्कटायास्तदन्ते च केतुः ॥ १ ॥

मङ्गला आदि दशाओं के स्वामी लिखते हैं—क्रम से मङ्गला का स्वामी चन्द्रमा, पिङ्गला का स्वामी सूर्य, धान्या का स्वामी बृहस्पति, भ्रामरी का मङ्गल, भद्रिका का बुध, उल्का का शनैश्चर, सिद्धा का शुक्र और संकटा का स्वामी राहु तथा केतु है ॥ १ ॥

अथ दशाचक्रम् ।

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	दशा
चं.	सू.	बृ.	मं.	बु.	श.	शु.	रा.के.	स्वामी
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्ष प्रमाण
००	००	००	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	नक्षत्र
आ.	पुन.	पुष्य.	आश्ले.	म.	पू.फा.	उ. फा.	ह.	नक्षत्र
चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	नक्षत्र
श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	×	×	नक्षत्र

अथ दशाभुक्तभोग्यप्रकारः ।

अथो भस्य भुक्ता घटी स्वैर्दशाब्दै-
र्निहन्यात्तथा सर्वतारा विभक्ता ।
भवेद्वर्षपूर्वं हि भुक्ता दशायां
स्ववर्षे च पात्या भवेद्भोगसंज्ञा ॥ १ ॥
शेषादर्कगुणा मासाः शेषात्त्रिंशद्गुणा दिवा ।
शेषात्षष्टिगुणा नाड्यः शेषात्षष्टिगुणाः पलाः ॥ २ ॥

जन्म-दशा के वर्ष से भयात की घटी आदि गुणे, उसमें भभोग का भाग दे, जो लब्ध मिले, उसे दशा का भुक्त-वर्ष जाने । शेषाङ्क को बारह से गुणा करके भभोग का भाग दे, तो लब्ध दशा के भुक्त महीने होते हैं । फिर शेषाङ्क को तीस से गुणा करे, भभोग का भाग दे, लब्ध को दशा के भुक्त दिन जानिये । शेषाङ्क को साठ से गुणा करे, भभोग का भाग दे, लब्ध को दशा की भुक्त-घटी जानिये ।

फिर शेषाङ्क को साठ से गुणा करके भभोग का भाग दे, लब्ध को दशा के भुक्तपल जानिये। फिर यही भुक्त वर्ष आदि दशा के वर्ष प्रमाण में घटा देने से भोग्य वर्ष आदि होते हैं ॥ १-२ ॥

उदाहरण ।

संवत् १९०१ शक १७६६ फाल्गुनकृष्णद्वितीयायां चन्द्रेष्टम् ५३ । ५२ हस्तनक्षत्रे भभोगः ५८ । १९ भयातम् ३३ । २९ विंशोत्तरीमध्ये चन्द्रदशायां जन्म। तत्प्रमाणं वर्ष १० । गणितागत भुक्तवर्षादि ५ । ८ । २६ । ५९ ।२६ भोग्यवर्षादि ४ । ३ । ३ । ०० । ३४ ॥

अथान्तर्दशाप्रकारः ।

दशा दशाहता कार्या दशामानेन भाजिता ।
यल्लब्धाऽन्तर्दशा ज्ञेया फलं वर्षादिकं भवेत् ॥ १ ॥

दशा को दशा से गुणे, उसमें दशा का जो मान अर्थात् जो अंक सब दशाओं के प्रमाण का हो, उससे भाग दे। जो लब्ध मिले, उसे अन्तर्दशा का वर्ष जानिये। फिर शेषाङ्क को बारह से गुणा करके उसमें सर्व दशा प्रमाण का भाग लेने से लब्ध को अन्तर्दशा के महीने जानिए । फिर शेषाङ्क को तीस से गुणा करके उसमें दशामान का भाग देने से लब्ध को अन्तर्दशा के दिन जानिये ॥१॥ अब चक्र में गणितागत उदाहरण लिखते हैं।

अथ मङ्गलान्तर्दशाचक्रम् ।

मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०२	मास
१०	२०	००	१०	२०	००	१०	२०	दिन

अथ पिङ्गलान्तर्दशाचक्रम् ।

पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
०१	०२	०२	०३	०४	०४	०५	००	मास
१०	००	२०	१०	००	२०	१०	२०	दिन

अथ धान्यान्तर्दशाचक्रम् ।

धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
०३	०४	०५	०६	०७	०८	०१	०२	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ भ्रामर्यन्तर्दशाचक्रम् ।

भ्रा०	भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	वर्ष
०५	०६	०८	०९	१०	०१	०२	०४	मास
००	२०	००	१०	२०	१०	२०	००	दिन

अथ भद्रिकान्तर्दशाचक्रम् ।

भ०	उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	दशा
००	००	००	०१	००	००	००	००	वर्ष
०८	१०	११	०१	०१	०३	०५	०६	मास
००	००	२०	१०	२०	१०	००	२०	दिन

अथोल्कान्तर्दशाचक्रम् ।

उ०	सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	दशा
०१	०१	०१	००	००	००	००	००	वर्ष
००	०२	०४	०२	०४	०६	०८	१०	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ सिद्धान्तर्दशाचक्रम् ।

सि०	सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	दशा
०१	०१	००	००	००	००	००	०१	वर्ष
०४	०६	०२	०४	०७	०६	११	०२	मास
१०	२०	१०	२०	००	१०	२०	००	दिन

अथ सङ्कटान्तर्दशाचक्रम् ।

सं०	मं०	पिं०	धा०	भ्रा०	भ०	उ०	सि०	दशा
०१	००	००	००	००	०१	०१	०१	वर्ष
०६	०२	०५	०८	१०	०१	०४	०६	मास
१०	२०	१०	००	२०	१०	००	२०	दिन

अथ योगिनीदशाफलं तत्रादौ मङ्गलाफलम् ।

वैरिणा विवदनं विनाशनं
वाहनस्य बहुरत्नलाभदा ।
कामिनीसुतगृहाद्विलासदा
मङ्गला सकलमङ्गलोदया ॥ १ ॥

शत्रु से विवाद, वाहनादि विनाश, बहुत रत्नलाभ, स्त्री, पुत्र और गृह द्वारा विलास और सकल मङ्गलोदय हो, यह मङ्गलादशा का फल जानिये ॥१॥

अथ पिङ्गलादशाफलम् ।

दुःखशोककुलरोगवृद्धिता
व्यग्रता च कलहः स्वजनैश्च ।
अन्त्यभागफलदा कथिताऽसौ
पिङ्गला च विदुषां सुखदाऽऽदौ ॥ २ ॥

दुःख, शोक और कुलरोग की वृद्धि, व्यग्रता और स्वजन से कलह हो । परन्तु अन्त्यभाग में फल जानिये । और आदि में सुख होता है, यह पिङ्गला का फल जानिए ॥ २ ॥

अथ धान्यादशाफलम् ।

धनं धान्यवृद्धिं धरानाथमान्यं
सदा युद्धभूमौ जयं धैर्यवन्तम् ।
कलत्राङ्गनानां सुखं चित्रवस्त्रै-
र्युतं धान्यका धातुवृद्धिं करोति ॥ ३ ॥

धन-धान्य की वृद्धि, राजाओं में मान और युद्ध में जय करे । धैर्य करे, स्त्री को सुख करे और चित्र-विचित्र वस्त्रों से युक्त करे तथा धातु की वृद्धि करे, यह फ़ल धान्या दशा का जानिये ॥ ३ ॥

अथ भ्रामरीदशाफलम् ।

विदेशे भ्रमं हानिमुद्वेगता च
कलत्राङ्गपीडा सुखैर्वर्जितं च ।
ऋणं व्याधिवृद्धिं तथा भूपकोपं
दशा भ्रामरी भोगभङ्गं करोति ॥ ४ ॥

विदेश में भ्रमण करे, हानि हो, उद्वेग हो, स्त्री को पीड़ा हो,

सुख न हो, ऋण तथा व्याधि की वृद्धि हो, तथा राजा कोप करे । यह फल भ्रामरी दशा का जानिये ॥ ४ ॥

अथ भद्रिकादशाफलम् ।

धनानां विवृद्धिं गुणानां प्रकाशं
समीचीनवस्त्रागमं राजमानम् ।
अलङ्कारदिव्याङ्गनाभोगसौख्यं
दशा भद्रिका भद्रकाय करोति ॥ ५ ॥

धन की वृद्धि और गुण का प्रकाश करे । समीचीन वस्त्रों का आगम हो, राजमान हो, अलङ्कार अर्थात् भूषण तथा दिव्य स्त्रियों का भोग-सुख हो, भद्रिका सदा कल्याण करे । यह फल भद्रिका दशा का जानना चाहिए ॥ ५ ॥

अथोल्कादशाफलम् ।

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं
धनादिष्टदारादिकानां वियोगम् ।
स्वगोत्रे विवादं सुहृद्बन्धुवैरं
दशा चोल्किकाऽनर्थकर्त्री सदैव ॥ ६ ॥

जनों से विवाद करे, ज्वरों का कोप हो, धन वा इष्ट तथा स्त्री आदिकों से वियोग करे और अपने गोत्र में विवाद करे । मित्र से वैर करे, बन्धु से वैर करे और सदा अनर्थ करे यह फल उल्का का जानिये ॥ ६ ॥

अथ सिद्धादशाफलम् ।

राज्ञोऽधिकारं स्वजनादिसौख्यं
धनादिलाभं गुणकीर्तिसिद्धिम् ।

वामादिलाभं सुतवृद्धिसौख्यं
विद्यां च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥ ७ ॥

राज्य का अधिकार हो, स्वजनादिकों से सुख हो, धनादि-लाभ हो, गुण, कीर्ति और सिद्धि हो । तथा स्त्री-लाभ हो, सुतवृद्धि का सुख हो और विद्यासिद्धि हो यह फल सिद्धा दशा में पुरुष को होता है ॥ ७ ॥

अथ सङ्कटादशाफलम् ।

जनानां विवादं ज्वराणां प्रकोपं
कलत्रादिकष्टं पशूनां विनाशम् ।
गृहे स्वल्पवासं प्रवासाभिलाषं
दशा सङ्कटा सङ्कटं राजपक्षात् ॥ ८ ॥

जनों से विवाद हो, ज्वरों का कोप हो, कलत्रादिकों को कष्ट हो, घर में थोड़ा वास हो, विदेश की बहुत इच्छा हो और राजा के पक्ष से संकट हो । यह संकटा दशा का फल होता है ॥ ८ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाचक्रम् ।

आर्द्राचतुष्के सूर्यस्य दशा षड्वर्षसंमिते ।
मघात्रये तु चन्द्रस्य दश पञ्च च वत्सराः ॥ १ ॥
हस्ताच्चतुष्के भौमस्य दशा स्यादष्टवत्सरा ।
अनुराधात्रये ज्ञस्य दश सप्त च वत्सराः ॥ २ ॥
पूर्वाषाढाच्चतुष्के च शनेः स्युर्दशवत्सराः ।
वसुत्रये गुरौ प्रोक्ता ऊनविंशतिवत्सराः ॥ ३ ॥
राहोर्द्वादशवर्षैस्तु उत्तराभाद्रपाच्चतुः ।
एकविंशतिवर्षाणि शुक्रस्य कृत्तिकात्रये ॥ ४ ॥

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा इन नक्षत्रों का जन्म हो, तो

सूर्य की दशा में जन्म जानना । उसका प्रमाण छः वर्ष का जानना । मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी का जन्म हो, तो चन्द्रमा की दशा पन्द्रह वर्ष की होती है । हस्त, चित्रा, स्वाती और विशाखा का जन्म हो, तो मङ्गल की दशा आठ वर्ष का जानिये । अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल का जन्म हो, तो बुध की दशा सत्रह वर्ष की जानिये । पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, अभिजित् और श्रवण का जन्म हो, तो शनैश्चर की दशा का जन्म जानिये । उसका प्रमाण दश-वर्ष का जानना । तथा धनिष्ठा, शतभिष और पूर्वभाद्रपद का जन्म हो, तो बृहस्पति की दशा उन्नीस वर्ष की होती है । उत्तरा भाद्रपद, रेवती, अश्विनी और भरणी का जन्म हो, तो राहु की दशा बारह वर्ष की जानना । कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा का जन्म हो, तो शुक्र की दशा इक्कीस वर्ष की जानना । इस प्रकार से अष्टोत्तरीदशा का क्रम जानिये । भुक्त-भोग्य जन्म की दशा में पूर्वोक्त रीति से जानना । परन्तु जिस दशा में जितने नक्षत्र हों, उनका भाग जन्म नक्षत्र पर घटित करके भुक्त भोग्य निकालना चाहिये । तथा पूर्वोक्त रीति से अन्तर्दशा भी जानना और फल भावोक्त जानना ॥ १–४ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाचक्रन्यासः ।

सू०	चं०	मं०	बु०	श०	बृ०	रा०	शु०	दशा
६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१	वर्ष
आ० पुन० पुष्य श्ले०	म० पू०फा. उ०फा.	ह० चि० स्वा० विशा०	अनु० ज्ये० मू०	पू०षा० उ०षा० अभि० श्रवण	ध० श० पू०भा०	उ०भा. रे० अ० भ०	कृ० रो० मृ०	नक्षत्र

अथ विंशोत्तरीदशाप्रकारः ।

नवर्क्षेष्वग्निभाद्येषु त्रिरावृत्तेष्वधःस्थिताः ।
रवीन्दुभौमराह्वीज्यशनिज्ञशिखिभार्गवाः ॥ १ ॥
रसा दिशोऽद्रयोऽष्टेन्दुमिता भूपा नवेन्दवः ।
सप्तेन्दवोऽद्रयो विंशद्दशावर्षाण्यनुक्रमात् ॥ २ ॥

कृत्तिका आदि नव नक्षत्र, तीन आवृत्ति से स्थापित करके क्रम से दशा जानिये । पहली दशा सूर्य की, दूसरी चन्द्रमा की, तीसरी मङ्गल की, चौथी राहु की, पाँचवीं बृहस्पति की, छठी शनैश्चर की, सातवीं बुध की, आठवीं केतु की और नवीं दशा शुक्र की जानना। सूर्य की दशा का प्रमाण छः वर्ष, चन्द्रमा का दश वर्ष, मङ्गल का सात वर्ष, राहु का प्रमाण अठारह वर्ष, बृहस्पति का प्रमाण सोलह वर्ष, शनैश्चर की दशा उन्नीस वर्ष, बुध की सत्रह वर्ष, केतु की सात वर्ष और शुक्र की बीस वर्ष का प्रमाण जानना । भुक्त-भोग्य जन्म की दशा में पूर्वोक्त जान लेना । तथा दशा का फल भावफल के समान जान लेना भावफल आगे लिखेंगे ॥ १–२ ॥

अथ विंशोत्तरीमहादशाचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	दशा
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य.	श्ले.	म.	पू.फा.	नक्षत्र
उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	नक्षत्र
उ.षा.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अ.	भ.	नक्षत्र

अथ सूर्यान्तर्दशाचक्रम् ।

सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	दशा
००	००	००	००	००	००	००	००	०१	वर्ष
०३	०६	०४	१०	०९	११	१०	०४	००	मास
१८	००	०६	२४	१८	१२	०६	०६	००	दिन

अथ चन्द्रान्तर्दशाचक्रम् ।

चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	दशा
००	००	०१	०१	०१	०१	००	०१	००	वर्ष
१०	०७	०६	०४	०७	०५	०७	०८	०६	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ भौमान्तर्दशाचक्रम् ।

मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	दशा
००	०१	००	०१	००	००	०१	००	००	वर्ष
०४	००	११	०१	११	०४	०२	०४	०७	मास
२७	१८	०६	०९	२७	२७	००	०६	००	दिन

अथ राह्वन्तर्दशाचक्रम् ।

रा०	बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	दशा
०२	०२	०२	०२	०१	०३	००	०१	०१	वर्ष
०८	०४	१०	०६	००	००	१०	०६	००	मास
१२	२४	०६	१८	१८	००	२४	००	१८	दिन

अथ गुरोरन्तर्दशाचक्रम् ।

बृ०	श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	दशा
०२	०२	०२	००	०२	००	०१	००	०२	वर्ष
०१	०६	०३	११	०८	०९	०४	११	०४	मास
१८	१२	०६	०६	००	१८	००	०६	२४	दिन

अथ शनैश्चरान्तर्दशाचक्रम् ।

श०	बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	दशा
०३	०२	०१	०३	००	०१	०१	०२	०२	वर्ष
००	०८	०१	०२	११	०७	०१	१०	०६	मास
०३	०९	०९	००	१२	००	०९	१६	१२	दिन

अथ बुधान्तर्दशाचक्रम् ।

बु०	के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	दशा
०२	००	०२	००	०१	००	०२	०२	०२	वर्ष
०४	११	१०	१०	०५	११	०६	०३	०८	मास
२७	२७	००	०६	००	२७	१८	०६	०९	दिन

अथ केत्वन्तर्दशाचक्रम् ।

के०	शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	दशा
००	०१	००	००	००	०१	००	०१	००	वर्ष
०४	०२	०४	०७	०४	००	११	०१	११	मास
२७	००	०६	००	२७	१८	०६	०९	२७	दिन

अथ शुक्रान्तर्दशाचक्रम् ।

शु०	सू०	चं०	मं०	रा०	बृ०	श०	बु०	के०	दशा
०३	०१	०१	०१	०३	०२	०३	०२	०१	वर्ष
०४	००	०८	०२	००	०८	०२	१०	०२	मास
००	००	००	००	००	००	००	००	००	दिन

अथ दृष्टिज्ञानम् ।

चतुर्थे चाष्टमे भौमस्तृतीये दशमे शनिः ।
नवपञ्चगुरोर्दृष्टे संपूर्णो पूर्णसप्तमे ॥ १ ॥

चौथे आठवें स्थान पर मङ्गल पूर्ण दृष्टि से देखता है तथा तीसरे छठे शनैश्चर की पूर्ण दृष्टि होती है । और नवें पाँचवें बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि होती है । और सातवें स्थान पर सब ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥ १ ॥

अथ दृष्टिचक्रम् ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०	ग्रहाः
७	७	४ ७ ८	७	५ ७ ९	७	३ ७ १०	७	७	दृष्टि-स्थानानि

अथ ग्रहभावफलम् ।

लग्ने स्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम् ।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं
जीवेन्दुभार्गवबुधाःसुखकान्तिदाः स्युः॥१॥

दुःखावहा धनविनाशकरप्रतिष्ठा
वित्ते स्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः ॥ २ ॥
भानुः करोति विरुजं रजनीकरोऽपि
कीर्त्या युतं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ।
ऋद्धिं बुधः सुधिषणं सुविनीतवेषं
स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये ॥ ३ ॥
आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्मनि नरं सुचिरं चतुर्थे ।
सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं च नृपकर्मरतः प्रधानम् ॥ ४ ॥
पुत्रे रविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्च
स्वल्पात्मजं शनिधरातनुजावपुत्रम् ।
शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुखिनं स्वरूपम् ॥ ५ ॥
मार्तण्डभूमितनयो हतशत्रुपक्षं
पंगुर्नरं रिपुगृहेष्वतिपूजनीयम् ।
काव्येन्दुजौ मतिविहीनमनल्परोगं
जीवः करोति विकलं मरणं शशाङ्कः ॥ ६ ॥
तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च ।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां

रूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ॥ ७ ॥
सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता वितनुते किल दुष्टबुद्धिम् ।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिं
सौख्यैर्विहीनमतिरोगगुणैरुपेतम् ॥ ८ ॥
धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मरहितं विमतिं कुशीलम् ।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतः सुरराजमन्त्री
धर्मक्रियासु निरतं कुरुते मनुष्यम् ॥ ९ ॥
आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्युर्नरं बहुकुकर्मरतं कुपुत्रम् ।
चन्द्रः सुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तं
रूपान्वितं बुधगुरुः शुभकर्मभाजम् ॥१०॥
लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्तं
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशम् ।
सौम्यो विवेकसुभगं च धनायुषीज्यः
शुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥११॥
सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं
कामीशशिक्षितिसुतौ बहुपापभाजम् ।
चन्द्राङ्गजो गतधनं धिषणः कृशाङ्गं
शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ॥१२॥

जन्म लग्न के तनु आदि द्वादश स्थानों में जो ग्रह पड़े हों उनके पृथक् पृथक् फल जानने के लिये चक्र लगा हुआ है ।

अथ भावफलचक्रम् ।

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श. रा. के.	फलं
१	अङ्गपीडाकारकः	सुखकान्तिदः	रक्तविकारः	सुखकान्तिदः	सुखकान्तिदः	सुखकान्तिदः	बहुदुःखदः	फलं
२	अतिदुःखदः, धननाशः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	अतिदुःखदः, धननाशः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	नानाप्रकारधनप्राप्तिः	अतिदुःखदः, धननाशः	फलं
३	नीरोगः	कीर्तियुतम्	कोपयुक्तम्	ऋद्धियुतम्	सुबुद्धियुतम्	नानाप्रकारवेषधारणम्	स्त्रीणां प्रियम्	फलं
४	सुखवर्जिताङ्गः	सुखयुतं, नृपकर्मरतः	सुखवर्जिताङ्गः	सुखयुतं, नृपकर्मरतः	सुखयुतं, नृपकर्मरतः	सुखयुतं, नृपकर्मरतः	सुखवर्जिताङ्गः	फलं
५	पुत्ररोगचिन्ता	बहुपुत्रम्	पुत्ररहितम्	स्वल्पपुत्रम्	बहुपुत्रम्	बहुपुत्रम्	पुत्ररहितम्	फलं
६	शत्रुनाशः	दुःखमरणप्रदः	शत्रुनाशः	बुद्धिहीनः	शरीरविकलः	बुद्धिहीनः	शत्रुगृहपूज्यः	फलं
७	स्त्रीदुष्टकर्मरताल्पसंततिः	स्त्रीरूपवती, पुत्राधिकं, शीलयुतं, मनोहरः	स्त्रीदुष्टकर्मरताल्पसंततिः	स्त्रीरूपवती, शीलयुतंतथाबहुपुत्रयुतं, मनोहरः	स्त्रीरूपवती, शीलयुतंतथाबहुपुत्रयुतं, मनोहरः	स्त्रीरूपवती, शीलयुतंतथाबहुपुत्रयुतं मनोहरः	स्त्रीदुष्टकर्मरता सूक्ष्मसंततिः	फलं

अथ भावफलचक्रम् ।

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श. रा. के.	ग्रहाः
८	नेष्टफलप्रदः, विकलः, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघात सुखमतिहीनः, रोगयुतः	नेष्टफलप्रदः, विकलः, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघातः, सुखमतिहीनः, रोगयुतः	नेष्टफलप्रदः, विकलता, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघातः, सुखमतिहीनः, रोगयुक्तः	नेष्टफलप्रदः, विकलता, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघातः, सुखमतिहीनः. रोगयुक्तः	नेष्टफलप्रदः, विकलता, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघातः, सुखमतिहीनः, रोगयुक्तः	नेष्टफलप्रदः, विकलता, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघातः, सुखमतिहीनः, रोगयुक्तः	नेष्टफलप्रदः, विकलता, दुष्टबुद्धिः, शस्त्रघातः	फलं
९	अधर्मी, दुष्टशीलः	धर्मनिरतः	अधर्मी, दुष्टशीलः	धर्मनिरतः	धर्मनिरतः	धर्मनिरतः	अधर्मी, दुष्टशीलः	फलं
१०	कुकर्मी	कीर्तिमान्	बहुकुकर्मरतः	रूपान्वितं, शुभकर्मभाजम्	रूपान्वितं, शुभकर्मभाजम्	बहुधनयुतम्	कुपुत्रम्	फलं
११	नृपलाभयुक्तम्	बहुधनलाभः	राज्ञोलाभः	विवेकयुक्तः	धनायुर्दः	गुणवान्	कीर्तिमान्	फलं
१२	दुष्टस्वभावः	कामी	पापी	धनहीनः	कृशता	बहुव्ययकरः	तीव्रः	फलं

अथ द्वादशभावज्ञानम् ।

तनुर्धनश्च भ्राता च सुहृत्पुत्रो रिपुः स्त्रियः ।
मृत्युश्च धर्मः कर्मायो व्ययो भावाः प्रकीर्तिताः॥१॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
तनु धन भ्रातृ मित्र पुत्र शत्रु स्त्री मृत्यु धर्म कर्म आय व्यय ये बारह भाव कहे जाते हैं ॥ १ ॥

अथ शुभयोगः ।

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ १ ॥

जिसके जन्म लग्न में शुक्र, बुध, केन्द्र अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम इन स्थानों में बृहस्पति हो और दशवें स्थान में मङ्गल हो, तो बालक को कुलदीपक जानिए ॥ १ ॥

अथाशुभयोगः ।

नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥ १ ॥

जिस बालक के लग्न में शुक्र, बुध अथवा केन्द्र में बृहस्पति किंवा दशवें मङ्गल नहीं है, उसका जन्म व्यर्थ है ॥ १ ॥

अथ मातापिताभयप्रदयोगः ।

षष्ठे च द्वादशे स्थाने यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १ ॥

जो छठे किंवा बारहवें स्थान में पापग्रह हों, तो माता को अशुभ किंवा चौथे अथवा दशवें स्थान में पापग्रह होवें, तो पिता को अशुभ जानिये ॥ १ ॥

अथ पितानाशयोगः ।

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १ ॥

जिसके जन्म लग्न में शनैश्चर और छठे स्थान में चन्द्रमा, सातवें स्थान में मङ्गल हो, उस बालक का पिता न जीवे ॥ १ ॥

अथ द्वादशवर्षे मृत्युयोगः ।

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ १ ॥
शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ २ ॥

जो जन्मलग्न में मङ्गल और आठवें स्थान में बृहस्पति हो, तो शङ्कर से भी रक्षित बालक की बारह वर्ष में मृत्यु हो। और यदि शनैश्चर के घर में सूर्य हो तथा सूर्य के घर में शनैश्चर हो, तो देवरक्षित बालक की भी बारह वर्ष में मृत्यु हो ॥ १-२ ॥

अथ चतुर्थवर्षे मृत्युयोगः ।

षष्ठोऽष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ १ ॥

छठे, आठवें तथा जन्मलग्न में बुध हो, तो चौथे वर्ष शङ्कर रक्षा करें, तो भी बालक न बचे ॥ १ ॥

अथाष्टमवर्षे मृत्युयोगः ।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ।
वर्षेऽष्टमेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ १ ॥

मङ्गल के घर में बृहस्पति और छठे, आठवें चन्द्रमा हो, तो आठवें वर्ष ईश्वर-रक्षित भी बालक मृत्यु को प्राप्त हो ॥ १ ॥

अथ षोडशवर्षे मृत्युयोगः ।

दशमोऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ १ ॥

जन्म लग्न से दशवें राहु अथवा जन्मलग्न में राहु हो, तो सोलहवें वर्ष मृत्यु हो ॥ १ ॥

अथ दारिद्र्ययोगः ।

क्रूरश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि वा ।
दारिद्र्ययोगं जानीयात्स्ववंशस्य क्षयंकरः ॥ १ ॥

क्रूरग्रह चारों केन्द्र १ । ४ । ७ । १० स्थानों में हों और धन स्थान में क्रूरग्रह बैठा हो, तो दारिद्र्ययोग जानिये इसको अपने पक्ष का क्षय करनेवाला जानिये ॥ १ ॥

अथ मृत्युयोगः ।

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि च ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥ १ ॥

जिसके चौथे स्थान में राहु और छठे अथवा आठवें स्थान में चन्द्रमा हो, तो बालक, यदि महादेवजी भी रक्षा करें, तो भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जावे ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण मृत्युयोगः ।

क्षीणचन्द्रो व्ययस्थाने पापलग्ने स्मरेऽष्टमे ।
शुभैश्च रहिते केन्द्रे शीघ्रं नश्यति बालकः ॥ १ ॥

क्षीणचन्द्र बारहवें स्थान में हो, अथवा पापग्रह के स्थान में हो

अथवा सातवें तथा आठवें हो और शुभग्रह केन्द्र में न हों, तो जन्म होते ही बालक की मृत्यु जानना ॥ १ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि ।
नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ २ ॥

सातवें स्थान में मङ्गल, आठवें स्थान में शुक्र और नवें स्थान में सूर्य हो, तो अल्पायु जानना ॥ २ ॥

अथ तृतीयप्रकारेण मृत्युयोगः ।

क्षीणचन्द्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमकेन्द्रगाः ।
स्मरे लग्नपतिः पापयुक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥ १ ॥

क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, पापग्रह आठवें तथा केन्द्र में हों और लग्न का स्वामी सातवें स्थान में व पापग्रह के संग हो, तो बालक की मृत्यु जानिये ॥ १ ॥

अथ वशिष्ठोक्तः क्षीणपूर्णचन्द्रनिर्णयः ।

सम्पूर्णेन्दूभयाष्टम्योर्मध्येन्दुः पूर्णसंज्ञकः ।
विनष्टेन्दूभयाष्टम्योर्मध्येऽसौ क्षीणसंज्ञकः ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष की अष्टमी से कृष्णपक्ष की सप्तमी तक पूर्णचन्द्र होता है तथा कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की सप्तमी तक क्षीणचन्द्र होता है। यह क्षीण पूर्ण चन्द्र का निर्णय जानना जो पहिले लिख आये हैं उससे यह विशेष है वशिष्ठजी कहते हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहबलनिर्बलचक्रम् ।

उदितः	उच्चस्थः	स्वगृहस्थः	मित्रगेहस्थितः	बलवान्
अस्तः	नीचस्थः	शत्रुगेहस्थितः	० ०	निर्बलः

अथ जातिभ्रंशकारकयोगः ।

धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः ।
गुरुशुक्रौ सप्तमे च त्वष्टमे चन्द्रभास्करौ ॥ १ ॥
ब्राह्मणस्य पदे वापि वेश्यासु च सदा रतिः ।
प्राप्ते विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ २ ॥

जिस बालक के दूसरे घर में शनैश्चर, राहु और मङ्गल हों और सातवें घर में बृहस्पति और शुक्र हों, आठवें घर में चन्द्रमा और सूर्य हों, तो यदि ब्राह्मण जाति में भी जन्म पावे, तो भी वेश्या प्रसंगी हो और बीस वर्ष की अवस्था में म्लेच्छ होता है ॥१-२॥

अथान्यमतेन मृत्युयोगः ।

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः ।
सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

जिसके आठवें स्थान में राहु और केन्द्र स्थान में वृश्चिक राशि का चन्द्रमा हो, तो बालक की शीघ्र ही मृत्यु हो ॥ १ ॥

अथैकमासे मृत्युयोगः ।

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापाश्चाष्टमगेहगाः ।
मासेनैकेन मृत्युः स्याद्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

बारहवें स्थान में चन्द्रमा और आठवें स्थान में पापग्रह हों, तो एक महीने में बालक की मृत्यु अवश्य हो ॥ १ ॥

अथ विषदोषेण मृत्युयोगः ।

षष्ठाष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति ।
विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते ॥ १ ॥

जिसके छठे या आठवें स्थान में चन्द्रमा बुध के साथ बैठा हो, उस बालक की विष से मृत्यु होवे ॥ १ ॥

अथैकवर्षे मृत्युयोगः ।

अष्टमे च निशानाथः केन्द्रे क्रूरो यदा भवेत् ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ १ ॥

आठवें स्थान में चन्द्रमा, केन्द्र में क्रूरग्रह और चौथे स्थान में राहु हो, तो बालक एक ही वर्ष जीवे ॥ १ ॥

अथ दशाहे मृत्युयोगः ।

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रो युक्तो हि तिष्ठति ।
दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥

जिसके लग्न या अष्टमस्थान में. चन्द्रमा-सहित राहु हो, तो उस बालक की दश दिन में मृत्यु हो जावे ॥ १ ॥

अथ द्वितीयवर्षे मृत्युयोगः ।

वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥ १ ॥

जिसके वक्री शनैश्चर, मङ्गल के घर में होकर केन्द्रस्थान १ । ४ । ७ । १० में हो अथवा छठे आठवें हो और मङ्गल बली होकर देखता हो, तो दो वर्ष में बालक की मृत्यु जानना ॥ १ ॥

अथ सप्तमदिने सप्तममासे च मृत्युयोगः ।

शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी ।
सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥ १ ॥

शनि, राहु और मङ्गल से युक्त चन्द्रमा सातवें व नवें स्थान में हो, तो सातवें दिन व सातवें मास में बालक की मृत्यु हो ॥ १ ॥

अथान्यमतेन द्वादशवर्षे मृत्युयोगः ।

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

जिस बालक के मङ्गल के स्थान में बृहस्पति हो और बृहस्पति के स्थान में मङ्गल हो, तो उस बालक की बारहवें वर्ष मृत्यु जानिये॥१॥

अथ मात्ररिष्टयोगः ।

उच्चे वा यदि वा नीचे सप्तमस्थो दिवाकरः ।
तदा जातो निहन्त्याशु मातरं नात्र संशयः ॥ १ ॥

उच्च का अथवा नीच का सूर्य सातवें हो, तो बालक की माता को अरिष्ट जानिये ॥ १ ॥

अथ भ्रातृनाशकयोगः ।

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ १ ॥

जिस बालक के दूसरे स्थान में शनैश्चर से युक्त मङ्गल और तीसरे स्थान में राहु हो, तो उसके भाई न जीवे ॥ १ ॥

अथ परमायुर्योगः ।

पञ्चमे च निशानाथस्त्रिकोणे यदि वाक्पतिः ।
दशमे च महीसूनुः परमायुः स जीवति ॥ १ ॥

लग्न से पाँचवें स्थान में चन्द्रमा और त्रिकोण में बृहस्पति और दशवें मङ्गल हो, तो एक सौ बीस १२० वर्ष की दीर्घायु जानिये॥१॥

अथ परजातलक्षणम् ।

लग्नंशशाङ्कंसुरराजमन्त्री न वीक्षितो नैकगृहस्थितो वा।
न जीववर्गेण युतं तदानीं जातं वदेदन्यसमागमेन ॥१॥

लग्न तथा चन्द्रमा को बृहस्पति न देखता हो और इनके साथ भी न हो और बृहस्पति के वर्ग अर्थात् षड्वर्ग में भी चन्द्रमा व लग्न न हो, तो उस बालक को दूसरे पुरुष से उत्पन्न जानना॥१॥

अथ द्वितीयप्रकारेण परजातलक्षणम् ।

स्वाती द्वितीया रविवारयुक्ता
ससप्तमीसोमजरेवती च ।
सद्वादशी भानुसुते धनिष्ठा
चैतेषु जातः परतो वदन्ति॥ १ ॥

जन्मसमय में द्वितीया, स्वाती और रविवार से युक्त हो, तो अन्य से जन्म जानना। दूसरा योग–सप्तमी, बुधवार और रेवती से युक्त हो, तो दूसरे से जन्म कहना। तीसरा योग–द्वादशी तिथि, शनिवार और धनिष्ठा नक्षत्र हो, तो अन्य से जन्म जानिये॥१॥

अथ ग्रहदृष्टिज्ञानम् ।

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये
द्विपाददृष्टिर्नवपञ्चमे वा ।
त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च
सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तके च॥ १ ॥

सब ग्रह दशवें और तीसरे स्थान को एकपाददृष्टि से, नवें और पाँचवें स्थान को द्विपाददृष्टि से, चौथे और आठवें स्थान को त्रिपाद दृष्टि से और सप्तम स्थान को पूर्णदृष्टि से देखते हैं॥ १ ॥

शनेस्त्वेकादशे पूर्णा दृष्टिर्जीवस्य कोणके ।
बुधेर्ज्या पूर्णदृष्टिर्भौमस्य चतुरष्टके॥ २ ॥

शनैश्चर ग्यारहवें और तीसरे स्थान को पूर्णदृष्टि से देखता है। पाँचवें और नवें स्थान को गुरु तथा चतुर्थ और अष्टम स्थान को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता है ॥ २ ॥

अथ भार्यामरणयोगः ।

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः ।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥१॥

जन्मलग्न से छठे स्थान में मङ्गल, सातवें स्थान में राहु और आठवें स्थान में शनैश्चर, ऐसे ग्रह जिसकी कुंडली में पड़े हों, उस पुरुष की स्त्री न जीवे ॥ १ ॥

अथ राजयोगः ।

धर्मकर्माधिनेतारावन्योन्याश्रयसंस्थितौ ।
राजयोगाविति प्रोक्तो विख्यातो विजयी भवेत् ॥१॥

नवें स्थान का स्वामी दशवें हो और दशवें का स्वामी नवें हो तो राजयोग होता है, और विवाद में उसकी जीत होती है ॥१॥

अथान्यमतम् ।

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः ॥ १ ॥

तीन ग्रह अपने घर के हों, तो मन्त्री, तीन ग्रह उच्च के हों, तो राजा, तीन ग्रह नीच के हों, तो दास और तीन ग्रह अस्तगत हों, तो जड़ हो ॥ १ ॥

अथ मारकेशज्ञानम् ।

अष्टमं ह्यायुषः स्थानमष्टमादष्टमं च यत् ।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ १ ॥

जन्मलग्न से आठवाँ स्थान व अष्टम स्थान से आठवाँ स्थान आयुष्य का स्थान कहा जाता है। इन दोनों स्थानों का बारहवाँ स्थान अर्थात् लग्न से सप्तम और द्वितीय स्थान मारक का स्थान कहा जाता है। इनकी दशा व अन्तर्दशा विंशोत्तरी में मृत्यु वा मृत्यु-भय जानना। तथा अष्टमेश का दशा में मृत्युसम्भव जानना ॥ १ ॥

अथ पाराशरोक्तायुर्निर्णयः ।

अल्पायुर्दिननाथस्य शत्रौ लग्नाधिपे यदि ।
समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रे पूर्णायुरादिशेत् ॥ १ ॥

लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो पूर्णायु जानना। तथा जन्म में सिंह लग्न हो तो भी पूर्णायु जानना। लग्नाधिप सूर्य का समक्षेत्री हो तो मध्यायु जानना। और लग्नेश सूर्य का शत्रु हो तो अल्पायु जानिये। ये योग ग्रहमैत्रीचक्र से विचारना चाहिए। प्रथम विवाह के विचार में मुहूर्तप्रकरण में लिख चुके हैं। अल्पायु का प्रमाण बत्तीस वर्ष का है। मध्यायु का चौंसठ वर्ष और पूर्णायु का छानबे वर्ष का प्रमाण है ॥ १ ॥

अथ सूर्यदशाफलम् ।

देशान्तरं च निजबन्धुवियोगदुःख-
मुद्वेगरोगभयचौरभवा च पीडा ।

१-इन दोनों मारकों में सप्तम मारक बलवान् है, और द्वितीय स्थान का तो उससे भी बलवान् है। इस लिये द्वितीयेश दशा की अन्तर्दशा में मनुष्यों का मरण होता है, व द्वितीय स्थान में जो पापग्रह रहते हैं (तृतीयेश, षष्ठेश, एकादशेश और द्वादशेश) उनकी अन्तर्दशा में मनुष्यों की मृत्यु होती है। यदि इन मारकेशों की दशा व अन्तर्दशा में मृत्यु न होवे, तो व्ययेश (जन्मलग्न से द्वादश स्थान के स्वामी) की, व उसके साथी पापग्रहों की, दशा व अन्तर्दशा में मृत्यु होती है।

पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो
भानोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥१॥

देशान्तर वास, भाई का वियोग, दुःख, मन को उद्वेग अर्थात् चिन्ता, रोग, भय, चौर-पीड़ा और सञ्चित धन का नाश करे, यह सूर्यदशा का फल जानिए ॥ १ ॥

अथ चन्द्रदशाफलम् ।

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः
शत्रुप्रतापबलवृद्धिपरम्परा च ।
इष्टान्नदानशयनासनभोजनानि
नूनं सदा शशिदशागमने भवन्ति ॥२॥

सुवर्णादि ऐश्वर्य का लाभ और घोड़ा, हाथी और पालकी इत्यादि श्रेष्ठ वाहन का लाभ, शत्रुपराजय, बल की वृद्धि और नाना प्रकार के रस, अन्नदान, शयन, स्थान, आसन, उत्तम भोजन यह सब चन्द्रमा की महादशा में प्राप्त होते हैं ॥ २ ॥

अथ भौमदशाफलम् ।

भूपालचौरभयवह्निकृता च पीडा
सर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुःखिता च ।
चिन्ताज्वरश्च बहुकष्टदरिद्रयुक्तः
स्यात्सर्वदा कुजदशाजनने जनानाम् ॥३॥

राजा और चोरों से भय और अग्नि से पीड़ा, सारे शरीर में रोग, भय, सदा दुःखी, अनेक प्रकार की चिन्ता, ज्वर, बहुत कष्ट, दारिद्र्य-युक्तता यह फल मङ्गल की दशा में जानना चाहिए ॥ ३ ॥

अथ राहुदशाफलम् ।

दीनो नरो भवति बुद्धिविहीनचिन्ता
सर्वाङ्गरोगभयदुःखसदुःखिता च ।
पापानि बन्धबहुकष्टदरिद्रयुक्तं
राहोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥ ४ ॥

मनुष्य बुद्धिहीन दीन हो और चिन्तायुक्त, सर्वाङ्गरोगी, भय, बहुत दुःखी, पापकर्म से बन्धन, बहुत कष्ट और दरिद्रता यह राहु की दशा में फल जानना ॥ ४ ॥

अथ गुरुदशाफलम् ।

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिं
धर्माधिकारपरिपालनसिद्धिबुद्धिम् ।
सद्विग्रहोऽपि धनधान्यसमृद्धिता च
स्याद्देवतागुरुदशागमने भवन्ति ॥ ५ ॥

राज्याधिकार और चित्त स्वस्थ, धर्म में उत्तम प्रकार की बुद्धि, शरीर की आरोग्यता, सत् विचारवान्, धनधान्य की वृद्धि यह फल बृहस्पति की दशा में जानिये ॥ ५ ॥

अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यापवादवधबन्धनमर्थहानि-
र्मित्रे च बन्धुवचनेषु च युद्धबुद्धिः ।
सिद्धं च कार्यमपि यत्र सदा विनष्टं
स्यात्सर्वदा शनिदशागमने भवन्ति ॥ ६ ॥

मिथ्या अपवाद, दूसरे का हनन, बन्धन, द्रव्य का नाश, मित्र

तथा बान्धवों से कलह की बुद्धि और सिद्ध भी कार्य नष्ट होवे यह शनि की दशा का फल जानिये ॥ ६ ॥

अथ बुधदशाफलम् ।

दिव्याङ्गनामदनसङ्गमकेलिसौख्यं
नानाविधैः समभिरागमनोऽभिरामैः ।
हेमादिरत्नविभवागमकोशधान्यं
स्यात्सर्वदा बुधदशागमने भवन्ति ॥ ७ ॥

सुन्दर-स्त्री-सुख और अनेक प्रकार के भोग-विलास, सुवर्ण और रत्नादि की प्राप्ति विभवयुक्त खज़ाना और धान्य यह फल बुध की दशा का जानिये ॥ ७ ॥

अथ केतुदशाफलम् ।

भार्यावियोगजनितं च शरीरदुःखं
द्रव्यस्य हानिरतिकष्टपरंपरा च ।
रोगाश्च बन्धुकलहश्च विदेशता च
केतोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥ ८ ॥

स्त्री-वियोग से शरीर को दुःख, द्रव्य की हानि, बहुत कष्ट, रोग, बन्धुओं में कलह और विदेशवास यह केतुदशा का फल जानिये ॥८॥

अथ शुक्रदशाफलम् ।

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिं
श्वेतातपत्रधनधान्यसमाकुलश्च ।
आयुःशरीरसुतपौत्रसुखं नराणां
द्रव्यञ्च भार्गवदशागमने भवन्ति ॥ ९॥

बगीचा इत्यादि स्थान की प्राप्ति, शरीरपुष्टि, श्वेतच्छत्र की प्राप्ति, धन-धान्य की वृद्धि, आयु और पुत्रपौत्रों की वृद्धि और द्रव्यप्राप्ति यह फल शुक्र की दशा का जानना ॥ ६ ॥

अथ डिम्भाख्यचक्रम् ।

नराकारं लिखेच्चक्रं सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १ ॥
वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कन्धयोर्द्वयोः ।
बाहुयुग्मे तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥ २ ॥
ऋक्षाणि हृदये पञ्च नाभौ स्यादेकमेव हि ।
ऋक्षं गुह्ये वदेदेकमेकैकं जानुगोद्वये ॥ ३ ॥
नक्षत्राणि षडन्यानि दद्यादंघ्रिद्वयं बुधः ।
पादस्थिते च नक्षत्रे निर्धनोऽल्पायुरेव च ॥ ४ ॥
विदेशगमनं जानौ गुह्ये स्यात्परदारकः ।
अल्पतोषी भवेन्नाभौ हृदयेऽतीश्वरस्तथा ॥ ५ ॥
तस्करः पाणियुग्मे च बाहुस्थानेऽच्युतो भवेत् ।
स्कन्धे गजस्कन्धगामी मुखे मिष्टान्नभोजनम् ॥ ६ ॥
मस्तकस्थे च नक्षत्रे पटबन्धी भवेन्नरः ।
सूर्यनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रावधि गण्यते ॥ ७ ॥

नराकार चक्र लिखे । सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र पर्यन्त तीन नक्षत्र मस्तक में, तीन नक्षत्र मुखमें, एक नक्षत्र स्कन्ध में, एक-एक नक्षत्र बाहु पर, एक-एक नक्षत्र हाथों पर, पाँच नक्षत्र हृदय में, एक नक्षत्र नाभि में, तथा एक नक्षत्र गुदा में, एक-एक नक्षत्र जंघाओं में और छः नक्षत्र दोनों चरणों में दे ।

फल ।

जन्म का नक्षत्र चरणों में पड़े, तो निर्धनी और अल्पायु हो । और यदि जंघाओं में पड़े, तो विदेशगमन करावे । गुदा में पड़े, तो दूसरे की स्त्री से भोग करे । नाभि में पड़े, तो अल्पतोषी अर्थात् थोड़े में सन्तोष करे । हृदय में पड़े, तो बड़ा ऐश्वर्य हो । हाथ में पड़े, तो चोर हो । बाहु में पड़े, तो स्थान छूटे । स्कन्ध में पड़े, तो हाथी की सवारी मिले । मुख में पड़े तो मिष्टान्न भोजन हो । मस्तक में पड़े, तो पटबन्धी हो अर्थात् उन्नति हो । इसमें सूर्य के नक्षत्र से जन्म-नक्षत्र तक गिने ॥ १–७ ॥

अथ डिम्भाख्यचक्रन्यासः ।

मस्तक	मुख	स्कन्ध	बाहु	हाथ	हृदय	नाभि	गुदा	जानु	चरण	अंग
३	३	२	२	२	५	१	१	२	६	नक्षत्र
पटबंधी	मिष्टान्न भोजन	गज-गामी	स्थान-च्युत	चोर	ऐश्वर्य-युक्त	अल्प-तोषी	परदार-रत	विदेश-गमन	अल्पायु निर्धन	फल

अथ मूलवृत्तचक्रम् ।

मूलेऽष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिताः ।
स्तम्भेषु षट्घटिकास्त्वचि चैकादश स्मृताः ॥ १ ॥
शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।
पुष्पे पञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयः स्मृताः ॥ २ ॥

अथ फलम् ।

मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ।
त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातृपीडनम् ॥ ३ ॥

परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतेः ।
फले राज्यं शिखायां चेदल्पजीवी च बालकः ॥ ४ ॥

मूलवृक्ष की जड़ में आठ घड़ी, स्तम्भ में छः घड़ी, त्वचा में ग्यारह घड़ी, शाखा में नव घड़ी, पत्र में चौदह घड़ी, पुष्प में पाँच घड़ी, फल में चार घड़ी और शिखा में तीन घड़ी स्थापित करे ॥ १–२ ॥

फल ।

मूल में जन्म का इष्टकाल पड़े, तो मूल को नाश करे, स्तम्भ में पड़े, तो हानि हो तथा धन का क्षय हो, त्वचा में पड़े, तो भाई का नाश करे, शाखा में पड़े, तो माता को पीड़ित करे, पत्र में पड़े, तो परिवार का क्षय करे, फूल में पड़े, तो राजा का मन्त्री हो, फल में पड़े, तो राजा हो और शिखा में पड़े, तो बालक अल्पजीवी हो ॥ ३–४ ॥

अथ मूलवृक्षचक्रन्यासः ।

वृक्षाङ्ग	घटी	फल
मूल	८	मूलनाश
स्तम्भ	६	हानि-धनक्षय
त्वचा	११	भ्रातृनाश
शाखा	९	मातृ-पीडा
पत्र	१४	परिवार-क्षय
पुष्प (फूल)	५	राजमन्त्री
फल	४	राजा
शिखा	३	अल्पायु

अथ स्त्रीजातकविचारः ।

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः ।
म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रे षष्ठेऽष्टमे यदा ॥ १ ॥

जिस स्त्री के लग्न या सातवें स्थान में पापग्रह हो, तो उस स्त्री का पति सात वर्ष में मर जावे और चन्द्रमा छठे या आठवें हो, तो आठ वर्ष में मरे ॥ १ ॥

गुरौ शुक्रे मृतापत्या मृतगर्भा च मङ्गले ।
अष्टमस्थो ग्रहो नूनं न स्त्रियाः शोभनो मतः ॥२॥

बृहस्पति-शुक्र छठे या आठवें हों तो बालक न जीवें। और मङ्गल, छठे-आठवें हो तो गर्भ ही नष्ट हो जावे। स्त्री के आठवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है ॥ २ ॥

एकः पुत्रो भवेद्राजा पञ्चमस्थो यदा रविः ।
मङ्गले च त्रयः पुत्रा गुरौ पञ्च प्रकीर्तिताः ॥ ३ ॥

लग्न से पाँचवें सूर्य हो, तो उस स्त्री के एक ही बालक हो, परन्तु राजा हो और मङ्गल पाँचवें हो, तो तीन पुत्र हों और बृहस्पति पाँचवें हो, तो पाँच पुत्र होवें ॥ ३ ॥

पञ्चमस्थे निशानाथे स्त्रियाः कन्याद्वयं भवेत् ।
बुधे कन्याश्चतस्त्रश्च शुक्रे सप्त च कन्यकाः ॥ ४ ॥

जिस स्त्री के पाँचवें चन्द्रमा हो, तो दो कन्या होवें। और बुध पाँचवें हो, तो चार कन्या हों तथा शुक्र पाँचवें हो, तो सात कन्या होवें ॥४॥

षडेव कन्या जायन्ते धर्मस्थाने यदा सितः ।
सप्तमे च यदा राहुः स्त्रियाः पुत्रस्तदा भवेत् ॥ ५ ॥

जिस स्त्री के शुक्र नवें स्थान में हो, तो छः कन्या हों और सातवें राहु हो, तो एक पुत्र हो ॥ ५ ॥

पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका ।
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥ ६ ॥

जिस कन्या के लग्न में पापग्रहों के बीच में चन्द्रमा हो, तो वह कन्या-पिता और श्वशुर दोनों के कुलों का नाश करे ॥६॥

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते ।
लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका ॥ ७ ॥

बारहवें व आठवें स्थान में क्रूरग्रह के साथ मङ्गल हो और लग्न में राहु हो, तो कन्या विधवा हो ॥ ७ ॥

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत् ।
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरं भ्रमति वेश्मसु ॥ ८ ॥

सातवें शुक्र हो, तो कुलदोष करनेवाली हो । तथा कर्कराशि में मङ्गल हो, तो इच्छापूर्वक घर-घर में घूमे ॥ ८ ॥

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा ।
सद्यो निहन्ति दम्पत्योरेको नास्त्यत्र संशयः ॥ ९ ॥

लग्न से सातवें पापग्रह हो तथा चन्द्रमा से सातवें पापग्रह हो, तो एकही योग स्त्री पुरुष, दोनों का नाश करे ॥ ९ ॥

लग्ने वा मेषगः सूर्यश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा ।
सद्यो निहन्ति दम्पत्योः कन्या तत्र न संशयः ॥ १० ॥

जिस कन्या के लग्न में सूर्य, और मेष का सूर्य हो अथवा चन्द्रमा से सातवें हो तो निःसन्देह स्त्री पुरुष दोनों का नाश करे ॥ १० ॥

अथ स्त्रीराजयोगः ।

कर्कोदये सप्तमगे पतङ्गे
जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहे ।

विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना
राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ १ ॥

कर्कलग्न में जन्म हो, सातवें सूर्य हो और लग्न पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो, तो स्त्री विद्यावती हो, तथा रानी हो । तथा कोई शत्रु न हो और पुत्र-पौत्र बहुत हों ॥ १ ॥

अथ स्त्रीडिम्भाख्यचक्रम् ।

मौलौ त्रयं मुखे सप्त स्तनयोरष्टभानि च ।
हृदि त्रयं त्रयं नाभौ त्रयं गुह्ये च विन्यसेत् ॥ १ ॥
मौला संतापकः सूर्यो मुखे मिष्टान्नदो भवेत् ।
स्तनयोः कामदः प्रोक्तो हृदये सुखदः स्त्रियाः ॥२॥
नाभौ पतिसुखं दत्ते गुह्ये कामप्रदः सदा ।
सूर्यडिम्भाख्यचक्रं तु स्त्रीणां प्रोक्तं विशेषतः ॥ ३ ॥

सूर्य के नक्षत्र से तीन नक्षत्र मस्तक में, सात नक्षत्र मुख में, आठ नक्षत्र स्तनों में और हृदय, नाभि तथा गुह्य में तीन-तीन दें । मस्तक में जन्म नक्षत्र पड़े, तो संताप करे, मुख में पड़े, तो मिष्टान्न देनेवाला हो, स्तनों में काम का देनेवाला हो और हृदय में स्त्री को सुख देवे । नाभि में पड़े, तो पति को सुख हो और गुदा में पड़े, तो सदा कामना पूर्ण करे । यह सूर्यडिम्भाख्यचक्र स्त्रियों के लिये कहा है ॥ १-३ ॥

अथ डिम्भाख्यचक्रन्यासः ।

३	७	८	३	३	३	नक्षत्र
मस्तक	मुख	स्तन	हृदय	नाभि	गुह्य	अङ्ग
संताप	मिष्टान्नद	कामद	सुखद	पतिसुख	कामप्रद	फल

अथ स्त्रीभावस्थग्रहफलम् ।

तनुस्थानगतग्रहफलम् ।

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम् ।
शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुः क्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ॥ १ ॥

धनस्थानगतग्रहफलम् ।

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमा
दारिद्र्यदुःखमतुलं नियतं द्वितीये ।
वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ २ ॥

सहजस्थानगतग्रहफलम् ।

सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये
कुर्युः स्त्रियं बहुसुतां धनभागिनीं च ।
सत्यं दिवाकरसुतः कुरुते धनाढ्यां
लक्ष्मीं ददाति नियतं किल सैंहिकेयः ॥ ३ ॥

सुहृत्स्थानगतग्रहफलम् ।

स्वल्पं पयो भवति सूर्यसुते चतुर्थे
दौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुते शशी च ।
राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोऽल्पबीजां
सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्च कुर्युः ॥ ४ ॥

सुतस्थानगतग्रहफलम् ।

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च ।
राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं
कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशाङ्कः ॥ ५ ॥

रिपुस्थानगतग्रहफलम् ।

षष्ठस्थिताः शनिदिवाकरराहुभौमा
जीवस्तथा बहुसुतां धनभागिनीं च ।
चन्द्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां च ॥ ६ ॥

जायास्थानगतग्रहफलम् ।

सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रा
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः ।
वैधव्यबन्धनभयं क्षयवित्तनाशं
व्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण ॥ ७ ॥

मृत्युस्थानगतग्रहफलम् ।

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं
मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः ।
सूर्यः करोति विधवां धनिनीं कुजश्च
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभाञ्च ॥ ८ ॥

धर्मस्थानगतग्रहफलम् ।

धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्र-
जीवाः सुधर्मनिरतां शशिजः सुभोगाम् ।

राहुश्च सूर्यतनयश्च करोति बन्ध्यां
नारीं प्रसूततनयां कुरुते शशाङ्कः ॥ ९ ॥

कर्मस्थानगतग्रहफलम् ।

राहुर्नभःस्थलगतो विधवां करोति
पापे परां दिनकरश्च शनैश्चरश्च ।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुटिलाश्च बन्ध्यां
शेषा ग्रहा धनवतीं बहुवल्लभाश्च ॥ १० ॥

आयस्थानगतग्रहफलम् ।

आये रविर्बहुसुतां धनिनीं शशाङ्कः
पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्याम् ।
आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सुपुत्रीं
राहुः करोति शुभगां सुखिनीं बुधश्च ॥ ११ ॥

व्ययस्थानगतग्रहफलम् ।

अन्त्ये धनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां
बन्ध्यां कुजः पररतां कुटिलां च राहुः ।
साध्वीं सितेज्यशशिजा बहुपुत्रपौत्र-
युक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनान्धाम् ॥ १२ ॥

इति श्रीसूर्यनारायणत्रिपाठिसंगृहीते जातक-
प्रकरणं चतुर्थं समाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ भावफलचक्रम् ।

स्थान	नाम	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.
१	तनु	विधवा	आयुष्का नाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पति- व्रता	दरिद्रा	पुत्र- नाश
२	धन	दरिद्र दुःख	बहुपुत्र- वती	दरिद्रदुःख	सौभाग्य	सौभाग्य	सौभा- ग्य	दुःख दरिद्र	दरिद्र दुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्य	धनपुत्र- युक्ता	धनपुत्रयुक्ता	धनपुत्रयुक्ता	धनपुत्र- युक्ता	धनपुत्र- युक्ता	बहुधन	धन- लाभ
४	सुहृद	दरिद्र- ता	दुर्भगा	अल्पवीर्या	बहुसौख्य	बहुसौख्य- शालिनी	बहुसौ- ख्य	अल्प- दुग्ध	पुत्र- नाश
५	सुत	पुत्र- नाश	बहुपुत्र युक्ता	पुत्रनाश	बहुपुत्र	बहुपुत्र	बहुपुत्र	रोग- युक्ता	मृत्यु
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनयुक्ता	कलहकारि- णी	धनयुक्ता	दरिद्रा वेश्या	धन- युक्ता	धन- वती
७	जाया	रोगिणी	प्रवासि- नी	विधवा	क्षय	भयमृत्यु	मृत्यु	वैधव्य मृत्यु	धन- नाश
८	मृत्यु	विधवा	मरण	धनवती	स्वजन- वियोग	स्वजन- वियोग	मरण	पतिवल्ल भाबहु पुत्रा	मरण
९	धर्म	धर्म- वृद्धि	पुत्रयु- क्ता	धर्मकर्मा	उत्तमभोग	धर्मवृद्धि	धर्म- वृद्धि	बन्ध्या	बंध्या
१०	कर्म	पापका- रिणी	पापक- र्मा	मृत्यु, अर्थ- नाश, कुटिला, बन्ध्या	धनयुक्ता पतिव्रता	धनयुक्ता पतिव्रता	धन- युक्ता पति- व्रता	पाप- कर्मा	वैध- व्य
११	आय	बहुपुत्र प्राप्ति	धन यु- क्ता	पुत्रयुक्ता	सुखिनी	दीर्घायुः	पुत्र- युक्ता	धन- युक्ता	सौभा ग्य.
१२	व्यय	धनव्य- यवती	दिनांधा	बन्ध्या, व्यभि- चारिणी	सुपुत्रा	सुशीला	पति- व्रता	दरिद्रा	कुटि- लाव्य भिचा रिणी

जातकप्रकरण समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

अथ मिश्रप्रकरणम् ।

अथ गोचरफलम् ।

तत्रादौ सूर्यफलम् ।

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं
शत्रुक्षयो यानमतीव पीडा ।
कान्तिक्षयोऽभीष्टविशिष्टसिद्धि-
र्लब्धिर्व्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण ॥ १ ॥

ग्रहों के संचार के द्वारा मनुष्यों की जन्म राशि से जो फल संहिताकारों ने लिखा है, वही लिखते हैं:—

जन्म के सूर्य में यात्रा, दूसरे भय, तीसरे लक्ष्मी, चौथे व्यसन, पाँचवें दीनता, छठें शत्रुनाश, सातवें वाहन, आठवें पीड़ा, नवें कान्तिनाश, दशवें अभीष्टसिद्धि, ग्यारहवें लाभ और बारहवें सूर्य में व्यय हो ॥ १ ॥

अथ चन्द्रफलम् ।

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं
कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् ।
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च
लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः ॥ २ ॥

जन्म के चन्द्रमा में उत्तम भोजन, दूसरे धनक्षय, तीसरे धनलाभ, चौथे कुक्षि में पीड़ा, पाँचवें कार्यनाश, छठें लाभ, सातवें धन, आठवें रोग, नवें राजभय, दशवें सुख, ग्यारहवें लाभ और बारहवें चन्द्र में शोक होता है ॥ २ ॥

अथ भौमफलम् ।

भीतिं क्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धि-
मर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम् ।
शस्त्रोपघातं च रुजं च शोकं
लाभं व्ययं भूतनयस्तनोति ॥ ३ ॥

जन्म के मंगल में भय, दूसरे क्षय, तीसरे धन, चौथे शत्रुवृद्धि, पाँचवें धननाश, छठें धन की हानि, सातवें शस्त्रघात, आठवें रोग, नवें शोक, दशवें व ग्यारहवें लाभ और बारहवें मंगल में व्यय होता है ॥ ३ ॥

अथ बुधफलम् ।

बन्धं धनं वैरिभयं धनाप्तिं
पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ।
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं
क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ॥ ४ ॥

जन्मराशि के बुध में बन्धन, दूसरे धन, तीसरे शत्रु से भय, चौथे धन की प्राप्ति, पाँचवें पीड़ा, छठें स्थिति, सातवें पीड़ा, आठवें धनलाभ, नवें खेद, दशवें सुख, ग्यारहवें लाभ और बारहवें धन की हानि होती है ॥ ४ ॥

अथ गुरुफलम् ।

भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं
सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ।
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां
दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ॥ ५ ॥

जन्मराशि के बृहस्पति में भय, दूसरे धन, तीसरे पीड़ा, चौथे शत्रु की वृद्धि, पाँचवें सुख, छठें शोक, सातवें राजमान, आठवें रोग, नवें सुख, दशवें दीनता, ग्यारहवें मान और बारहवें बृहस्पति में पीड़ा हो ॥ ५ ॥

अथ शुक्रफलम् ।

रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं
वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम् ।
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं
पीडां स्वमर्थश्च ददाति शुक्रः ॥ ६ ॥

जन्मराशि के शुक्र में शत्रु का नाश, दूसरे धनलाभ, तीसरे बहुसुख, चौथे धन, पाँचवें पुत्र, छठें शत्रुवृद्धि, सातवें शोक, आठवें धनप्राप्ति, नवें उत्तम वस्त्रों का लाभ, दशवें पीड़ा, ग्यारहवें धनवृद्धि और बारहवें धन का लाभ होता है ॥ ६ ॥

अथ शनिफलम् ।

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं
पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ।
पीडां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं
नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ॥ ७ ॥

जन्मराशि के शनैश्चर में बुद्धिनाश, दूसरे क्लेश, तीसरे सुख, चौथे शत्रुवृद्धि, पाँचवें पुत्र से सुख, छठें शारीरिक सुख, सातवें दोष, आठवें पीड़ा, नवें सुख, दशवें निर्धनता, ग्यारहवें धनलाभ और बारहवें शनैश्चर में अनेक प्रकार के अनर्थ होते हैं ॥ ७ ॥

अथ राहुकेतुफलम् ।

हानिं नैःस्वं स्वं च वैरं च शोकं
वित्तं वादं पीडनं चापि पापम् ।
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्या-
द्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम् ॥ ८ ॥

जन्मराशि के राहु और केतु में हानि, दूसरे निर्धनता, तीसरे धन, चौथे वैर, पाँचवें शोक, छठें धन, सातवें कलह, आठवें पीड़ा, नवें पाप, दशवें वैर, ग्यारहवें सुख और बारहवें राहु-केतु में धनकी हानि होती है ॥ ८ ॥

अथ गोचरचक्रम् ।

स्थान	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
१	स्थान-हानिः	अन्नप्रदः	भयप्रदः	वधकृत्	भयकृत्	शत्रुक्षयः	नाश-करः	हानि-करः	फलम्
२	भयप्रदः	वित्तक्षयः	क्षतिप्रदः	द्रव्यप्रदः	द्रव्यप्रदः	द्रव्यप्रदः	क्लेश-कर्ता	नैःस्वम्	फलम्
३	धनप्रदः	द्रव्यप्रदः	धनप्रदः	शत्रु-भयदः	क्लेशकृत्	सुखकरः	सुख-करः	धनम्	फलम्
४	कष्टप्रदः	कुक्षि-रोगदः	शत्रुप्रदः	धनप्रदः	शत्रुवृद्धि-कृत्	द्रव्य-लाभः	शत्रु-वृद्धिः	वैरकृत्	फलम्
५	दैन्यप्रदः	कार्यभङ्ग-करः	द्रव्य-नाशः	पीडाकरः	सौख्य-करः	सुतप्रीति-करः	पुत्र-सुखम्	शोक-कृत्	फलम्
६	शत्रुक्षयः	द्रव्य-लाभः	धनप्रदः	स्थिति-करः	शोककरः	शत्रुवृद्धि-करः	सुखम्	वित्तम्	फलम्
७	मार्गप्रदः	धनप्रदः	अर्थनाशः	पीडाकरः	राजमानः	शोकप्रदः	दोषम्	वादम्	फलम्
८	पीडाप्रदः	रोगप्रदः	शस्त्रभयं	द्रव्यप्रदः	रोगप्रदः	द्रव्य-प्राप्तिः	पीडा-करः	पीडनम्	फलम्
९	कान्ति-क्षयः	राज-भयदः	रोगप्रदः	पीडाकरः	सौख्य-करः	वस्त्रप्रदः	अर्थ-व्ययः	पापकृत्	फलम्
१०	कार्य-सिद्धिः	सौख्य-प्रदः	शोकप्रदः	सुखप्रदः	दैन्यम्	पीडाकरः	दौर्मन-स्यम्	वैरकृत्	फलम्
११	द्रव्यप्रदः	लाभप्रदः	लाभप्रदः	लाभप्रदः	मानकृत्	द्रव्यप्रदः	धनाप्ति-करः	सौख्य करः	फलम्
१२	व्ययकृत्	शोकप्रदः	व्ययकृत्	द्रव्यक्षय-करः	विज्ञानं तथा-पीडा-करः	द्रव्यप्रदः	नानाप्र-कारान-र्थकः	द्रव्य-हानिः	फलम्

अथ ग्रहाणां दानानि ।

अथ सूर्यदानम् ।

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः
कौसुम्भवासो गुडहेमताम्रम् ।
आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च
वदन्ति दानं हि विरोचनाय ॥ १ ॥

अथ चन्द्रदानम् ।

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च
कर्पूरमुक्तादधिशुभ्रवस्त्रम् ।
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं
चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुम्भम् ॥ २ ॥

अथ भौमदानम् ।

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च
वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम् ।
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं
ताम्रं च भौमाय वदन्ति दानम् ॥ ३ ॥

अथ बुधदानम् ।

वृषं च नीलं किल धौतकांस्यं
मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम् ।
दासी च दन्ता द्विरदस्य ननं
वदन्ति दानं विधुनन्दनाय ॥ ४ ॥

अथ गुरुदानम् ।

शर्करा च रजनी तुरङ्गमः
पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् ।

पुष्परागलवणं सकाञ्चनं
प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ ५ ॥

अथ शुक्रदानम् ।

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरङ्गो
धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् ।
सतण्डुलानुत्तमगन्धयुक्तं
वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ॥ ६ ॥

अथ शनिदानम् ।

माषाश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं
तिलाः कुलत्था महिषी च लोहम् ।
कृष्णा च धेनुः खलु दुःखशान्त्यै
वदन्ति दानं रविनन्दनाय ॥ ७ ॥

अथ राहुदानम् ।

गोमेदरत्नं च तुरङ्गमश्च
सुनीलचैलामलकम्बलं च ।
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं
स्वर्भानवे दानमिदं वदन्ति ॥ ८ ॥

अथ केतुदानम् ।

वैदूर्यरत्नं सतिलं च तैलं
सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ।
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतो-
श्छागस्य दानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ९ ॥

इसकी टीका चक्र से जानना ॥ १–९ ॥

अथ नवग्रहदानचक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः
माणिक्य	कांस्य-पात्र	मूँगा	स्याह बैल	शकर	चित्र वस्त्र	उड़द	गोमेद	वैदूर्य मणि	दानम्
गेहूँ	चावल	गेहूँ	काँसा	हरदी	सफ़ेद घोड़ा	तेल	घोड़ा	तिल	दानम्
गौ बछड़ा	कर्पूर	मसूर	मूँग	घोड़ा	गौ	नीलम	स्याह वस्त्र	तेल	दानम्
लाल वस्त्र	मोती	लाल बैल	घृत	पीत अन्न	हीरा	तिल	कम्बल	कंबल	दानम्
गुड़	दही	गुड़	पन्ना	पीत वस्त्र	चाँदी	कुरथी	तिल	कस्तूरी	दानम्
सोना	सफ़ेद वस्त्र	सोना	सर्व फूल	पुख-राज	सोना	भैंस	तेल	शस्त्र	दानम्
ताँबा	सफ़ेद गौ बछड़ा	लाल वस्त्र	दासी	लोन	चावल	लोह	लोह	छाग	दानम्
लाल चंदन	चाँदी	लाल कनेर के फूल	हाथी के दाँत	सोना	चन्दन	श्यामा गौ	दक्षिणा	दक्षिणा	दानम्
कमल	घृतपूर्ण कुम्भ	ताँबा	वस्त्र हरा	दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	० ०	० ०	दानम्
दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	दानम्

अथ ग्रहाणां जपसंख्याज्ञानम् ।

रवेः सप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादश स्मृताः ।
भौमे दशसहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकम् ॥ १ ॥
एकोनविंशतिर्जीवे भृगोर्नृपसहस्रकम् ।
त्रयोविंशति मन्दे च राहोरष्टादश स्मृताः ।
केतोरत्यष्टिसाहस्रं जपसंख्या प्रकीर्तिता ॥ २ ॥

इसकी टीका चक्र से जानना ॥ १–२ ॥

अथ जपसंख्याचक्रम् ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०	के०	ग्रहाः
७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	१६०००	२३०००	१८०००	१७०००	जपसंख्या

अथ ग्रहराशिप्रमाणम् ।

मासं शुक्रबुधादित्याश्चन्द्रः पाददिनद्वयम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयं शनिः ।
राहुः केतुः सदा भुंक्ते सार्धमेकं तु वत्सरम् ॥ १ ॥

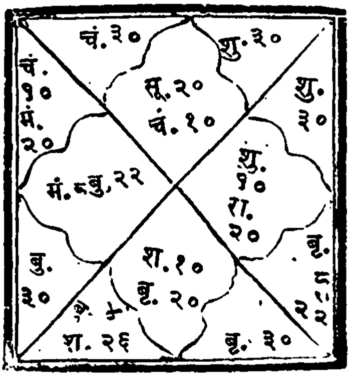
एक राशि पर एक महीने सूर्य, बुध और शुक्र भोग करते हैं। चंद्रमा एक राशि पर सवा दो दिन भोग करता है। मंगल एक राशि पर डेढ़ महीना वास करता है। बृहस्पति एक राशि पर एक वर्ष रहता है। शनैश्चर एक राशि पर ढाई वर्ष रहता है। राहु और केतु एक राशि पर डेढ़ व॰ भोग करते हैं ॥ १ ॥

अथ दिनदशाज्ञानम् ।

रविदिननखसंख्या चन्द्रमा व्योमबाणैः
क्षितितनयगजांशैश्चन्द्रजः षट्शराश्च ।
शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणै-
र्नयनयुगकराहुः सप्ततिः शुक्रसंख्या ॥ १ ॥

सूर्य की दशा बीस दिन, चन्द्रमा की पचास दिन, मङ्गल की अट्ठाइस दिन, बुध की छप्पन दिन, शनैश्चर की छत्तीस दिन, बृहस्पति की अट्ठावन दिन, राहु की बयालिस दिन और शुक्र की दशा सत्तर दिन की जानिये । इसका फल गोचर के अनुसार ग्रहों से, और सूर्य से जानना चाहिए । तथा अपनी राशि से जिस घर में सूर्य हो, उसी घर में दशा देख लेना । एक-एक घर में तीस-तीस दिन की दशा होती है, चक्र से समझ लेना ॥ १ ॥

अथ दिनदशाचक्रम् ।



अथ समयफलदा ग्रहाः कथ्यन्ते ।

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमन्दौ ॥ १ ॥

सूर्य और मङ्गल राशि के आदि में फल देते हैं, तथा शुक्र और बृहस्पति राशि के मध्य में फल देते हैं। और बुध सदा फल को देते हैं, चन्द्रमा और शनैश्चर अंत में फल को देते हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां राशिमध्ये पूर्वफलप्रमाणम् ।

सूर्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागै-
सप्ताद्रिघस्रान्विधुरग्निनाडीः ।
तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान्
गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥ १ ॥

सूर्य जिस राशि को जानेवाले होते हैं उसके पाँच रोज़ के प्रथम, मङ्गल आठ दिन प्रथम, बुध सात दिन प्रथम, शुक्र सात दिन प्रथम, चन्द्रमा तीन घड़ी पहले फल देता है। और राहु तीन महीना पूर्व, शनैश्चर छः महीना प्रथम और बृहस्पति दो मास प्रथम फल को देता है। इस तरह से जिस राशि में ग्रह जाननेवाला होता है, उसके पूर्व इस प्रकार से फल को देता है ॥ १ ॥

अथ स्वराशेः ग्रहणफलम् ।

जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिभतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा
चिन्तासौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम् ।
लाभोऽपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगो-
दानं शान्तिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे ॥१॥

जन्म के नक्षत्र पर ग्रहण पड़े, तो मृत्यु और जन्म के राशि पर पड़े, तो घात हो। दूसरे धननाश और तीसरे द्रव्य मिले। चौथे व्यथा, पाँचवें चिन्ता, छठे सुख, सातवें स्त्री को पीड़ा, आठवें मृत्यु, नवें माननाश, दशवें सुख, ग्यारहवें लाभ और बारहवें मृत्यु हो। इस

कारण अशुभ ग्रहण की शान्ति के लिये सुवर्णदान तथा गोदान करे। और किसी आचार्य का मत है कि जिसकी राशि से ग्रहण अशुभ हो, वह पुरुष ग्रहण न देखे॥ १ ॥

अथ स्वशरीरे शनिवासफलम् ।

राशौ द्वादशजन्मशीर्षहृदये पादे द्वितीये शनिः ।
नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनजनात्पुत्रान् पशुं पीडयेत्॥ १ ॥

जिसकी जन्मराशि से बारहवें शनैश्चर हो, उसके शिर में वास करता है, जन्म का हो, तो हृदय में वास करता है और दूसरे हो तो चरणों में वास करता है वह नानाप्रकार के क्लेश देता है। और शत्रु-जन से पुत्र तथा पशु को पीड़ा पहुँचाता है। चौथे आठवें हो तो अढाई वर्ष तक सब शरीर में वास करता है इसको अढैया कहते हैं। यह पुराण के मत से जानना॥ १ ॥

अथ शनिवाहनविचारः ।

येषां जन्मनि तारकादिगणयेत्सूर्यात्मजो भावधिं
चन्द्राङ्केन युतं पुनस्त्रि[३]गुणितं पश्चाद्युगैर्भाजितम् ।
शेषे कुञ्जरवाजिनोत्तमरथः स्याद्वाहनं शैविका
श्वेतं पीतमरक्तश्याममशुभदं सौख्यं च शोकक्षयम्॥ १ ॥

जन्मनक्षत्र से शनैश्चर के नक्षत्र तक गिने उस अङ्क में एक और जोड़ दे। फिर उस अंक को तीन से गुणे। उसमें चार का भाग दे। शेषाङ्क एक बचे तो हाथी का वाहन जानिये। दो बचें तो घोड़े का जानिये। तीन बचें तो रथवाहन होता है। चार बचें तो पालकी जानना। इसी क्रम से वस्त्र जान लेना अर्थात् एक बचे तो श्वेतवस्त्र, दो बचें तो पीतवस्त्र, तीन बचें तो लाल वस्त्र, शून्य रहे तो श्याम

वस्त्र जानना । अब फल कहते हैं । हाथी का वाहन शुभ है, घोड़े का वाहन सुखदायक है, रथ का वाहन शोककारक है और पालकी का वाहन क्षयकारक जानना ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण शनिवाहनविचारः ।

मन्दर्क्षाच्छशिवेदतर्कविशिखाऽब्ध्यग्निद्विपक्षैःक्रमा-
च्छागोऽश्वो भषणो गजो हयरिपुर्हंसो वृषो वायसः ।
हानिर्वैरिजयो भ्रमो धनचयो मानाल्पता भूपता
सौख्यं रोगचयो नरर्क्षवशतो मन्दस्य वाहा अमी ॥ १ ॥

शनैश्चर के नक्षत्र से एक, चार, छः, पाँच, चार, तीन, दो, फिर दो इन नक्षत्रों को स्थापित करे, बाद इसके अपने जन्म का नक्षत्र देखना । उसी क्रम से वाहन जान कर, चक्र के क्रम से विचार लेना । छाग १ घोड़ा २ कुत्ता ३ हाथी ४ भैंसा ५ हंस ६ बैल ७ कौवा ८, ये आठ वाहन जानिये ।

फल ।

छाग में हानि हो, घोड़ा में शत्रु से जीत हो, कुत्ता में भ्रम हो, हाथी में धन की वृद्धि हो, भैंसा में मान कम हो जाय, हंस में राज्यपदवी की प्राप्ति हो, बैल में सुखप्राप्ति हो और कौआ में रोग की वृद्धि हो ॥ १ ॥

अथ शनिभाद्वाहनचक्रम् ॥ २७ ॥

१	४	६	५	४	३	२	२	नक्षत्र
छाग	घोड़ा	कुत्ता	हाथी	भैंसा	हंस	बैल	कौआ	वाहन
हानि	शत्रुजय	भ्रम	धन-वृद्धि	माना-ल्पता	भूपता	सौख्य	रोग-वृद्धि	फल

अथ तृतीयप्रकारेण शनिवाहनविचारः।

ऋक्षे शनिर्यत्र नरस्य ऋक्षः
माघादिमासैर्मुनिभिर्विभक्तः।
एके च शुण्डी द्वौ जम्बुकश्च
त्रयेऽपि चाश्वश्च चतुर्थश्वानः॥ १॥
सिंहः शरः षष्ठ च गर्दभश्च
मृगो परः सप्त शनेर्हि वाहनाः॥

अथ फलम्।

गजश्च लभते लक्ष्मीं जम्बुके बुद्धिनाशनम्।
अश्वश्च कनकप्राप्तिः श्वानश्चौरगृहे गृहे॥ २॥
सिंहे च जायते सिद्धिर्गर्दभे हानिरेव च।
मृगे च प्राणसंदेहो वाहनानां फलं दिशेत्॥ ३॥

जिस नक्षत्र में शनैश्चर स्थित हो, वह नक्षत्र वा जन्मनक्षत्र जोड़ देना। उसमें माघ से लेकर जो महीना हो शनिनक्षत्र पर्यन्त उसे भी उसी नक्षत्रों के अङ्क में जोड़ना। उस अङ्क में सात का भाग देना, क्रम से वाहन जान लेना। अर्थात् एक बचे तो हाथी का वाहन जानना, दो बचें तो सियार, तीन बचें तो घोड़ा, चार बचें तो कुत्ता, पाँच बचें तो सिंह, छः बचें तो गदहा और सात बचें तो मृग वाहन जानना।

फल।

हाथी वाहन में लक्ष्मीलाभ हो, सियार में बुद्धिनाश हो, घोड़े में सोना मिले, कुत्ता में गृह गृह में चोरी करावे, सिंह में सिद्धि हो, गदहा में हानि हो और मृगा में प्राणसंदेह जानना॥ १-३॥

अथ शनेश्चरणविचारः ।

जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं
द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम् ।
त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति
वेदाष्टसार्केष्विह लोहपादम् ॥ १ ॥

अथ पादफलम् ।

लोहे धनविनाशः स्यात्सर्वसौख्यं च काञ्चने ।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत् ॥ २ ॥

जन्म का चन्द्रमा हो वा छठे तथा ग्यारहवें हो तो शनैश्चर का चरण सोने का जानना । दूसरे, पाँचवें और नवें हो, तो चाँदी का चरण जानना । तीसरे, सातवें और दशवें चन्द्रमा हो तो ताम्र का पाद जानिये । और चौथे, आठवें और बारहवें चन्द्रमा हो तो लोह का पाद जानिये ।

फल ।

लोह का पाद धन का नाश करे और सोने का सर्व सुख करे, ताम्र का सम और चाँदी का फल सौभाग्य जानिये ॥१-२॥

अथैकपक्षे त्रयोदशतिथिफलम् ।

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश ।
त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ॥ १ ॥

एक पक्ष में तेरह तिथि पड़ें, तो घोड़ा, मनुष्य और हाथियों का नाश करे ॥ १ ॥

अथ केतूदयफलम् ।

ग्रहयुद्धे राजयुद्धं केतुदृष्टे तथैव च ।

धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥ १ ॥

जब दो ग्रह एकराशि में आवें तब और केतु के उदय में राजाओं में युद्ध होता है । और यदि धूम्राकारसहित पुच्छवाला केतु हो, तो संसार को पीड़ा पहुँचे ॥ १ ॥

अथेन्द्रधनुषादिफलम् ।

धूम्रकेतुः शक्रचापो ग्रहणे बहुधा तथा ।
तदाऽसौ सर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ॥ १ ॥

धूम्राकार केतु का उदय हो तथा इन्द्रधनुष निकले तथा बहुधा ग्रहण पड़े, तो सब वस्तु महँगी हों ॥ १ ॥

अथ केतूदयनक्षत्रफलम् ।

अश्विन्यामुदिते केतौ स हन्याल्लङ्कपालकम् ।
भरण्यां च किरातेशं कृत्तिकायां कलिङ्गकम् ॥ १ ॥
रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे काशिनराधिपम् ।
आर्द्रायां जलदाधीशं भस्मकेशं पुनर्वसौ ॥ २ ॥
पुष्ये च मगधाधीशं सार्पस्थः काशिकाधिपम् ।
मघायां वङ्गनाथं च पूर्वायां पाण्डुनायकम् ॥ ३ ॥
उज्जयिन्यां नृपं हन्ति उत्तराफाल्गुनीगतः ।
गण्डकाधिपतिं हस्ते चित्रायां कुरुभूभुजाम् ॥ ४ ॥
स्वात्यां काश्मीरकाम्बोजभूपतीनां विनाशकः ।
इक्ष्वाकुकुरुदेशानां विशाखायां विनाशकः ॥ ५ ॥

मैत्रे चोग्रस्य नाथं च सार्वभौमं तथैन्द्रकम् ।
आन्ध्रमद्रकनाथं च मूलस्थो हन्ति निश्चितम् ॥६॥
पूर्वाषाढे काशिराजमुत्तराषाढके तथा ।
पौण्ड्रयशैलवैदेहान् श्रवणे कैकयेश्वरम् ॥ ७ ॥
वसौ पञ्चनदाधीशं वारुणे सिंहलेश्वरम् ।
पूर्वभाद्रपदे वङ्गं नैमिषेशं तथोत्तरे ॥ ८ ॥
रेवत्यामुदिते केतौ किराताधिपतेर्वधः ।
धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्विश्वस्य पीडकः ॥ ९ ॥

अश्विनी आदि सत्ताइसों नक्षत्रों का फल केतूदय के चक्र से समझ लेना और धूम्राकारसहित पुच्छ के उदय में संसार को पीड़ा करता है ॥ १-९ ॥

अथ केतूदयनक्षत्रफलम् ।

नक्षत्र	फल	० ०	० ०
चि०	कुरुक्षेत्र के राजा को हने	नक्षत्र	फल
ह०	दण्डक देश के राजा को हने	रे०	किरातदेश के राजा को हने
उ०फा०	उज्जयिनी के राजा को हने	उ० भा०	नैमिषदेश के राजा को हने
पू०फा०	पाण्डुदेश के राजा को हने	पू० भा०	वङ्गदेश के राजा को हने
म०	वङ्गदेश के राजा को हने	श०	सिंहलदेश के राजा को हने
आश्ले०	काशिराज को हने	ध०	पंजाबदेश के राजा को हने
पुष्य	मगधदेश के राजा को हने	श्र०	केकयदेश के राजा को हने
पु०	भस्मकदेश के राजा को हने	उ० षा०	पाण्डुदेश, शैलदेश और मैथिलदेश के राजा को हने
आ०	जलददेश के राजा को हने	पू० षा०	काशिराज को हने
मृ०	काशी के राजा को हने	मू०	आन्ध्रदेश और मद्रकदेश के राजा को हने
रो०	शूरसेन देश के राजा को हने	ज्ये०	सब राजाओं को हने
कृ०	कलिङ्गदेश के राजा को हने	अनु०	उग्रदेश के राजा को हने
भ०	किरातदेश के राजा को हने	वि०	इक्ष्वाकु तथा कुरुदेश के राजा को हने
अ०	लङ्कापति को हने	स्वा०	काश्मीर और काम्बोज के राजा को हने

अथ लग्नवर्णचक्रम् ।

मे०	वृष	मि०	क०	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	ल०
रक्त	श्वेत	हरित	श्वेत	धूम्र	पाण्डुर	चित्र-वर्ण	असि-तवर्ण	स्वर्ण-सदृश	कृष्ण	कृष्ण	पीत	वर्ण

अथ ग्रहाणां संज्ञाचक्रम् ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ग्रह
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	स्त्रीपुरुषादिसंज्ञा
वृद्ध	मध्य	युवा	बाल	वृद्ध	मध्य	वृद्ध	अवस्थासंज्ञा
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	वर्ण

अथ बालकजन्मसमये लग्ननिर्णयः ।

शब्दं मेषे वृषे सिंहे मिथुने च धने तुले ।
शुद्धशब्दं घटे कन्या शेषे शब्दं विवर्जयेत् ॥ १ ॥
शशिलग्नान्तरेणैव ग्रहाश्चापि दिगन्तरम् ।
तस्यैव मन्दिरे नार्यो वृद्धा युवा कुमारिका ॥ २ ॥
पापैश्च विधवा नार्यः सौम्यैः सौभाग्यसंज्ञकाः ।
क्रूरे कुमारिका ज्ञेया एवं लग्नस्य लक्षणम् ॥ ३ ॥
पापा राहुः शनिर्भौमः क्रूराः केतू रविर्गुरुः ।
सौम्याश्चन्द्रोबुधःशुक्रोग्रहाणां लक्षणं स्मृतम् ॥ ४ ॥
यत्र राहुः शिरस्तत्र शय्या भौमः प्रकीर्तितः ।
यत्र सूर्यस्तत्र दीपो मन्दे लोहं निगद्यते ॥ ५ ॥

चन्द्रस्थाने जलं विद्यात्सुरगुरोः कांस्यपात्रकम् ।
भृगोः सुते शुक्लवस्त्रं लग्नचिह्नमुदाहृतम् ॥ ६ ॥

अजभषद्विमिता वृषकुम्भयोः
श्रुतिमिता हयकर्कटके शराः ।
मकरयुग्मतुलाधरकन्यका-
स्त्वलिहरौ त्रिमिता ह्यपसूतिकाः ॥ ७ ॥

मेष, वृष, सिंह, मिथुन, धन और तुला इन लग्नों में जन्म हो, तो बालक उसी समय में ज़ोर से रोवे और कन्या लग्न हो, तो धीरे रोवे । और शेष लग्नों में कुछ देर बाद रोवे ।

चन्द्रमा के वा लग्न के अन्तर में जितने ग्रह पड़े हों, उतनी ही स्त्री, बालक जन्म के समीप जानना । वृद्ध वा युवा वा कुमारिका ग्रहों के क्रम से जानना ।

पापग्रह हों तो विधवा स्त्री, सौम्यग्रहों में सौभाग्यवती स्त्री और क्रूर ग्रहों में कुमारिका जानिये ।

राहु, शनैश्चर और मङ्गल ये पापग्रह हैं । केतु, सूर्य और बृहस्पति की क्रूरसंज्ञा है । चन्द्रमा, बुध और शुक्र की सौम्यसंज्ञा है । और प्रसूता के भोजन वस्त्र पूर्वोक्त लग्न के वर्णचक्र से जानना ।

जन्मकुंडली में जिस दिशा में राहु हो उस दिशा में जन्मसमय बालक का शिर जानना अर्थात् जन्मलग्न से लेकर बारहों घरकी पूर्व आदि दिशा जानिये, आगे चक्र के द्वारा क्रम लिखेंगे । तथा जिस दिशा में मङ्गल हो उसी दिशा में शय्या और जिस दिशा में सूर्य हो उसी दिशा में दीपक तथा जिस दिशा में शनि हो उस दिशा में लड़के का नाल जानिये । जिस दिशा में चन्द्रमा हो उस दिशा में जलवास, जिस दिशा में बृहस्पति हो

उस दिशा में कांस्यपात्र और जिस दिशा में शुक्र हो उस दिशा में श्वेत वस्त्र का वास जानना ।

अब अन्य मत से लग्न के अधीन प्रसूता के पास स्त्रियों का प्रमाण लिखते हैं—मेष अथवा मीन इन लग्नों में स्त्री के प्रसव हो तो उस प्रसूता स्त्री के समीप दो स्त्रियाँ जानना तथा वृष, कुम्भ हो, तो चार स्त्रियाँ जानना। और धन और कर्क में पाँच स्त्रियाँ जानना। तथा मकर, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक और सिंह में तीन स्त्रियाँ जानना चाहिए ॥ १—७ ॥

अथ ग्रहाणां द्वादशभावस्थितदिशाचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भाव
पूर्व	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा

अथ संक्रान्तिविचारः ।

घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान्
ध्वांक्षी विशो लघुविधौ च चरर्क्षभौमे ।
चौरान्महोदरयुता नृपतीन् ज्ञमैत्रे
मन्दाकिनी स्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा ॥ १ ॥
विप्रांश्च मिश्रभभृगौ तु पशूंश्च मिश्रा
तीक्ष्णार्कजेऽन्त्यजसुखा खलु राक्षसी च ।
त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन्प्रथमे निहन्ति
मध्ये द्विजानपि विशोऽपरके च शूद्रान् ॥ २ ॥
अस्ते निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन्
नक्तंचरानपि नटान् पशुपालकांश्च ।

सूर्योदये सकललिङ्गिजनं च सौम्य-
याम्यायनं मकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

रविवार के दिन उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगे तो घोरा नाम संक्रान्ति होती है, वह शूद्रों को सुख देती है। सोमवार के दिन लघुसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगे तो ध्वांक्षीसंज्ञक जानना वह वैश्यों को सुख देती है। और मङ्गल के दिन चरसंज्ञक नक्षत्रों में लगे तो उसका महोदरी नाम होता है, वह चोरों को सुख देती है। बुधवार के दिन मैत्रसंज्ञक नक्षत्रों में लगे तो उसका मन्दाकिनी नाम होता है वह राजाओं को सुख देती है। बृहस्पति के दिन स्थिरसंज्ञक नक्षत्रों में लगे तो उसका मन्दा नाम होता है वह ब्राह्मणों को सुख देती है। शुक्र के दिन मिश्रसंज्ञक नक्षत्रों में लगे तो मिश्रा नाम की संक्रान्ति होती है वह पशुओं को सुख देनेवाली है। शनैश्चरवार को तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्रों में लगे तो उसका राक्षसी नाम है वह चाण्डालों को सुख देनेवाली है। दिनमान के तीन भाग करे। प्रथम भाग में संक्रान्ति लगे तो राजाओं का, दूसरे भाग में लगे तो ब्राह्मणों का, तीसरे भाग में वैश्यों का और सूर्यास्तकाल में लगे तो शूद्रों का विनाश करे। और रात्रि के प्रथम पहर में लगे तो पिशाचों का, दूसरे पहर में राक्षसों का, तीसरे पहर में नटों का, चौथे पहर में पशुपालनेवालों का और सूर्योदय में लगे तो पाखण्डी संन्यासियों का नाश करे। मकर की संक्रान्ति को उत्तरायण और कर्क की संक्रान्ति को दक्षिणायन कहते हैं ॥ १–३ ॥

अथ संक्रान्तिचक्रम् ।

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	वार
उग्र	लघु	चर	मैत्र	स्थिर	मिश्र	तीक्ष्ण	नक्षत्र
घोरा	ध्वांक्षी	महोदरी	मन्दाकिनी	मन्दा	मिश्रा	राक्षसी	नाम
शूद्रसुख	वैश्यसुख	चौरसुख	राजसुख	ब्राह्मणसुख	पशुसुख	चाण्डालसुख	फल

पुनः संक्रान्तिचक्रम् ।

समयः	फलम्
सूर्योदये	लिङ्गिजनान् हन्ति
रात्रिचतुर्थयामे	पशुपालकान् हन्ति
रात्रितृतीययामे	नटान् हन्ति
रात्रिद्वितीययामे	राक्षसान् हन्ति
रात्रिप्रथमयामे	पिशाचकान् हन्ति
सूर्यास्तकाले	शूद्रान् हन्ति
दिनस्य तृतीयभागे	वैश्यान् हन्ति
दिनस्य मध्यभागे	द्विजान् हन्ति
दिनस्य प्रथमभागे	नृपान् हन्ति

अथ संक्रान्तिनिर्णयः ।

६ ३ ६ १२
षडशीत्याननं चापनृयुक् कन्याझषो भवेत् ।
७ १ ५ ८ २ ११
तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहालिगोघटे ॥ १ ॥

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः
पुण्या मताः षोडशषोडशोष्णगोः ।
निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे
पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः ॥ २ ॥

धन, मिथुन, कन्या और मीन इन संक्रान्तियों की षडशीतिमुखा संज्ञा है । तुला और मेष की विषुव संज्ञा है और सिंह, वृश्चिक, वृष और कुम्भ की विष्णुपदा संज्ञा है । जिस समय सूर्य की संक्रान्ति हो, उस समय ठीक पहले की १६ घटी से संक्रान्ति काल के बाद की १६ घटी तक पुण्यकाल होता है । यदि आधी रात से पहले संक्रान्ति हो तो पूर्व दिन का उत्तरार्ध और यदि आधी रात के बाद संक्रान्ति हो तो पर दिन का पूर्वार्ध, पुण्यकाल होता है ॥ १–२ ॥

अथ चक्रम् ।

अर्धरात्रात्पूर्वं संक्रान्तिः	अर्धरात्रात्परं संक्रान्तिः	समयः
पूर्वदिने पुण्यकालः	परदिने पुण्यकालः	पुण्यदिनम्
अन्तभागे पुण्यकालः	पूर्वभागे पुण्यकालः	पुण्यभागदिनम्

अथ द्वितीयप्रकारेण संक्रान्तिनिर्णयः ।

पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्या-
द्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात् ।
पूर्वं परस्ताद्यदि याम्यसौम्या-
यने दिने पूर्वपरे तु पुण्ये ॥ १ ॥

यदि पूरी आधीरात को संक्रान्ति लगे तो पूर्व व पर दोनों दिन पुण्यकाल होता है । और सूर्योदय के पूर्व कर्कसंक्रान्ति हो तो पूर्व दिन पुण्यकाल और सूर्यास्त के बाद मकर संक्रान्ति हो तो पर दिन पुण्यकाल होता है ॥ १ ॥

अथ चक्रम् ।

पूर्णार्द्धरात्रौ संक्रान्तिः	सूर्योदयात्पूर्वं याम्यायनम्	सूर्यास्तात्परं सौम्यायनम्
पूर्वपरदिने पुण्यकालः	पूर्वदिने पुण्यकालः	परदिने पुण्यकालः

अथ तृतीयप्रकारेण संक्रान्तिनिर्णयः ।

सन्ध्या त्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बा-
दर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ।
चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्तः
पुण्यौ तदानीं परपूर्वघस्रौ ॥ १ ॥

जिस काल में सूर्य का अर्धबिम्ब उदित हो, उस काल के पूर्व की तीन घड़ी प्रातः संध्यासंज्ञक और जिस काल में सूर्य का अर्धबिम्ब अस्त हो उस काल के बाद की तीन घड़ी सायं संध्यासंज्ञक होती हैं। यदि प्रातः संध्या में कर्क-संक्रान्ति हो तो सूर्योदय के बाद, संपूर्ण दिन, और यदि सायं सन्ध्या में मकर संक्रान्ति हो तो सूर्यास्तकाल से पूर्व, संपूर्ण दिन पुण्यकाल होता है ॥ १ ॥

अथ चतुर्थप्रकारेण संक्रान्तिनिर्णयः ।

याम्यायने विष्णुपदे चाद्या मध्या तुलाजयोः ।
षडशीत्यानने सौम्ये परा नाड्योऽतिपुण्यदाः॥ १ ॥

गोकुम्भालिमृगाधिपेषु घटिकाः
पूर्वा नृपैः संमिता
द्वन्द्वं स्त्रीधनुरण्डजेषु च परा-
स्तावन्त्य एवानघाः ।
मेषे तौलिनि दिङ्मितां उभयत-
स्त्रिंशत्सुपूर्वाः स्मृताः
कर्केऽन्त्यास्तु नखा मृगे द्विगुणितां
कैश्चित्स्मृताः सूरिभिः ॥ २ ॥

याम्यायन अर्थात् कर्क की संक्रान्ति और विष्णुपद अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ ये संक्रान्तियाँ जिस काल में हों, उस संक्रान्तिकाल के पूर्व की १६ घटियाँ पुण्यकाल की होती हैं। अर्थात् बाद में पुण्यकाल नहीं होता। और तुला व मेष की संक्रान्ति जिस काल में हो, उस काल से पूर्व की सोलह घड़ी और पर की सोलह घड़ी, सब मिलकर बत्तिस, अथवा पूर्व-पर मिलकर सोलह घड़ी ही पुण्य काल होता है । और षडशीत्याननसंज्ञक अर्थात् मिथुन, कन्या, धन और मीन तथा सौम्यायन अर्थात् मकर, ये संक्रान्तियाँ जिस काल में हों, उस काल के बाद की सोलह घटियाँ पुण्यकाल की होती हैं, पहले की नहीं । वृष, कुम्भ और सिंह की संक्रान्ति के पूर्व ही सोलह घड़ी पुण्यकाल होता है। मिथुन, कन्या, धन और मीन की संक्रान्ति में पर सोलह घड़ी पुण्यकाल होता है। मेष व तुला की संक्रान्ति के दोनों तरफ़ दश दश घड़ी पुण्यकाल होता है। और कर्क की संक्रान्ति में पूर्व ही तीस घड़ी पुण्यकाल होता है। और वृश्चिक की संक्रान्ति में बीस घड़ी पुण्यकाल होता

है । तथा मकर की संक्रान्ति में चालीस घड़ी पर-पूर्वदिन पुण्यकाल होता है । यह भी किसी आचार्य का मत जानना ॥ १-२ ॥

अथ जघन्यबृहत्समनक्षत्रज्ञानम् ।

समं मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्नि-
मघात्रिपूर्वास्त्रपभं बृहत्स्यात् ।
ध्रुवद्विदैवादितिभं जघन्यं
सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥ १ ॥
जघन्यभे संक्रमणे मुहूर्ताः
शरेन्दवो[१५] बाणकृता[४५] बृहत्सु ।
खरामसंख्याः[३०] समभे महर्घं
समर्घसाम्यं विधुदर्शनेऽपि ॥ २ ॥

मृदुसंज्ञक (मृगशिरा, रेवती, अनुराधा और चित्रा), क्षिप्रसंज्ञक (अश्विनी, अभिजित्, पुष्य और हस्त), धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीनों पूर्वा और मूल इन १५ नक्षत्रों की समसंज्ञा है । और ध्रुवसंज्ञक (रोहिणी और तीनों उत्तरा), विशाखा और पुनर्वसु इन छः नक्षत्रों की बृहत्संज्ञा है तथा आश्लेषा, शतभिष, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी इन छः नक्षत्रों की जघन्यसंज्ञा है ॥ १ ॥ जघन्यसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगे तो पन्द्रह मुहूर्त, बृहत्संज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगे तो पैंतालिस मुहूर्त और समसंज्ञक नक्षत्रों में संक्रान्ति लगे तो उसमें तीस मुहूर्त होते हैं ।

फल ।

जिस महीने की संक्रान्ति में पन्द्रह मुहूर्त होते हैं, उस महीने में अन्न महँगा, और जिस महीने की संक्रान्ति में पैंतालीस मुहूर्त होते

हैं, उस महीने में अन्न सस्ता, और जिस महीने की संक्रान्ति में तीस मुहूर्त होते हैं, उस महीने में अन्न का सम भाव रहता है। इसी प्रकार चन्द्रोदय में भी अन्न का भाव जानना चाहिए। अर्थात् जघन्यसंज्ञक नक्षत्रों में चन्द्रोदय हो, तो उस मास में अन्न की महर्घता, बृहत्संज्ञक नक्षत्रों में चन्द्रोदय हो, तो उस महीने में अन्न सस्ता और समसंज्ञक नक्षत्रों में चन्द्र का उदय हो, तो सम भाव जानना ॥२॥

अथार्घज्ञानं मतान्तरम् ।

संक्रान्तिऋक्षं तिथिवारयुक्तं
धान्याक्षरामिश्रितरामभक्तम् ।
एकेन वृद्धिः समता द्वितीये
शून्येन हानिः स्फुटमर्घकाण्डम् ॥ १ ॥

संक्रान्ति का नक्षत्र, तिथि और वार जोड़ देना। और धान्य के जितने अक्षर हों, उतने अङ्क उसी में जोड़ देना। उसमें तीन का भाग देना। एक शेष बचे तो मद्दा जानिए। दो बचें तो सामान्य और तीन बचें तो महँगा जानिए यह अर्घकाण्ड का स्पष्ट विचार है १॥

अथार्घवर्षणविचारो ग्रन्थान्तरे ।

स्यात्तैतिले नागचतुष्पदे रविः
सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपञ्चके ।
किंस्तुघ्न ऊर्ध्वः शकुनौ सकौलवे-
ऽनिष्टः समः श्रेष्ठ इहार्घवर्षणे ॥ १ ॥

तैतिल, नाग और चतुष्पद इन करणों में सोते हुए; गर, वणिज, विष्टि और बालव इन करणों में बैठे हुए; और किंस्तुघ्न, शकुनि और कौलव इन करणों में ऊर्ध्व स्थित होकर अर्थात् खड़े हुए सूर्य संक्रान्ति करते हैं। सोते हुए सूर्य अन्नादि की महर्घता और वर्षा

का विनाश करते हैं। बैठे हुए सूर्य सम और खड़े हुए सूर्य अन्नादि का भाव अच्छा और वृष्टि-कारक होते हैं ॥ १ ॥

अथ शुभकृत्ये संक्रान्तिवर्ज्यः ।

विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान्
दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेषु हि ।
घटिकास्तु षोडशशुभक्रियाविधौ
परतोऽपि पूर्वमपि संत्यजेद्बुधः ॥ १ ॥

तुला, मेष, कर्क और मकर की संक्रान्ति में पर, पूर्व और मध्य ये तीनों दिन शुभकार्य में वर्जित हैं और जो संक्रान्ति बाकी रहीं उनमें पर पूर्व सोलह-सोलह घड़ी वर्जित हैं ॥ १ ॥

अथ स्वराशेः संक्रान्तिबलाबलविचारः ।

संक्रान्तिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभे
स्वभे निरुक्तं गमनं ततोऽङ्गभे ।
सुखं त्रिभे पीडनमङ्गभेंशुकं
त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः ॥ १ ॥

संक्रान्ति जिस नक्षत्र में लगे, उसके पूर्व नक्षत्र से अपने जन्म-नक्षत्र तक गिने। प्रथम तीन नक्षत्र में अपना नक्षत्र पड़े, तो कहीं जाना पड़े। फिर छः नक्षत्रों में सुख होता है। फिर तीन नक्षत्रों में पीड़ा होती है। फिर छः नक्षत्रों में वस्त्र-प्राप्ति होती है। फिर तीन नक्षत्रों में अर्थ-हानि और फिर छः नक्षत्रों में धन मिलता है ॥१॥

अथ संक्रान्तिनक्षत्रचक्रम् ।

३	६	३	६	३	६	नक्षत्र
गमनम्	सुखम्	पीड़ा	वस्त्रम्	अर्थहानिः	धनागमः	फलम्

अथ संक्रान्तिवाहनवस्त्रायुधभक्ष्यलेपनादिविचारः ।

सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहद्विषड्घोटकाः
श्वाजो गौश्चरणायुधश्च बवतो वाहाः रवेः संक्रमे ।
वस्त्रं श्वेतसुपीतहारितकपाण्डूवारक्तकालासितं
चित्रं कम्बलदिग्घनाभमथ शस्त्रं स्याद्भुशुण्डी गदा १
खड्गो दण्डशरासतोमरमथो कुन्तश्च पाशोऽङ्कुशो-
ऽस्त्रं बाणस्त्वथ भक्ष्यमन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् ।
दुग्धं दध्यपि चित्रितान्नगुडमध्वाज्यं तथा शर्करा-
ऽथो लेपो मृगनाभिकुंकुममथोपाटीरमृद्रोचनम्॥ २॥
यावश्चोतुमदो निशाञ्जनमथो कालागुरुश्चन्द्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ।
क्षत्रीवैश्यकशूद्रसंकरभवाः पुष्पं च पुन्नागकं
जातीबाकुलकेतकानि च तथा बिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ३
स्यान्मल्लिका पाटलिका जपा च
संक्रान्तिवस्त्राशनवाहनादेः ।
नाशश्च तद्वृत्त्युपजीविनां च
स्थितोपविष्टस्वपतां च नाशः ॥ ४ ॥

बव आदि सात चर और शकुन आदि चार स्थिर करणों में होनेवाली सूर्य संक्रान्तियों के क्रम से सिंह आदि वाहन, श्वेत आदि वस्त्र, भुशुण्डी आदि आयुध, अन्न आदि भक्ष्य, कस्तूरी आदि लेपन, देवता आदि जाति और पुन्नाग आदि पुष्प होते हैं ।

क्रम इस प्रकार है:—

बव करण में होनेवाली संक्रान्ति सिंह पर सवार, उजले वस्त्र धारण किये, भुशुण्डी हाथ में लिये, अन्न भक्षण करती हुई, कस्तूरी का लेप देह में लगाए, देवता जातिवाली और नागकेसर का फूल हाथ में लिये होती है। इसी प्रकार बालव आदि करणों में होनेवाली संक्रान्ति के वाहन आदि चक्र से समझना चाहिए। विशेष यह है कि जिस महीने की संक्रान्ति के जो वाहन, वस्त्र और भक्षण आदि कहे गये हैं, उस महीने में उन सबका नाश अथवा उन वस्तुओं से जीविका करनेवालों का नाश होता है। और संक्रान्ति करते समय जो सूर्य की सुप्त, उपविष्ट और ऊर्ध्वस्थित ये तीन अवस्थाएँ कही गई हैं, उन अवस्थाओं में वर्तमान अर्थात् सोनेवाले, बैठनेवाले और खड़े रहनेवाले प्राणियों का भी नाश होता है ॥ १-४ ॥

अथ संक्रान्तिवाहनादिचक्रम् ।

बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्पद	नाग	किंस्तुघ्न	करण
सिंह	व्याघ्र	शूकर	खर	हाथी	महिष	घोड़ा	श्वान	मेष	गौ	मुरगा	वाहन
श्वेत	पीत	हरित	पाण्डु	रक्त	श्याम	असित	चित्र	कम्बल	दिशा	मेघसदृश	वस्त्र
भुशुंडी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	भाला	पाश	अंकुश	अस्त्र	बाण	शस्त्र
अन्न	परमान्न	भिक्षा	पक्वान्न	दुग्ध	दही	विचित्रान्न	गुड़	सहत	घृत	शक्कर	भोजन
कस्तूरी	केसर	चन्दन	माटी	गोरोचन	महावर	बिलारमद	हरिद्रा	सुरमा	अगर	कर्पूर	लेप
देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	सङ्करवर्ण	जाति
नागकेसर	चमेली	बकुल	केतकी	बेल	मदार	दूब	कमल	मल्लिका	पाढ़र	दुपहरिया	पुष्प

अथ भौमवतीअमावस्यापर्वयोगः ।

अमावास्यां भवेद्वारो यदा भूमिसुतस्य वै ।
जाह्नवीस्नानमात्रेण गोसहस्रफलं लभेत् ॥ १ ॥

मङ्गलवार को अमावस पड़े, तो भौमवती नाम होता है । उसमें केवल गङ्गास्नान से एकहजार गोदान का फल होता है । और सोमवारयुक्त सोमवती अमावस होती है, उसमें इससे भी अधिक फल जानना ॥ १ ॥

अथ कपिलाषष्ठीपर्वयोगः ।

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमेऽथ रोहिणी ।
व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलाऽनन्तपुण्यदा ॥ १ ॥

कुवारबदी छठ, मङ्गलवार और रोहिणी नक्षत्र तथा व्यतीपात योग युक्त हो, तो असंख्यपुण्य को देनेवाली होती है। इसमें तीर्थस्नान करने से बड़ा पुण्य होता है ॥ १ ॥

अथ पुष्करपर्वयोगः ।

विशाखास्थो यदा भानुः कृत्तिकासु च चन्द्रमाः ।
स योगः पुष्करो नाम पुष्करेष्वातिदुर्लभः ॥ १ ॥

विशाखा नक्षत्र के जब सूर्य हों और दिन नक्षत्र कृत्तिका हो तो पुष्करसंज्ञक योग होता है। इसमें पुष्कर-क्षेत्र में स्नान दुर्लभ होता है अर्थात् बड़ा फल है ॥ १ ॥

अथ वारुणीपर्वयोगः ।

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी ।
गङ्गायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा ॥ १ ॥
शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता ।
शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि ॥
महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत् ॥ २ ॥

यदि चैत्रकृष्णा त्रयोदशी को शतभिष नक्षत्र सूर्योदय में मिले तो वारुणीपर्व होता है। उसमें गङ्गास्नान करने से अनन्त सूर्यग्रहण के समान फल होता है। और शनिवार-युक्त त्रयोदशी और शतभिष नक्षत्र हो तो महावारुणीसंज्ञक पर्व होताहै। और शुभयोग, शनैश्चर और शतभिष से युक्त त्रयोदशी हो तो महामहावारुणी पर्व होता है। उसमें गङ्गास्नान, तीन करोड़ कुल के उद्धार करने में समर्थ है ॥ १-२ ॥

अथ गोविन्दद्वादशीपर्वयोगः ।

यदा चापे जीवो भवति घटराशौ दिनमणि-
स्तथा तारानाथः स्वभवनगतः फाल्गुनसिते ।
यदार्को द्वादश्यामदितिभयुतः शोभनयुत-
स्तदा गोविन्दाख्यं हरिदिवसमस्मिन्क्षितितले॥ १॥

जब धन के बृहस्पति, कुम्भ के सूर्य और कर्क का चन्द्रमा हो, फागुनमास के शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि हो, रविवार दिन हो तथा पुष्य नक्षत्र और शोभन योग हो, तो गोविन्दद्वादशी पर्व होता है। सूर्योदय की तिथि हो तब सब योग पड़ने पर पूर्वोक्त पर्व जानिये। इसमें अयोध्या के स्नान का बड़ा माहात्म्य है ॥ १ ॥

अथार्धोदयमहोदयपर्वयोगाः ।

श्रुतिव्यतीपातदिने सदर्शे
युतिर्यदा कृष्णदले तु माघे ।
पौषे तथार्धोदयसंज्ञकोऽयं
किञ्चिद्विहीने तु महोदयः स्यात् ॥ १ ॥

अर्धोदये तु संप्राप्ते सर्वं गङ्गासमं जलम् ।
शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः ॥ २ ॥
यत्किञ्चिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभम् ।
एवमेव फलं ज्ञेयं योगेऽपि च महोदये ॥ ३ ॥

माघ पूस की अमावस को श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग हो, तो अर्धोदय पर्व होता है। और इन योगों में से कोई हीन हो तो महोदयसंज्ञक योग जानना। अर्धोदय योग में सब जल गङ्गा के

समान होता है । और शुद्धात्मा ब्राह्मण ब्रह्मा के समान होते हैं । जो कुछ किञ्चिन्मात्र दान दे वह दान सुमेरु के बराबर होता है यही फल महोदय का जानना ॥१–३ ॥

अथ वृष्टिविचारः ।

दशार्द्राद्याः स्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः ।
तिस्रस्ततश्च मूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दश ॥ १ ॥
स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः क्वचित् ।
स्त्रीस्त्रियोः शीतलच्छाया योगः पुरुषयोर्नच ॥ २ ॥

आर्द्रा आदि दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक, विशाखा आदि तीन नक्षत्र नपुंसकसंज्ञक, और मूल आदि चौदह नक्षत्र पुरुषसंज्ञक हैं ॥ १ ॥

फल

जो सूर्य और चन्द्रमा स्त्रीपुरुषसंज्ञक हों, तो महावृष्टि हो । और स्त्री नपुंसक हों, तो कहीं-कहीं वृष्टि हो । और स्त्री स्त्री हों तो शीतल छाया अर्थात् बादली हो । और पुरुष पुरुष हों तो वर्षा न हो ॥२॥

अथ द्वितीयप्रकारेण वृष्टिविचारः ।

दस्रादितस्त्रीणि शिवादिपञ्च
तोयादिवेदोत्तररेवती च ।
एतानि धिष्ण्यानि निशाकरस्य
शेषानि भानोर्भप्रकीर्तितानि ॥ १ ॥
चन्द्रोऽस्ति चन्द्रः कुरुते न वृष्टिः
सूर्येऽपि सूर्यः कुरुते च वातम् ।
चन्द्रेऽपि सूर्ये कुरुते सुवृष्टिः
सूर्येऽपि चन्द्रः कुरुते तथैव ॥ २ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा और रेवती ये नक्षत्र चन्द्रमा के हैं और बाक़ी रहे, सो सूर्य के जानिये ।

फल ।

सूर्य चन्द्रमा का नक्षत्र विचारना। जो दोनों नक्षत्र चन्द्रमा के हों, तो वृष्टि हो, और सूर्य-सूर्य हों तो हवा चले। और चन्द्र सूर्य हों तो सुन्दर वृष्टि हो। तथा सूर्य चन्द्र में यही फल जानना ॥१-२॥

अथ वृष्टिवाहनविचारः ।

सूर्यभाच्चन्द्रभं गण्यं सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषाङ्कं वाहनं ज्ञेयमश्वादीनां क्रमाद्भवेत् ॥ १ ॥
अश्वः[1] शशो[2] वराहश्च[3] श्वानो[4] वृषभस्तथा[5] ।
दर्दुरो[6] महिषश्चैव[7] सप्तैते वृष्टिवाहनाः ॥ २ ॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने। उसमें सात का भाग दे, शेष अश्वादि वाहन जानिए। अश्व १, शशा २, वराह ३, श्वान ४, वृषभ ५, दर्दुर ६, महिष ७, ये सात वाहन वर्षा के होते हैं। फल अनुमान से जानना ॥ १-२ ॥

अथ ग्रहपरत्वेन वृष्टिविचारः ।

उदयास्तं गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ।
जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा ॥ १ ॥
बुधशुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् ।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥ २ ॥
चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ।
वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ॥ ३ ॥

भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते ।
भानोः पश्चाद्धरासूनुर्वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ४ ॥

शुक्र, बुध के उदय अस्त के समय वर्षा हो। और जलराशि का चन्द्रमा अर्थात् कुम्भ मीन का हो तो वृष्टि हो। और पक्ष के अन्त में संक्रान्ति पड़े, तो वर्षा हो। बुध और शुक्र समीप में हों तो वर्षा बहुत हो। और इन दोनों के बीच में सूर्य हों तो समुद्र-पर्यन्त सूख जाय। मंगल जब राशि से चले तो वर्षा हो। और शनैश्चर के उदय, अस्त और चलने में इधर उधर वृष्टि हो। और जो बृहस्पति पीछे को चले तो पृथ्वी वर्षा से पूरित हो। सूर्य के आगे मङ्गल हो तो जल सूखे। और सूर्य के पीछे मङ्गल हो तो पृथ्वी पर वर्षा हो॥ १–४ ॥

अथावर्षणयोगः ।

पौषे मूलभरण्यन्ते चन्द्रऋक्षे न गर्जति ।
आर्द्रादितो विशाखायां सूर्यर्क्षे चेन्न वर्षति ॥ १ ॥

पूस महीने में मूल से भरणी नक्षत्र पर्यन्त चन्द्रनक्षत्र में बादर न हो, तो आर्द्रा से विशाखा पर्यन्त सूर्यनक्षत्र न वर्षे ॥ १ ॥

अथ अङ्गस्फुरणविचारः ।

नेत्रे नेत्रप्रियाः प्राप्ताः कर्णे कर्णसुखं भवेत् ।
नासिकायां सुगन्धाप्तिः कपोले तु वराङ्गना ॥ १ ॥
ओष्ठे वा कलहो ज्ञेयो जिह्वामिष्टान्नभोजनम् ।
भुजेषु भुवनक्रीडा जानुदेशे महद्भयम् ॥ २ ॥
कण्ठस्थं भूषणं कण्ठे ग्रीवायां जागरा भवेत् ।
पृष्ठे परोक्षवार्ता च स्कन्धयोश्च धनागमम् ॥ ३ ॥

हृदये वाञ्छिता सिद्धिर्जठरे भाग्यसंपदः ।
वाहनाप्तिः कटेर्देशे गुह्ये परवधूरतः ।
ऊरुयुग्मेऽतिवस्त्राप्तिः पादयोर्गमनं भवेत् ॥ ४ ॥

नेत्र फड़के तो नेत्र-प्रिय प्राप्ति हो। कान फड़के तो कर्णसुख हो अर्थात् कोई अच्छी बात सुनाई दे। नाक फड़के तो सुगन्ध मिले। गाल फड़के, तो वराङ्गना स्त्री मिले। ओठ फड़के तो कलह हो। जीभ फड़के तो मिष्टान्न भोजन हो। भुजा फड़के तो भवन में विहार हो। और जंघा फड़के तो महाभय हो। कण्ठ फड़के तो कण्ठभूषण मिले और ग्रीवा फड़के तो जागरण हो अर्थात् जागे। पीठि फड़के तो परोक्ष वार्ता हो। स्कन्ध फड़के तो धनागम हो। हृदय फड़के तो वाञ्छित सिद्धि हो। जठर फड़के तो भाग्यसम्पदा हो। कमर फड़के तो सवारी मिले। गुदा फड़के तो परस्त्री से भोग हो। दोनों घुटने फड़कें तो वस्त्र मिले और चरण फड़के तो यात्रा मिले॥ १–४ ॥

अथ खञ्जनदर्शनफलम् ।

अपां समीपे गजमस्तके वा
देवालये ब्राह्मणसन्निधौ वा ।
आकाशमार्गे गहने वने वा
धन्यो नरः पश्यति खञ्जरीटम् ॥ १ ॥

वित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धिरतुला शक्रे हुताशे भयं
याम्ये रोगभयं सुरारिकलहं लक्ष्मीः समुद्रालये ।
वायव्ये वरवस्त्रलाभमखिलं दिव्याङ्गना चोत्तरे
ईशान्ये मरणं ध्रुवं निगदितं दिग्लभ्यते खञ्जरीम् २

जल के पास खञ्जन देखे व हाथी के मस्तक पर देखे व देव-स्थान में देखे व ब्राह्मण के समीप देखे व आकाश में देखे व भारी वन में देखे तो शुभ जानना। पूर्वदिशा में देखे तो धन मिले और कार्य-सिद्धि हो । आग्नेय में देखे तो अग्निभय हो, दक्षिण में देखे तो रोग हो, नैर्ऋत्य में कलह हो, पश्चिम में लक्ष्मीप्राप्ति हो, वायव्य में देखे तो वस्त्रलाभ हो, उत्तर में देखे तो दिव्याङ्गना मिले, ईशान्य में देखे तो मरण हो, इस प्रकार से दिशाओं में खड़रैचा का विचार करे ॥१-२॥

अथ राजभङ्गादियोगः ।

यदि भवति कदाचित्कार्त्तिके नष्टचन्द्रा
शनिरविकुजवारे स्वातिरायुष्ययोगे ।
गगनचरपशूनां जङ्गमस्थावराणां
नृपतिजनविनाशो राज्यभंगस्तु चोक्तः ॥ १ ॥

कदाचित् कार्त्तिक की अमावस्या शनि, रवि और भौम तथा स्वाती नक्षत्र और आयुष्मान् योग से युक्त हो तो पक्षी, पशु, जंगम, राजा और मनुष्यों का नाश और राज्यभंग होवे ॥ १ ॥

अथ प्रश्नास्तत्रादौ रामादिप्रश्नमाह ।

स्थाननाशश्च रामे स्यात्सीतायां दुःखमेव च ।
लक्ष्मणे कार्यसिद्धिः स्यात्सर्वलाभो विभीषणे ॥१॥
मरणं कुम्भकर्णे च रावणे च धनक्षयः ।
अङ्गदे च ध्रुवं राज्यं सुग्रीवे बन्धुदर्शनम् ॥ २ ॥
कैकेय्यां कार्यहानिश्च भरते त्वभिषेचनम् ।
कल्याणमिन्द्रतनये कार्यनाशश्च शूलिनि ॥ ३ ॥

हनुमान्सर्वकार्यश्च दीर्घमायुश्च जाम्बवान् ।
नारदः कलहश्चैव गुहश्च प्रियदर्शनम् ॥ ४ ॥
रामचक्रमिदं शस्तं देवर्षिकथितं पुरा ।
प्रश्नार्थं सर्वलोकानां शुभं सर्वार्थदायकम् ॥ ५ ॥

प्रश्नकर्ता के हाथ से प्रश्नचक्र पर अंगुली रखावे उसी के मुताबिक शुभाशुभ फल जाने। राम के कोठे में पड़े तो स्थानहानि हो। सीता में पड़े तो दुःख हो। लक्ष्मण में कार्यसिद्धि हो। विभीषण में पड़े तो सर्वलाभ हो। कुम्भकर्ण में पड़े तो मरण हो। रावण में पड़े तो धनक्षय हो। अङ्गद में शीघ्र राज्य मिले। सुग्रीव में बन्धुदर्शन हो। कैकेयी में पड़े तो हानि हो। भरत में राजगद्दी हो। अर्जुन में कल्याण हो। महादेव में कार्यनाश हो। हनुमान् में पड़े तो सब कार्य सिद्ध हों। जाम्बवान् में दीर्घायु हो। नारद में कलह हो। स्वामिकार्त्तिक में प्रियदर्शन हो। पहले इस रामचक्र को देवर्षियों ने सब लोगों के प्रश्न के हेतु वर्णन किया है जो कि शुभ और सर्वार्थ सिद्धिदायक है ॥ १–५ ॥

अथ रामादिप्रश्नचक्रम् ।

राम	सीता	लक्ष्मण	विभीषण
कुम्भकर्ण	रावण	अङ्गद	सुग्रीव
कैकेयी	भरत	अर्जुन	महादेव
हनुमान्	जाम्बवान्	नारद	स्वामिकार्त्तिक

अथ पञ्चदशीयन्त्रप्रश्नः ।

नवैकपञ्च त्वरितं वदन्ति अष्टौद्वितीये न च कार्यसिद्धिः ।

रसश्च वेदो घटिकात्रयं च सप्त त्रयं वै कथितं च वार्ता॥ १॥

नव एक और पाँच इनमें प्रश्नकर्ता स्पर्श करे तो कार्य शीघ्र सिद्ध होता है। और आठ व दो में नहीं सिद्ध होता है। छः व चार में पड़े तो शीघ्र तीन घड़ी में सिद्ध हो। सात व तीन में कार्य की वार्ता हो परन्तु कार्य सिद्ध न हो ॥ १ ॥

अथ पञ्चदशीयन्त्रचक्रम् ।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

अथ पल्लीपतनविचारः ।

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्गे नराणां
स्वजनजनविरोधो वामभागे च लाभम् ।
उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठभागे च मृत्युं
करचरणहृदिस्थे सर्वसौख्यं मनुष्यः ॥ १ ॥

दाहने अङ्ग पर पल्लीपतन हो तो आत्मीय लोगों में विरोध हो। और वाम अङ्ग में पड़े तो लाभ हो। पेट, शिर, कण्ठ व पीठ में पड़े तो मृत्यु हो। हाथ, पाँव और छाती में पड़े तो सब सुख मनुष्य को प्राप्त होवें ॥ १ ॥

अथ छिक्कापल्लीजम्बुकप्रश्नः ।

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं फलाफलम् ॥ १ ॥

घातं[1] नाशं[2] तथा लाभं[3] कल्याणं[4] जयं[5]मङ्गले[6] ।
उत्साह[7]हानी[8] मृत्युश्च[9] छिक्का पल्ली च जाम्बुकः ॥२॥
आसने शयने चैव दाने च भोजने तथा ।
वामभागे पृष्ठभागे षट्सु छिक्काः शुभावहाः ॥ ३ ॥

तिथि, पहर और नक्षत्र जोड़कर नव का भाग दे, शेष फल जानिये । एक बचे तो घात, दो बचें तो नाश, तीन बचें तो लाभ, चार बचें तो कल्याण, पाँच बचें तो जय, छः बचें तो मङ्गल, सात बचें तो उत्साह, आठ बचें तो हानि और नव बचें तो मृत्यु हो । इस प्रकार छींक, पल्ली और सियार शब्द को विचारे ।

आसन बैठने के समय व शयन, दान व भोजन के समय व वाम भाग में व पृष्ठभाग में छींक शुभ होती है ॥ १–३ ॥

अथान्यमते छिक्काकाकशृगालविचारः ।

छिक्कायां वचनं श्रुत्वा गृहीत्वा तृणमुत्तमम् ।
सप्ताङ्गुलकशेषेण ज्ञातव्यं प्रश्नलक्षणम् ॥ १ ॥
लाभो हानिस्तथा सौख्यमानन्दं प्रियदर्शनम् ।
भोजनं कलहश्चैव छिक्काकाकशृगालकम् ॥ २ ॥

छींक, कौवा व सियार का शब्द सुनकर एक तृण उठाले, उसे सात अंगुल से शेष करने पर एक बचे तो लाभ, दो बचें तो हानि, तीन बचें तो सुख, चार बचें तो आनन्द, पाँच बचें तो प्रियदर्शन, छः बचें तो भोजन और सात बचें तो कलह हो ॥१–२॥

अथ गर्भिणीप्रश्नः ।

सूर्यभौमगुरुस्पर्शे पुत्रो भवति निश्चितम् ।
चन्द्रशुक्रबुधस्पर्शे कन्या तत्र प्रजायते ॥ १ ॥

शनिस्पर्शे गर्भपातो राहुस्पर्शे सुतासुतौ ।
केतुस्पर्शे भवत्क्लीबो विचार्येत्थं वदेत्सुधीः ॥ २ ॥

प्रश्नकर्ता से गर्भचक्र पर अंगुली रखावे। सूर्य, मङ्गल और बृहस्पति पर पड़े, तो पुत्र निश्चय हो। तथा चन्द्र, बुध और शुक्र पर पड़े, तो कन्या हो और शनैश्चर पर पड़े तो गर्भपात हो और राहु पर पड़े, तो कन्या, पुत्र दोनों हों और केतु पर पड़े, तो नपुंसक हो ॥१–२॥

अथ गर्भप्रश्नचक्रम् ।

बु०	शु०	चं०
बृ०	सू०	मं०
रा०	श०	के०

अथ चौरप्रश्नज्ञानम् ।

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं भवेत् ।
मध्याक्षं शिवपितृजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं
स्वक्षंस्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ १ ॥

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ।
स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ॥ २ ॥
अन्धके पूर्वतो याति मन्दके याति दक्षिणे ।
मध्ये च पश्चिमे याति सुनेत्रे याति चोत्तरे ॥ ३ ॥

धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी और रेवती, ये नक्षत्र अन्धाक्ष हैं। हस्त, उत्तराषाढ, अनुराधा, शतभिषा,

आश्लेषा, अश्विनी और मृगशिरा ये नक्षत्र मन्दाक्ष हैं । आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित् और भरणी इनकी मध्याक्षसंज्ञा है । स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपद, मूल और पूर्वाफाल्गुनी इनकी सुलोचन संज्ञा है । अन्ध नक्षत्र में धन चोरी जाय तो जल्द लाभ हो, मन्दाक्ष में जाय तो यत्न से मिले, मध्याक्ष में जाय तो दूर से सुन पड़े और मिले नहीं । अंधसंज्ञक नक्षत्र में धन जाय तो पूर्वदिशा में गया हुआ जानिये, मन्दसंज्ञक में दक्षिण दिशा जानिये, मध्यसंज्ञक में पश्चिम दिशा जानिये और सुनेत्र में उत्तर दिशा जानना ॥ १–३ ॥

अथान्धादिनक्षत्रचक्रम् ।

अन्धाक्ष	मन्दाक्ष	मध्याक्ष	सुलोचन
रो०	मृ०	आ०	पुन०
पुष्य	आश्ले०	म०	पू० फा०
उ० फा०	ह०	चि०	स्वा०
वि०	अनु०	ज्ये०	मू०
पू० षा०	उ० षा०	अभिजित्	श्र०
ध०	श०	पू० भा०	उ० भा०
रे०	अ०	भ०	कृ०

अथ नष्टलाभज्ञानम् ।

पूर्णः शशी लग्नगतः शुभो वा
शीर्षोदये सौम्यनिरीक्षितश्च ।

नष्टस्य लाभं कुरुते तथाशु
लाभोपयातो बलवाञ्च्छुभश्च ॥१॥

जो कोई पूछे कि गतवस्तु प्राप्त होगी व नहीं। उस प्रश्न लग्न में शीर्षोदय लग्न हों अर्थात् मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ और वृश्चिक ये शीर्षोदय लग्न होती हैं, और पूर्णचन्द्रमा व और कोई शुभग्रह लग्न में बैठा हो और शुभग्रह की दृष्टि हो तो नष्ट वस्तु का शीघ्र ही लाभ हो, अथवा शुभग्रह बलवान् होकर ग्यारहवें स्थान में बैठा हो, तो भी नष्टवस्तु का लाभ जानिये ॥ १ ॥

अथ लाभालाभप्रश्नज्ञानम् ।

त्रिपञ्चलाभास्तमयेषु सौम्या
लाभप्रदा नेष्टफलाश्च पापाः ।
तुलोऽथ कन्या मिथुनं घटश्च
नृराशयस्तेषु शुभं वदन्ति ॥१॥

प्रश्नकर्ता पूछे अमुकस्थान में लाभ होगा व नहीं, वहाँ प्रश्न समय में लग्न से तीसरे, पाँचवें, ग्यारहवें और सातवें स्थान में शुभग्रह हो तो लाभ कहिये। अथवा इन्हीं स्थानों में पापग्रह हो, तो अनिष्ट फल और अर्थ-हानि कहिये। और तात्कालिकलग्न में तुला, कन्या, मिथुन और कुंभ लग्न हो और शुभग्रह की दृष्टियुक्त हो, तो प्रश्न-कर्त्ता को शुभफल और लाभ हो ॥ १ ॥

अथ प्रश्नकाले लाभालाभशुभाशुभज्ञानम् ।

सौम्यो विलग्ने यदि वा स्ववर्गे
शीर्षोदये सिद्धिमुपैति कार्यम् ।
अतो विपर्यस्तमसिद्धिहेतुः
कृच्छ्रेण संसिद्धिकरं विमिश्रम् ॥१॥

प्रश्नसमय के लग्न में शुभग्रह बैठा हो, अथवा शुभग्रह का घर हो व स्ववर्गी हो अर्थात् द्रेष्काण, द्वादशांश तथा त्रिंशांश लग्न का ही हो व शीर्षोदय लग्न हों अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ की शीर्षोदय संज्ञा है, ऐसे लग्नों में प्रश्नकर्ता का सब कार्य सिद्ध हो। इनसे विपरीत लग्नों में पापग्रह बैठा हो व उसकी दृष्टि हो व क्रूरग्रह का घर हो और पृष्ठोदय मेष, वृष, कर्क, धन और मकर ये लग्न हों तो कार्य सिद्ध न हो। अथवा शुभग्रह, पापग्रह मिलकर सौम्यलग्न में पृष्ठोदय हो, तो कष्ट करके विलम्ब में कार्यसिद्धि हो। अथवा शुभग्रह की आधिक्यता देखकर फल कहना॥ १॥

अथ विदेशीप्रश्नज्ञानम् ।

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदशसमन्वितम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥ १॥
एकेन गमनं कुर्याद्द्वितीये मार्गमेव च ।
तृतीये चार्धमार्गं च चतुर्थे द्वारमागतः ॥ २॥
पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिसमन्वितः ।
सप्तमे शून्यतावृत्तिरष्टमे मरणं ध्रुवम् ॥ ३॥

प्रश्न के अक्षर दूने करना, उसमें तेरह जोड़ देना, उसमें आठ का भाग देना, शेषाङ्क फल जानिये। एक बचे तो विदेशी अपने स्थान से चला है, दो बचें तो रास्ते में जानिये, तीन बचें तो आधे मार्ग में जानिये, चार बचें तो द्वारपर्यन्त जानिये, पाँच बचें तो जानिये कि एकबेर चलकर लौट गया है, और अब फिर आवेगा। छः बचें तो रोगयुक्त जानना, सात बचें तो शून्यता जानिये और आठ बचें तो मरण जानना ॥ १–३ ॥

अथ तिथ्यादिप्रयुक्तप्रश्नज्ञानम् ।

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।
अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वं रजस्तमः ॥ १ ॥

अथ फलम् ।

सिद्धिस्तात्कालिकी सत्त्वे रजसा तु विलम्बिता ।
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ॥२॥

प्रश्नलग्न के समय जो तिथि, वार, नक्षत्र और प्रहर हो, उसे जोड़ना, उसमें तीन का भाग देना। जो शेष रहे, उसमें क्रमसे सत्त्व, रज और तम फल जानिये। सत्त्व में तत्काल सिद्धि हो, रज में विलम्ब से कार्य हो और तम में कार्य की निष्फलता जानिये॥१–२॥

अथ कार्याकार्यप्रश्नज्ञानम् ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषे प्रश्नस्य लक्षणम् ॥१॥

अथ फलम् ।

पञ्चैके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रये ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥२॥

प्रश्न करनेवाले का मुख जिस दिशा में हो वह दिशा, पहर, नक्षत्र और वार जोड़ कर उसमें आठ का भाग देना, शेष शुभाशुभ फल जानना। पाँच और एक बचे तो शीघ्र कार्य सिद्धि हो, छः व चार बचें तो तीन दिन में कार्य की सिद्धि जानना, तीन व सात बचें तो विलम्ब में कार्य हो, दो व आठ बचें तो कार्यसिद्धि न हो॥१–२॥

अथ वारनक्षत्रयुक्तपन्थाप्रश्नः ।

बुधे चन्द्रे तथा मार्गे समीपे गुरुशुक्रयोः ।
रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परिपीड्यते ॥ १ ॥

निर्जीवः सप्तनक्षत्राणि सजीवो द्वादशे भवेत् ।
व्याधितो नवनक्षत्राणि सूर्यधिष्ण्यात्तु चान्द्रभम्॥ २॥

बुध और चन्द्रवार को प्रश्न करे, तो विदेशी को मार्ग में चलता हुआ जानिये। गुरु व शुक्र को प्रश्न करे, तो समीप आया जानिये। सूर्य तथा मङ्गल को प्रश्न करे, तो दूर जानिये और शनैश्चर को पीड़ा-युक्त जानिये। सूर्य-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनना। प्रथम सात नक्षत्र पर्यन्त चन्द्रमा आवे, तो निर्जीव जानना। फिर बारह नक्षत्र तक चन्द्रमा आवे, तो जीवयुक्त जानना फिर नव नक्षत्र तक चन्द्र आवे, तो रोग की उत्पत्ति जानना। इस प्रकार पन्था-प्रश्न जानिये ॥ १-२॥

अथ लग्नान्मनश्चिन्तितप्रश्नज्ञानम् ।

मेषे च द्विपदां चिन्ता वृषे चिन्ता चतुष्पदः ।
मिथुने गर्भचिन्ता च व्यवसायस्य कर्कटे ॥ १ ॥
सिंहे च जीवचिन्ता स्यात्कन्यायाञ्च स्त्रियस्तथा ।
तुले च धनचिन्ता च व्याधिचिन्ता च वृश्चिके॥ २॥
चापे च धनचिन्ता स्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ।
कुम्भे स्थानस्य चिन्ता स्यान्मीने चिन्ता च दैविकी ३

मेष लग्न में प्रश्न करे तो मनुष्यों की चिन्ता कहना, वृष में प्रश्न करे तो गाय, भैंस आदि चतुष्पद की चिन्ता, मिथुन में गर्भचिन्ता और कर्क में व्यापारचिन्ता जानना। सिंह में जीव की चिन्ता, कन्या में स्त्री की चिन्ता, तुला में धन की चिन्ता, वृश्चिक में रोग की चिन्ता, धन में धन की चिन्ता, मकर में शत्रुचिन्ता, कुम्भ में स्थान की चिन्ता और मीन में भूत-पिशाच आदि बाहरी बाधाओं की चिन्ता जाननी चाहिए ॥ १-३ ॥

अथ धातुमूलजीवज्ञानम् ।

धातुर्मूलश्च जीवश्चरस्थिरद्विस्वभावगाः ।
मेषादयः क्रमेणैव ज्ञातव्याः प्रश्नकोविदैः ॥ १ ॥

मेष आदि बारह लग्नों के नाम की दो-दो संज्ञा कहते हैं—

धातु-चर मेषलग्न की संज्ञा, मूल-स्थिर वृष की, जीव-द्विस्वभाव मिथुनकी, धातु-चर कर्ककी, मूल-स्थिर सिंह की, जीव-द्विस्वभावकन्या की, धातु-चर तुला की, मूल-स्थिर वृश्चिक की, जीव-द्विस्वभाव धन की, धातु-चर मकर की, मूल-स्थिर कुम्भ की और जीव-द्विस्वभाव मीन की—इस प्रकार बारहों लग्नों की दो-दो संज्ञा जानिये ॥ १ ॥

अथ संज्ञानुसारेण लग्ननामानि ।

संज्ञा	राशिनाम				संज्ञा
धातु	मे.	क.	तु.	म.	चर
मूल	वृष.	सिं.	वृ.	कुं.	स्थिर
जीव	मि.	कन्या	ध.	मी.	द्विस्वभाव

अथ नष्टपशुप्रश्नः ।

द्युमणिभान्नवभेषु वने स्थितं
तदनु षट्सु च कर्णपथे स्थितम् ।
अचलभेषु गतं गृहमागतं
द्वयगतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ १ ॥

जो सूर्य के नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र, नव नक्षत्रों तक हो, तो पशु को वन में जानिये । उसके बाद छः नक्षत्रों तक मार्ग में जानिये । फिर सात

नक्षत्रों तक में घर आनेवाला कहिए । फिर दो नक्षत्रों में हो, तो न मिले, फिर तीन नक्षत्रों में पशु की मृत्यु जानना चाहिए॥१॥

अथ संक्रान्तिवारफलम् ।

संक्रान्तिर्जायते तत्र भास्करे भसुते शनौ ।
तस्मिन्मासे भयं घोरं दुर्भिक्षं वृष्टिचौरजम् ॥ १ ॥

सूर्यसंक्रान्ति—रविवार, मङ्गल और शनैश्चर में पड़े, तो उस मास में भय, भयंकर दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि और चोरभय होता है॥१॥

अथ रविचन्द्रमण्डलविचारः ।

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा
रविशशिपरिवेषे मध्ययामे च वृष्टिः ।
रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये
रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे ॥ १ ॥

सूर्य और चन्द्रमा, प्रथम पहर में मण्डल धरें, तो पीड़ा, दूसरे पहर में वर्षा, तीसरे पहर में धान्यनाश और चौथे पहर में राज्यभङ्ग हो ॥ १ ॥

अथ इन्द्रधनुषादियोगः ।

रात्रौ धनुर्दिने उल्का तारा चैव दिने तथा ।
रात्रौ तु धूम्रकेतुश्च भूकम्पश्च तथैव हि ।
एतानि दुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणि च ॥ १ ॥

रात्रि को इन्द्रधनुष निकले, दिन को उल्कापात हो, तारा टूटे और रात्रि को धूम्रकेतु उदय हो, भूकम्प अर्थात् पृथ्वी काँपे, ये दुष्टचिह्न हों, तो देश-क्षय हो ॥ १ ॥

अथ कार्यभेदेन सूर्यादिबलज्ञानम् ।

नृपेक्षणं सर्वकृतिश्च सङ्गरः
शास्त्रं विवाहो गमदीक्षणे रवेः ।
वीर्येऽथ ताराबलतः शुभो विधु-
र्विधोर्बलेऽर्कोऽर्कबले कुजादयः ॥ १ ॥

सूर्य के बल से राजदर्शन करना और चन्द्रमा के बल से सर्व-कृत्य करना, मङ्गल के बल से युद्ध करना, बुध के बल से शास्त्र पढना, बृहस्पति के बल से विवाह करना, शुक्र के बल से यात्रा करना, शनैश्चर के बल से दीक्षा लेना और तारा के बली होने से शुभ चन्द्रमा बली जानना । और चन्द्रमा के बल से सूर्य बली जानना और सूर्य के बल से मङ्गलादि ग्रह बली जानिये ॥ १ ॥

अथ स्वप्नविचारः ।

स्वप्नस्तु प्रथमे यामे संवत्सरफलप्रदः ।
द्वितीये चाष्टभिर्मासैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ॥ १ ॥
चतुर्थे चार्धमासेन स्वप्नः स्याच्च फलप्रदः ।
दशाहे फलदः स्वप्नोऽप्यरुणोदयदर्शने ॥ २ ॥

जो स्वप्न पहले पहर में देखा जाता है, वह एक वर्ष में फल-दायक होता है । और जो दूसरे पहर में देखा जाता है, वह आठ महीने में फल देता है और जो तीसरे पहर में स्वप्न देखा जाता है, वह तीन महीने में फलदायक होता है—जो स्वप्न चौथे पहर में देखा जाता है, वह आधे महीने में फल को देता है । और जो सूर्योदय में देखे तो दश दिन में फल को देता है ॥ १–२ ॥

वातिकं पैत्तिकं चैव श्लेष्मजं चिन्तयान्वितम् ।
पुरुषैर्दृश्यते स्वप्नः शुभाशुभफलं न च ॥ ३ ॥

जो मनुष्य वात, पित्त और कफ के विकार से युक्त हो व चिन्ता-युक्त हो, तो उसके स्वप्न का शुभाशुभ फल नहीं होता है ॥ ३ ॥

पत्रं पुष्पं फलं तोयं स्वप्नान्ते यो लभेन्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति जीवेद्वर्षशतं नरः ॥ ४ ॥

पत्र, फूल, फल और जल का स्वप्न के अन्त में लाभ देख पड़े तो सर्वसिद्धि प्राप्त हो और वह मनुष्य सौ वर्ष तक जीवे ॥ ४ ॥

प्रासादस्थस्तु यो भुंक्ते समुद्रं तरते नरः ।
अपि दासकले जातः सोऽपि राजा भविष्यति ॥ ५ ॥

प्रासाद (महल) पर भोजन करे और समुद्र तरे, तो दासकुल में भी यदि जन्म हो, तो भी स्वप्न के प्रभाव से राजा हो ॥ ५ ॥

यस्तु पश्यति स्वप्नान्ते गङ्गा वाक चैव यामुना ।
अरुन्धतीं तथासीनस्तस्य सौख्यं निरन्तरम् ॥ ६ ॥

स्वप्न के अन्त में गङ्गा, यमुना किंवा सरस्वती नदी देख पड़े, या अरुन्धती देखे, तो सुख की प्राप्ति हो ॥ ६ ॥

ताम्बूलं दधि वस्त्रं च शङ्खदुन्दुभिमौक्तिकम् ।
जातीवकुलकुन्दं च नीलोत्पलधनागमम् ॥ ७ ॥

पान, दही, वस्त्र और शंख, नगाड़ा व मोती व चमेली का फूल व वृक्ष व बकुल, कुन्द किंवा कमल देखे तो धन मिले ॥ ७ ॥

दीपमन्नं घृतं पद्मं कन्याच्छत्रं तथा ध्वजम् ।
स्वप्नान्ते यो लभेन्मन्त्रं चिन्तितं च भवेद्ध्रुवम् ॥ ८ ॥

दीप, अन्न, घी, कमल, कन्या, छत्र व पताका देख पड़े व स्वप्न के अन्त में मन्त्रलाभ हो, तो चिन्तित मनोरथ सिद्ध हो ॥ ८ ॥

नावमारोहयेद्यस्तु नदीं वा विमलां तरेत् ।
प्रवासं च दिने तस्य शीघ्रं च पुनरागमः ॥ ९ ॥

यदि नाव पर सवार होकर नदी उतरे, तो यात्रा हो परंतु उसी दिन जल्दी आ जावे ॥ ९ ॥

अमून्पश्यति यः स्वप्ने शृङ्गिणो दंष्ट्रिणोऽपि वा ।
वानरो वा वराहो वा भवेद्राजकुलाद्भयम् ॥ १० ॥

जो स्वप्न में सींग व दाँतवाला जीव, वानर व सूकर देखे तो राजकुल से भय हो ॥ १० ॥

करालो विकटो मुण्डी पुरुषः कृष्णपिङ्गलः ।
स्वप्नान्ते संमुखं दृष्ट्वा तं च कालं विनिर्दिशेत् ॥ ११ ॥

कराल, विरूप, मूँड़ मुड़ाये, श्याम और पिंगल रूपवाला पुरुष स्वप्नान्त में संमुख देख पड़े तो उस मनुष्य का काल जानिये ॥ ११ ॥

नगरग्रामदहनं देशदाहं तथैव च ।
चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुः प्रज्ञा यशोबलम् ॥ १२ ॥

नगर और गाँव को जला देखे और देश जला देखे, तो आयु, प्रज्ञा, यश और बल, इनका नाश करे ॥ १२ ॥

क्षुधा पिपासा निद्रा च आलस्यं चापि निष्ठुरम् ।
यदि पश्यति स्वप्नान्ते दुर्भिक्षं दारुणं भवेत् ॥ १३ ॥

भूख, प्यास, निद्रा, आलस्य और निष्ठुरता, ये स्वप्नान्त में देख पड़ें, तो दारुण दुर्भिक्ष पड़े ॥ १३ ॥

यस्तु पश्यति स्वप्नान्ते विवाहं मुण्डनं तथा ।
प्रियमृत्युर्ध्रुवं तस्य द्रव्यपुत्रविनाशनम् ॥ १४ ॥

यदि स्वप्न के अन्त में विवाह और मुण्डन देखे, तो प्रिय-मृत्यु तथा द्रव्य और पुत्र का विनाश हो ॥ १४ ॥

कुक्कुरं स च मार्जारो गोधा नकुलमेव च ।
यदि पश्यति स्वप्नान्ते विघ्नस्तस्य भविष्यति॥ १५॥

यदि कुत्ता, बिलार, गोह और नेवला को स्वप्न के अन्त में देखे, तो विघ्न हो ॥ १५ ॥

गर्जिवृष्टिः समुत्पन्ना अग्निदाहं च विग्रहम् ।
यदि पश्यति स्वप्नान्ते भवेद्राजकुलाद्भयम् ॥ १६ ॥

यदि गर्जित वर्षा, अग्निदाह और विग्रह ये स्वप्न के अंत में देखे तो राजकुल से भय हो ॥ १६ ॥

आदित्यमण्डलं स्वप्ने चन्द्रं वा यदि पश्यति ।
व्याधितो मुच्यते रोगी श्रीयशस्त्वमवाप्नुयात्॥ १७॥

यदि सूर्य, चन्द्रमा का मण्डल स्वप्न में देखे, तो व्याधि-नाश, लक्ष्मी और यश की प्राप्ति हो ॥ १७ ॥

यस्य श्वेतेन सर्पेण दश्यते दक्षिणे भुजे ।
शस्त्रलाभो भवेत्तस्य संपूर्णो दशमे दिने ॥ १८ ॥

यदि दहिनी भुजा में सफेद सर्प काटे तो दशवें दिन शस्त्र-लाभ हो ॥ १८ ॥

उरगो वृश्चिको वापि जलौका दृश्यते यदि ।
विजयं चार्थलाभं च क्षिप्रमेव भविष्यति ॥ १९ ॥

यदि सर्प, बिच्छू और जोंक देखे, तो विजय व अर्थ-लाभ शीघ्र हो ॥ १६ ॥

दधि दृष्ट्वा भवेदायुर्गोधूमैश्च धनागमः ।
यवैर्यज्ञागमं विद्यात्सिद्धार्थं च प्रदर्शयेत् ॥ २० ॥

यदि दही देखे तो आयु-वृद्धि, और गेहूँ देखे तो धनागम हो। यव देखे तो यज्ञ और सरसों देखे तो विद्या-प्राप्ति हो ॥ २० ॥

देवता यस्य पश्यन्ति गणागन्धर्वकिन्नराः ।
सिद्धा वा यदि पश्यन्ति तस्य सिद्धिर्निरन्तरम् ॥ २१ ॥

यदि देवता-गन्धर्वों का समूह, किन्नर व सिद्ध देखे, तो कार्यादिक सिद्ध हों ॥ २१ ॥

वापीकूपतडागानि ग्रामं नगरमेव च ।
यदि पश्यति स्वप्नान्ते मङ्गलानि महोत्सवः ॥ २२ ॥

यदि बावली, कूप व तालाब देखे व गाँव और नगर स्वप्न के अन्त में देखे तो मङ्गल और बड़ा उत्सव हो ॥ २२ ॥

कन्यासमूहाः स्थितमण्डलानां
वेदाः समूहा द्विजशोभनानाम् ।
शास्त्रासमूहाःस्थितमुत्तमाना-
मेतानि पश्येच्छुभमङ्गलानि ॥ २३ ॥

यदि कन्या का समूह मण्डल में स्थित देखे व वेद के समूह ब्राह्मण देखे व शास्त्र के समूह स्थित देखे तो शुभ मङ्गल प्राप्त हो ॥ २३ ॥

व्याधितेन सशोकेन चिन्ताग्रस्तेन चैव हि ।
कामकामार्तकश्चैव दृष्ट्वा स्वप्नो न विद्यते ॥ २४ ॥

यदि व्याधि से युक्त मनुष्य हो व शोक से युक्त हो तथा चिन्ताग्रस्त हो व काम से कामार्त हो, तो शुभाशुभ स्वप्न का फल नहीं होता है ॥ २४ ॥

यश्चैव स्वप्नं दृष्ट्वा तु पुनः सुप्तो हि मानवः ।
दुःस्वप्नं वा सुस्वप्नं वा निष्फलं जायते ध्रुवम् ॥२५॥
दुःस्वप्नो दृश्यते येन तेषां निद्रा च कारयेत् ।
ततो नाशाशुभं तत्र शुभमेव भविष्यति ॥ २६ ॥

जो मनुष्य स्वप्न देखकर सो जावे, तो शुभाशुभ फल नहीं होगा। और जो अशुभ स्वप्न देखकर सो जावे तो स्वप्न का अशुभ फल नष्ट हो जाता है ॥ २५-२६ ॥

रक्तचन्दनकाष्ठानि घृतयुक्तानि होमयेत् ।
गायत्र्यष्टसहस्राणि यस्य निद्रा न तिष्ठति ॥ २७ ॥

जिस मनुष्य को अशुभ स्वप्न देखकर निद्रा न पड़े, तो आठ हज़ार गायत्री-मन्त्र का होम घृत-युक्त रक्त-चन्दन और काष्ठ से करे तो अशुभ स्वप्न का फल नष्ट होता है ॥ २७ ॥

कश्यपात्रिवशिष्ठेन शाण्डिल्यो भृगगौतमैः ।
देवलेन भरद्वाजमाण्डव्येन सनातनैः ॥ २८ ॥
पराशरेण मुनिना विश्वामित्रेण भार्गवैः ।
ऋषिप्रणीतशास्त्राणि बृहस्पतिसमीरिताम् ॥२९॥
बृहस्पतिमतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
यः पठेत्परया भक्त्या दुःस्वप्नं नश्यति ध्रुवम् ॥३०॥

कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, शाण्डिल्य, भृगु, गौतम, देवल, भरद्वाज,

माण्डव्य, सनातन, पराशर, विश्वामित्र और बृहस्पति, इनका स्मरण व पाठ करने से दुःस्वप्न का फल नष्ट होता है। यह बृहस्पति का मत पुण्यदायक, पवित्र और पापनाशक है। इसका पाठ करने से शीघ्र ही दुःस्वप्न का फल नष्ट होता है ॥ २८–३० ॥

अथ व्रतादिनिर्णयः कथ्यते ।

तत्रादौ चैत्राश्विन-शुक्लप्रतिपदानवरात्रनिर्णयः ।

नष्टेन्दुविद्धा प्रतिपत्सुधीभि-
स्तत्याज्यकार्या खलु चण्डिकायाः ।
सम्पूजने लुप्तविधुप्रवेधो
भशं मुहूर्तत्रयसम्मितश्च ॥ १ ॥

अमावसवेधी प्रतिपदा को नवरात्र व्रत वर्जित करना। जिस दिन उदय में प्रतिपदा तीन मुहूर्त तक मिले, वही व्रत के योग्य है ॥ १ ॥

अथ हरतालिकानिर्णयः ।

बलक्षपक्षस्य च या तृतीया
भाद्रस्य गौरीव्रतमाहुरार्याः ।
मुहूर्तमात्रापि पराविधेया
विनिश्चयोऽयं विदु रमभीष्टः ॥ १ ॥

भाद्रमास के शुक्लपक्ष की तृतीया को गौरीव्रत होता है, वह यदि एक मुहूर्त भी सूर्योदय में मिले तो, वही व्रत के योग्य है ॥ १ ॥

अथान्यमतेन गौरीव्रतनिर्णयः ।

मुहूर्तमात्रसत्वेऽपि दिने गौरीव्रतं चरेत् ।
शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोगः प्रशंसताम् ॥ १ ॥

जिस दिन उदय काल में मुहूर्तमात्र भी तीज मिले, उसी दिन गौरीव्रत करे और जो शुद्धाधिक मिले अर्थात् साठघड़ी से अधिक वाली जिसे तिथि-वृद्धि कहते हैं, वह जिस दिन मिले, उसकी गणयोगसंज्ञा है और वह व्रत के योग्य भी है ॥ १ ॥

अथ नागपञ्चमीनिर्णयः ।

पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता ।
तस्यां तु तुषिता नागा इतरासु चतुर्थिका ॥ १ ॥

श्रावणशुक्ल की पञ्चमी नागपञ्चमी होती है वह छठ से युक्त हो, तब नागपूजा करनी चाहिये अर्थात् सूर्योदय की पञ्चमी से करना चाहिये । उसमें नाग प्रसन्न होते हैं । और पञ्चमी जो शेष रहीं, उनको चतुर्थीविद्धा करे ॥ १ ॥

अथ द्वितीयप्रकारेण नागपञ्चमीनिर्णयः ।

नभोवलक्षाभिधपक्षगा या
वै पञ्चमी सा फणिनां विचिन्त्या ।
मध्याह्नगा सा नितरां विधेया
पूर्वाह्णगामिन्यपदैः प्रशस्ता ॥ १ ॥

श्रावणमास के शुक्लपक्ष में नागपञ्चमी का विचार करे । वह मध्याह्नव्यापिनी पूजा के योग्य है । परन्तु पूर्वाह्णगामिनी मोक्ष को देनेवाली है । यह मत और आचार्यों का है ॥ १ ॥

अथ बहुलाव्रतनिर्णयः ।

तस्यां चतुर्थ्यां बहुलाव्रतं स्या-
द्या गीयते भाद्रपदस्य कृष्णा ।
उदाहृता सा मुनिभिश्च पूर्वै-
र्या भासिता शीतकरोदयेन ॥ १ ॥

भाद्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी को बहुला-व्रत होता है। इस लिये जो चतुर्थी चन्द्रोदय में पूर्व वा पर मिले, उसी को व्रत के योग्य जानना ऐसा मुनि कहते हैं ॥ १ ॥

अथ दूर्वाष्टमीनिर्णयः ।

दूर्वाष्टमी भाद्रपदस्य शुक्ला
सदैव पूर्वा नितरां विधेया ।
शुक्लाष्टमी स्यान्नवमीसमेता
कृष्णाष्टमी पूर्वयुतावगम्या ॥ १ ॥

भाद्रपद के शुक्लपक्ष की अष्टमी को दूर्वाष्टमी होती है, वह पूर्वव्यापिनी ग्राह्य है । तथा और आचार्यों का मत है कि शुक्लपक्ष की अष्टमी नवमी-समेत करना और कृष्णपक्ष की अष्टमी, पूर्वविद्धा करना उचित है ॥ १ ॥

अथ श्रीकृष्णजन्माष्टमीनिर्णयः ।

नभस्यमासे त्वसिताष्टमी या
जन्माष्टमीं तां समुदाहरन्ति ।
सा चार्धरात्राभिगता विधेया
निशीथयोगादुभयोः परैव ॥ १ ॥

भाद्रपद के कृष्णपक्ष की अष्टमी को जन्माष्टमी कहते हैं । वह अर्धरात्रिव्यापिनी ग्राह्य है । और दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी मिले तो दूसरे दिन व्रत करना उचित है ॥ १ ॥

अथ ऋषिपञ्चमीनिर्णयः ।

भाद्रस्य शुक्ला किल पञ्चमी या
ऋषिव्रतं तत्र जगुर्मुनीन्द्राः ।

मध्याह्नगा सापि च मोक्षदात्री
हस्तोद्भवान्नाशनवर्जितानाम् ॥ १ ॥

भाद्रपद के शुक्लपक्ष की पञ्चमी को ऋषिपञ्चमी व्रत होता है। मुनीन्द्र कहते हैं कि मध्याह्नगत व्रत के योग्य है और हस्तोद्भव भोजन वर्जित है ॥ १ ॥

अथानन्तचतुर्दशी-नृसिंहचतुर्दशी-शिवरात्रि-चतुर्दशी-व्रत-निर्णयः ।

समस्तमासेषु चतुर्दशी या
कृष्णा ह्युपोष्या तु निशीथगा सा ।
भाद्रस्य शुक्लापि मुहूर्तमात्रा
परैव सायाह्नगता तु राधे ॥ १ ॥

सब महीनों में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अर्थात् शिवरात्रि आदि अर्धरात्रिव्यापिनी ग्राह्य है। और भाद्रशुक्ल में अनन्त चतुर्दशी होती है, वह एक मुहूर्त तक पर मिले तो व्रत के योग्य है। तथा वैशाखशुक्ल चतुर्दशी को नृसिंहव्रत होता है, उसे सायङ्काल से युक्त लेना ॥ १ ॥

अथ महालक्ष्मीव्रतनिर्णयः ।

इषस्य कृष्णा खलु चाष्टमी या
महारमायां मुनिभिः प्रदिष्टा ।
त्रिभिर्मुहूर्तैः प्रमिता विदध्या-
च्चन्द्रोदयादेव धनाभिलाषी ॥ १ ॥

कुवार के कृष्णपक्ष की अष्टमी को महालक्ष्मीव्रत होता है। मुनीन्द्र कहते हैं कि तीन मुहूर्त तक पर मिले, वही व्रत के योग्य है। परंतु धनलाभ की अभिलाष से जो व्रत करे, तो चन्द्रोदय-व्यापिनी अष्टमी का व्रत करे ॥ १ ॥

अथ कर्कचतुर्थीनिर्णयः ।

ऊर्जस्य कृष्णा खलु या चतुर्थी
चन्द्रोदयासन्नगता विधेया ।
गौरीव्रतं चेदमपि प्रदिष्टं
वैधव्यनाशस्य विधौ समर्थम् ॥ १ ॥

कार्त्तिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी को कर्कचतुर्थी (करवा-चौथि) कहते हैं । इसका व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में करना चाहिए । इस व्रत के रहने से वैधव्य का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ विजयादशमीनिर्णयः ।

इष्यां दशम्यां विजया विधेया
पूर्वान्वितायामपराह्णकाले ।
पूज्या विदध्यान्नृपतिप्रशस्त-
पूर्वापराहं श्रुतियोगतश्च ॥ १ ॥

कुवार मास के शुक्लपक्ष की दशमी को विजयादशमी होती है । वह पूर्वयुत अपराह्णकाल में लेना चाहिये अर्थात् उस समय पूजन प्रशस्त है । और श्रवण के योग से पर पूर्व लेना चाहिये अर्थात् श्रवण पूर्व मिले, तो पूर्व की ले और पर मिले, तो पर-युक्त ग्रहण करे ॥ १ ॥

अथ एकादशीनिर्णयः ।

एकादशी यदा नष्टा द्वादशी सकला भवेत् ।
उपोष्या द्वादशी शुद्धा त्रयोदश्यां तु पारणम् ॥ १ ॥
उदयैकादशी स्वल्पा अन्ते चैव त्रयोदशी ।
मध्ये तु द्वादशी पूर्णा त्रिस्पृहा च हरिप्रिया ॥ २ ॥

ये तामुपोष्य सद्यस्तु द्वादशी विष्णुवल्लभा ।
एकामुपोषयेत्तां यः सहस्रव्रततः फलम् ॥ ३ ॥
सहस्रगुणितं पुण्यं त्रयोदश्यां तु पारणम् ।
दशमीवेधसंयुक्ता हन्ति पुण्यं पुराकृतम् ॥ ४ ॥

एकादशी की हानि हो और द्वादशी संपूर्ण हो, तो उसी द्वादशी को व्रत करना चाहिये और तेरसि को पारण करे । उदय में एकादशी थोड़ी हो, अन्त में त्रयोदशी और मध्य में द्वादशी हो, ऐसा योग तब पड़ता है, जब द्वादशी की हानि होती है । उस एकादशी की त्रिस्पृहा संज्ञा है। ऐसी एकादशी व्रत के योग्य है और विष्णु के प्रिय है । एक त्रिस्पृहा व्रत करने से हज़ारव्रत के तुल्य फल है, और हजारगुणा पुण्य है । इसमें भी त्रयोदशी को पारण करना उचित है । औरों में द्वादशी का पारण उचित है । परंतु दशमीवेधी एकादशी का व्रत करने से पूर्वकृत पुण्य नष्ट होता है ॥ १–४ ॥

अथ गुणगौरिनिर्णयः ।

मध्याह्नगा चैत्रसिता चतुर्थी
तस्यां व्रतं स्याद्गुणगौरिकायाः ।
पूज्यौ नगाधीशसुतागणेशौ
पक्वान्नमिष्टान्नविमिश्रपुष्पैः ॥ १ ॥

चैत्रशुक्ल चौथ को गुणगौरि व्रत होता है। वह मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है । इसमें पार्वती और गणेशजी की पूजा पकान्न, मिष्टान्न और अनेक प्रकार के पुष्पों द्वारा करनी चाहिए ॥ १ ॥

अथ संकष्टहरणचतुर्थीनिर्णयः ।

माघस्य कृष्णा खलु या चतुर्थी

तस्यां व्रती याति सुखं समग्रम् ।
निशीथिनीशोदयगा प्रशस्ता
महर्षिभिर्न्यूनमुदाहृता सा ॥ १ ॥

माघकृष्ण चौथ को संकष्टहरण व्रत होता है। उसके व्रत करने से समग्र सुख होता है। वह चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्य है, ऐसा महर्षि कहते हैं ॥ १ ॥

अथ श्रावणीनिर्णयः ।

नभसितायामपराह्णगायां
सद्बन्धनं पञ्चदशीतिथौ स्यात् ।
रक्षाभिधा या यदि सा च विष्ट्यां
पुरं नृपं हन्ति विनिश्चयेन ॥ १ ॥

श्रावणशुक्ल पूर्णमासी को अपराह्णकाल में रक्षाबंधन करना योग्य है। और जो भद्रा में रक्षाबन्धन करे, तो पुर के राजा को निश्चय हने ॥ १ ॥

अथ दीपमालिकानिर्णयः ।

या कार्त्तिके मास्यसिते विधेया
प्रदोषगा दर्शतिथौ मनुष्यैः ।
तस्यां प्रकुर्यात्खलु दीपदानं
पूर्णे निशीथेऽर्चनमम्बिकायाः ॥ १ ॥

कार्त्तिकमास के कृष्णपक्ष की अमावास्या को सायंकालव्यापिनी में मनुष्य दीपदान करे और पूर्ण अर्धरात्रि को लक्ष्मीजी की पूजा करे ॥ १ ॥

अथ होलिकानिर्णयः ।

तपस्यमासे सितपञ्चदश्यां
पूर्वान्विता या निशि होलिका सा ।
भद्रावसाने च बुधः प्रकुर्या-
द्दाहं पुराणार्थविदो वदन्ति ॥ १ ॥

फाल्गुनशुक्लपूर्णमासीको रात्रिमें पूर्वयुत होलिकादाह करना योग्य है। परंतु भद्रा को त्याग करना अर्थात् पूर्वाह्ण में भद्रा पड़ जाय, तो पूर्व को छोड़कर पर करना चाहिये, ऐसा पुराणार्थविद् कहते हैं ॥ १ ॥

अथ सामान्यतिथिनिर्णयः ।

एकादश्यष्टमी षष्ठी पूर्णमासी चतुर्दशी ।
अमावास्या तृतीया च ता उपोष्याः परान्विताः॥ १ ॥
जन्माष्टमी जयन्ती च शिवरात्रिश्चतुर्दशी ।
पूर्वविद्धा तु कर्तव्या तिथ्यन्ते चैव पारणम्॥ २ ॥
तृतीया पञ्चमी दुर्गा एकादश्यष्टमी तथा ।
कर्तव्या च परायुक्ता शेषपूर्वे तु संयुता ॥ ३ ॥

एकादशी, छठ, अष्टमी, पूर्णमासी, चतुर्दशी, अमावस, तीज, इतनी तिथि परयुत करनी चाहिये । जन्माष्टमी, जयन्ती अर्थात् जन्माष्टमी बुध रोहिणी संयुक्त हो व शिवरात्रि चौदश इनको पूर्वयुत व्रत करना उचित है। और तिथि के अन्त में पारण करना चाहिए। तीज, पञ्चमी और दुर्गाव्रत (एकादशी, अष्टमी इन तिथियों का व्रत) परयुक्त करना उचित है तथा शेष जो हैं, उन्हें पूर्वयुक्त करना उचित है ॥ १।३ ॥

अथ सामान्यतिथिनिर्णयचक्रम् ।

वटसावित्री	हलषष्ठी	प्रदोषः	गणेशचतुर्थी	व्रतम्
पूजनमात्रपरयुता	परयुता	सायंकालिकः	चन्द्रोदया	समयनिर्णयः
व्यासपूजा	यमद्वितीया	वसन्तपञ्चमी	श्रीरामनवमी	व्रतम्
परयुता	परयुता	परयुता	परयुता	समयनिर्णयः

संवत्सरेऽष्टाब्धिनवेन्दुमानके
माघेऽसिते नन्दतिथौ दिने शनौ ।
श्रीसूर्यनारायणविन्मुदे नृणां
चक्रे बृहज्ज्योतिषसारसंग्रहम् ॥ १ ॥

इति श्रीसूर्यनारायणत्रिपाठिसंगृहीते ज्योतिःसारसंग्रहे मिश्रप्रकरणं पञ्चमं समाप्तम् ।

श्रीसंवत् १९४८ माघकृष्ण नवमी शनिवार को सूर्यनाराय पण्डित ने बृज्ज्योतिःसारनाम ग्रन्थ का संग्रह किया ॥ १ ॥

इति श्रीसूर्यनारायणत्रिपाठिसंगृहीतो भाषाटीकया सहितो बृहज्ज्योतिःसारनामकोऽयं ग्रंथः समाप्तः । शुभम् ॥